लाल किताब

विषय सूची

भाग–1

लाल किताब के विशेष शब्दों की तर्कसंगत व्याख्या 2

भाग–2

बारह भावों की व्याख्या 19

भाग–3

ग्रहों की विभिन्न भावों संक्षिप्त महत्वता 29

भाग–4

बारह भावों में ग्रहों का फल और उनके उपाय 38

- **खण्ड 1** – बृहस्पति 38
- **खण्ड 2** – सूर्य 62
- **खण्ड 3** – चंद्रमा 82
- **खण्ड 4** – मंगल 103
- **खण्ड 5** – शुक्र 117
- **खण्ड 6** – बुध 133
- **खण्ड 7** – शनि 150
- **खण्ड 8** – राहु 165
- **खण्ड 9** – केतु 179

पराशर ज्योतिष और लाल किताब के अनुसार
कुछ कुंडलियों का तुलनात्मक अध्ययन 190

भाग–5

लाल किताब के आधार पर विशेष नियम 210

भाग–6

ग्रह और उनसे संबंधित बिमारियां 212

भाग–7

पितृ ऋण का ग्रह 215

भाग–8

कुछ अदभुत योग 218

भाग–9

लाल किताब का वर्षफल 228

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

भाग–1

लाल किताब के विशेष शब्दों की तर्कसंगत व्याख्या

Future Point

अन्धे ग्रह : दसवें घर में दो या दो से ज्यादा ऐसे ग्रह हों जिनकी आपस में शत्रुता है तो इस प्रकार की जन्म कुण्डली को अन्धे ग्रहों की कुण्डली कहा जाता है। कारण यह है कि काल पुरूष की कुण्डली के अनुसार दसवें घर में मकर राशि होती है जिसका स्वामी शनि ग्रह है।

शनि का आंख के आन्तरिक भाग से कोई संबंध नहीं परंतु उसका संबंध हमारी दृष्टि से है। जब शनि के इस दसवें घर में ऐसे ग्रह बैठ जाए जो आपस में शत्रु हों तो शनि उन्हें अन्धा कर देता है इसलिए जातक की नजर पर पर्दा पड़ जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि आदमी की आंखें खराब होगी अन्यथा सांसारिक कार्यों के समय जातक की आंखों पर पर्दा पड़ जाएगा।

प्रश्न उठता है कि अगर वहां पर एक ही ग्रह हो तो वह अन्धा क्यों नहीं कहलाएगा। इसका तर्क यह है कि जब एक से ज्यादा शत्रु ग्रह दसवें घर में हों तो आपसी शत्रुता के कारण कमजोर हो जाते हैं और इसलिए इन पर शनि का बुरा प्रभाव पड़ता है।

दसवां घर हमारा कर्म स्थान भी है जिसका हमारी आय से बहुत गहरा संबंध है। इसलिए जब दसवें घर में एक से अधिक शत्रु ग्रह बैठ जाएंगे तो हमारा कर्म क्षेत्र असंतुलित हो जाएगा और काम या व्यापार में बाधाएं आएंगी और पूर्ण स्थिरता नहीं आ पाएगी।

अन्धे ग्रह वाली कुंडली का एक ही उपाय है कि दस अन्धों को एक जैसा भोजन खिलाया जाय जिससे दसवें घर में बैठे अन्धे ग्रह ठीक हो जाएं।

अगर दसवें घर में तीन ग्रह हों तब क्या उपाय किया जाय। मान लो दसवें घर में बृहस्पति, सूर्य और राहु हैं तो इसका सम्पूर्ण उपाय निम्नलिखित विधि के अनुसार किया जा सकता है।

अन्धे ग्रहों का कुंडली
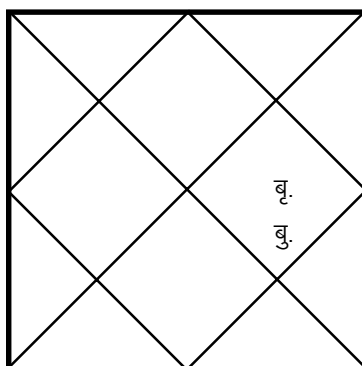
(दो ग्रहों के कारण अन्धे ग्रहों का कुंडली)

अन्धे ग्रहों का कुंडली

(तीन ग्रहों के कारण अन्धे ग्रहों का कुंडली)

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
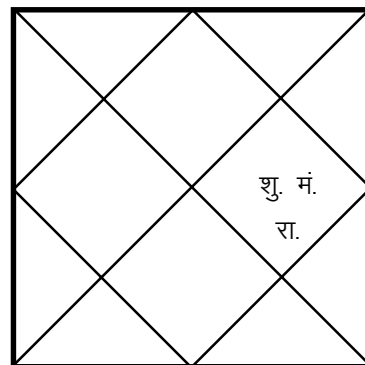
सबसे पहले दस अन्धों को भोजन कराया जाना चाहिए। उसके बाद थोड़े से जौ दूध में धो कर पानी में बहा दिये जाने चाहिएं।

उपाय का अर्थ : राहु की वस्तु जौ है और दूध चंद्रमा का कारक है। चौथे घर पर राहु और बृहस्पति दोनों की दृष्टि है। लाल किताब के अनुसार दृष्टि एक रास्ता है। इस उपाय को करने से जौ रूपी राहु पानी में चला जाएगा यानी राहु का प्रभाव न्युनतम हो जाएगा एवं राहु चौथे घर में अनिष्ट नहीं कर सकेगा। चौथे घर में कर्क राशि पड़ती है जो कि बृहस्पति की उच्च राशि है। सूर्य के उपाय की आवश्यकता पड़ने पर ताम्बे के टुकड़े पानी में बहा देने से स्थिति में सुधार होना निश्चित है।

यदि आवश्यकता हो तो अकेले ग्रह का उपाय भी किया जा सकता है। यह उपाय दृष्टि के अनुसार होगा। मान लो दसवें घर में अकेला बृहस्पति विद्यमान है और वहां से वह पांचवी दृष्टि से दूसरे घर को देखता है। हम सब परिचित हैं कि दूसरा घर धर्म स्थान भी कहलाता है। इसलिए बृहस्पति की वस्तुएं हल्दी अथवा केसर आदि धर्म स्थान में चढ़ाने से बृहस्पति दूसरे घर में असर करने लगेगा लेकिन दसवां घर यानी मकर राशि बृहस्पति की नीच राशि है इसलिए इस उपाय से बृहस्पति बहुत शुभ फल नहीं दे सकता इसी तर्क के कारण इसको इसकी उच्च राशि कर्क (चौथे घर) में स्थापित करना चाहिए।

रतांध ग्रह : रतांध ग्रहों का अर्थ है कि यह ग्रह दिन में तो देख सकते हैं परंतु रात को अन्धे हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में उन्हें आधा अन्धा भी कहा जा सकता है। रतांध ग्रहों के अन्तर्गत केवल दो ग्रहों को ही महत्व दिया गया है। वह है सूर्य और शनि। सूर्य यदि चौथे घर में हो और शनि सातवें घर में तो वह कुण्डली आधे अन्धे ग्रहों वाली कुण्डली कहलाएगी। इसका कारण यह है कि सातवें घर का शनि उच्च का होगा क्योंकि काल पुरूष कुण्डली के अनुसार सातवें घर में तुला राशि है जहां शनि उच्च होता है। इसलिए सातवें घर के शनि को काफी शक्तिशाली माना जाता है। यहां पर बैठा शनि अपनी दसवीं दृष्टि से सूर्य को देखता है जिसको वह अपना शत्रु मानता है। शनि की इस दृष्टि के कारण सूर्य का फल कई प्रकार से अशुभ हो जाएगा। प्रथम तो शनि की दृष्टि चौथे घर पर पड़ने से इस घर का फल अशुभ हो जाता है। चौथे घर में स्थित यह सूर्य शनि से दृष्टिगत काफी कमजोर हो चुका है और अपनी सांतवी दृष्टि से दसवें घर को देखता है अतः कर्मस्थान को कमजोर बनाएगा। चौथे घर में कालपुरूष की कुण्डली के अनुसार कर्क राशि पड़ती है और चौथा घर शनि की दृष्टि के कारण कमजोर हो चुका है इसके साथ–साथ बीमार सूर्य भी चौथे घर को कमजोर बना चुका है। इन सब के फलस्वरूप चौथा घर सुख स्थान होने के कारण पारिवारिक सुख में भी कमी आ जाएगी।

रतांध ग्रह
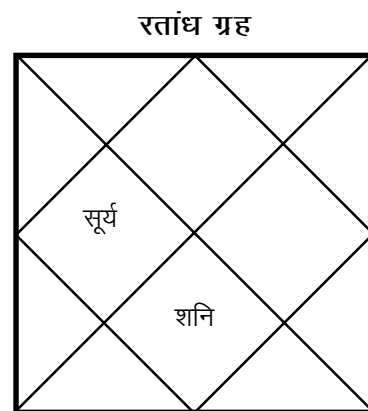
उपाय : इस अवस्था में सिर्फ शनि का ही उपाय करना चाहिए। एक तो सूर्य अपने मित्र चंद्रमा के घर में है और दूसरा पूरी कुण्डली पर केवल शनि का ही दुष्प्रभाव पड़ रहा है। यहां पर सातवें घर के शनि के कई उपाय संभव हैं जिन्हें कई पहलुओं को ध्यान में रखते हुए प्रयोग में लाया जाएगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

1. सातवें घर में शनि के समय यदि पहले घर में कोई ग्रह न हो तो शनि को सोया हुआ माना जाएगा। ऐसे में किसी बर्तन में शहद भरकर विराने में दबाने से सोए हुए शनि का बुरा प्रभाव खत्म हो जाएगा। (मंगल का उपाय)
2. यदि पहले घर में कोई ग्रह हो अर्थात शनि जागता हुआ ग्रह हो तो स्वयं शनि का ही उपाय करना चाहिए, यहां पर काले रंग की बांसूरी में खांड या देसी शक्कर भरकर बाहर किसी वीरान जगह में दबाने से शनि का अशुभ प्रभाव खत्म हो जाएगा। कुण्डली की आधा अन्धा होने की हालत सुधर जाएगी।

आधे अन्धे का दूसरा अर्थ यह है कि शनि की दृष्टि के कारण ग्रह दूषित हो जाएगा और वह चन्द्रमा के घर में बैठा हुआ चंद्रमा को अपना प्रकाश नहीं दे पाएगा। इसप्रकार मस्तिष्क पर एक प्रकार की कालिमा छा जाएगी।

धर्मी ग्रह : वैदिक ज्योतिष में प्रचलित है कि क्रूर ग्रह धर्मी ग्रहों के विपरीत होते हैं। लेकिन लाल किताब के अनुसार धर्मी ग्रह वह क्रूर या पापी ग्रह होते हैं जो कुछ विशेष हालतों में अपनी क्रूरता या अशुभता छोड़ कर शुभ फल देते है जैसे राहु या केतु चौथे घर हों तो उन्हें पापी ग्रहों की जगह धर्मी ग्रह कहा जाएगा। इसी प्रकार राहु या केतु चंद्रमा के साथ किसी भी भाव में हों वह धर्मी ग्रह ही कहलाएंगे।

धर्मी ग्रह

कारण : चंद्रमा मां का कारक है और चौथा घर माता का स्थान है। मां किसी को नुकसान नहीं पहुंचाती इसलिए उसके साथ सभी ग्रह शुभ कहलाते हैं।

शनि को भी वैदिक ज्योतिष के अनुसार पापी ग्रह ही माना जाता है इसलिए शनि यदि ग्यारहवें घर में हो तो वह धर्मी ग्रह कहलाएगा। इस घर में शनि का स्वभाव बहुत हद तक बदल चुका होगा।

इसी प्रकार जब शनि बृहस्पति के साथ कहीं भी बैठा हो तब वह धर्मी ग्रह कहलाएगा क्योंकि बृहस्पति की युति शनि के स्वभाव को बदल देती है और वह अपनी अशुभता छोड़कर शुभ फल देता है।
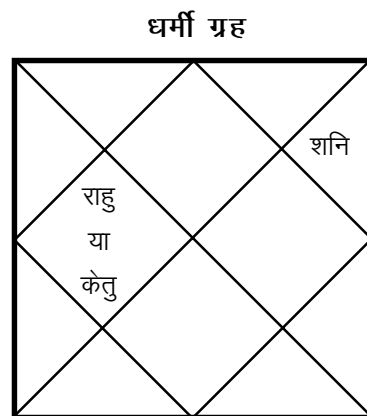
धर्मी कुण्डली : धर्मी कुण्डली से अभिप्राय है कि जिसमें अशुभ ग्रहों का प्रभाव काफी हद तक कम हो जाता है। जिस कुण्डली में शनि और बृहस्पति इकठ्ठे एक घर में हो वह कुण्डली धर्मी कुण्डली कहलाती है। यदि यह दोनों ग्रह शुभ घरों में हो तो कुण्डली पूर्ण रूप से धर्मी कुण्डली हो जाती है। धर्मी कुण्डली वाले व्यक्ति को किसी भी बड़ी से बड़ी मुश्किल के समय दैवी सहायता से उसके कार्य सिद्ध होते हैं। कहा जाता है कि ईश्वर स्वयं अपने हाथों से इस जातक की सहायता करता है।

कारण : शनि ग्रह मुश्किलों और रूकावटों का ग्रह होने के साथ–2 जातक के भाग्य का कारक भी है क्योंकि कालपुरूष की कुण्डली के 11वें घर (भाग्यस्थान) का मालिक शनि है और बृहस्पति जो सभी ग्रहों का गुरु है, जब शनि के साथ बैठ जाता है तो शनि की अशुभता समाप्त हो जाती है। लाल किताब में

अच्छे घरों का मतलब छठे, नौवें, ग्यारहवें और बारहवें शनि, बृहस्पति का होना अति शुभ माना गया है।

साथी ग्रह : जब कोई दो ग्रह अपनी–अपनी राशि यानी पक्के घर, उच्च राशि या नीच राशि के लिहाज से अदल–बदल कर बैठ जाए तो वह साथी ग्रह कहलाते हैं और आपसी शत्रुता के बावजूद इनकी शत्रुता काफी हद तक खत्म हो जाती है और वह एक दूसरे को नुकसान नहीं पहुंचाते। जैसे पांचवां घर सूर्य का और दसवां घर शनि का है। शनि पांचवें घर में और सूर्य दसवें घर में बैठ जाये तो दोनों आपस में साथी ग्रह कहलाएंगे। इसी प्रकार जब दो ग्रह एक दूसरे के पक्के घरों में बैठ जाएं तो उनकी दुश्मनी और अशुभता काफी हद तक समाप्त हो जाती है। चंद्रमा का पक्का घर चौथा और शनि का पक्का घर आठवां है, यदि चंद्रमा आठवें में हो और शनि चौथे में तो वह साथी ग्रह कहलाते हैं और उनकी दुश्मनी काफी हद तक खत्म हो जाती है।

मुकाबले के ग्रह : जब दो मित्र ग्रह कहीं भी हों मगर उन दोनों के साथ या एक के साथ शत्रु ग्रह बैठ जाए तो उनकी मित्रता नहीं रहती। जैसे कन्या राशि बुध की और तुला राशि उसके मित्र शुक्र की है। अब तुला राशि या शुक्र के पक्के घर (सातवें) में सूर्य बैठ जाये तो बुध शुक्र की मित्रता समाप्त हो जाएगी। बुध क्योंकि सूर्य के साथ सम है इस शुक्र की बली चढ़वा देगा (स्त्री बिमार)

कायम ग्रह : वह ग्रह जो हर प्रकार से ठीक–ठाक और स्वच्छ हो अर्थात अपनी राशि पर पक्के घर में हो और दुश्मन ग्रह की युति या दृष्टि से पीड़ित न हो और न ही वह किसी दुश्मन ग्रह का साथी बन रहे हों तो वे कायम या संपूर्ण स्थापित ग्रह कहलाएंगे। ऐसे ग्रह की शक्ति काफी सीमा तक बढ़ जाती है।

ग्रह का घर : इस का अर्थ यह है कि ग्रह की अपनी मानी हुई राशि , जैसे दोस्त ग्रह की राशि, अपनी राशि और उच्च राशि दूसरे शब्दों में ग्रह जिस राशि का मालिक है वही उस ग्रह का घर है। इस तरह से लाल किताब में राशि को महत्वपूर्ण माना गया है।

घर का ग्रह : घर के ग्रह का अर्थ है कि वह जिस घर का ग्रह कारक है, उस घर के अनुसार और ग्रह के कारकत्व के अनुसार ही निर्धारित होता है। जैसे घर नं. 2, 5, 9, 12 आदि बृहस्पति के घर है। क्योंकि घर नं. 2 धर्म स्थान, 5 सन्तान का कारक , 9 बुजुर्गों का

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point
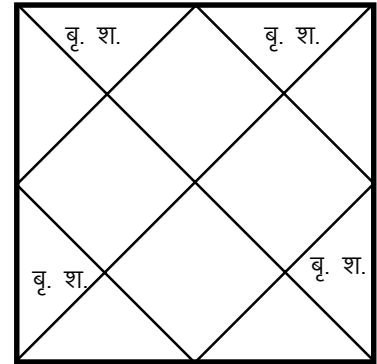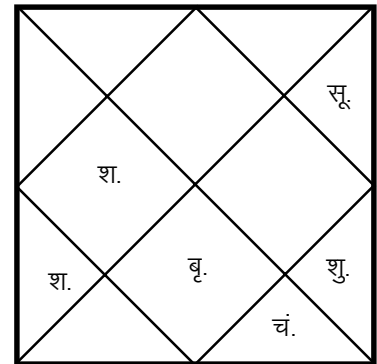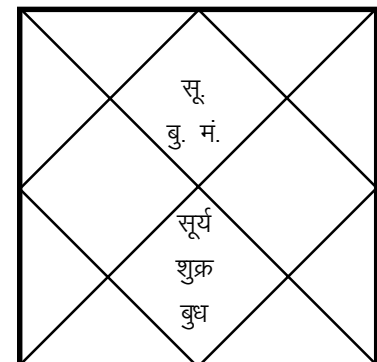
कारक और 12 मोक्ष का कारक है। लाल किताब में बुध को कन्या कहा गया है और बुध घर नं. 7 का कारक है।

कायम ग्रह

उच्च और नीच ग्रह : पुराने वैदिक ज्योतिष के अनुसार जैसे भिन्न–2 राशियों में ग्रह उच्च या नीच के हो जाते हैं लाल किताब में भी वही राशियां ग्रह की उच्च या नीच राशियां है। लेकिन लाल किताब काल पुरूष की कुण्डली को साथ रख कर फलादेश करती है, जैसे दसवें घर में मंगल की राशि मेष (1) या वृश्चिक (8) हो और मंगल वहां बैठा हो तो वह दोगुना शक्तिशाली माना जाएगा। इसी प्रकार पहले घर में सिंह (5) राशि हो और सूर्य वहां बैठा हो तो लाल किताब के अनुसार अपनी राशि का सूर्य उच्च माना जाएगा।
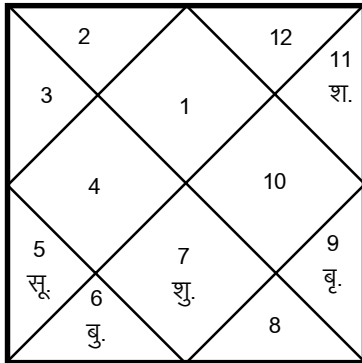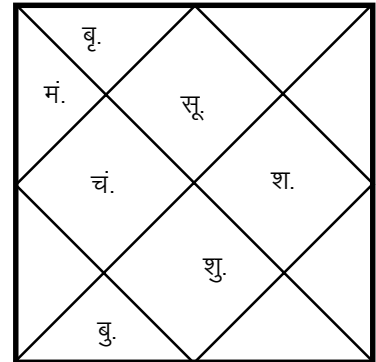
ग्रह का घर

टकराव के ग्रह : लाल किताब के फलादेश के लिए टकराव का अर्थ अति महत्वपूर्ण है और इसे ध्यान में रखना अति आवश्यक है। जो ग्रह एक दूसरे से 1/8 घर में बैठ जायें भले ही वह परम मित्र ही क्यों न हों वह एक दूसरे से शत्रुता करेंगे। यदि एक ग्रह पहले घर में और दूसरा आठवें घर में बैठा हो तो पहले घर का ग्रह आठवें को नुकसान पहुंचाएगा चाहे वह उसका परम मित्र ही क्यों न हो परंतु आठवें घर में बैठा ग्रह पहले घर में बैठे ग्रह पर अपना असर नहीं करता। इस टकराव को लाल किताब में एक आठ की टक्कर कहा गया है।

उच्च और नीच ग्रह

बुनियादी ग्रह : जो ग्रह एक दूसरे से पाचवें नौवे स्थान पर हो चाहे वह ग्रह एक दूसरे के शत्रु ही क्यों न हो तब भी एक दूसरे की सहायता करते हैं यानी एक ग्रह दूसरे ग्रह की बुनियाद बन कर उसकी सहायता करता है। जैसे चंद्रमा चौथे और बुध बारहवें बैठा हो तो दोनों ग्रह एक दूसरे से पंचम–नवम स्थिति में होने से एक दूसरे की सहायता करते हुए उनके शुभ फलों को नष्ट नहीं होने देते।
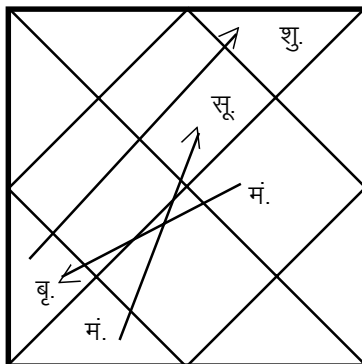
टकराव के ग्रह
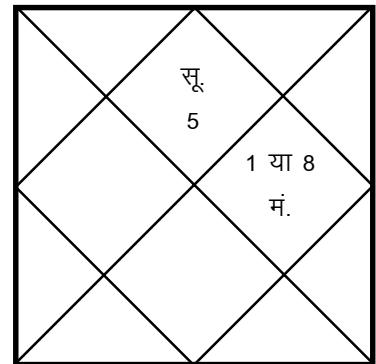
"ग्रह चौथे हो जो कोई बैठा, तासीर चन्द्र वो होता हो। असर मगर उस घर में जाता, शनि जहां कुण्डली में बैठा हो।"

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इसका मतलब है कि चौथे घर में जो कोई ग्रह बैठा हो उसकी शक्ति की जांच करने के लिए यह देखना चाहिए कि वर्षफल में चन्द्रमा कहां बैठा है। यदि चंद्रमा शुभ स्थिति में होगा तो उस ग्रह का असर भी शुभ हो जाएगा और यदि चंद्रमा अशुभ हुआ तो उस ग्रह का असर भी अशुभ हो जाएगा। इसके अलावा उस ग्रह का शुभ या अशुभ प्रभाव उस जगह पर विशेष असर करेगा जहां पर कुण्डली में या लाल किताब के वर्षफल में शनि जहां बैठा होगा।

बुनियादी ग्रह

श. बु. मं. चं. बृ. शु.

इसी प्रकार अगला नियम और है जो नीचे लिखी पंक्तियों से स्पष्ट होता है:

"घर ग्यारह में गृह जो आवे, तासीर शनि वो होता हो।
असर मगर उस घर में जावे, गुरु जहां कुण्डली में बैठा हो।"

इसका मतलब है कि ग्यारहवें घर जो ग्रह बैठा हो, कुण्डली या वर्षफल के अनुसार, उसका प्रभाव कुण्डली में शनि की स्थिति देखकर किया जा सकता है। यदि शनि शुभ होगा तो ग्यारहवें घर का ग्रह भी शुभ फल देगा और यदि शनि अशुभ हुआ तो ग्यारहवें घर के ग्रह का असर भी अशुभ होगा और यह शुभ या अशुभ असर वहां पड़ेगा जहां कुण्डली या वर्षफल में बृहस्पति ग्रह बैठा होगा।

"घर चलकर जो आवे दूजे, ग्रह किस्मत बन जाता है।
घर दसवां गर खाली होवे, सोया हुआ कहलाता है।"

अर्थ यह निकला कि यदि दूसरे घर में कोई ग्रह हो तो वह उस साल के लिए भाग्य का ग्रह बन जाता है, अर्थात धन स्थान के फल को अच्छा कर देता है। लेकिन यदि दसवें घर में कोई ग्रह न हो तब दूसरे
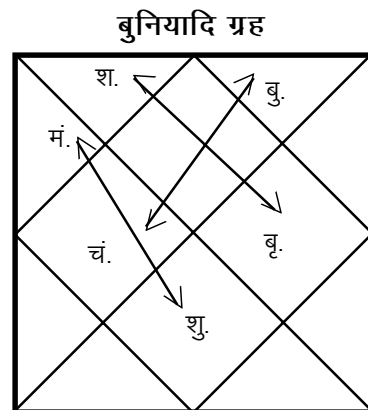
जन्मकालीन चौथे घर का ग्रह
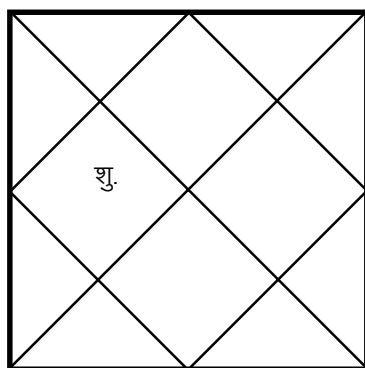
(क)

वर्षफल में चंद्रमा की स्थिति
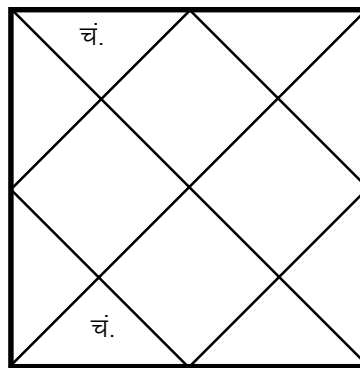
(ख)

जन्मांग में शुक्र चौथे घर में है। यदि वर्षफल में चंद्रमा दूसरे घर में आ जाए तो यह शुक्र शुभ फल देगा और यदि चंद्रमा छठे घर में आ जाए तो यही शुक्र अशुभ फल देगा।

Future Point

घर में आया ग्रह अपना अच्छा फल देने में असमर्थ हो जाता है। यदि दूसरे और दसवें दोनों घरों में ग्रह हों और विशेषकर आपस में शत्रु न हों तो वर्ष व्यक्ति के लिए शुभ रहेगा।

इसी तरह लाल किताब के सिद्धान्त के अनुसार जो ग्रह कुण्डली के आठवें घर में बैठा हो और वही ग्रह लाल किताब के वर्षफल के अनुसार दूसरे घर में आ जावे और वर्षफल में आठवां घर खाली हो तो वह ग्रह बहुत ही शुभ फलदायक सिद्ध होगा, खासकर जातक के आर्थिक क्षेत्र में।

दृष्टि की शक्ति और प्रभाव : लाल किताब की दृष्टियां वैदिक ज्योतिष से भिन्न है। कुछ एक तो बिल्कुल ही अलग है।

"एक सात घर चौथे दसवें पूर्ण दृष्टि होती है,
पांच नौवें और तीजे ग्यारहवें आधी नजर ही रहती है,
आठवें, छठे, दूजे बैठे बारहवें नजर चौथाई कहते हैं।"

कुण्डली का पहला घर सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसी प्रकार कुण्डली का चौथा घर दसवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। तीसरा घर नौवें और ग्यारहवें घर को आधी दृष्टि से देखता है। पांचवां घर नौवें घर को आधी दृष्टि से देखता है। आठवां घर बारहवें भाव को 25 प्रतिशत दृष्टि से देखता है।

दूसरा भाव छठे भाव को 25 प्रतिशत दृष्टि से देखता है।

यह बात ध्यान रखना अति आवश्यक है कि आठवां घर पीछे मुड़कर यानी वक्र दृष्टि से दूसरे घर को देखता है। आठवें के बाद का घर या उसमें बैठा ग्रह वक्र दृष्टि नहीं रखता।

लग्न से लेकर घर नं. 6 तक पहले घर कहलाते हैं और सात से बारहवें भाव में बैठे ग्रह या भाव बाद के भाव या ग्रह कहलाते हैं। यहां पर ध्यान देने योग्य बात है कि दूसरे घर में बैठे ग्रह की दृष्टि छठे घर पर और वहां बैठे ग्रह पर 25 प्रतिशत पड़ती है और अन्य घर पर नहीं। इसी प्रकार सातवें घर में बैठे ग्रह की दृष्टि किसी भी ग्रह पर नहीं पड़ती और नौवें, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें भावों में बैठे ग्रहों की दृष्टि किसी ग्रह पर नहीं पड़ती।

केन्द्र के घरों 1,4,7,10 को बंद मुट्ठी के घर की संज्ञा दी गई है। पहला सातवें को और चौथा दसवें को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

इसके अलावा आठवें का ग्रह दूसरे घर के ग्रह को 100 प्रतिशत दृष्टि से देखता है और किसी भी घर में बैठे ग्रह की दृष्टि 100 प्रतिशत नहीं होती।

घरों की दृष्टियां
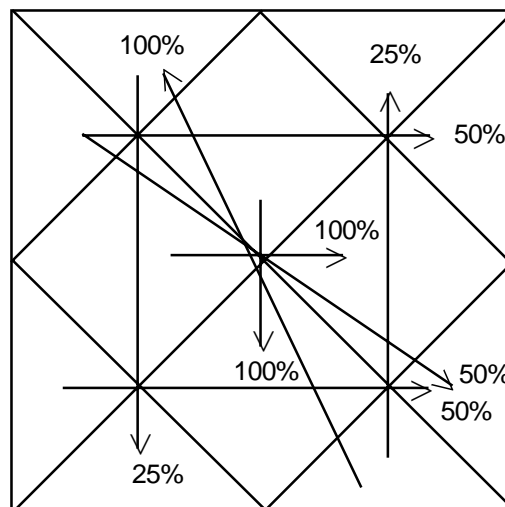
घरों की दृष्टि का अर्थ है उसमें बैठे हुए ग्रह उपर दिए क्रमानुसार देखते हैं। इसके अलावा कई ग्रहों अतिरिक्त दृष्टि का जिक्र भी आता है जिसका विस्तारपूर्वक वर्णन पुस्तक में दिया गया है।

विशेष : लाल किताब में ऊपर दी गई दृष्टियों के अलावा कहीं – कहीं ग्रहों की नैसर्गिक (वैदिक ज्योतिष के अनुसार) दृष्टियों का भी जिक्र आता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

दूसरे घर में स्थित ग्रह छठे घर स्थित ग्रह को 25 प्रतिशत दृष्टि से देखता है। इसी प्रकार शनि छठे घर में हो तो वह दूसरे घर में बैठे ग्रह को 25 प्रतिशत दृष्टि से देखता है। दूसरे घर में चाहे शनि का मित्र ग्रह हो परंतु शत्रु शनि उस पर अपना विषैला प्रभाव डालकर अशुभ कर देता है।

लाल किताब में सोए हुए ग्रह और सोए हुए घर का बहुत महत्व है। सोया हुआ ग्रह या घर सब कुछ होते हुए भी कोई शुभ असर नहीं दे पाता।

सोया घर : जिस घर में कोई ग्रह न हो या जिस घर पर किसी ग्रह की दृष्टि न पड़ती हो वह सोया हुआ घर कहलाता है। जो घर सोया हुआ हो उससे संबंधित चीजों का फल तब तक नहीं मिलता जब तक उसे जगाया न जाए।

सोये हुए घरों को जगाने के लिए ग्रहों की मदद ली जाती है :—
यदि पहला घर सोया हो तो मंगल के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि दूसरा घर सोया हो तो चंद्रमा के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि तीसरा घर सोया हो तो बुध के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि चौथा घर सोया हो तो चंद्रमा के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि पाचवां घर सोया हो तो सूर्य के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि छठा घर सोया हो तो राहु के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि सातवां घर सोया हो तो शुक्र के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि आठवां घर सोया हो तो चंद्रमा के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि नौवां घर सोया हो तो बृहस्पति के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि दसवां घर सोया हो तो शनि के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि ग्यारहवां घर सोया हो तो बृहस्पति के उपाय से मदद ली जाती है।
यदि बारहवां घर सोया हो तो केतु के उपाय से मदद ली जाती है।

सोया घर

सोया ग्रह : जिस ग्रह की दृष्टि में कोई ग्रह न हो वो ग्रह खुद ही सोया हुआ ग्रह माना जाएगा। सोए हुए ग्रह से मतलब है कि वह ग्रह जिस घर में बैठा है उसी में एक तरह से बन्द रहेगा और वह किसी साथी ग्रह की मदद नहीं कर पाएगा। परंतु वह जिस घर में बन्द होगा उसका शुभ या अशुभ असर उस घर के लिए जारी रहेगा। इसके अलावा अगर कोई ग्रह अपने पक्के घर में बैठा हो और उसकी दृष्टि में या उसके उपर किसी ग्रह की दृष्टि न भी हो वह ग्रह पूरी तरह से जागता हुआ माना जाएगा। जैसे सूर्य पहले घर में, मंगल तीसरे घर में, चंद्रमा चौथे घर में, बुध छठे घर में, बुध शुक्र सातवें घर

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point
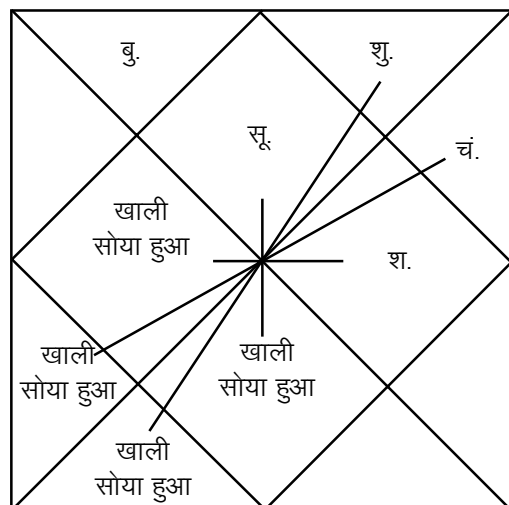
में, बृहस्पति दूसरे, पांचवें, नौवें और बारहवें घरों में, मंगल–शनि आठवें घर में और शनि दसवें ग्यारहवें घर में।

सोए हुए ग्रहों का जागना : सोए हुए ग्रहों का कोई असर नहीं होता इसलिए इनको जागना अति आवश्यक है। यह सोए ग्रह कैसे जागेंगे यह समझना अति आवश्यक है। यदि बृहस्पति सोया है तो आदमी जिस दिन से अपना कारोबार या नौकरी शुरू करेगा, जाग जाएगा।

यदि सूर्य सोया ग्रह है तो सरकारी नौकरी या सरकार से संबंधित कोई भी काम करने पर विशेषकर 22 साल की आयु के बाद सूर्य जाग पड़ेगा और अपना शुभ प्रभाव देना शुरू कर देगा।

सोया हुआ चंद्रमा पढ़ाई आरम्भ करने पर जाग जाता है यदि पढ़ाई पुनः 24वें साल के बाद शुरू की जाए।

सोया हुआ शुक्र शादी के बाद जाग जाता है, जब शादी 25 साल की आयु के बाद हो।

सोया हुआ मंगल 22 साल के बाद जागेगा जब व्यक्ति की शादी या किसी भी प्रकार के किसी औरत से संबंध स्थापित हो जाएगें।

सोया हुआ बुध 34 साल के बाद जागेगा जब व्यक्ति अपना व्यापार करे या बहन अथवा लड़की की शादी करे।

सोया हुआ शनि 36 साल की आयु के बाद जागेगा जब आदमी अपना मकान बनावेगा।

इसी तरह सोया हुआ राहु ससुराल से नज़दीकी संबंध होने पर जागेगा यदि यह संबंध 42 साल के बाद गहरे हों।

सोया हुआ केतु औलाद की पैदाइश के बाद जागेगा। विशेषकर उम्र के 48 साल के बाद फल देना प्रारंभ करेगा।

कुछ परिस्थितियों में वर्षफल के अनुसार ग्रह अच्छा फल देनेवाला होता है। उदाहरण के तौर पर राहु ने चौथे घर नुकसान न करने की कसम खाई है। किन्तु वर्षफल के अनुसार राहु चौथे घर में आ जाए और इन्सान राहु की चीजें स्थापित करेगा तो वही राहु अशुभ फल देने लगेगा।

राहु खराब : आदमी अपने घर में जमीन में मिट्टी खोद ले और उसके ऊपर घर बनाया जाए तो वह मिट्टी रूपी जमीन पूरे खानदान के सुख को जला देगी, या ऐसा व्यक्ति कोयले की बोरियां खरीद कर घर में इकट्ठा करता रहे, या वह व्यक्ति अपने काम में किसी बेऔलाद या ऐसे इन्सान को मिला ले जिसके पुत्र न हो, या ऐसे आदमी के साथ काम करे जो एक आंख से काना हो, या घर के शौचालय को बदलवा

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point
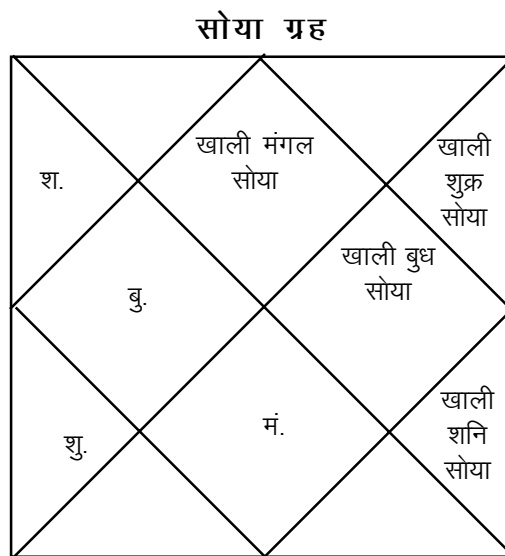
कर नया बनवा ले या सिर्फ मकान की छत उतरवाकर बदलवा ले या घर की पौड़ीयों की मरम्मत करवाए तो उसी समय से नुकसान न करने वाला राहु, राक्षस का रूप धारण कर लेगा और झगड़े—फसाद और नुकसान करवाना शुरू कर देगा।

इसी प्रकार जब जन्म कुण्डली में बृहस्पति शुभ हो और वर्षफल में भी शुभ आ जाए या उच्च का हो तो बृहस्पति से संबंधित वस्तुओं यानी पीपल के पेड़ को उखाड़ना या कटवाना, साधु सन्तों या ब्राह्मणों को सताना अथवा उनका अनादर करना आदि ऐसे कामों से बृहस्पति का सोना मिट्टी हो जाएगा। अर्थात ऐसे व्यक्ति के घर से धन की और मन की शांति समाप्त हो जाएगी।

इसी प्रकार बारहवें घर का केतु चाहे जन्म कुण्डली में हो या वर्षफल में शुभ फलकारक होता है। ऐसे समय में व्यक्ति यदि कुत्तों को मारना शुरू करे तो केतु एकदम अशुभ फल देने लगेगा और केतु संबधित वस्तुओं से लाभ न होगा।

नाबालिग कुंडली : नाबालिग कुंडली वह होती है जिस कुंडली के केंद्र 1, 4, 7, 10 खाली हों या उनमें पाप ग्रह शनि, राहु और केतु हों या अकेला बुध ही उनमें से किसी घर में हो और बाकी घर खाली हों। ऐसे व्यक्ति का बारह साल तक कुछ फलादेश नहीं कहना चाहिए। यदि कुंडली ऊपर कहे कारणों से नाबालिग हो तो निम्नलिखित उपाय करने चाहिए :—

उम्र के पहले साल में	सातवें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के दूसरे साल में	चौथें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के तीसरे साल में	नौवें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के चौथे साल में	दसवें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के पाचवें साल में	ग्यारहवें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के छठे साल में	तीसरें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के सातवें साल में	दूसरे घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के आठवें साल में	पाचवें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के नौवें साल में	छठें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के दसवें साल में	बारहवें घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के ग्यारहवें साल में	पहले घर के ग्रह का असर और उपाय
उम्र के बारहवें साल में	आठवें घर के ग्रह का असर और उपाय

इन बारह वर्ष की उम्र तक अगर कोई घर खाली हो तो क्या उपाय करना चाहिए, यह इसपर निर्भर करेगा कि खाली घर में जो राशि पड़ी है उसके स्वामी को ही मान्य समझ कर उपाय होगा न कि कारक ग्रह को।

मनसुई ग्रह : लाल किताब में हर एक ग्रह में दो ग्रहों का अंश माना गया है। एक पक्के ग्रह के जो दो अंश होंगे उनको पक्के का मनसुई अंश या मनसुई ग्रह कहा गया है। एक पक्का ग्रह उन दो मनसुई ग्रहों से ही बनेगा। हर पक्के ग्रह के मनसुई ग्रह नीचे दी गई तालिका अनुसार हैः—

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

पक्का ग्रह	मनसुई ग्रह	असर
बृहस्पति	सूर्य, शुक्र	औलाद की पैदाइश
सूर्य	बुध, शुक्र	अपने स्वास्थ्य
चन्द्रमा	सूर्य, बृहस्पति	मां–बाप के बारे
शुक्र	राहु, केतु	दुनियाबी दुख–सुख (औलाद से भोग)
मंगल शुभ	सूर्य, बुध	औलाद के जीवन
मंगल बद	सूर्य, शनि	तथा उनकी आय
बुध	बृहस्पति, राहु	दुनियाबी शोहरत
शनि अगर केतु जैसा हो	शुक्र, बृहस्पति	जीवन में आने वाली
शनि अगर राहु जैसा हो	मंगल बुध	सख्त बीमारी
राहु (उच्च)	मंगल, शनि	दूसरों के साथ
राहु (नीच)	सूर्य, शनि	झगड़े फसाद
केतु (उच्च)	शुक्र, शनि	जीवन में की
केतु (नीच)	चंद्र, शनि	जाने वाली ऐश।

लाल किताब में मनसुई (बनावट) के ग्रहों को या हर पक्के ग्रह के दो अंशों को समझना और ठीक से गौर करना किसी भी उपाय को सही ढंग से करने में बहुत सहायता कर सकता है।

उपाय के लिए : मान लीजिए बुध दूसरे घर में बैठा है। बुध के मनसूई या बनावट के ग्रह बृहस्पति और राहु है। दूसरा घर बृहस्पति का पक्का घर है और यहां बैठा बृहस्पति शुभ फलकारक है। लेकिन यहां बैठे बुध में बृहस्पति के साथ–2 राहु भी अशुभ है। राहु यहां बैठ कर अच्छा फल नहीं देता। दूसरे शब्दो में इस घर का राहु किस्मत को उतार–चढ़ाव की जिन्दगी बना देता है। दूसरे घर में पड़े बुध से शुभ फल लेने के लिए राहु के स्वभाव को बदलना होगा इसके लिए चान्दी की ठोस गोली यदि व्यक्ति अपने पास रखे तो राहु का क्रूर स्वभाव बदल जाएगा और उसका खराब असर बृहस्पति से हट जाएगा। दूसरे घर का बुध शुभ होकर बृहस्पति का असर देना शुरू कर देगा यानी धन दौलत, इज्जत तथा समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

दूसरे उदाहरण को लेकर मान लें कि किसी कुण्डली में शुक्र बारहवें भाव में है (जहां लाल किताब के अनुसार वह उच्च का है) लेकिन बारहवें भाव का यही शुक्र शुभ फल नहीं दे रहा हो तो मान्यता है कि शुक्र के मनसुई ग्रह यानी राहु केतु ठीक स्थिति में नहीं होंगे। बारहवें घर में केतु शुभ होता है और शुक्र के साथ शुभ फल देता है। शुक्र का दूसरा मनसुई ग्रह राहु है इसलिए यदि राहु का उपाय किया जाए तो वह वहां से अपना प्रभाव छोड़ देगा और शुक्र के साथ केतु शुभ फल देगा। बारहवें राहु के स्वभाव को मंगल की मदद लेकर बदला जा सकता है। इसलिए किसी आयताकार थैली में सौंफ (जो कि मंगल का प्रतीक है) भरकर रखने से राहु का बुरा प्रभाव खत्म हो जाएगा। इसके अलावा बारहवें शुक्र के दुश्मन ग्रह राहु की दुसरी वस्तु जौ है, अगर जौ को जमीन में दबा दें यानी छठे घर की मदद लें तो भी राहु शुक्र को अपने प्रभाव से मुक्त कर देगा। इसी प्रकार दूसरे मनसुई ग्रहों में से जो अशुभता का प्रतीक है

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

ग्रहों के पक्के घर/खाने
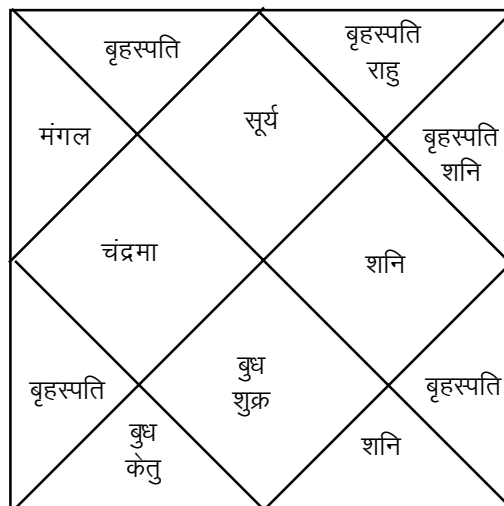
उसके प्रभाव को समाप्त करके किसी भी ग्रह का शुभ फल लिया जा सकता है।

ग्रहों की कुर्बानी : कुछ ग्रहों के स्वभाव को समझने के लिए लाल किताब के अनुसार ग्रहों की कुर्बानी को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। कई दफा एक ग्रह अच्छी स्थिति में होते हुए अपना अच्छा फल नहीं दे पाता, इसका कारण है उस ग्रह की कुर्बानी दी जा रही है या वह ग्रह कुर्बानी का बकरा बन रहा है। ग्रहों की कुर्बानी का अर्थ यह है कि एक असली ग्रह अपने स्थान किसी और ग्रह की हालत खराब कर देता है जिससे उसका अपना फल तो खराब नहीं होता लेकिन कुर्बानी ग्रह का फल खराब हो जाता है। कौन ग्रह किस ग्रह की कुर्बानी देता है, इसका विस्तारपूर्वक वर्णन नीचे दिया जाता है :–

शनि : शनि ग्रह ने राहु और केतु को अपने बचाव के लिए रखा हुआ है और दोनों शनि के चेले राहु और केतु जिनका बनावट का ग्रह है शुक्र, शुक्र की कुर्बानी दिला देते हैं। बेशक शुक्र कुण्डली में अच्छा पड़ा हो व्यक्ति की स्त्री पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। शनि और सूर्य जब कुण्डली में इकट्ठे हों तो ऐसा होता है।

बुध : बुध और शुक्र की दोस्ती है। बुध एक चालाक ग्रह है। इसलिए उसने अपने बचाव के लिए शुक्र को साथ रखा हुआ है, इसलिए जब भी बुध पीड़ित होगा तो शुक्र की कुर्बानी दिलवाएगा।

मंगल : अगर मंगल अशुभ हो तो वह केतु की कुर्बानी दिलवाता है। अगर हम मंगल बद के मनसुई ग्रहों को देखें तो वह है सूर्य और शनि यानी बाप और बेटा इसलिए कुण्डली में जब मंगल बद होगा तो वह अपना प्रभाव अपने बेटे पर डालेगा।

शुक्र : शुक्र ग्रह अपनी जान बचाने के लिए चन्द्रमा की कुर्बानी दिलवाता है। शुक्र औरत का रूप है और शैतान स्वभाव है। खुद अपनी बला चंद्रमा यानी कुण्डली वाले की माता पर डालेगा। जैसे चंद्र और शुक्र मुकाबले के ग्रह हों तो माता की आयु या नजर पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

बृहस्पति : बृहस्पति ने भी अपने बचाव के लिए केतु के साथ रखा हुआ है। जब भी बृहस्पति मुसीबत में आएगा अपनी बला केतु के सर डाल देगा। जैसे बृहस्पति घर नं. 5 में हो और चोट खाया हुआ हो, ऐसे बृहस्पति की दशा आ जाए और उस समय केतु घर नं. 6 में हो तो केतु का अशुभ फल इन्सान की औलाद पर न होकर ऐसा केतु व्यक्ति के मामा को मुसीबत में डाल देगा।

सुर्य : जब सूर्य की टकराव में खराब होगा तो अपनी बला केतु के सर डाल देगा।

चन्द्र : इसी प्रकार चन्द्रमा अपने दोस्त ग्रहों यानी सूर्य, बृहस्पति और मंगल अपना कुछ बुरा असर डालकर स्वयं अपने आप को बचा लेगा।

राहु–केतु : राहु और केतु ऐसे ग्रह है जो मुसीबत के वक्त किसी की मदद न लेकर अपनी बला खुद ही टालते हैं। इस मुश्किल का असर इनकी कारक चीजों पर पड़ सकता है जैसे राहु टकराव में खराब हो तो साले या बहनोई पर और केतु खराब हो तो बेटे पर असर पड़ेगा या जातक के पांव में कोई खराबी आ जाएगी।

आयु पर ग्रहों का प्रभाव : लाल किताब में ग्रहों के प्रभाव को 35 साला चक्र कहते हैं। लाल किताब का वर्षफल बनाते समय जिस ग्रह का उस समय प्रभाव चल रहा हो उसी ग्रह की स्थिति पर विशेष ध्यान देने पर फलादेश और स्पष्ट हो जाएगा। ग्रहों की दशा नीचे की तालिका के अनुसार होती है।

ग्रह	आयु के वर्ष चक्र 1	चक्र 2	चक्र 3
बृहस्पति	16 से 21 तक	51–56 तक	86–91 तक
सूर्य	22 से 23	57–58 तक	92–93 तक
चंद्रमा	24 से 25 तक	58–59 तक	93–94 तक
शुक्र	25से 27 तक	60–62 तक	95–97 तक
मंगल	28से 33 तक	63–68 तक	98–103 तक
बुध	34से 35 तक	69–70 तक	104–105 तक
शनि	1 से 6 तक	36–41 तक	71–75 तक
राहु	7 से 12 तक	42–47 तक	76–82 तक
केतु	13से 15 तक	48–51 तक	83–85 तक

जिस प्रकार विंशोतरी दशा, अंतर दशा फल देती है और दशा एक क्रम से चलती है। लाल किताब में दशा की जगह ग्रहों का कर्म है और वह भी एक निश्चित क्रम के अनुसार चलते हैं। जैसे आयु के पहले वर्ष से छठे वर्ष तक शनि का कर्म या प्रभाव होगा और उन सालों के वर्षफल में शनि यदि आठवें आ जाए तो बिमारी का कारण बन सकता है और यदि शनि ग्यारहवें आ जाए तो अच्छा फल दे सकता है। वैसे ग्यारहवें शनि का लाभ बच्चे को तो क्या होगा तो उसका असर उसके मां बाप की वित्तिय स्थिति पर पड़ेगा। इसी क्रम से शनि के बाद राहु का समय आता है जो सात साल से 12 साल तक प्रभाव रखता है। इसके बाद केतु का समय है जो कि 13 साल से 15 साल तक अपना असर देता है। इसी केतु के

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

समय में बच्चों का मन पढ़ाई की तरफ से उचाट होने लगता है और उनकी एकाग्रता भंग होने लगती है। कारण यह कि केतु पांव के चक्कर, दिमाग के चक्कर का प्रतीक है या कारक है। यह ग्रह हमारी मानसिक स्थिरता को असंतुलित करता है। इन तीन सालों में अगर केतु अशुभ घरों में आता रहे तो पहले की अपेक्षा विद्यार्थी के अंकों में गिरावट आ जाती है। इसके बाद 16 से 21 वर्ष की आयु तक 6 साल बृहस्पति का क्रम है और यदि बृहस्पति इन 6 सालों में अच्छे घरों में आता रहे तो बृहस्पति की कारक चीजों से फायदा मिलता है। आयु के 22 से 23 वें साल सूर्य का, 24वें साल में चंद्रमा का असर रहता है। इसके बाद 25 से 27 साल तक शुक्र का क्रम रहता है और 26 से 33 साल तक मंगल का असर रहता है, इसके बाद 34–35 वें साल बुध के असर के हैं। इसको 35 साल का चक्कर या क्रम कहते हैं इसके बाद पुनः शनि का क्रम चालू हो जाता है।

ग्रहों के विशेष वर्ष और राशि में ठहराव

नं.	ग्रह	वर्ष	श्रेष्ठ वर्ष	ठहराव की अवधि
1	सूर्य	22	20	एक महीना
2.	चंद्रमा	24	22	सवा दो दिन
3.	मंगल	28	26	एक महीना + 15 दिन
4.	बुध	34	32	एक महीना
5.	बृहस्पति	16	10	सवा साल
6.	शुक्र	25	23	एक महीना
7.	शनि	36	34	सवा दो वर्ष
8.	राहु	42	40	एक साल 6 मास
9.	केतु	48	40	एक साल 6 मास

विशेष : यदि कोई ग्रह अपने मित्र के घर में बैठा हो तो उस ग्रह के वर्षों में मित्र ग्रह के वर्ष जमा करके दो से भाग देने पर जो शेष बचे उस वर्ष वह ग्रह विशेष फल देगा।

(क) मान लो किसी व्यक्ति का सूर्य घर नं. 4 में बैठा है या कर्क राशि में बैठा हो तो सूर्य के वर्षों (22) में चंद्रमा के वर्ष (24) जमाकर दो से भाग देवें। 22+24 = 46 ÷ 2 = 23 अतः 23 वें वर्ष में सूर्य का विशेष प्रभाव होगा।

(ख) इसी प्रकार कोई ग्रह अपने शत्रु के घर या राशि में हे तो उस ग्रह और राहु ग्रह के वर्षों को जोड़ कर दो से भाग देने पर जो शेष बचे उस वर्ष ग्रह अनिष्टकारी होगा। जैसे सूर्य यदि शनि के घर (या राशि) में आ बैठे तो दोनों के वर्षों सूर्य (22) + शनि (36) को जमा कर दो से भाग देने पर जो बचे उस वर्ष सूर्य बुरा असर देगा । जैसे 22 + 36 = 58 ÷ 2 = 29वें साल सूर्य अनिष्टकारी होगा।

लाल किताब के महत्वपूर्ण नियम : इस अध्याय में सभी ग्रह जन्म कुण्डली के हिसाब से विचाराधीन लाने चाहिए और उपाय करने चाहिए। यदि वर्षफल में भी कुण्डली के हिसाब से ग्रह आ जाए तो उस

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

वर्ष मना किया गया कार्य या दान कोई शुभ फल नहीं देगा, बल्कि हानि का कारण भी बन सकता है।

1. उच्च ग्रह वाले व्यक्ति को उच्च ग्रह संबंधी चीजों का दान करना और नीच ग्रह संबंधी चीजें मुफ्त में लेना न केवल हानि का कारण बनेगा बल्कि मीठे जहर का काम करेगा।
2. यदि चंद्रमा छठे घर में हो तो सारी जिन्दगी (और यदि वर्षफल में छठे आए तो उस साल) आम लोगों के लाभ के लिए मुफ्त तालाब, कुआं या बावड़ी बनवाना या पानी का दान करना, प्याऊ लगवाना या कुओं की मरम्मत आदि करवाना (उन कुओं की जो आम लोगों के लिए हों) जातक को सन्तानहीन करके छोड़ेगा और उसका वंश बिना समय की मौतों से घटता जाएगा।
3. शनि अगर कुण्डली के घर नं. 8 में हो तो सारी जिन्दगी (यदि वर्षफल में घर नं. 8 में आए तो उस साल) व्यक्ति यदि धर्मशाला बनवाए या ऐसे मकान बनवाए जहां मुसाफिर मुफ्त आराम करें तो जातक स्वयं बेघर हो जाएगा, ऐसा लाल किताब का कथन है।
4. यदि शनि पहले घर में और बृहस्पति पांचवें घर में हो तो ऐसा जातक यदि किसी मांगने वाले फकीर को ताम्बे का पैसा दान करेगा तो उसके अपने बच्चों की अचानक मृत्यु के लिए बिजली की लकीर तथा अशुभ खबरों व मौतों के सन्देशे आने लगेंगे।
5. जब बृहस्पति घर नं. 10 और उसी समय चंद्रमा घर नं. 4 में हो तो ऐसे व्यक्ति को धर्मार्थ जगह यानी मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारा आदि नहीं बनवाना चाहिए यानी ऐसे धार्मिक स्थान जो आम लोगों के प्रयोग के लिए हों। यदि ऐसा इन्सान इन कार्यों में हिस्सा लेता है तो धार्मिक कार्य के कारण झूठा आरोप लगने का भय जिससे कठोर सजा मिल सकती है। पुराने समय में ऐसे आरोप फांसी तक का कारण बन जाते थे।
6. यदि शुक्र घर नं. 9 में हो तो ऐसे व्यक्ति के लिए गरीब व यतीम बच्चों की पढ़ाई के लिए वजीफा देना यानी उन बच्चों की पढ़ाई व पुस्तकों या किसी अन्य तरह से मदद करना उस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को तहस–नहस कर देता है।
7. यदि चंद्रमा घर नं. 12 में हो तो धर्मोपदेश देनेवाले को हर रोज मुफ्त रोटी खिलाना या कोई स्कूल मुफ्त विद्या देने के लिए जारी करना दुःखों का कारण बन सकता है क्योंकि ऐसे जातक को इन कामों के करने पर ऐसी बिमारियां या कठिनाइयां खड़ी कर देगा कि उसे पानी तक न मिलेगा जो उसकी तड़पती जान को शक्ति दे सके या उस को अन्तिम समय शान्ति की मौत दे सके।
8. यदि बृहस्पति घर नं. 7 में हो तो ऐसे व्यक्ति के लिए किसी साधु या धर्म स्थान के पुजारी को नए कपड़े नहीं देने चाहिए अगर वह ऐसा करता है तो खुद बिना कपड़ों के हो जाएगा यानी निर्धनता उसके घर में वास करने लगेगी और उसकी अपनी औलाद पर बुरा असर पड़ेगा।

रिहायशी मकान से संबंधित महत्वपूर्ण नियम

1. अगर रहने के मकान में दाखिल होते ही अगर पहले छते हुए हिस्से में जमीन के नीचे कुंए की तरह खुदी हुई भट्टी जो सिर्फ विवाह शादियों के वक्त खोली जाए और बाद में मिट्टी डाल कर बन्द कर

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

दी जाए तो वह सदा के लिए कायम हुई कही जाती है। ऐसे कायम की गई भट्ठी वाले जातक के घर जब भी कोई ऐसा बच्चा पैदा होगा जिसकी कुण्डली में मंगल घर नं. 8 में होगा तो जातक और उसके खूनी रिश्तेदारों के घर ऐसी तबाही शुरू होगी कि लोग कहेंगे सब भट्टी में जलकर नष्ट हो जाएगा। अगर ऐसी भट्टी कायम हो तो उसे खुदवा कर सारी की सारी मिट्टी चलते पानी या दरिया में बहा देनी चाहिए।

2. जिस व्यक्ति ने अपने निवास स्थान पर मूर्तियां आदि रख कर पूजा की जगह बना ली हो जिसे कि मन्दिर स्थापित करना कहते हैं। ऐसे आदमी के घर जब ऐसा लड़का पैदा होगा जिसके बृहस्पति घर नं. 7 में होगा तो आगे के लिए सन्तानहीनता की घंटियां बजा देगा। इसलिए ऐसी मूर्तियां धर्म घरों यानी मन्दिर आदि में ही शुभ गिनी जाती है। कागज पर बनी फोटो या किसी देवी – देवता की तस्वीर दीवार पर लटकाई जा सकती है।
3. पुराने मकानों में दाखिल होने से आखिर में एक अन्धेरी कोठरी बनवाई जाती थी। इस कोठरी में दाखिला होने के लिए एक दरवाजे के अलावा कुछ नहीं होता था जहां से हवा या रोशनी आ जा सके। यदि इस प्रकार का मकान किसी व्यक्ति का हो और वह उसमें कोई रोशनदान, खिड़की या दरवाजा बनवा ले तो वह घर, वंश बर्बाद हो जाएगा। अगर किसी वजह से ऐसे मकान की छत बदलनी पड़ जाए तो पहले पुरानी छत के ऊपर एक और छत बनाए फिर पुरानी छत गिराएं। बरना बरबादी का कारण बनेगी।
4. पुराने जमाने में रहने के घरों रूपये और जेवर आदि छुपाने के लिए गुमनाम छिपे हुए गड्ढे बना लिए जाते थे। आजकल ऐसा रिवाज नहीं है। अब यह गड्ढे अगर खाली पड़े रहें तो धन दौलत के नाम पर खाली बुध (गड्ढे) बोलता होगा, यानी उस घर के मालिकों की बातें और शान फोकी होगी न कि पायेदार। ऐसे खाली गड्ढें में बादाम और छुआरे रखने चाहिए।
5. मकान के फर्श यदि कच्चा ना हो तों इस घर में शुक्र का निवास नहीं माना जाता यानी उनका गृहस्थ, स्त्रियों का मान, सेहत और धन सब ये शनि के बुरे पत्थर ही पड़ते हैं, देखने में चाहे ऐसे लोग तीस मार खां ही बने रहते हों। यदि किसी घर में कच्चा हिस्सा न हो वहां शुक्र की चीजें स्थापित करनी चाहिए। गाय पालना या मनीपलांट का पौधा या आलू का पौधा लगाना।
6. दक्षिण द्वार का मकान स्त्रियों के लिए विशेषकर मंदा होता आदमी भी सुख नहीं पाता। रंडुवों के रहने की जगह या मातम की जगह हुआ करती है। इसलिए मुख्य दरवाज़ा दक्षिण दिशा की ओर से हटा कर बनवा लेना चाहिए।

धर्म स्थान से संबंधित विशेष नियम

1. यदि कुण्डली में घर नं. 2 और 12 में शुभ ग्रह हों तथा 8 व 11 ग्रह आपस में शत्रु हों, तो ऐसे व्यक्ति को धर्म स्थान में जाने से न किसी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा न कोई उसे धोखा दे सकेगा, यानी ऐसे व्यक्ति के लिए धर्म स्थान जाना शुभ होगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

2. यदि घर नं. 8 और 12 में स्थित ग्रह आपस में शत्रु हों और घर नं. 2 खाली हो तो धर्म स्थान जाना अशुभ रहे। 8 और 12 के ग्रहों का टकराव।
3. यदि घर नं. 8 और 12 में स्थित ग्रह आपस में मित्र हों या घर नं. 6 में कोई शुभ ग्रह हो और घर नं. 2 खाली हो तो धर्म स्थान जाना अति शुभ रहे।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. अंधे ग्रहों का कुण्डली और रतान्ध ग्रहों के कुण्डली में अन्तर लिखें। रतान्ध ग्रहों वाले कुण्डली में क्या उपाय किए जाते हैं।
2. साथी ग्रहों का अर्थ लाल किताब के अनुसार क्या है। विस्तार से लिखें।
3. मनसूई ग्रह का अर्थ क्या है। चंद्रमा के मनसूई ग्रह कौन–2 से है।
4. कुण्डली में मंगल बद कैसे होता है और इसका उपाय क्या है ?
5. लाल किताब के नियमानुसार एक/आठ की टक्कर और उसके अशुभ या शुभ असर को विस्तारपूर्वक लिखें।
6. बुनियादी ग्रह को विस्तारपूर्वक लिखें।
7. किस्मत का ग्रह कौन होता है। उसके शुभ या अशुभ प्रभाव परिस्थिति के अनुसार लिखें।
8. सोए घरों और सोए ग्रहों में क्या फर्क है। किस उपाय द्वारा सोए घर या ग्रह को जगाया जा सकता है।
9. ग्रहों की कुर्बानी के बारे में विस्तारपूर्वक लिखें।
10. धर्म स्थान जाना क्यों या किन हालातों में वर्जित है।
11. घर में मन्दिर स्थापित करना अशुभ क्यों है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

भाग—2

बारह भावों की व्याख्या

पहला भाव : पहले भाव से जातक की हैसीयत, मकान की चारदिवारी तथा मकान जमीन के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। व्यक्ति की भूख और स्वभाव, वह कितना परोपकारी होगा, पहले भाव से इन चीजों के बारे में 25 प्रतिशत जाना जा सकता है बाकि 75 प्रतिशत नौवां भाव दर्शाता है।

पहला भाव किसी भी इन्सान की उम्र के पहले भाग को दर्शाता है यानी पहले साल से पचीसवें साल तक की आयु के बारे में दर्शाता है। पहले भाव से पूर्व जन्म से चले आए कर्मों का यानी कर्म जिनका फल इस जन्म में भोगना है, उनका भी संबंध है। इसी प्रकार पहला भाव पूर्व दिशा का भी कारक है यानी जिस व्यक्ति का सूर्य कुण्डली में अच्छा होगा उसके लिए पूर्व दिशा का मकान काफी शुभ होगा। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का मंगल अच्छा होगा उसके लिए दक्षिण दिशा का मकान होना अशुभ फल नहीं देगा।

पहला भाव सवारी यानी स्कूटर, गाड़ी और घोड़ा इन बातों को भी दर्शाता है। यही भाव धन की स्थिति भी बताता है, वो धन जो इन्सान अपनी कोशिशों से कमाता है। इसी भाव से कारोबार संबंधित चीजों को देखा जाता है जैसे हमारा कार्य क्षेत्र, धन—दौलत, सांसारिक हैसियत, कोई इन्सान किस उँचाई तक पहुंचेगा। उदाहरण के तौर पर पहले भाव में बृहस्पति बैठा हो तो उसको गद्दीनशीन साधक कहा गया है, मतलब बृहस्पति एक साधु, और पहला घर गद्दी यानी राजगद्दी पर बैठा एक साधु। यानी ऐसा साधु जो साधु होकर भी राजा की तरह हो।

पहले भाव का कारक ग्रह सूर्य। सूर्य यहां उच्च का फल देता है। शनि पहले भाव में नीच का माना जाता है। कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार पहले घर का मालिक मंगल है और इस घर में मंगल का होना शुभ होता है। यहां पर राहु, राशिफल का कारक और मंगल नेक ग्रहफल का होगा, जिसका कोई उपाय नहीं होता।

पहले भाव का कारक सूर्य होने के कारण सूर्य कहीं भी बैठा हो, उसकी हालत देखकर पहले घर के बारे में पता चलेगा।

दूसरा भाव : कुण्डली का दूसरा भाव जातक की इज्जत व धन को दर्शाता है। दूसरे घर के धन का मतलब है जो शुभ ढंग से कमाया गया हो। रिश्वत आदि से कमाए गए धन का संबंध छठे घर से है। मकान या दुकान संबंधी चीजों का पता भी दूसरे घर से चलता है।

दूसरा घर ऐशो आराम, ज्ञान, अन्दर की नेकी—बदी, दुनिया से मोहमाया या दूसरों से काम निकलवाने का ढंग दर्शाता है। इसके अलावा प्रेम का संबंध भी इसी घर से है।

दूसरे घर का कारक बृहस्पति है, लेकिन कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार इसका मालिक शुक्र है और चंद्रमा यहां उच्च का माना जाता है। बृहस्पति के इस घर के कारक होने के कारण यह घर 1 से 25

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

साल तक प्राप्त ज्ञान को दर्शाता है। जातक की अपनी किस्मत का या दुनिया से जो धन वह प्राप्त करेगा उसका संबंध भी इसी घर से है। यह घर मिट्टी, खेती, सब उड़ने वाली गैसों से भी सबंध रखता है इस घर को आध्यात्मिक तौर पर संयासी के धन का कारक कहा जाता है। संयासी के धन का मतलब है जो धन शुभ ढंग से बचाया जाए।

दूसरा घर जन्म – मरण का दरवाजा भी कहा जाता है। दूसरा घर ससुराल को भी दर्शाता है। ससुराल के साथ संबंध कैसे या ससुराल की स्थिति कैसी होगी यह दूसरे घर से पता चलता है।

घर में रखे पालतू जानवर या पुराने जमाने में जहां गाय भैंस बांधते थे उसे दूसरे घर से देखते हैं। दूसरे घर को मन्दिर या धर्म स्थान भी कहा जाता है। दूसरे घर से ऐसे पौधे को देखते हैं जिसे शाखा तोड़ कर उगलिया जाता हो। जैसे मनी प्लांट, रतनजोत आदि।

इन्सान के शरीर में माथे में तिलक लगाने के स्थान से गर्दन तक का हिस्सा भी इसी घर से देखते हैं। दिशाओं में दूसरा घर उत्तर–पश्चिम दिशा को दर्शाता है। बृहस्पति दूसरे घर में अति शुभ फल देता है। आम तौर पर इस घर में बैठे सभी ग्रह शुभ फल देते हैं। अगर घर नं. 8 खाली हो तो इस घर में आए सभी ग्रह ग्रहफल के होते हैं और उनका कोई उपाय नहीं होता। उनका उपाय करने के लिए किसी और ग्रह की मदद लेनी पड़ती है।

तीसरा घर : तीसरे घर का ग्रह मंगल है और तीसरे घर की राशि का मालिक बुध है। लेकिन मंगल का अधिक अधिकार होने के कारण बुध यहां शुभ फल नहीं देता, क्योंकि मंगल बुध को कमजोर कर देता है।

तीसरे घर से जातक का जिम्मेदार होने, अपने फर्ज को निभाने और शौर्यवान होने का पता चलता है। शौर्य या बहादुरी का मतलब है इन्सान किस हद तक दूसरों की सहायता करता है।

तीसरे घर का संबंध मकान में रखे सामान से भी है, यदि यहां पर शुभ ग्रह होंगे तो आराम के साधन काफी मात्रा में प्राप्त होंगे और यदि अशुभ तो आराम के साधनों में कमी होगी। उत्साह, स्फूर्ति, दृष्टि के प्रभावशाली होने, चोरी और बीमारी का संबंध भी इसी घर से है।

जातक के जीवन में उतार–चढ़ाव को भी यही घर दर्शाता है। यह दक्षिण दिशा का कारक है, क्योंकि मंगल ग्रह भी दक्षिण दिशा को दर्शाता है। इस घर में मेष, वृश्चिक या मकर राशि का मंगल बहुत ही शुभ होता है।

इस घर से जातक के घर में रखे हथियारों का पता चलता है। यदि इस घर में शुभ ग्रह हो तो टूटे हथियारों के या ऐसे हथियारों को जिनकी धार तेज न हो, घर में रखना अशुभ फल देता है। इसी घर से दूसरे रिश्तेदारों और मित्रों की आर्थिक स्थिति का पता चलता है। इस घर में कोई शुभ ग्रह हो या मंगल अच्छी स्थिति में हो तो भाइयों की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी।

यदि कुण्डली में तीसरा घर अशुभ हो तो पैसे का नुकसान करवाता है। साले या बहनोई के बारे में बाताता है, जैसे यदि कारक राहु यहां बैठा हो तो जातक के साले के साथ अच्छे संबंध हो सकते हैं और उससे लाभ भी प्राप्त हो सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

जीवन में लड़ाई–झगड़े, लेन–देन भी तीसरे घर से देखे जाते हैं। तीसरा घर मौत की स्थिति को दर्शाता है और मौत के पहले समय पर रोशनी डालता है इसलिए यह मौत का घर भी है। यह घर फलदार पौधों को दर्शाता है। यदि यहां शुभ ग्रह हों तो घर में फलदार पौधे लगाने चाहिए वर्ना नहीं।

तीसरा घर आंख की पलकों, जिगर, खून की मात्रा तथा खून से संबंधित दोषों को बतलाता है। यह घर जातक की जवानी की उम्र भी बताता है। यदि यहां शुभ ग्रह हों तो जातक जवानी में काफी उन्नति कर सकता है। लेकिन यदि यहां अशुभ ग्रह हों तो जातक को समय पर पूरी मेहनत का फल नहीं मिलता। तीसरे घर में शनि ग्रह, ग्रहफल का होगा लेकिन दौलत के संबंध में राशिफल को देखा जाता है।

चौथा घर : चौथे घर का मालिक व कारक चंद्रमा है, जो इस घर में उच्च फल का है। यानी चंद्रमा या बृहस्पति का चौथे घर में होना शुभ ही है। इस घर से पिता से क्या प्राप्त होगा, पिता कि स्थिति कैसी होगी, पिता के साथ संबंध कैसे होंगे आदि देखे जाते हैं।

कुण्डली का चौथा घर पानी रखने की जगह दर्शाता है। यह नल, कुआं आदि का भी कारक है। गर्म या सर्द तासीर, मन की शान्ति और खुशी का संबंध भी चौथे घर से है। चौथे घर में अशुभ ग्रह होने पर मन की शांति मुरझाए फूल की तरह छिन जाती है और इन्सान के हौसले में कमी आती है।

चौथे घर का संबंध जीवन के दूसरे हिस्से यानी 25 साल से 50 साल तक की आयु से है। इस घर से गृहस्थ जीवन, जवानी आदि कहां तक लाभदायक होंगे। इसका पता चलता है। यह घर किस्मत के उस हिस्से से संबंधित है जो जातक पूर्वजन्म से अपने साथ लाया है।

यह घर उत्तर–पूर्व की दिशा दर्शाता है। चौथा घर कपड़े संबंधी व्यापार से लाभ देता है। इसके अलावा पानी व दूध भी चौथे घर के अन्तर्गत आते हैं। इसीलिए इसे बढ़ने वाली आमदनी का दरिया कहा गया है। यदि चौथे घर में चंद्रमा, बृहस्पति या कोई शुभ ग्रह हो और दसवें घर में कोई अशुभ ग्रह न हो तो कपड़े संबंधी कारोबार से लाभ होगा।

चौथे घर से शैशव काल तथा माता की सेहत के बारे में पता चलता है। यदि यहां अशुभ ग्रह हों और चंद्रमा कमजोर हो तो बचपन में स्वास्थ्य खराब रहे। यहां पर यदि शुक्र और राहु या मंगल और केतु हों तो माता की सेहत खराब रहती है। ननिहाल के बारे में भी चौथे घर का महत्व है। अशुभ ग्रह होने पर मामा पर बुरा असर पड़ता है। नीच का मंगल मामा की मृत्यु को या जीवन मृत्यु तुल्य बना देता है।

दूध देनेवाले जानवर जैसे गाय, भैंस आदि इसी घर से संबंध रखते हैं। सवारियों में यह घोड़े का कारक है क्योंकि चंद्रमा को 'सफेद घोड़ा' या 'दरियाई घोड़ा' कहकर पुकारा गया है। चौथे घर को लक्ष्मी का स्थान भी कहा गया है। यदि यहां शुभ ग्रह हो तो घर के उस भाग में धन रखने से अति शुभ फल मिलता है।

यह घर पौधों और दरख्तों में रस भरे फलों वाले पौधों और वृक्षों का कारक है क्योंकि रस पानी का रूप है। रस भरे पौधे इस घर से देखे जाते हैं।

शरीर के अंगों में चौथे घर का संबंध छाती और दिल से है। कई बार चौथे घर में अशुभ ग्रह होने से दिल की बीमारी होने का डर रहता है। औरतों के कुण्डली में चौथा घर पेट के अन्दरूनी हिस्से को दर्शाता

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

है। अगर औरत के कुण्डली में चौथे घर में अशुभ ग्रह हों तो गर्भावस्था या बच्चा होने के समय सेहत खराब होती है।

धन के मामले में चौथा घर पिछले जन्म से लाए बन्द मुट्ठी का कारक है। इसीलिए इसे साथ लाया माल, धन या बन्द मुट्ठी के अन्दर का हिस्सा कहकर पुकारा गया है।

चौथे घर पर चंद्रमा का प्रभाव और वही इसका कारक है। इसलिए इस घर का रात्रि से बहुत संबंध है। यहां पर यदि शुभ ग्रह हों तो रात्रि को किए गये कार्य अतिशुभ फल देंगे और यदि अशुभ ग्रह हों तो विपदा भी रात्रि के समय ही आएगी। यदि शुभ ग्रह यहां पर है तो जीवन की मुश्किलों का समय रात्रि को पूर्ण जागृत हो जाता है। यदि चंद्रमा केंद्र घरों से बाहर बैठा हो तो इस घर में कोई ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

चौथे घर में चंद्रमा ग्रहफल का है और शुक्र, मंगल व केतु राशिफल के ग्रह माने जाते हैं।

पांचवां घर : पांचवां घर औलाद का है। लाल किताब के मुताबिक बेटे से क्या प्राप्त होगा इसे यह घर दर्शाता है। बेटी से क्या प्राप्त होगा उसका इस घर से कोई संबंध नहीं। मकान के अन्दर जिस स्थान से रोशनी और हवा आती है उसका संबंध पांचवें घर से है। मानसिक चेतनता, मन की ईमानदारी की मात्रा या लोगों के दिल में जातक के लिए कितना सम्मान है, यह पांचवें घर से पता चलता है।

जातक के भाग्य की चमक, उसकी अपनी कमाई का संबंध भी इसी धर से है। कई बार कम मेहनत कर इन्सान ज्यादा कमाता है और यदि यहां अशुभ ग्रह हों तो बहुत मेहनत से भी उन्नति नहीं कर पाता। यह सब यही घर दर्शाता है। दिशाओं के अनुसार यह घर पूर्व का कारक है। यहां यदि शुभ ग्रह हो तो घर की पूर्वी दीवार के पास उस ग्रह की वस्तुएं स्थापित करनी चाहिए।

घर में विद्या से संबंधित किताबों, कापियों, ग्रंथों आदि का संबंध इसी घर से है। यह घर अपनी विद्या या तालीम से कमाए धन दर्शाता है। किसी हद तक औलाद के कमाए धन का संबंध भी इसी घर से है। यह घर अगले जन्म का भी घर है और इस घर में बैठे ग्रह का असर औलाद के जन्म से लेकर जातक के बुढ़ापे तक रहता है।

जहां बैठ कर ज्ञान प्राप्त किया जाए या ज्ञान का उपदेश दिया जाए उसका संबंध भी इसी घर से है। दरख्तों में जो पौधे या पेड़ पनीरी या पौध से लगते हों उनका सबंध इस घर से है।

शरीर के अंगों में पेट का संबंध इसी घर से है। यह घर औलाद के पैदा होने से भी संबंध रखता है। भविष्यकाल में काम करने के लिए जो ज्ञान या धन दूसरों से मिलेगा उसका संबंध इसी घर से है। इस घर में बैठे बृहस्पति और सूर्य ग्रहफल के होंगे यानी उनका स्वयं का उपाय नहीं किया जा सकता, बल्कि उनके उपाय के लिए मित्र ग्रहों के उपाय का सहारा लेना पड़ता है।

छठा घर : छठे घर को पाताल का घर भी कहा जाता है। यही कारण है कि अशुभ ग्रह की वस्तुओं को जमीन में दबाया जाता है। यह उपाय कुछ खास घरों में बैठे ग्रहों के लिए ही है। छठे घर का संबंध साहूकारी से भी है। मकान के अन्दर तहघर का संबंध भी छठे घर से है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शरीर के जो अंग घर की चीजों को हजम करने की शक्ति रखते हैं उनका संबंध इस घर से है। शरीर में गर्मी या खुश्की की मात्रा अन्दरूनी अक्ल आदि का संबंध भी इसी घर से है या दूसरे शब्दों में, अक्ल की दूरअंदेशी भी इसी घर से देखी जाती है।

भाग्य के संबंध में यह घर हमारी गिरावट को दर्शाता है। यहां बैठे ग्रह का संबंध किस्मत की चमक या किस्मत की ऊंचाई से नहीं होता। दिशाओं में यह घर उत्तर दिशा का कारक है। बुध का पक्का घर होने के कारण इसे व्यापार से संबंधित घर भी माना जाता है।

ग्रहों का शुभ या अशुभ होकर इस घर में आना रिश्तेदारों व उनसे मिलने वाली मदद को दर्शाता है। जानवरों में यह घर कुत्ते या बकरी को दर्शाता है। इस घर में बुध हो तो बकरी रखना, तोता या मैना पालना शुभ होता है।

इस घर को गृहस्थी का धर्म स्थान भी कहा जाता है, यानी व्यक्ति गृहस्थ होकर भी साधुपन निभा सकता है। जातक दूसरों के साथ किस हद तक धर्मात्मा जैसा व्यवहार करेगा यह इस पर से ज्ञात होता है। यह घर जातक के लड़के या लड़की की ससुराल और ससुराल वालों के साथ उसके संबंध को भी दर्शाता है।

पौधों में यह घर साग–सब्जी तथा फूलों का कारक है। इस घर का संबंध जातक के नाना या भान्जे के मकान से है। यानी इस घर में शुभ ग्रह हों तो नाना या भान्जे का घर बहुत अच्छा होगा। शरीर के अंगों में जातक की कमर और फट्ठों से इसका विशेष संबंध है।

मरने के बाद जातक के रिश्तेदारों का क्या हाल होगा उसका और घर के सदस्यों की गिनती का फैसला भी इसी घर से होगा। बीमारी का संबंध भी इसी घर से है।

ढलती जवानी यानी जब बुढ़ापा शुरू होने को हो उसका पती इसी। घर से चलता है। इस घर का कारक भी बुध और मालिक भी बुध है। इस घर में बैठे सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनि राशिफल के हैं। बुध और केतु ग्रहफल के होते हैं।

सातवां घर : सातवें घर को लाल किताब में मैदानी दुनिया कहा गया है, जिसका मतलब है जीवन का वह क्षेत्र जिसमें काम तथा जायदाद के बारे में जद्दोजहद करते हैं। सातवां घर विशेष तौर पर पत्नी का कारक है। बुध और शुक्र दोनों ही इस घर के कारक ग्रह माने जाते हैं। बुध के इस घर का कारक होने के कारण लड़की, पौत्री तथा बहन का संबंध भी इसी घर से है। फलादेश के समय यदि बुध सातवें घर में हो तो बहन या बुआ के बारे में जानना फलकार्य को आसान कर देगा। सभी जानवर जिनमें सींग उपर को उठे नहीं होते इस घर से संबंधित हैं।

सातवें घर से जातक के जन्म स्थान के बारे में जाना जाता है। फालतू धन, बचत के लिए जमा किये हुए धन अथवा वह धन जो बुजुर्गों से बिना कमाये प्राप्त हो उसका और फलदार और गूदे वाले वृक्षों व पौधों का संबंध इस घर से है।

लड़कियों के रिश्तेदारों के मकान और पत्नी के मायके के घर का संबंध इसी घर से है। जिस्म के अंगों में यह घर चमड़ी को दर्शाता है, इसलिए शुक्र व इस घर के अशुभ होने से चमड़ी दूषित हो जाती है।

Future Point

जातक के पांवों, स्त्री के स्तनों से भी इस घर का विशेष संबंध है। शादियां कितनी होंगी इसका पता इसी घर से चलता है।

पिछले जन्म के भाग्य का अंश सातवें घर में शुभ या अशुभ ग्रह बताते हैं। दिशाओं में यह घर दक्षिण–पश्चिम दिशा को दर्शाता है यानी यदि इस घर में कोई शुभ ग्रह हो तो व्यक्ति के लिए दक्षिण पश्चिम दिशा का मकान या अपने घर की दक्षिण–पश्चिम दिशा में सातवें घर के ग्रह की चीजें स्थापित करना शुभ फल देगा। इस भाव का संबंध अन्दरूनी अक्ल से है और यह 50 से 75 वर्ष तक की आयु का समय दर्शाता है।

यह व्यापार का घर भी है, विशेषकर जमीन से उपजी वस्तुओं का व्यापार। इस घर के कारक ग्रह बुध–शुक्र हैं। यहां पर शनि उच्च राशि का फल देता है और सूर्य नीच राशि का। यहां सूर्य, बृहस्पति और राहु राशिफल के है और इनका उपाय हो सकता है। शुक्र यहां ग्रहफल का है और इसका कोई उपाय नहीं हो सकता।

आठवां घर : यह घर इन्सान के जीवन में आने वाले अशुभ हालात व मुसीबतों को दर्शाता है। यह घर की छत तथा जहां घर बनता हो, उसका कारक है। यह शरीर में दिल तथा गर्मी की मात्रा और भोजन को पचाने, न पचाने की शक्ति को दर्शाता है। इससे व्यक्ति के जीवन में कितनी औरतों से संबंध होगा या पत्नी से कैसा संबंध रहेगा इसका पता चलता है।

यह घर इन्सान की उम्र के उस हिस्से से संबंधित है जब उसमें किसी न किसी मात्रा में साधु बनने की इच्छा पैदा हो सकती है। इसलिए इसको उपदेश या संयास अवस्था का घर भी कहा गया है। भाग्य के मामले में यह घर किस्मत के धोखे को दर्शाता है इन्सान अपने जीवन में किस हद तक धोखे खाएगा इस का पता इस घर से चलता है।

दिशा के लिहाज से दक्षिणी दिशा का और घर में जहां दवाईयां आदि रखी जाती हैं उसका कारक है। यह घर मौत का घर भी है। इस घर से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि इन्सान की मौत किस प्रकार होगी। दुनियाबी तौर पर दूसरों से दुश्मनी तथा इन्सान की अपनी बीमारी को दर्शाता है। यह सभी प्रकार के जहरीले जीव–जंतुओं का कारक है। इसके अलावा ऊँट का संबंध भी इसी घर से है।

आठवां घर व्यक्ति के कर्मक्षेत्र को भी दर्शाता है कि वो कैसा होगा– बूचड़घर जैसा, रंजोगम से भरा अथवा शांत। कुल उम्र का अन्दाजा भी इसी घर से चलता है। वृक्षों में ऐसी वृक्षों को दर्शाता है जिसके न फल लगते हों न फूल।

व्यक्ति का मकान वीराने जैसा होगा या शमशान जैसा, यह आठवें घर में अशुभ ग्रहों पर निर्भर करता है। यदि आठवां घर शुभ होगा तो मकान किसी अच्छी जगह पर होगा और किसी हद तक रौनक भी वहां रहेगी।

बीमारियों में पीठ से संबंधित रोगों, जिस्म की कच्ची चर्बी तथा पुड़पड़ी का कारक भी यही घर है। पिछले जन्म से साथ लाई तथा इस जन्म की बीमारियों का इसी घर से पता चलता है। बिमारी के संबंध में, बीमारी का आरंभ बीमारी का कारण या बढ़ना इसी घर से जाना जा सकता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

आठवें घर के कारक ग्रह मंगल और शनि हैं। इस घर में मंगल ग्रह फल का है और राशिफल का कोई ग्रह नहीं होता।

नौवां घर : नौवें घर का संबंध इन्सान की व्यस्तता तथा जीवन संघर्ष से है। यदि इस घर का असर खराब हो रहा हो तो व्यक्ति अपने जीवन का बहुत सा समय बेकार के कामों में नष्ट कर देता है।

मकान के अंदर के हिस्से में यह बुजुर्गों के घर से संबंध रखता है और मकान के अंदर की पैमाइश वर्गाकार होगी या तिकोना यह इसी घर से जाना जा सकता है। मानसिक तौर पर इन्सान की जाग्रत अवस्था और उसके अन्दर की रूहानी ताकत भी इसी घर से जानी जा सकती है। जैसे पहला घर दूसरे लोगों पर परोपकार के 25 प्रतिशत का कारक है मगर नौवां धर दूसरे लोगों पर परोपकार करने की 75 प्रतिशत क्षमता का कारक है।

उम्र के भागों में यह घर व्यक्ति के गृहस्थ जीवन और बुढ़ापे से विशेष संबंध रखता है। भाग्य के क्षेत्र में यह किस्मत की बुनियाद है। यह घर की शुभ स्थिति और इन्सान के संपूर्ण भाग्य का मात्रा की सबसे बड़ा कारण है। यह घर मकान के उस हिस्से से संबंधित है जहां हम धर्मकर्म का कार्य करते हैं या कुछ हालात में हकीम या डाक्टर जहां बैठकर अपना काम करते हैं।

दुनियाबी तौर पर यह उन लोगों से संबंध रखता है जो बुजुर्ग हों, चाहे रिश्तेदार चाहों या जानने पहचानने वाले। उन रिश्तेदारें से किस हदतक लाभ हो सकता है यह इसी घर से जाना जाता है। हंस, बुलबुल, नीलगाय और पानी और खुश्की पर चलने वाले जानवर इस घर से संबंधित हैं।

वृक्षों तथा पौधों में इस घर का हर वृक्ष या पौधे की जड़ों से संबंध है– विशेषकर उन पौधों से जिनकी जड़ें जमीन के अन्दर रहती हों और फल भी जड़ों में लगते हों। यहां पर शुभ या अशुभ ग्रहों से बुजुर्गों के घर का पता चलता है। शरीर के हिस्सों में यह घर नाक, नथुनों तथा वीर्य शक्ति का कारक है। इस घर से इन्सान के माता–पिता की अर्थिक स्थिति का है तथा उनसे कितना लाभ प्राप्त होगा इसका पता चलता है।

नौवें घर का कारक ग्रह बृहस्पति है तथ इस घर शनि राशिफल का है और बृहस्पति ग्रह फल का होता है।

दसवां घर : दसवां घर कर्मक्षेत्र है और इसका संबंध रोजगार–व्यापार व नौकरी आदि से है। रोजगार–व्यापार के सिलसिले में किस प्रकार के लोगों से वास्ता पड़ेगा और उनके साथ संबंध कैसे होंगे इन बातों की जानकारी इसे घर से मिलती है।

मकान में लगी लकड़ी, लोहा ईंट, पत्थर तथा मलवे आदि को दर्शाता है। शरीर के बारे में यह घर सेहत से संबंध रखता है और बीमारियों में काली खांसी या श्वास रोग से इसका विशेष संबंध है। यहां पर बहुत अशुभ ग्रह हों तो श्वास रोग की संभावना बढ़ जाती है। मानसिक अवस्था के बारे में यह घर स्वभाव में चालाकी, होशियारी और दूसरों को धोखा देने का कारक है। इसके अलावा जातक की शोहरत कितनी मन्दी होगी अथवा शोहरत पर कोई लांछन लगेगा या नहीं इसका पता इस घर से चलता है।

Future Point

उम्र के हिस्सों में यह आयु की आखिरी अवस्था का कारक है। इस घर में शुभ या अशुभ ग्रहों से पता चलता है कि जीवन का आखिरी हिस्सा कैसा रहेगा। भाग्य को वह बोझ जो जीवन में उठाना पड़े, यानी काम या व्यवसाय में जद्दोजहद का पता इस घर से चलता है। इस घर की हालत अच्छी होने से व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता आसानी से मिलती है। दिशाओं में यह घर पश्चिम दिशा का कारक है। इस घर का वास्ता खाने – पीने की चीजों और मशीनों आदि से है, मशीनें ऐसी जो कारोबार में इस्तेमाल हों। पिता का धन, जायदाद, कैसा होगा कितना होगा यह इस घर से जाना जा सकता है। यह घर दुनिया से संबंधित काल्पनिक शक्ति का कारक है। इस घर में शुभ ग्रह होने से पिता की हालत अच्छी और अशुभ ग्रह बुरी होती है।

जानवरों आदि में इस घर का संबंध मगरमच्छ तथा सांप से है। इनके अलावा पूंछ वाले सभी जानवर इस घर से देखे जाते हैं। इस घर को ठगी का द्वार भी कहा गया है यानी इन्सान अपने फायदे के लिए कितनी ठगी करके धन कमा सकता है। पेड़–पौधों में इसका संबंध काटों वाले पेड़–पौधों जैसे कीकर, बबूल आदि से है।

जिस्म के हिस्सों में यह घुटनों तथा अस्थि पिंजर का कारक है। जादू, मंत्र आदि से भी इसका गहरा संबंध है। दसवें घर में शनि ग्रहफल का है और बुध व केतु राशिफल के हैं।

ग्यारहवां घर : ग्यारहवां घर लालच का प्रतीक है। जातक दूसरों की परवाह किए बिना किस हद तक अपना फायदा कर सकता है इसका पता इस घर से चल सकता है।

मकान के बारे में यह घर बाहरी शोभा का कारक है। बाहर से ही पता चलता है कि मकान अमीर आदमी का है या गरीब आदमी का। जिस्म की ताकत के संबंध में इन्सान किस हद तक सुस्त या फर्ज को निभाने में लापरवाह है इसकी जानकारी घर से मिलती है। अगर इस घर में शुभ ग्रह हों तो इन्सान जीवन के शुभ अवसरों को नहीं खोता और यदि अशुभ ग्रह हों तो अपनी लापरवाही के कारण उन शुभ अवसरों को खो देता है। आयु के भागों में यह घर 75 वर्ष के बाद की आयु दर्शाता है।

ग्यारहवां घर किस्मत की ऊंचाई का कारक है। इन्सान किस बुलन्दी तक पहुंच सकता है। इसका पता इस घर से मिलता है।

यह भाव घर की पश्चिमी दीवार का कारक है और घर के अन्दर रखे उस सामान को दर्शाता है जो दुनिया के काम आ सके। इन्सान के जन्म के वक्त का संबंध भी इसी घर से है। जब इन्सान जन्म लेता है तो आमदनी के संबंध में कितना भाग्य लेकर आता है इसकी जानकारी इसी घर से मिलता है। जन्म के समय माता पिता की हालत पर रोशनी डालता है।

जानवरों में यह दोमुहें सांप से संबंध रखता है। धर्म की तरफ इन्सान का झुकाव इस घर से पता चलता है। दरख्तों में उन छायादार दरख्तों का कारक है जो छाया तो देते हैं पर उनमें कांटे नहीं होते जैसे पीपल, बरगद आदि।

मकान के मामले में यह घर बने मकान का और जिस्म के हिस्सों में माथे तथा गुदा के उपरी हिस्से का कारक है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

इस घर से यह भी पता चलता है कि जीवन में पहली बार किसी चीज से ताल्लुक होगा तो कैसा रहेगा, जैसे कोई इन्सान नौकरी करे तो जो पहला अफसर होगा उससे उसके ताल्लुकात रहेंगे।

इस घर का कारक ग्रह शनि है और कुछ हद तक बृहस्पति। शनि और बृहस्पति ग्रहफल के हैं। राशिफल का कोई नहीं।

बारहवां घर : बारहवां घर इन्सान के दिमाग में पैदा होने वाले उन विचारों से संबंध रखता है जो इन्सान खुद नहीं सोचता बल्कि खुद ही पैदा हो जाते हैं। इस घर को आशीर्वाद और श्राप का घर भी कहते हैं। यानी यदि यह घर शुभ होगा और इन्सान किसी को आशीर्वाद देगा तो उसके पूरा होने की संभावना रहती है। इसी प्रकार अगर यह घर अशुभ रहेगा तो इन्सान के दिए श्राप के पूर्ण होने की पूरी संभावना रहती है।

मकान का अन्दरूनी हिस्सा के बारे में इस घर के शुभ या अशुभ होने पर निर्भर करता है। शुभ ग्रह खुशी से बसा घर और अशुभ ग्रह वीराने जैसा घर दर्शाते हैं। इस प्रकार शुभ या अशुभ ग्रह यह बताते हैं कि पैसा सोच समझ कर या मूर्खता से खर्च किया गया है।

बारहवां घर दूसरों की खुशामद या चापलूसी का घर भी है। इसके अलावा बारहवें घर के शुभ होने पर दूसरों की नज़रों में सम्मान की मात्रा और अशुभ होने पर बदनामी की मात्रा का पता चलता है।

किस्मत के संबंध में इन्सान कितना सुख भोगेगा या सुख पाएगा यह यही घर दर्शाता है। दिशाओं में यह दक्षिण–पूर्व दिशा का कारक है। इन्सान अपनी स्त्री से या स्त्री अपने पति से कितना सुख पाएगी इसी घर से पता चलता है।

इसके अलावा यह सपनों का घर भी है। इन्सान के सोने या आराम करने से इसका पूर्ण संबंध है। इन्सान के अपने पड़ोसियों से कैसे संबंध रहेंगे यह इस घर की शुभता या अशुभता से पता चलता है। जानवारों में यह बिल्ली, चमगादड़ तथा मछली से संबंधित है।

बारहवें घर को साधु या समाधि का भाव भी कहा गया है साधु का अर्थ है आदमी का मन साफ होना। रात के समय इन्सान कितना आराम पाएगा इसी घर से जाना जा सकता है। दरख्तों के संबंध में यह छिलकेदार दरख्तों का कारक है यानी ऐसे दरख्त जिनके छिलके का संबंध जीवन में काम आने वाली वस्तुओं से हो।

मकान के सबंध में यह घर पड़ोसी के घर को दर्शाता है। शुभ ग्रह हों तो पड़ोसी की हालत अच्छी और बुरे ग्रह हों खस्ता होगी। जिस्म के संबंध में यह शरीर की हड्डी, सिर, पांव तथा गैस या बादी का कारक है।

इस घर का कारक ग्रह बृहस्पति है। साथ ही राहु भी इस घर का कारक ग्रह माना गया है। इस घर में राहु ग्रहफल का है और बुध राशिफल का।

Future Point

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. चौथे, छठे, आठवें तथा बारहवें घरों के पक्के ग्रहों के बारे में विस्तार से लिखें।
2. किस घर से किस दिशा को देखा जाता है ?
3. पेड़ पौधों का संबंध घरों से किस प्रकार जाना जा सकता है ?
4. ग्रहफल और राशिफल के ग्रहों में क्या अंतर है ? विस्तार से लिखें।
5. तीसरे, पांचवें, आठवें व दसवें घर से शरीर के किन अंगों को देखा जाता है ?

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

भाग–3

ग्रहों के विभिन्न भावों का संक्षिप्त महत्व

ग्रहों की विभिन्न भावों में क्या परिस्थिति है, वह शुभ है, या अशुभ इस बात का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है :

बृहस्पति

1. पहले घर में बृहस्पति को राजगुरु कहा जाता है।
2. दूसरे घर में बृहस्पति को धर्मगुरु और विद्या का मालिक कहा जाता है।
3. तीसरे घर में बृहस्पति को गरजता शेर और खानदान का गुरु कहा जाता है।
4. चौथे घर में बृहस्पति चंद्र देश की राजधानी और बाग–बगीचा है।
5. पांचवें घर का बृहस्पति इन्सानी सिफ्तों, इज्जत–आबरू का मालिक मगर गुस्से वाला होता है।
6. छठे घर का बृहस्पति मुफ्तखोर मगर साधु स्वभाव।
7. सातवें घर में बृहस्पति गृहस्थी में फंसा साधु, औलाद से दुखी होता है।
8. आठवें घर का बृहस्पति मुसीबत के वक्त गैबी शक्ति वाला बुजुर्ग, कब्रिस्तान का साधु होता है।
9. नौवें घर का बृहस्पति सुनहरी खानदान का द्योतक, लेकिन खुद माया का त्यागी साधु है।
10. दसवें घर का बृहस्पति पहाड़ी इलाके और गृहस्थी का कारक, हर चीज के लिए कलपता, दरवेश, कम धन का द्योतक है।
11. ग्यारहवें घर का बृहस्पति खजूर के दरख्त सा अकेला मन्दा फल देने वाला है।
12. बारहवें घर का बृहस्पति उत्तम ज्ञानी, वैरागी, बुरे का भी भला करने वाला है।

सूर्य

1. पहले घर में सूर्य सतयुगी राजा और हुकूमत करने वाला है।
2. दूसरे घर में सूर्य सुखदाता, जातक की बाजुओं का मालिक है।
3. तीसरे घर में सूर्य होने से जातक दौलत का राजा, खुद कमाकर घर वाला होता है।
4 चौथे घर में सूर्य दूसरों के लिए जोड–तोड़ यानी धन इकट्ठा करने वाला।
5. पांचवें घर में सूर्य पारिवारिक उन्नति का मालिक मगर ईर्ष्या करने वाला।
6. छठे घर का सूर्य दौलत से बेफिक्र और अपनी किस्मत से संतुष्ट।
7. सातवें घर में सूर्य होने से जातक कम कुटुम्ब वाला और डरपोक होगा।
8. आठवें घर में सूर्य होने से जातक तपस्वी राजा और सच बोलने वाला होता है।

9. नौवें घर का सूर्य लम्बी उम्र, भारी खानदान का पालक होता है।
10. दसवें घर में सूर्य होने से जातक इज्जत सेहत व दौलत का मालिक मगर वहमी होता है।
11. ग्यारहवें घर में सूर्य होने से जातक पूर्ण धर्मी मगर ऐश पसन्द हो।
12. बारहवें घर में सूर्य होने से सूर्य सुख की नीन्द सोने वाला मगर दूसरों की मुसीबत अपने सर लेने वाला हो।

चंद्रमा

1. चंद्रमा पहले घर में—जब तक मां जिन्दा हो, जातक धन दौलत का मालिक हो।
2. चंद्रमा दूसरे घर में, खुद पैदा की हुई माया की देवी।
3. तीसरे घर में चंद्रमा, चोरी और मौत का रक्षक, उम्र का फरिश्ता जिससे मौत भी डरे।
4. चंद्रमा चौथे घर में—जातक जितना खर्च करे उतना ही धन आए यानी खर्च पर बढ़ने वाला आमदनी का दरिया।
5. चंद्रमा पांचवें घर में, बच्चों के दूध की माता, रूहानी नहर के समान होता है।
6. चंद्रमा छठे घर में, धोखे की माता, कड़वे पानी की तरह होता है।
7. चंद्रमा सातवें घर में, बच्चों की माता खुद लक्ष्मी का अवतार हो।
8. चंद्रमा आठवें घर में, मुर्दा माता जो कोई सुख न दे सके, जला हुआ दूध।
9. चन्द्रमा नौवें घर में, घड़े बराबर मोती, दुखियों का रक्षक, समुद्र।
10. चन्द्रमा दसवें घर में, आक रूपी जहरीला पौधा, जहरीला पानी।
11. चन्द्रमा ग्यारहवें घर में, कोई फायदा नहीं, शून्य न के बराबर।
12. चन्द्रमा बारहवें घर में, रात के वक्त तूफान से बस्तियां उजाड़ने वाला दरिया।

शुक्र

1. शुक्र पहले घर में, रंग बिरंगी माया का रूप।
2. शुक्र दूसरे घर में, मोह माया का उम्दा घर, सिर्फ मालिक से मांगना ही कमी पूरी करे। यहां मालिक का अर्थ है खुदा।
3. शुक्र तीसरे घर में, औरत की इज्जत करने से लाभ।
4. शुक्र चौथे घर में, खुशकी का सफर, ऐश का फल बुरा।
5. शुक्र पांचवें घर में , बच्चों से भरा घर परिवार।
6. शुक्र छठे घर में, "लल्लू करे कब्बलियां, दब सिद्धियां पावे" यानी आदमी कोई अजीब काम भी करे तब परमात्मा उसमें बरकत डाल दे।
7. शुक्र सातवें घर में, जैसा मैं वैसी वो। अगर शुक्र अकेला तो नेक यदि किसी ग्रह के साथ वैसा ही प्रभाव दे।
8. शुक्र आठवें घर में, जली हुई मिट्टी की चंडाल औरत।
9. शुक्र नौवें घर में, मिट्टी की काली आन्धी।
10. शुक्र दसवें घर में, काल्पनिक संसार में रहने वाला, यदि शनि कुण्डली में उम्दा हो तो इस घर का

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

शुक्र धर्म मूरत है।

11. शुक्र ग्यारहवें घर में, हसीन मर्द या औरत, माया के लिए घूमता हुआ लट्टू।
12. शुक्र बारहवें घर में, पूर्ण रूप से देवी यानी भवसागर से पार करने वाली गाय।

मंगल

1. पहले घर में मंगल, इन्साफ की तलवार या पूच्छल तारा।
2. दूसरे घर में मंगल, भाइयों का पालक, यदि भाईयों की पालना न करे तो मंगल अशुभ हो।
3. तीसरे घर में मंगल, दूसरों के लिए शुभ खुद ऐसे जैसे चिड़िया घर में कैद शेर। यह तब होगा अगर तीसरे घर में मंगल अकेला हो।
4. चौथे घर में मंगल, जलती आग, बदी का सरदार, दूसरों से बदला लेने की तीव्र भावना।
5. पांचवें घर में मंगल, रईसों का बाप–दादा लेकिन यदि घर से बाहर रहे तो औलाद पर बुरा प्रभाव।
6. छठे घर में मंगल, तरसेमें की औलाद यानी ऐसी औलाद जो मां–बाप ने फरियाद करके ली हो।
7. सातवें घर में मंगल, मीठा हलवा और यदि मंगल बद हो तो मनहूस और बदकिस्मत।
8. आठवें घर में मंगल, मौत का फन्दा, फांसी की जगह, यानी दुनियां से चले जाने का कारण बने।
9. नौवें घर में मंगल, बुजुर्गों के बल पर चलता तख्तेशाही यदि मंगल बद हो तो बदनामी का कारक।
10. दसवें घर में मंगल, चीटी के घर में भगवान, राजा जैसा जातक।
11. ग्यारहवें में मंगल, तीन कुते रखने मुबारिक (दोहता, साला, कुता) वर्ना गरीबी का कुता भौंके।
12. बारहवें घर में मंगल, मंगल यहां पर अच्छा होता है।

बुध

1. बुध पहले घर में, राजा या हाकिम मगर खुदगर्ज और बदनाम।
2. बुध दूसरे घर में, योगी राजा, ब्रह्म ज्ञानी मगर मतलब परस्त।
3. बुध तीसरे घर में, इस घर में बुध के थूकने वाला कोढ़ी कहा है।
4. बुध चौथे घर में, राजयोग या हुनरमन्द होने का कारक।
5. बुध पांचवें घर में खुशहाली का कारक और मुंह से निकला वाक्य उत्तम फल दे।
6. बुध छठे घर में, गुमनाम योगी, दूसरों के लिए राजा।
7. बुध सांतवें घर में, दूसरों को तारने वाला।
8. बुध आठवें घर में, कोढ़ी और आर्थिक नुकसान करने वला।
9. बुध नौवें घर में, कोढ़ी या राजा दूसरे ग्रहों के साथ कोढ़ी अकेला राजा के समान फल में।
10. बुध दसवें घर में, आर्थिक हालत अच्छी दूसरों की खुशामद करने वाला।
11. बुध ग्यारहवें घर में, दौलतमन्द मगर उल्लू जैसा, 34 साल के बाद हीरे जैसा फल दे।
12. बारहवें घर में बुध, स्वभाव का अच्छा किन्तु रात को दुखिया होगा।

शनि

1. पहले घर में शनि यदि मन्दा तो तीन गुना बुरा यदि उम्दा तो तीन गुना अच्छा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

शनि मन्दा : पहले घर में शनि मन्दा तब होता है जब चौथे, सातवें या दसवें घर में कोई भी शत्रु ग्रह हो या कुण्डली में राहु और केतु मन्दे हों।

2. दूसरे घर में शनि को गुरु शरण में कहा गया है यानी कोई नुकसान नहीं।
3. तीसरे घर में शनि मन्दा हो तो दो गुणा बुरा फल देगा।
4. चौथे घर में शनि ऐसा सॉप जो पानी में रहे जिसमें जहर नहीं होता।
5. पांचवें घर में शनि को बच्चे घर वाला सांप कहा गया है यानी बुरा।
6. छठे घर में शनि किस्मत या लेख की स्याही, एक गुनाह मन्दा (माफ)।
7. सातवें घर में शनि को विधाता रूपी कलम कहा है रिजक के लिए उत्तम।
8. आठवें घर को शनि का हैडक्वार्टर कहा है इसलिए अच्छा और बुरा दोनों प्रभाव।
9. नौवें घर में शनि को कलम विधाता कहा है, मकानों व मर्दों के लिए शुभ।
10. दसवें घर में शनि ऐसा कि इन्सान को अपनी किस्मत खुद लिखनी पड़ती हैं
11. ग्यारहवें शनि को लिखे विधाता खुद विधाता यानी अति शुभ।
12. बारहवें घर में शनि कमल विधाता, आराम पसन्द।

राहु

1. पहले घर में राहु दौलतमन्दी की निशानी, ऊंचाई पर पहुंचने वाला हाथी, लेकिन सूर्य साथ न हो तो।
2. दूसरे घर में राहु यानी राजा गुरु के अधीन, पंगूड़े की तरह चलती जिन्दगी का कारक।
3. तीसरे घर में राहु, उम्र और दौलत का मालिक, बन्दूक लिए खड़े पहरेदार की तरह।
4. चौथे घर में राहु, धर्मी मगर धन दौलत की आम फिक्र।
5. पांचवें घर में राहु, शरारत करे, औलद गर्क करने वाला। राहु पांचवें के समय जहां सूर्य बैठा हो वह घर शुभ फल देगा।
6. छठे घर में राहु फांसी काटने वाला मददगार हाथी।
7. सातवें घर में राहु चंडाल, लक्ष्मी का सत्यानाश करे। लक्ष्मी का अर्थ स्त्री और दौलत।
8. आठवें घर में राहु कड़वा धुआं मौत का पैगाम।
9. नौवें घर में राहु पागलों का सरताज हकीम मगर बेईमान।
10. दसवें घर में राहु सांप का फन या उसकी मणि यानी या तो अति उत्तम फल दे या बहुत बुरा।
11. ग्यारहवें घर में राहु पिता को गोली मारे मूंह न देखे।
12. बारहवें घर में राहु एक शेख चिल्ली की तरह।

केतु

1. पहले घर में केतु हो तो इन्सान बड़ा परिवार बनाने वाला (बच्चे ज्यादा)
2. दूसरे घर में केतु हो तो इन्सान अच्छा हुक्मरान, मुसाफिर।
3. तीसरे घर में केतु, कुनमुनाने काला कुत्ता मगर नेक दरवेश।
4. चौथे घर में केतु, बच्चों को डराने वाला कुत्ता बच्चों की सेहत खराब।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

5. पांचवें घर का केतु अपने मालिक की रक्षा करने वला।
6. छठे घर में केतु शेर के कद जैसा खुंखार कुता, दोरंगी दुनियां।
7. सातवें घर में केतु शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता।
8. आठवें घर में केतु, ऐसा इन्सान जो यमराज के कदमों की आहट सुने।
9. नौवें घर में केतु, आज्ञाकारी बेटे की तरह, इन्सान की जुबान समझने वाला।
10. दसवें घर में केतु मंदा यानी अशुभ होता है।
11. ग्यारहवें घर में केतु गीदड़ जैसा डरपोक कुत्ता।
12. बारहवें घर में केतु वाले इन्सान के भाग्य में ऐशो आराम खानदानी।

पहले घर के राहु के समय सूर्य का 12 घरों में फल

राहु आठवें घर में, बारहवें घर में या मीन राशि में हो तो अशुभ फल देता है। यदि राहु मिथुन या कन्या राशि का हो या छठे घर में हो तो शुभ फल देता है। लेकिन यदि राहु पहले घर में हो और सूर्य किसी भी घर में हो तो सूर्य को खराब करता है।

1. यदि राहु पहले घर में सूर्य के साथ बैठा हो तो ऐसे इन्सान के व्यवसाय के क्षेत्र में उसके अपने दिमाग की खामियों के कारण काफी कष्ट आएंगे उसके साथ कई प्रकार की शरारतें होंगी।
2. दूसरा घर ससुराल का है और धर्म स्थान का भी इसलिए जब राहु पहले घर में हो और सूर्य दूसरे घर में तो इन्सान के ससुराल से संबंध ठीक नहीं होते और इन्सान धर्म विरोधी और पूजा पाठ से नफरत करने वाला होता है।
3. राहु के पहले घ में होने के समय तीसरे घर का सूर्य जातक के भाई बंधुओं पर मुसीबत खड़ी करेगा।
4. पहले घर के राहु के समय यदि सूर्य चौथे में हो तो माता खानदान यानी ननिहाल की तरफ और इन्सान की खुद की आमदनी में रोड़े अटकाने वाला होता है।
5. राहु पहले के समय, सूर्य यदि पांचवें हो जहां कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार सिंह राशि होती है, यही राहु सूर्य के अधीन होता है और औलाद पर कोई बुरा असर नहीं डालता।
6. राहु पहले के समय सूर्य यदि छठे घर में हो तो लड़के लड़कियों के ससुराल वालों की तरफ से अशुभ बातें सुनने को मिलेंगी और झूठे लांछन लगेंगे।
7. राहु पहले और सूर्य सातवें के समय अदालती कारोबार और गृहस्थी में अशुभ फल मिलेंगे।
8. राहु पहले के समय अगर सूर्य आठवें घर में हो तो बिना कारण खर्च ज्यादा होगा। आदमी की रोटी कुत्ता खाए यानी कमाए कोई और खाए दूसरा।
9. राहु पहले के समय जब सूर्य नौवें घर में हो तो ऐसा इन्सान खुद तो धर्म से लापरवाह होगा ही साथ में बुजतुर्गों के बनाए धर्म स्थान का भी दुरूपयोग करेगा।
10. राहु पहले घर में और सूर्य दसवें में हो तो ऐसे इन्सान को समाज में इज्जत नहीं मिलती। लोग उसके सच पर भी विश्वास नहीं करते।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

11. राहु पहले के समय सूर्य ग्यारहवें में हो तो इन्सान इन्साफ करने वाला होगा लेकिन राहु उसके दिमाग में अहंकार भर देगा जो उसकी बर्वादी का कारण बनेगा।
12. राहु के पहले घर के समय अगर सूर्य बारहवें में हो तो रात को आराम करने के समय कोई न कोई मुसीबत खड़ी करे। यानी इन्सान को रात को आराम के वक्त कोई न कोई बुरी खबर, जो उसके खुद के जीवन से संबंधित हो, मिलेगी या जीवन में किसी न किसी तरह की खबरें जो बुरी हों मिलेंगी।

वर्षफल के अनुसार बारह घरों में केतु का फल

जब कभी भी सफर सौ दिन से ज्यादा का होगा तो वर्षफल के अनुसार केतु के फल देखने को मिलेंगे। समुद्री जहाज या किश्ती द्वारा किए गए सफर का मालिक चंद्रमा है। हवाई जहाज से किए हुए सफर का कारक या मालिक बृहस्पति है। बस, मोटरकार, रेलगाड़ी आदि के सफर का कारक या मालिक शुक्र है। लेकिन हर तरह के सफर का हुक्म केतु की ओर से ही मिलता है।

1. वर्षफल के अनुसार केतु यदि पहले घर में हो तो सफर के लिए बिस्तर बंध जाएगा लेकिन यात्रा न हो पाएगी। यदि इन्सान सफर पर चला भी जाता है तो शीघ्र वापिस आए। यह हालत और भी पक्की होती है जब सातवां घर खाली हो।
2. वर्षफल के अनुसार दूसरे घर का केतु उन्नति देकर यात्रा करवाता है यानी यात्रा और उन्नति दोनों एक साथ होगी। यदि उन्नति नहीं तो यात्रा भी नहीं। यह बात और भी पक्की हो जाती है यदि आठवां घर उस समय खाली हो।
3. वर्षफल के अनुसार तीसरे घर का केतु मित्रों व रिश्तेदारों से अलग करे बशर्ते नौवां घर खाली हो।
4. वर्षफल के अनुसार चौथे घर का केतु यात्रा नहीं करवाता और यदि होती है तो मंदी यात्रा नहीं होगी लेकिन घर नं. 10 ठीक होना चाहिए।
5. वर्षफल के अनुसार पांचवें घर का केतु जगह यानी शहर परिवर्तन नहीं करवाता लेकिन जहां इन्सान पहले काम करता हो उस इमारत में तबदीली करवाता है। यह परिवर्तन अशुभ नहीं होगा अगर बृहस्पति ठीक हो तो।
6. वर्षफल के अनुसार अगर केतु छठे घर में हो तो सफर का बन्दोवस्त होकर रुक जाएगा अगर नं 9 में कोई न कोई ग्रह बैठा हो।
7. केतु नम्बर 7 घर में होने से मजबूरी की हालत में सफर करना पड़ता है। अपने जद्दी घर बार की तरफ शहर का परिवर्तन होता है और यात्रा का परिणाम भी ठीक होता है यदि घर नं एक में शुभ ग्रह हों।
8. वर्षफल के अनुसार केतु घर नं. 8 में हो तो यदि यात्रा होगी भी तो खुशी की नहीं होगी। इच्छा के विरुद्ध यात्रा करनी पड़ेगी यदि घर नं. 11 में केतु के शत्रु ग्रहों में चंद्र और मंगल हों। इन चीजों का बुरा असर पुत्र, कानों, रीढ़ की हड्डी जोड़ों आदि पर हो सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

चंद्र का उपाय करें। 15 दिन लगातार कुते को दूध पिलाए। मन्दिर में दूध का दान करें।

9. केतु घर नं. 9 में हो, तो अपनी इच्छा से अपने जद्दी घर बार की तरफ यात्रा होगी। यह यात्रा शुभ होगी बशर्ते घर नं. 3 अशुभ न हो रहा हो।

10. वर्षफल के अनुसार केतु नं. 10 में होने के समय यात्रा अचानक होगी। अगर कुण्डली में शनि शुभ हो तो यात्रा से दो गुना लाभ और यदि शनि अशुभ हो तो हानि होगी इनके अलावा यदि आठवां घर मन्दा हो तो यात्रा भी मन्दी ही होगी।

11. वर्षफल के समय केतु ग्यारहवें में हो तो यात्रा का हुक्मनामा ऊपर से नीचे नहीं पहुंचेगा। दिखावटी हलचल होकर यात्रा टल जायेगी।

12. वर्षफल में केतु यदि बारहवें घर में हो तो इन्सान अपने परिवार के साथ ही सुख से रहेगा। उन्नति हो सकती है। यदि किसी कारणवश यात्रा करनी भी पड़ जाए तो शुभ रहेगी। इसी समय यदि घर नं. 2 और 6 शुभ हों तो इसका शुभ फल और भी अच्छा हो जाएगा।

लाल किताब के उपायों का आधार व व्याख्या

1. उपाय द्वारा ग्रह को नष्ट करना : मान लें कि आठवें स्थान में अशुभ शुक्र है, तो उसको नष्ट करने के लिए शुक्र की वस्तु ज्वार को वीरान जगह पर दबा देना चाहिए। इस से वर्षफल में आठवें घर के अशुभ शुक्र का प्रभाव खत्म हो जाएगा।

2. **उपाय द्वारा ग्रह हो अपने से दूर करना** : यदि बारहवें घर में वर्षफल के अनुसार अशुभ मंगल हो तो चलते पानी में गुड़ की रेवड़ियां बहाने से अशुभ मंगल का प्रभाव समाप्त हो जाएगा।

3. **उपाय द्वारा ग्रह के बुरे स्वभाव को बदलना** : इसमें न तो ग्रह को नष्ट किया जाता है, न मारा जाता है, बल्कि उसके अशुभ स्वभाव को बदला जाता है। जैसे वर्षफल या कुण्डली में पांचवें घर में राहु हो तो वह लड़के की पैदाइश में बाधा का कारक होता है, लेकिन लड़की के लिए उसका बुरा असर नहीं होता। इसलिए राहु को नष्ट करना या अपने से दूर करना लड़की के लिए अशुभ साबित हो सकता है। यहां पर राहु के स्वभाव को बदलना ठीक रहेगा। चान्दी का ठोस हाथी घर में रखने से राहु का बुरा प्रभाव समाप्त हो जाएगा और उसका शुभ प्रभाव कायम रहेगा।

4. **शुभ ग्रह को स्थापित करना** : मान लें कि दूसरे घर में चंद्रमा हो तो चंद्रमा की कारक वस्तु, चावल, दूसरी कारक चीज मां के हाथों से लेकर अपने पास रखें, शुभ साबित होगी।

5. **अशुभ ग्रहों के झगड़े को समाप्त करना** : अगर छठे घर में सूर्य और शनि हों, तो उन दोनों के झगड़े से पैदा होने वाले अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए छठे घर के ग्रह बुध की कारक वस्तु को स्थापित करना चाहिए। क्योंकि बुध सूर्य और शनि दोनों का मित्र है इसलिए उनमें झगड़ा नहीं होने देगा। बुध की कारक वस्तु है फूलों वाला पौधा, उसे घर में लगाना चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

6. **कान पकड़ कर कसम खिलाना :** शनि को पांचवें घर में बच्चे घर वाला सांप कहा गया है। इसलिए शनि की कारक वस्तु बादाम को मन्दिर ले जाकर वहां रख कर शनि को कसम दिलवा दी जाती है कि वह शरारत न करे। आधे बादाम घर लाकर रखे जाते हैं और अगले वर्ष उन्हें पानी में बहा दिया जाता है।

जब आम उपाय काम न करे तो उपाय 43 दिन तक लगातार करना चाहिए।

सूर्य : चलते पानी में गुड़ बहाएं।
मंगल बद : गुड़ की रेवड़ियां चलते पानी में बहाएं।
चंद्र : पानी या दूध का बर्तन रात को सिरहाने रखें, प्रातः कीकर की जड़ में डालें।
शनि : तेल का छाया पात्र दान करें। प्रातः समय तेल की मालिश करें।
शुक्र : गोदान करें या ज्वार–चरी गाय को खिलाएं।
मंगल नेक : मीठा भोजन दान करें।
बुध : तांबे के पैसे में सुराख करके 43 दिन दरिया में बहाएं।
राहु : मूली सिरहाने रख कर सोए, सुबह दान करें। तुला दान करें, कोयला बहाएं।

केतु : कुत्तों को रोटी का टुकड़ा डालें।

उपाय करने के विशेष नियम :

1. सभी उपाय दिन (सूर्योदय के बाद सूर्यास्त से पहले) के समय करें।
2. बारिश वाले दिन या बादल छाये हों तो उपाय नहीं किया जाता।
3. एक दिन में केवल एक ही उपाय हो सकता है।
4. किसी और के लिए उसके खून का रिश्तेदार भी उसके लिए उपाय कर सकता है।

लाल किताब के अनुसार कुण्डली

जन्म कुण्डली

(क)

लाल किताब के आधार पर कुण्डली

(क)

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
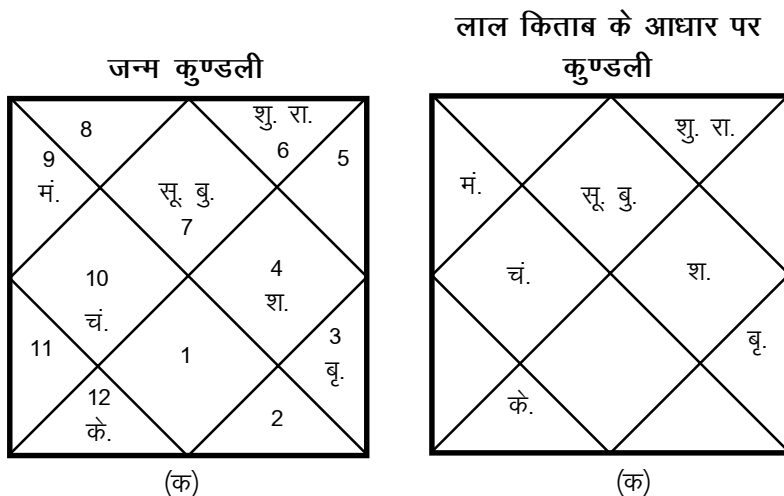
उदाहरण के तौर पर किसी जातक के जन्म के समय उपरोक्त (क) कुण्डली बनती है जिसमें कि सूर्य व शुक्र अपनी नीच राशियों में हैं, मंगल बृहस्पति की राशि में और बृहस्पति बुध की राशि में है। इसी प्रकार चंद्रमा शनि की राशि में और शनि चंद्रमा की राशि में है।

लेकिन लाल किताब के आधार पर खानों में लिखे हिन्दसों को मिटा दिया जाता है जिससे कुण्डली (ख) बनेगी। अब लाल किताब के अनुसार घर नं. 1 में मेष राशि होगी जहां कि सूर्य उच्च का माना जाएगा। इसी प्रकार शुक्र घर नं. 12 में उच्च का माना जाएगा क्योंकि काल पुरुष की कुण्डली के अनुसार घर नं. 1 में मेष राशि है और घर नं. 12 में मीन, जहां सूर्य व शुक्र क्रमशः उच्च के होते हैं। यही नियम बाकी ग्रहों पर भी लागू होगा।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. 12 भावों में बृहस्पति का असर बयान करें।
2. बुध को थूकता कोढ़ी किन घरें में कहा जाता है।
3. राहु के खाना नं. 1 में होने के समय सूर्य के प्रभाव के बारे में लिखें।
4. किन घरों में राहु उत्तम फल देता है ?
5. वर्षफल में केतु का 12 भावों में फल लिखें।
6. उपायों के संबंध में लाल किताब के नियमों पर विस्तार से लिखें।
7. उपाय के लिए कम से कम तथा अधिक से अधिक कितने दिन चाहिएं ?
8. उपायों पर विस्तार से लिखें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

भाग–4

बारह भावों में ग्रहों का फल और उनके उपाय

खण्ड 1 – बृहस्पति

बृहस्पति पहले घर में : पहले घर का बृहस्पति राजगुरु या गद्दीनशीन साधु कहा गया है। यदि इन्सान की तालीम ऊंची होगी तो धन भी ऊंचे दर्जे का होगा। यदि तालीम कम हो तो ऐसा इन्सान फकीर बाकमाल कहा गया है। यानी ऐसे आदमी के पास धन तो कम होगा लेकिन उसके पास कोई ना कोई करामाती हुनर होगा जो उस इन्सान को इज्जत और सम्मान दिलवाएगा।

यदि बृहस्पति पहले हो सातवां घर खाली हो तो शादी के मामले में भाग्य उदय हो जाएगा। लेकिन इस हालत में इन्सान खुद अपनी शादी, किसी खून के रिश्तेदार की शादी करेगा या स्वयं की कमाई से नया मकान बनवाएगा। किंतु यदि या उसके यहां नर औलाद पैदा हो जाए तो पिता की उम्र या सेहत के लिए किसी न किसी रूप में अशुभ साबित होगा।

बृहस्पति नेक के समय यदि मंगल सातवें घर में होगा तो इन्सान को जायदाद से लाभ हो। यदि ग्यारहवां घर शुभ ग्रह युक्त हो तो व्यक्ति को स्त्री या गाय की सेवा से लाभ हो। यदि शनि पांचवें या नौवें घर में हो तो सेहत के लिए बुरा होता है। यहां शनि का उपाय करें।

बृहस्पति पहले घर में हो और राहु आठवें या ग्यारहवें घर में, तो जातक के पिता का मौत दमा या दिल की बीमारी से हो सकती है या उसे किसी प्रकार का मानसिक रोग हो सकता है जिससे इन्सान हमेशा परेशान रहेगा। यहां राहु का उपाय करें।

पहले घर में बृहस्पति और जातक की आर्थिक स्थिति :

क. यदि चंद्रमा अच्छा हो, तो जैसे–जैसे इन्सान की उम्र बढ़ेगी सुख भी बढ़ते जाएगें।
ख. यदि पहले, दूसरे, पांचवें, नौवें ग्यारहवें, तथा बारहवें घर में बृहस्पति के शत्रु ग्रह न हों और सातवें घर में शुभ ग्रह हों तो जातक को विरासत से धन मिले।
ग. यदि ग्यारहवां घर शुभ होगा तो जातक की अपनी कमाई में बरकत बहुत हो।
घ. यदि पहले, दूसरे या चौथे घर में पूर्ण चंद्र हो, या मंगल हो, तो जातक का राजदरबार यानी सरकार से कमाया धन सोने के भाव बिके।

सूर्य, चंद्र व मंगल, बृहस्पति के मित्र ग्रह हैं और शुक्र, शनि तथा राहु बृहस्पति के शत्रु ग्रह हैं। पहला

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

घर मंगल की जमीन है, जहां पर सूर्य उच्च का माना जाता है, इसलिए पहले घर का बृहस्पति इन ग्रहों से प्रभावित होकर अत्यंत बली माना जाता है। बृहस्पति वृद्धावस्था का प्रतीक माना जाता है। बृहस्पति के पांचवें, तीसरे या नौवें घर में सूर्य और मंगल हों तो बृहस्पति अति बली होता है।

बृहस्पति की वस्तुएं : पीपल का पेड़, सोना, केसर, कुलपुरोहित, पीली मिट्टी, हल्दी, पीले चने की दाल व पुखराज़।

बृहस्पति का प्रभाव लग्न में : बृहस्पति का प्रभाव लग्न में लेने के लिए शनि के मन्दे कामों से बचना चाहिए और मित्र ग्रहों की मदद लेनी चाहिए।

राहु –बृहस्पति को खराब करता है, मन में बुरे खयालात पैदा करता है।
बुध –बेशरम लड़की जो बृहस्पति को खराब करे।
शुक्र– नौकरानी स्त्री।

इन सभी चीजों से बचने पर बृहस्पति कायम रहता है और शुभ फल देता है। बृहस्पति का प्रथम शत्रु बुध है और बुध के जहर को दूर करता है सूर्य। सूर्य की मदद लेकर बुध के प्रभाव को नष्ट किया जा सकता है।

दो ग्रहों का फल :

बृहस्पति + सूर्य : जातक राजा जैसा यानी बहुत सम्मानित व्यक्ति होता है। उसका गृहस्थ जीवन हर प्रकार से सुखी होता है। मौत अचानक हो यानी किसी लम्बी बीमारी से न लड़ना पड़े। लेकिन यदि इन पर शनि + राहु या दोनो में से किसी एक की दृष्टि पड़े तो दोनों ग्रह मन्दे हो जाते हैं और फल उल्टा मिलता है।

– ऐसी स्थिति में जातक और उसके पिता इकट्ठे रहें तो दोष दूर।
– मुफ्त में किसी से माल लेना या दान लेना अशुभ।
– यदि पिता से दूर हो या पिता जीवित न हो तो पिता का बिस्तर इस्तेमाल करे, शुभ रहेगा।
– घर में सोना, केसर रखने से भी इनके शुभ असर को बढ़ाया जाता है।

बृहस्पति + चंद्रमा : बृहस्पति और चंद्रमा की युति पहले घर में अति शुभ मानी जाती है। ऐसे इन्सान की शिक्षा ऊंचे दर्जे की होती है। ऐसा आदमी खुद अपनी कमाई करता है और उसमें बरकत भी बहुत होती है।

बृहस्पति + शुक्र : बृहस्पति और शुक्र की युति को दिखावे का धन कहा गया है, लेकिन ऐसा इन्सान जंगल में भी इज्जत पाए। गृहस्थ सुख यानी कुटुम्ब का सुख तभी होगा यदि औरत और पिता में से एक ही बाकी रहे। यदि इन ग्रहों पर राहु या बुध की दृष्टि होगी तो गृहस्थी और खुद का नाश।

बृहस्पति + मंगल : बृहस्पति और मंगल की युति पहले घर में अच्छे भाग्य का प्रतीक है, लेकिन यदि बुध सांतवें घर में हो, तो दोनों के फल को नष्ट करे।

बृहस्पति + बुध : बृहस्पति और बुध पहले घर में हों, तो जातक की आर्थिक हालत काफी अच्छी, लेकिन

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

यदि इन पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो, या बृहस्पति के पक्के घरों (2,5,9,12) में अशुभ ग्रह बैठे हों, तो व्यक्ति के पिता, या ससुर को सांस की तकलीफ हो सकती है, पिता को विशेष लाभ नहीं होता और जातक की आर्थिक हालत भी अच्छी नहीं होती।

इन अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दूर करने के लिए बुध का ही उपाय किया जाएगा जैसे बुध की चीज़ों का मन्दिर में दान देना।

बृहस्पति + शनि : बृहस्पति + शनि की युति इन्सान को साधु स्वभाव का या एक गुरु जैसा बना देती है। लेकिन आर्थिक पक्ष से यह युति अच्छी नहीं और यदि शनि अपनी नीच राशि में हो तो आर्थिक स्थिति बहुत खराब होने की संभावना रहती है। ऐसे समय में शनि को बलवान करना चाहिए।

बृहस्पति + राहु : पहले घर में बृहस्पति राहु की युति से व्यक्ति के पास पैसे की कमी नहीं रहती और जातक दानी तबीयत का होगा। बेशक गरीब घर में जन्म ले, कमाई के साधन खुद बनेंगे। यदि इस युति पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि हो, या राशि के हिसाब से कोई ग्रह मन्दा हो रहा हो, तो 16 से 21 वर्ष की आयु के बीच जातक के पिता को सांस का कष्ट दे। जातक के स्वयं के जिस्म में कोई न कोई रोग रहे। दूसरे व्यक्ति भी जातक के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते।

बृहस्पति + केतु : पहले घर में केतु+बृहस्पति की युति जातक को जीवन में हमेशा आराम देती है। ऐसा व्यक्ति जहां कहीं भी कदम रखे वहां के लोग भी सुखी रहें। लेकिन इस युति के समय यदि घर नं. 6 (केतु की जड़) में चंद्र या मंगल हो, घर नं. 9, या 10 (बृहस्पति की जड़) में शुक्र, बुध या राहु हो तो दोनों ग्रहों की युति के फल को नष्ट करे।

धर्म स्थान में पीले नींबू दान करना शुभ रहेगा।

बृहस्पति दूसरे घर में : कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार दूसरा घर शुक्र का है। लेकिन लाल किताब के अनुसार इसको शुक्र की जमीन कहा गया है। जिस पर बृहस्पति ने अपना मकान बनाया है शुक्र और बृहस्पति एक दूसरे के दुश्मन, दोनों ही एक दूसरे को दबाएंगे। इन दोनों ग्रहों की युति जिस घर में होंगी उस घर से ताल्लुक रखने वाली वस्तुओं की हानि होगी।

गुरु घर नं. 2 होने पर व्यक्ति यदि सोने का व्यापार करेगा तो जर, जोरू व जमीन तीनों पक्षों से हानि।

गुरु घर नं. 2 में हो, तो मन्दिर घर में स्थापित न करें वर्ना शुक्र दबेगा और स्त्री बीमार। शुक्र स्थापित हो, तो खेती बाड़ी करना और घर आए मेहमान का आदर करना लाभदायक होगा।

कुण्डली के घर नं. 6, 8, 12 और 2 में पाप ग्रह हों तो मन्दिर जाना मना है । दूसरे घर के बृहस्पति को जगतगुरु भी कहा गया है। स्त्री के कुण्डली में दूसरा घर ससुराल का माना जाता है। यहां बृहस्पति शिक्षा तथा विद्या का कारक है। सरकार के काम या गेहूं के काम मिट्टी का फल देगें।

बृहस्पति कुण्डली के दूसरे घर में हो और शनि वर्षफल में दूसरे घर में आ जाए तो सेहत खराब और ससुराल पक्ष को आर्थिक हानि। यदि शुक्र मन्दा और शनि दसवें हो तो जातक की स्त्री के लिए अशुभ। यदि बुध आठवें घर में और शनि दसवें घर में हो तो धन के लिए हानिकारक होगा और घर के बुजुर्ग

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

भी सुखी रहेंगे।

यदि कुण्डली के दूसरे और आठवें घरों में पाप ग्रह होंगे, तो ऐसा जातक जहां भी महमान बनकर जाए वहां नुकसान होगा।

यदि दूसरे घर के बृहस्पति पर कोई अशुभ असर न हो रहा हो, तो उसके पिता की जायदाद मिलेगी वर्ना वह जातक खुद जायदाद बनाएगा।

दूसरे घर के बृहस्पति के समय यदि केतु नौवें घर में हो तो जातक में हुकूमत करने की ताकत होगी और वह अपने जीवन की हर मन्जिल पर फतेह पाएगा। यदि केतु छठे घर में हो, तो जातक को अपनी मौत का पहले ही पता चल जाएगा।

दूसरे बृहस्पति के समय यदि घर नं. 2, 6 व 8 शुभ हों या घर नं. 8 और 10 में कोई मन्दा ग्रह न हो और घर नं. 12 भी मन्दा न हो, तो ऐसे व्यक्ति को लाटरी, दबा धन या पिता की अत्याधिक दौलत मिलेगी।

दूसरे घर के बृहस्पति के साथ शनि युति से या दृष्टि से संबंध बनाए तो उसे विद्या से बहुत लाभ होगा।

बृहस्पति के दूसरे घर में होने से जातक की पत्नी देखने में खूबसूरत होगी। इसी समय यदि सूर्य दसवें घर में हो, तो जातक जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करेगा।

दूसरे घर के बृहस्पति के समय यदि चन्द्रमा व मंगल आठवें घर में एक साथ हों, तो जातक का खानदान तबाह करें।

बुध आठवें में, या शनि दसवें में हो तो धन हानि करे, या बुजुर्गों को दुखी करे।

दूसरे घर के बृहस्पति के समय यदि बुध आठवें घर में हो, तो जातक की बहन, बुआ और बेटी के लिए अशुभ।

दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य : दूसरे घर में सूर्य + बृहस्पति इकट्ठे हों, तो शुभ होते हैं। जातक का जीवन अच्छा होता है। यह युति इस बात का भी प्रतीक है कि जातक का मकान अच्छा होगा। मगर यही युति जातक में बेरहमी का जज़्बा भी भर देती है।

बृहस्पति + चंद्रमा : दूसरे घर में बृहस्पति+चंद्रमा की युति उत्तम मानी जाती है। यदि इस युति को बुध और राहु देखें, या साथ बैठे हों, तो बृहस्पति का फल बहुत हद तक नष्ट हो जाता है। ऐसी हालत में साली को अपने घर में रखना बदनामी और नुकसानदायक।

जब बृहस्पति और चंद्रमा की युति दूसरे घर में हो और उसी समय बुध छठे घर में हो, तो जातक की नजर पर असर पड़ सकता है और शनि की चीजों यानी मशीनों आदि पर भी बुरा असर पड़ता है। ऐसे व्यक्ति का बुढ़ापे में हाल अच्छा नहीं होता।

बृहस्पति + शुक्र : बृहस्पति और शुक्र की युति दूसरे घर में हो और जातक सोने का व्यापार करे तो सब मिट्टी हो जाए और यदि शुक्र की वस्तुओं यानी खेती बाड़ी और बने बनाए कपड़ों का कारोबार करे

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

तो मिट्टी भी सोना बने। यदि इस युति पर राहु की दृष्टि हो, तो दोनों का फल मन्दा और औलाद में विघ्न।

बृहस्पति + मंगल : बृहस्पति और मंगल की युति दूसरे घर में अच्छी मानी जाती है। जातक को गृहस्थी का सुख नसीब हो और ससुराल से संबंध अच्छे बनें। साथी, दोस्त और दुनियादार लोग ऐसे इन्सान की आवाज पर सर कटाने को तैयार रहें। यदि इसी युति के समय बुध छठे घर में हो, तो जातक अपनी योग्यता तथा दिमाग से धन कमाए।

इसी युति पर यदि केतु और बुध की दृष्टि पड़े तथा मंगल बद हो, तो दोनों ग्रह मन्दे हो और गृहस्थी जीवन बरबाद हो।

बृहस्पति + बुध : इस घर में बृहस्पति और बुध की युति उत्तम है। जातक को ब्रह्मज्ञानी बनाती है। आर्थिक स्थिति अच्छी और इस युति से इन ग्रहों की हालत मन्दी नहीं होती, लेकिन पिता को आर्थिक नुकसान यहां तक कि पिता के सोने को भी राख करे।

बृहस्पति + शनि : दूसरे घर में बृहस्पति और शनि यदि दोनों अशुभ ग्रहों से प्रभावित हों, तो राजदरबार/सरकार से कमाया धन या शरीर का कोई अंग दोनों में से एक के बर्बाद होने का डर। बीमारी का कारक भी बन सकते हैं। वर्षफल के अनुसार जब यह दोनों ग्रह जातक के नौवें, इक्कीसवें, तैतीसवें, इकतालीसवें, सतावनें और पैंसठवें साल में घर नं. 2 में आ जावें, तो बृहस्पति की कारक चीजें यानी पीतल, सोना आदि जातक की अपनी सेहत और पिता की उम्र पर बुरा असर डाले। इस असर की निशानी शनि की चीज़ों से प्रकट होगी, इसलिए शनि का उपाय मदद करेगा। नंगे पांव मंदिर जाना चाहिए या पानी का कुंभ स्थापित करना चाहिए।

बृहस्पति + राहु : दूसरा घर बृहस्पति का पक्का घर है। इसलिए राहु बृहिस्पति के अधीन रहेगा और नुकसान नहीं पहुंचाएगा। ऐसा इन्सान गरीबों की मदद करने का आदी होगा।

इस स्थिति में यदि आठवें घर में शुक्र+बुध या राहु के शत्रु ग्रह होंगे, तो नर औलाद पर बुरा असर पड़ेगा।

बृहस्पति + केतु : दूसरे घर में बृहस्पति + केतु बुरा असर नहीं देते, क्योंकि केतु बृहस्पति का चेला है। दूसरे घर में बृहस्पति+केतु के समय यदि आठवां घर खाली हो तो जातक दूसरों की हमदर्दी का व्यवहार करेगा और उसकी आर्थिक हालत भी अच्छी होगी और यदि आठवें घर में शत्रु ग्रह होंगे तो जातक का भाग्य मन्दा और बुरी किस्मत का मालिक होगा।

विशेष : बृहस्पति कुण्डली के दूसरे घर में हो और शुक्र वर्षफल में दूसरे घर में आ जाए तो सांप को दूध पिलाना चाहिए।

उपाय :

1. चने की पीली दाल मन्दिर में दान करें।
2. सांप को दूध पिलाएं।
3. अतिथियों का आदर सत्कार करें।
4. दूसरों का सम्मान करने से जातक की अपनी उन्नति होगी।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

बृहस्पति तीसरे घर में : तीसरे घर के बृहस्पति को गरजता शेर कहा गया है। बहन–भाइयों से संबंध अच्छे रखने पर जातक के लिए शुभ। विशेषकर मंगल शुभ और घर नं. 2 भी शुभ हों, तो बहन–भाई हमेशा मददगार रहेंगे। व्यक्ति की 26 साल की उम्र से उसकी दौलत बढ़नी शुरू हो जाएगी।

बृहस्पति तीसरे के समय यदि शनि घर नं. 9 में हो तो जातक की उम्र और धन में बरकत हो।

बृहस्पति के समय यदि चंद्रमा घर नं. 12 में हो, तो व्यक्ति अपनी खुशामद से खुश हो जो उसकी बरबादी का कारण बने। इसलिए खुशामदी लोगों से बचें।

बृहस्पति घर नं. 3 के समय यदि शनि घर नं. 4 में हो और बुध भी मन्दा हो रहा हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरों को लूट–खसोट कर खुद अमीर बने।

बृहस्पति 3 के समय यदि कुण्डली में मंगल बद हो, तो ऐसा इन्सान गप्पी या बकवासी स्वभाव का होता है और उसकी इस आदत का असर उसकी औलाद पर भी पड़ता है।

तीसरे घर के बृहस्पति को और अच्छा करने के लिए दुर्गापाठ या छोटी कन्याओं की पूजा करनी चाहिए।

बृहस्पति तीसरे घर में, शनि चौथे में और बुध मन्दा हो तो इसका असर जातक के मामा पर भी पड़ता है और औलाद पर भी।

बृहस्पति 3 के समय यदि पांचवें घर में बृहस्पति के मित्र ग्रह हों, तो औलाद के जन्म से उस जातक का भाग्योदय होता है।

तीसरे घर में यदि बृहस्पति अकेला हो तो गले में सोना डालकर, पहले घर में जाएं।

तीसरे घर में दो ग्रहों का प्रभाव

बृहस्पति + सूर्य : मंगल की जमीन पर दो मित्र ग्रह होने से शुभ प्रभाव। व्यक्ति जीवन में लगातार उन्नति करे। लेकिन जातक यदि लालची होगा तो दोनों ग्रहों का फल मन्दा हो जाएगा।

बृहस्पति + चंद्रमा : तीसरे घर में बृहस्पति और चंद्र की युति शुभ होती है। व्यक्ति की आर्थिक स्थिति उत्तम और समाज में रुतबा बना रहता है। इन दोनों ग्रहों से बुध का संबंध दृष्टि या युति से खराब होता है।

बृहस्पति + शुक्र : तीसरे घर में बृहस्पति + शुक्र की युति शुभ होती है। जातक खुशहाल रहता है और भाइयों से मदद पाता है। ऐसे जातक की स्त्री, एक मर्द की तरह से उसकी सहायता करती है। ऐसी युति वाला व्यक्ति यदि दूसरे की खुशामद करेगा, तो खुद की प्रगति रुक जाएगी।

बृहस्पति + मंगल : यह युति इन्सान को अपने बुजुर्गों की ओर से धन दिलाती है, जिसकी वह हिफाजत करता है लेकिन उसमें बढ़ोतरी नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति धार्मिक स्वभाव का होता है। यदि नहीं होगा तो ग्रह फल नहीं देंगे। धार्मिक बनें।

बृहस्पति + बुध : तीसरे घर में बृहस्पति + बुध की युति इन्सान को अक्लमन्द बनाती है। भाग्य पर सब्र करने वाला, स्वभाव से हौसले वाला होता है। लेकिन पत्नी पर कोई न कोई अशुभ असर होने की

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

संभावना बनी रहती है और पिता के धन में कमी आ सकती है।

बृहस्पति + शनि : तीसरे घर में शनि+बृहस्पति की युति जातक को आम दर्जे जिन्दगी देती है। लेकिन ऐसा जातक बुढ़ापे में बहुत आराम पाता है। शनि की उम्र यानी 16 या 31 साल में पिता को नुकसान की संभावना बन सकती है।

बृहस्पति + राहु : तीसरे घर में बृहस्पति + राहु की युति जातक को बहादुर बनाती है । ऐसा जातक अपनी आंख से दूसरों को भांप लेने की शक्ति रखता है, लेकिन 24 साल की उम्र तक बहन–बुआ या लड़का आदि का फल अशुभ रहता है।

बृहस्पति + केतु : केतु बृहस्पति का चेला है, इसलिए तीसरे घर में इनकी युति कोई विशेष महत्व नहीं रखती।

बृहस्पति चौथे घर में : कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार चौथे घर में कर्क राशि पड़ती है, जिसका स्वामी चंद्रमा है, जो बृहस्पति का मित्र है और चौथे घर में बृहस्पति उच्च का माना जाता है । यदि बृहस्पति यहां शुभ होगा तो जातक जमीन जायदाद का मालिक होगा। लक्ष्मी ऐसे व्यक्ति के पांव पकड़ती है। जातकों स्त्री, औलाद और माता पिता का पूर्ण सुख मिलता है।

यदि सूर्य और मंगल भी शुभ स्थिति में हो तो जातक का पिता न्यायाधीश होता है। लेकिन यदि चौथे घर में बृहस्पति और दसवें घर में शनि या बुध हो, तो बृहस्पति के फल में काफी कमी आ सकती है। बृहस्पति चौथे के समय यदि बुध दसवें घर में हो और वर्षफल में बुध चौथे में आ जाए तो कुल के नाश होने का बहाना बने। यदि यही स्थिति 23, 34, 48 या 55 साल में बने तो जातक की माता पर विशेष अशुभ रहे।

चौथे बृहस्पति के समय यदि इसके शत्रु ग्रह यानी बुध, शुक्र और राहु दसवें घर में हों तो जातक के सम्मान को खतरा बने। उस पर कोई लांछन भी लग सकता है। यदि दसवें का राहु अशुभ हो रहा हो तो चंद्रमा की कारक चीजें यानी माता के लिए अशुभ।

चौथे बृहस्पति के समय यदि केतु आठवें घर में या छठे घर में हो तो जातक मुसीबतों का सामना करने की बजाए घर से भाग जाए।

चौथे बृहस्पति के समय यदि चंद्रमा दूसरे घर में तथा शनि+राहु शुभ हो, तो जातक एक बड़ा अफसर होता है लेकिन जातक की सेहत खराब।

चौथे बृहस्पति के समय यदि दसवां घर खाली हो, तो ऐसा जातक किसी के सामने अपना बदन नंगा न रखे वर्ना धन के लिए अशुभ। केतु मंदा हो तो औलाद भी मन्दी।

चौथे घर के बृहस्पति पर कोई अशुभ प्रभाव न हो तो ऐसे व्यक्ति को लाटरी से धन, दूसरों से धन या दबा धन प्राप्त हो सकता है।

बुजुर्गों का अथवा साधु संतों का आशीर्वाद लेना चाहिए। बुध की वस्तुएं यानी भेड़, बकरी आदि नहीं पालनी चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

बृहस्पति 4 के समय यदि शनि घर नं. 2 में – चालाक, अच्छे भाग्य वाला।
बृहस्पति 4 के समय यदि सूर्य घर नं. 1 में – दोनों ग्रह श्रेष्ठ फल दें।
बृहस्पति 4 के समय यदि शनि घर नं. 9 में – सबको तारने वाला।
बृहस्पति 4 के समय यदि चंद्रमा घर नं. 2 में – पिता से बढ़कर रुतवा।
बृहस्पति 4 के समय चंद्रमा कायम और सूर्य घर नं. 10 में – राजदरबार उत्तम, लाभ।

चौथे घर में दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य : चौथे घर में बृहस्पति और सूर्य की युति शुभ होती है। इस युति वाले व्यक्ति का जीवन शानदार होता है। शनि की कारक वस्तुओं का कारोबार अति लाभदायक रहे।

बृहस्पति + चंद्रमा : चौथे घर का चंद्रमा अपने घर का और बृहस्पति यहां उच्च का फल दे। इस युति से इन्सान के मन की शांति बनी रहे। इस युति वाले जातक के जन्म के समय से ही धन का चश्मा निकल पड़े।

बृहस्पति + शुक्र : चौथे घर में बृहस्पति व शुक्र की युति नेक फलदायक मानी गयी है। यदि ऐसा व्यक्ति एक से ज्यादा औरतों से संबंध रखे, तो दोनों ग्रह नष्ट हो जाएंगे। यदि इस युति पर राहु की दृष्टि हो, तो जातक की स्त्री बच्चे की पैदाइश के समय चल बसे।

बृहस्पति + मंगल : चौथे घर में बृहस्पति व मंगल की युति से घर में मर्दो की गिनती में कोई कमी न रहे। मगर उनके गुजारे के लिए पर्याप्त धन होना आवश्यक नहीं। आमतौर पर यह युति यहां अच्छा फल देती है।

बृहस्पति + बुध : चौथे में बृहस्पति + बुध दोनों शुभ हों तो राज योग का फल देते हैं। यदि इस पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो या कोई ग्रह नीच राशि में आ जाए तो ऐसे इन्सान में हौसले की कमी बनी रहे।

बृहस्पति + शनि : बृहस्पति + शनि की युति चौथे घर में हो तो व्यक्ति को बहुत प्रसिद्धि देती है। शनि यानी सांप उस जातक की नैया पार कराए। यदि राशिफल के अनुसार बृहस्पति उत्तम हो और शनि खराब हो रहा हो तो ऐसे जातक का कोई अंग बरबाद हो सकता है। यदि इस युति पर शुक्र की दृष्टि पड़े तो जातक के पास दिखावे का धन होता है।

बृहस्पति + राहु : चौथे घर में बृहस्पति और राहु की युति उत्तम चंद्र का पूरा लाभ देगी। माता तथा मन की शांति के लिए शुभ। लेकिन पिता के लिए तथा बृहस्पति की अन्य चीजों के लिए अशुभ।

बृहस्पति + केतु : बृहस्पति यहां उच्च का लेकिन केतु मन्दा हो, तो औलाद के लिए शुभ। यदि दोनों ग्रह मन्दे हो रहे हों, तो जातक नर औलाद की ओर से परेशान।

बृहस्पति पांचवें घर में :

पांचवें घर को बृहस्पति की भूमि कहा गया है, जो पुत्र सुख से संबंधित है। बृहस्पति क्योंकि उत्पत्ति का मालिक है इसलिए पुत्र की पैदाइश के बाद और भी उत्तम यानी पुत्रों द्वारा जातक की उन्नति। किन्तु

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार पांचवें घर में सूर्य की राशि सिंह पड़ती है और सूर्य है आग का गोला। इसलिए पांचवें घर के बृहस्पति वाले इन्सान को आग का बास की संज्ञा दी गयी है, क्योंकि वह बहुत गुस्से वाला होता है। यदि बृहस्पति पांचवे के समय सूर्य, चंद्र और मंगल नौवें हो तो जातक की दौलत और भी बढ़ेगी जो खासकर उसकी औलाद द्वारा कमाई हुई होगी।

पांचवें घर के बृहस्पति के समय यदि कुण्डली में शनि भी उत्तम हो और औलाद शनिवार के दिन पैदा हो, तो बहुत शुभदायक होगी।

बृहस्पति पांचवें के समय यदि अशुभ केतु ग्यारहवें घर में हो, तो अशुभ फल देगा। केतु ग्यारहवें के समय यदि जातक धर्म के नाम पर धन इकट्ठा करने की कोशिश करे, तो औलाद की ओर से दुःखी, कभी–2 मुर्दा औलाद पैदा हो।

बृहस्पति पांचवें के समय यदि राहु मन्दा हो, तो बृहस्पति अशुभ और हर तरफ तंगी ही तंगी का नजारा।

बृहस्पति पांचवें के समय यदि सूर्य भी साथ हो, तो अति शुभ और इस युति के समय यदि चंद्र घर नं. 4 में हो तो वह व्यक्ति के सम्मान और उसके रुतवे को ऊँचा करता है और लड़के के जन्म दिन से उसका भाग्य विशेष तौर पर शुभ होना शुरू हो जाएगा।

बृहस्पति अशुभ होने से कष्ट

1. औलाद पुत्र न हो।
2. जातक की मान प्रतिष्ठा में कमी हो जाए।
3. शत्रुओं का भय।
4. मानसिक परेशानी

कारण :

1. जब पांचवें घर में बृहस्पति के साथ केतु भी हो तो राहु ग्यारहवें में होगा। ऐसे समय में बृहस्पति की मिल्कियत वाले घरों यानी 2, 5, 9 और 12 आदि में बृहस्पति के शत्रु ग्रह बुध और शुक्र हों तो बृहस्पति से संबंधित चीजों पर बुरा असर हो। केतु, जो बृहस्पति के साथ उत्तम हो जाता है, मन्दा प्रभाव देगा।
2. दूसरे, नौवें, ग्यारहवें अथवा बारहवें घर में बुध, शुक्र, राहु में से कोई भी ग्रह हो, तो बृहस्पति, सूर्य और केतु का फल मन्दा होगा अतः बृहस्पति पांचवें के समय इन तीनों में से कोई भी ग्रह 2, 9, 11 और 12वें में होगा तो बृहस्पति मन्दा हो जाएगा। पांचवें बृहस्पति वाले जातक को परिश्रमी और ईमानदार होना शुभ फल देगा।

उपाय

1. दूसरे, पाचवें, नौवें, ग्यारहवें और बारहवें घर में पड़े बुध, शुक्र या राहु का उपाय करें।
2. धर्म के नाम पर मांगने वाला दरवेश (कुता) बनने की कोशिश न करें।
3. ईमानदार और परोपकारी बनें।

दो ग्रहों का फल

बृहस्पति और चंद्रमा : पांचवें घर में बृहस्पति और चंद्रमा नेक फल देते हैं। यदि इन पर किसी मन्दे ग्रह की दृष्टि न हो, तो जातक अपने व्यापार और कलम की ताकत से धन कमाएगा और इस धन से दूसरों की मदद भी करेगा।

बृहस्पति और शुक्र : पांचवें घर में बृहस्पति और शुक्र की युति हो, तो जातक अपनी शिक्षा और हुनर से धन कमाता है। उसकी औलाद की दौलत में बहुत बरकत होती है। किन्तु ऐसा व्यक्ति यदि शादीशुदा औरतों से संबंध रखेगा। तो धन की हानि या चोरी होगी।

बृहस्पति और मंगल : जब पांचवें घर में बृहस्पति के साथ मंगल हो और ऐसा इन्सान किसी से भिक्षा (धर्म के नाम पर) या दान ले, तो बर्बाद हो जाएगा। यदि ऐसा न करे, तो लड़के की पैदाईश के बाद उसका चश्मा फूटेगा।

बृहस्पति और बुध : पांचवें घर में बृहस्पति और बुध की युति जातक को भाग्यवान व खुशहाल बनाती है। किन्तु यह तभी होता है, जब उसके घर लड़के का जन्म होता है।

बृहस्पति और शनि : पांचवें घर में बृहस्पति और शनि की युति जातक के राजदरबार यानी सूर्य के असर को खराब करता है। सरकार की ओर से नुकसान, अफसरों से दुश्मनी का डर, लेकिन अंत में फैसला जातक के हक में होगा। ऐसा इन्सान यदि चालाकी करे, मांस–मछली और शराब का इस्तेमाल करे या बुरी आदतों वाला हो, तो बृहस्पति का फल खराब हो जाएगा।

बृहस्पति और राहु : पांचवें घर में बृहस्पति और राहु की युति संतान पक्ष के लिए अशुभ है। परंतु यही युति जातक को हुक्मरान या कबीले का सरदार बनाती है।

बृहस्पति और केतु : पांचवें घर में बृहस्पति और केतु की युति कोई विशेष फलकारक नहीं होती।

बृहस्पति छठे घर में

छठा घर बुध का है। केतु का भी इस घर पर प्रभाव माना जाता है। इसलिए छठे घर के बृहस्पति के साथ बुध तथा केतु का प्रभाव भी शामिल हो जाता है। यदि केतु (दरवेश, मांगने वाला) और बृहस्पति (साधु) दोनों उत्तम अर्थात केतु शुभ घर का हो तो बिना कुछ कर्म किए ही भोजन मिले। इसलिए छठे घर के बृहस्पति को मुफ्तखोर साधु कहकर पुकारा गया है। यदि छठे बृहस्पति के समय केतु बारह में होगा तो बृहस्पति को शुभ कर देगा। ऐसे व्यक्ति के ननिहाल खानदान के लोग आर्थिक स्थिति में अच्छे होंगे। बृहस्पति 6 के समय यदि शनि घर नं. 10 में हो तो जातक की अपनी आर्थिक स्थिति उत्तम। छठे घर में बृहस्पति कुटिया में बैठे साधु की तरह है जिसके पास मन की शांति तो होगी लेकिन ठाठ बाठ नहीं। यदि केतु खराब हो और बुध दूसरे घर से बृहस्पति को खराब करे तो जातक की आर्थिक स्थिति अति खराब हो सकती है।

कारण

1. यदि घर नं. 2, 5, 9, 11 और 12 में बुध, शुक्र और राहु में से कोई भी हो।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

2. यदि जातक धी, दोहते, दोहती और उसके परिवार अर्थात अपने दोहते, भान्जे की अवहेलना और निरादर करे।

उपाय

1. बेटी व उसकी संतान का मान–सत्कार करें और उसके परिवार की पालना करें।
2. पिता को साथ रखें या पिता के साथ रहें।
3. बृहस्पति की वस्तुएं सोना, केसर आदि को अपने पास रखें।
4. बृहस्पति की कारक चीज़ें चने की दाल या पीले सेब मन्दिर में दान करें।
5. यदि बृहस्पति केतु के कारण अशुभ हो रहा हो तो लोहे की गोली पर लाल रंग करके पास रखना चाहिए।

दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य : छठे घर में यदि बृहस्पति और सूर्य दोनों हों, तो दोनों का अलग–2 फल होगा लेकिन बुढ़ापे में दोनों शुभ फल देंगे।

बृहस्पति + चंद्रमा : छठे घर में बृहस्पति और चंद्रमा की युति कोई विशेष शुभ फल नहीं देती। यदि कुण्डली में बुध और केतु अच्छे हों तो बृहस्पति बुरा फल नहीं देता।

बृहस्पति + शुक्र : बृहस्पति और शुक्र की युति छठे घर में कोई शुभ फल नहीं देती। इस युति वाला व्यक्ति यदि अपनी पत्नी की बेकद्री करे तो दोनों ग्रहों का फल अशुभ हो जाता है।

बृहस्पति + बुध : छठे घर में बृहस्पति और बुध की युति दोनों किस्म का फल दे सकती है। यदि केतु शुभ हो यानी बारहवें घर में हो तो जातक धार्मिक और पूजा पाठ करने वाला होता है और यदि केतु तीसरे या आठवें में हो तो व्यक्ति ऐशो इशरत और ऐयाशी में बर्बादी कर लेता है।

बृहस्पति + मंगल : छठे घर में बृहस्पति और मंगल की युति शुभ होती है, किन्तु इस युति के समय जातक बुध या केतु के काम करे या उनकी चीज़ों से संबंध रखे तो औलाद पर बुरा असर पड़ेगा।

बृहस्पति + शनि : छठे घर में बृहस्पति और शनि की युति के समय यदि शनि राशि से शुभ हो तो व्यक्ति स्त्री की ओर से सुखी और यदि शनि अशुभ हो रहा हो तो स्त्री से सुख प्राप्त न हो।

बृहस्पति + राहु : छठे घर में बृहस्पति और राहु अपना–2 फल देंगे। राहु यहां पर शुभ फल देगा और बृहस्पति यदि किसी और ग्रह के कारण खराब हो रहा होगा तो जातक के पिता के लिए अशुभ होगा।

बृहस्पति + केतु : छठे घर में बृहस्पति और केतु की युति हो और इसी समय दूसरा घर खाली हो या दूसरे घर में शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक की आर्थिक हालत अच्छी होती है और कई बार जातक को अपनी मौत का पता पहले से ही चल जाता है। यदि केतु खराब हो रहा हो तो पहले लड़के या लड़की का जीवन दुःखी और यदि बृहस्पति खराब हो तो जातक का जीवन दूसरों की गुलामी में गुजरे।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

बृहस्पति सातवें घर में

सातवां घर शुक्र का है इसलिए सातवें घर में बृहस्पति शुक्र से युक्त होगा। इसलिए सातवें घर के बृहस्पति को गृहस्थी में कैद साधु कहा गया है यानी ऐसा साधु जो गृहस्थी का नर्क भोगने पर मजबूर होगा। लड़के की कुण्डली में सातवें घर का बृहस्पति अच्छा फल नहीं देता लेकिन लड़की की कुण्डली में औलाद और धन के लिए इस बृहस्पति का असर खराब नहीं होता।

जिस जातक की कुण्डली में बृहस्पति सातवें घर मे होगा वह इन्सान घर की जिम्मेवारियों से दूर भागने की कोशिश में मन्दिरों व साधु–सन्तों के चक्करों में रहता है। अगर घर में मन्दिर बनाकर पूजा पाठ करेगा तो पुत्र सुख में बाधा आएगी और दूसरों से मांगे यानी गोद लिए पुत्र से भी सुख प्राप्त न हो सकेगा।

रखा घर में मंदिर न परिवार देगा,
बचे लड़का जो, वो सब मिट्टी करेगा।।

यदि बृहस्पति अच्छी हालत में होगा तो जातक की ससुराल से दहेज में मिला धन बहुत बर्कत देगा।

कष्ट : जिस व्यक्ति के बृहस्पति सांतवें होगा उसका गृहस्थ जीवन सुखी न होगा।

कारण :

1. बृहस्पति, शुक्र (शत्रु) के घर में, पत्नी नम्बरदारी में रुची रखे।
2. घर में मन्दिर बना कर पूजा होती हो।
3. साधु–संतों से संपर्क बनाए।

उपाय

1. घर में मन्दिर मत बनाओ, अगर हो तो हटा दो।
2. साधु संतों का साथ व ध्यान छोड़ो।
3. परस्त्री से संपर्क न करें।
4. लाल रंग की रत्ती जो एक तरफ से काली हो पास रखें।
5. साबुत मूंग (मंगल बद की वस्तु), जो बुध की भी वस्तु है पीले वस्त्र में बांध कर या पीतल के बर्तन में रखें।
6. चंद्र का उपाय यानी बारिश के पानी में नहाना भी शुभ होगा।

दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य : सातवें घर में यदि बृहस्पति और सूर्य इकट्ठे हों तो दोनों ग्रहों का अपना–2 फल होगा। यदि किसी कारण एक ग्रह खराब हो रहा होगा तो जरूरी नहीं कि वह दूसरे ग्रह का फल भी मन्दा करे।

बृहस्पति + चंद्रमा : सातवें घर में बृहस्पति और चंद्रमा की युति से जातक को दलाली में लाभ होगा। यदि अशुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो तो चंद्रमा की आयु यानी छठे, बारहवें तथा 24वें साल में माता–पिता

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

के लिए अशुभ रहे। इस युति वाले जातक का धन, शुक्र स्थापित होते (यानी शादी होने के बाद) या बुध स्थापित होते (यानी लड़की के जन्म के बाद) ही घटना शुरू हो जाएगा।

बृहस्पति + शुक्र : सातवें घर में बृहस्पति के साथ शुक्र हो तो इतना बुरा असर नहीं पड़ता। बुध के कामों में बरकत होगी।

बृहस्पति + मंगल : सातवें घर में बृहस्पति मंगल की युति कोई खास शुभ फल नहीं देती। ऐसा व्यक्ति दूसरों का कर्जदार रहता है।

बृहस्पति + बुध : बृहस्पति व बुध की युति सातवें घर में यदि लड़की की कुण्डली में हो तो शुभ रहे लेकिन यही युति यदि लड़के की कुण्डली में हो तो धन दौलत के लिए अशुभ होती है। ऐसा व्यक्ति औलाद की ओर से भी परेशान रहे।

बृहस्पति + शनि : सातवें घर में बृहस्पति और शनि की युति होने पर जातक को शनि की चीजों से लाभ हो। शुक्र या मंगल भी कुण्डली में शुभ हो तो गरीब घर में पैदा होने पर भी व्यक्ति अमीर बने। शुक्र अच्छा होने पर जीवन में स्त्रियों का अच्छा योगदान रहे। यदि बृहस्पति + शनि अशुभ हो रहे हो तो लड़की के जन्म के समय से दौलत बर्बाद या पिता की सेहत खराब हो।

बृहस्पति + राहु : सातवें घर में बृहस्पति के साथ राहु की युति कोई अच्छा फल नहीं देती। ऐसा व्यक्ति अपनी जवानी के समय आराम पाता है लेकिन पिता या ससुर दोनों में से एक ही जिन्दा रहे या दोनों में से एक को दमा हो।

बृहस्पति + केतु : बृहस्पति और केतु की युति सातवें घर में जातक को धार्मिक तो बनाती है परंतु यह युति धन दौलत के लिए अशुभ है।

बृहस्पति आठवें घर में

आठवां घर शनि और मंगल से प्रभावित। मंगल, बृहस्पति का मित्र और शनि शत्रु। आठवां घर मृत्यु स्थान यानी यमराज का घर है। बृहस्पति देव गुरु, इसलिए आठवें घर का बृहस्पति मुसीबत के समय ईश्वर की दैवी सहायता का कारक माना गया है। ऐसे व्यक्ति को भाग्य को बढ़ाने के लिए सोना धारण करना चाहिए। बृहिस्पति आठवें वाले जातक के पिता की उम्र जातक के 8 साल तक ही होगी या फिर वह (पिता) 80 साल की आयु भोगेगा, लेकिन बाप और बेटा इकट्ठे नहीं रहेंगे। यदि कुण्डली के चौथे घर में बृहस्पति के मित्र ग्रह होंगे तो ऐसा व्यक्ति जंगल में भी सोना प्राप्त करने की हैसियत रखे। यदि बृहस्पति के पक्के घरों में उसके शत्रु ग्रह (बुध, शुक्र और राहु) न हों तो जातक भरे भंडारों का मालिक। बृहस्पति आठ के समय यदि शुक्र दूसरे , छठे या आठवें में हो तो ऐसे जातक के लड़का या लड़के अवश्य होंगे। यदि शनि या मंगल चौथे या सातवें घर में हो तो जातक पैतृक खजाने को भी राख कर देगा। यदि मंगल बद हो तो आमदनी होते हुए भी कर्जदार रहे। बृहस्पति आठ के समय यदि बुध भी मन्दा हो यानी बारहवें या आठवें घर में हो तो आदमी बुजदिल होगा। यदि ग्यारहवां भाव खाली हो तो खून की कमी के कारण कई प्रकार की बीमारियों का शिकार हो। यदि राहु आठवे या बारहवें हो तो जातक की माली हालत बहुत साधारण। यदि शनि घर नं. 2 में हो तो जातक कच्चे इरादे का होगा। यदि घर नं. 2, 5, 9 या 12 में

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

बुध हो तो ऐसा जातक बार–2 जन्म लेने का दुःख भोगे यानी मोक्ष प्राप्त न हो। इस जीवन में भी उसकी उम्र कम होगी या वह खुद शक्की स्वभाव का होगा।

कष्ट

1. जातक का पिता बीमार या मुसीबत में होगा।
2. जातक का अपना मान खतरे में पड़े या अपमान हो।
3. जातक की सांस घुटी–घुटी रहे।
4. जातक पुत्र सुख के लिए भटकता फिरे।

कारण

1. बृहस्पति के पक्के घरों 2, 5, 9, 11 और 12 में बुध, शुक्र या राहु हो।
2. लग्न में भी इन ग्रहों में से कोई ग्रह हो।
3. जातक घर में मन्दिर की स्थापना करे।

उपाय

1. बृहस्पति की वस्तुएं चने की दाल या केसर अथवा शुक्र की वस्तु मन्दिर में देने से लाभ हो।
2. जातक घर से मन्दिर को हटाए।
3. राहु की वस्तुएं जौ या नारियल गहरे चलते पानी में बहाएं।
4. नाक में चान्दी डालकर बुध का उपाय करें या बुध नौवें हो तो लोहे की गोली लाल रंग करके पास रखें। बुध 12 वें हो तो स्टील का बिना जोड़ का छल्ला धारण करें, बुध ग्यारहवें घर के लिए गले में सफेद धागे में ताम्बे का पैसा धारण करें।
5. बारहवें घर में बृहस्पति के शत्रु (शुक्र, बुध या राहु) हों और दूसरा घर खाली तो जातक मन्दिर न जाए।
6. पिता की सेहत के लिए शमशान में पीपल लगाकर उसकी देख भाल करें।
7. बारहवें घर में सूर्य की वस्तु और चौथे घर में चंद्रमा की वस्तुएं रखें तथा चंद्रमा को प्रबल करें।

आठवें घर में दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य : आठवें घर में बृहस्पति + सूर्य की युति से जातक जागती किस्मत का मालिक हो यानी भाग्य उसका साथ देगा और परिवार बेवक्त की मौतों से बचेगा।

बृहस्पति + चंद्रमा : आठवें घर में बृहस्पति + चंद्रमा की युति शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार का असर रखती है। इसका विशेष असर जातक के भाइयों पर पड़ता है। इस युति के समय जातक यदि मामा के घर से शनि या मंगल की वस्तुएं लेगा तो जहर जैसा असर होगा।

बृहस्पति + शुक्र : आठवें घर में बृहस्पति + शुक्र की युति अशुभ नहीं होती । ऐसे जातक के पास दौलत आती जाती रहती है, जमा नहीं हो पाती। स्त्री सुख के लिए भी अशुभ नहीं।

बृहस्पति + मंगल : आठवें घर में बृहस्पति + मंगल की युति का अपना–2 अलग प्रभाव होगा। यदि

बुध बारहवें घर में या दूसरे ग्रहों के साथ नौवें घर में हो तो मंगल का असर खराब यानी भाइयों पर बुरा असर पड़े।

बृहस्पति + बुध : आठवें घर में बृहस्पति के साथ यदि बुध हो और दूसरा घर खाली हो तो बृहस्पति बुरा असर नहीं देता। लेकिन बुध यदि नीच या किसी शत्रु ग्रह के साथ हो या दोनों की युति पर बुरा असर पड़ रहा हो तो बीमारी का भय हो। इसके लिए मिट्टी के बर्तन में खांड या गुड़ डालकर वीरान जगह में दबाएं या 96 घंटे के लिए नाक में चान्दी डलवाई जाए।

बृहस्पति + शनि : आठवें घर में बृहस्पति + शनि की युति जातक की आयु को लम्बा करती है लेकिन आर्थिक स्थिति कमजोर करती है।

बृहस्पति + राहु : आठवें घर में बृहस्पति + राहु की युति अशुभ है। इसका असर पिता की सेहत या आयु पर पड़ सकता है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षपूर्ण ही रहता है।

अशुभता का उपाय : बृहस्पति की वस्तुएं–केसर, हल्दी और चने की दाल या शुक्र की वस्तुएं –दही या ज्वार मन्दिर में दान करनी चाहिए।

बृहस्पति + केतु : आठवें घर में बृहस्पति + केतु की युति शुभ नहीं होती। जातक की आर्थिक स्थिति अधिकतर कमजोर रहती है। जीवन में हमेशा अड़चनें आती रहें और मन में निराशा का अन्धेरा छाया रहे। दोनों के बुरे असर को दूर करने के लिए धर्म स्थान में पीले नींबू दान करने चाहिए।

बृहस्पति नौवें घर में

नौवें घर में बृहस्पति की हर प्रकार से प्रभुसत्ता और प्रभाव प्रबल होता है। इसलिए जिस कुण्डली में बृहस्पति नौवें घर में होगा वह व्यक्ति प्रसिद्ध, अमीर, माननीय और सुनहरी खानदान में जन्म लेगा। ऐसा इन्सान खुद माया के पीछे न भागेगा। बृहस्पति नौवें के समय यदि तीसरा और पांचवां घर खाली होंगे तो ऐसा व्यक्ति अपनी मेहनत से खूब धन कमा लेगा।

बृहस्पति नौ के समय बुध यदि चौथे या पांचवें घर में होगा तो जातक की आदतें राजाओं जैसी होंगी और योगी जैसा बल उसमें होगा। यदि सूर्य उच्च राशि में हो या तीसरे या पांचवें घर से बृहस्पति को देखता हो तो बृहस्पति बहुत शुभ फलदायक हो जाता है। यदि शनि घर नं. पांच में हो तो शनि की आयु के दौरान (16½वें 19वें 33वें व 39वें) वर्ष की आयु में धन लाभ होता है, परंतु संतान के लिए शुभ नहीं।

बृहस्पति नौ के समय यदि चंद्र+शुक्र तीसरे घर में हों तो जातक कभी शाह कभी मलंग। यदि बृहस्पति नौ के समय पहला घर खाली हो तो जातक की सेहत खराब, उसे दिल की बीमारी हो सकती है। बृहस्पति नौ वाले व्यक्ति को धर्म की पालना करनी चाहिए, नहीं तो भाग्यहीन रहे।

कष्ट

1. उपरोक्त बातें होते यदि पूछने पर लागू न हो रही हो।
2. जातक निर्धन, कपटी, धर्महीन, झूठे वायदे करने वाला, खुदगर्ज, पुत्र सुख से वंचित।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

कारण

1. ऐसे व्यक्ति के कुण्डली में पहले, पांचवें व चौथे घर में बृहस्पति के शत्रु ग्रह होंगे।
2. कुण्डली के 2, 5, 11 या 12वें घर में बुध, शुक्र या राहु इत्यादि का होना।
3. जातक झूठे वायदे करने वाला, धर्महीन व्यक्ति होगा।
4. अपने बुजुर्गों का कहना न मानने वाला या उनका अपमान करने वाला होगा।
5. तीसरे घर से बुध या पांचवें घर से शनि/राहु पुत्र सुख में बाधा का कारक होंगे।

उपाय

1. पहले या ग्यारहवें घर में राहु हो तो जौ या नारियल पानी में बहावें।
2. पहले घर में बुध या शुक्र हो तो वचन पूरा करने की आदत डालें।
3. बृहस्पति के मित्र मंगल का मूंगा, चंद्रमा की चांदी और सूर्य का माणिक धारण करें।
4. बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करें, उनके साथ मिल कर रहें।
5. चंद्रमा की सहायता के लिए चावल दरिया में बहाएं।
6. शनि/राहु पांचवें में हो तो बादाम का उपाय करें, औलाद के लिए शुभ होगा।
7. नाक छेद करवा कर चांदी डलवाएं, बुध शरारत नहीं करेगा (101 दिन)
8. स्टील का बेज़ोड़ छल्ला पहनें, फिटकिरी से दांत साफ करें (बुध का जहर)
9. बकरी दान करना, बुध को शरारत करने से रोकेगा।
10. स्त्रियों के चक्कर से बचें, चाल–चलन ठीक रखें तो जातक शुक्र के कुप्रभाव से बचें।

बृहस्पति दसवें घर में

दसवें घर में बैठा बृहस्पति अशुभ माना गया है। इस घर के बृहस्पति को ऐसा बाप कहा गया है जो बच्चों को यतीम छोड़ जाए यानी बृहस्पति इस घर में इस प्रकार से निष्फल और निर्बल माना गया है कि बच्चों को पिता का सुख नसीब नहीं होता। इसका कारण शायद यह है कि दसवां घर शनि की मिल्कियत है। कालपुरुष की कुण्डली के अनुरूप दसवें घर में मकर राशि पड़ती है जहां पर बृहस्पति नीच हो तो दसवें घर में आने वाले ग्रह को शनि की प्रकृति के अनुसार ही चलना होता है। वर्ना दसवें घर में आने वाला ग्रह दुःखी होगा और उससे संबंधित सभी वस्तुएं कष्ट पाएंगी।

दसवें घर का शनि उल्टी दृष्टि से पांचवें घर को टक्कर मारता है। तीसरा घर बुध का है, वह भी दसवें घर को टक्कर मारता है। बुध शनि का मित्र है और बृहस्पति का शत्रु, इसलिए इस घर का बृहस्पति, शनि की तरह चालाक और बुध की तरह बेरहम हो तो शुभ हो जाए।

दसवें घर में बृहस्पति वाला जातक यदि धर्म में बहुत विश्वास रखे और दूसरों की भलाई करे तो स्वयं दुःखी होगा। ऐसा व्यक्ति शादी के बाद अगर दूसरी औरतों से संबंध रखे तब भी अशुभ होगा। बृहस्पति दसवें घर में हो और शनि अपनी उच्च राशि या मित्र राशि में आ जाए तो कुछ सीमा तक शुभ हो जाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

बृहस्पति दसवें में और शुक्र या मंगल चौथे घर में हो तो मिट्टी भी सोने के भाव बिके, परंतु ऐसे में जातक चरित्रहीन औरतों से दूर रहे।

बृहस्पति दस के समय सूर्य यदि घर नं. 4 में हो तो व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। यदि सूर्य घर नं. 3 या 5 में और शनि घर नं. 9 में हो तो सोने चांदी के काम से धन बरसे लेकिन शनि के कामों से नुकसान हो।

बृहस्पति यदि दसवें घर में हो और सूर्य + चंद्र दूसरे घर में हों, तो ऐसे जातक को सरकार की ओर से बहुत शुभ फल प्राप्त हो।

बृहस्पति दसवें के समय यदि शनि मंदा हो या घर नं. 1, 4 या 10 में हो, या फिर चंद्रमा घर नं 4 में हो तो ऐसा इन्सान किसी पर तरस खा कर रोटी खिलाए तो वह जहर की तरह लगे जातक, सजा पाए। जितनी भी दूसरों पर दया दिखाए खुद उतना ही दुखी हो। बृहस्पति दस के समय सूर्य घर नं. 5 में हो तो स्त्री पर स्त्री मरती जावें या छोड़कर भाग जाएं।

कष्ट

1. बृहस्पति दसवें के समय जातक निर्धन, दुखी, परेशान और मंदा हाल हो।
2. जातक को पिता से कोई जायदाद न मिले या पिता की जायदाद से लाभ न हो।
3. जातक पत्नी/पुत्र सुख से वंचित हो।
4. जातक की कोई इज्जत न हो, कोई उसे अच्छा न समझे।

कारण

1. दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें व छठे घरों में बृहस्पति के शत्रु ग्रह होंगे।
2. जातक के नाक से पानी बहता हो और नाक गंदी रहें।
3. दूसरा और चौथा घर खाली हों।
4. जातक मंदिरों और धर्म के देख रेख में रुची रखे।
5. जातक पराई स्त्रियों से गलत संबंध रखें।
6. जातक शराब, गोश्त और अंडे का इस्तेमाल करे (शनि मंदा)।

उपाय

1. हानि पहुंचाने वाले कामों से परहेज करें।
2. चावल पीले करके चलते पानी में बहाएं। (चंद्रमा से मदद)
3. तांबे का पैसा चलते पानी में बहाएं। (सूर्य से मदद)
4. मंदिर में बादाम चढ़ाएं, तो दसवें घर का मालिक 2 में स्थापित हो।
5. पगड़ी पहनें, मस्तक पर केसर का तिलक लगाएं।
6. घर में मन्दिर मत बनाएं, धार्मिक नेता न बनें।
7 पराई स्त्रियों से संबंध न रखें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

8. नाक खुश्क रखें और काम पर जाने से पहले नाक साफ करें।
9. किसी पर रहम खाकर उसे मुफ्त भोजन मत खिलाएं।
10. शराब, मांस और अंडे से परहेज करें।
11. यदि बुध घर नं. 1, 4, 9 में हो तो नाक छेद करवाएं।

दसवें घर में दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य : दसवें घर में बृहस्पति और सूर्य की युति कोई विशेष अच्छा फल नहीं देती। लेकिन जीवन ढलने के साथ यानी बुढ़ापे के समय इस युति का फल किसी हद तक शुभ हो जाता है।

बृहस्पति + चंद्रमा : बृहस्पति + चंद्रमा की युति दसवें घर में राशि और दूसरे ग्रहों की दृष्टि पर निर्भर करती है। यदि इन दोनों ग्रहों पर बुध या राहु की दृष्टि हो (चौथे घर से) या फिर दसवें घर में राशि के अनुसार कोई भी ग्रह मंदा हो रहा हो, तो पिता चाहे कितना भी धनवान क्यों न हो जातक के लिए अर्थहीन हो।

दसवें में अगर यह युति बुरी हो रही हो तो चलते पानी में तांबे के पैसे फेंकना शुभ फल देगा।

बृहस्पति + शुक्र : बृहस्पति + शुक्र की युति दसवें घर में दोनों प्रकार के फल देती है। ऐसी युति के समय जातक का खुद का कमाया हुआ धन तो लाभकारी होगा, लेकिन पिता से लिया धन कोई लाभ नहीं देगा। ऐसा आदमी यदि धार्मिक न बने, तो धन हवा की तरह आए और वैसे ही खर्च हो। यदि इस युति पर चौथे घर से राहु की दृष्टि पड़ रही हो और व्यक्ति का चरित्र अच्छा न हो, तो अति अशुभ फल मिले।

बृहस्पति + मंगल : दसवें घर में बृहस्पति + मंगल की युति का शुभ या अशुभ फैसला चौथे और छठे घर के ग्रहों पर निर्भर है। यदि 4 और 6 खाने खाली हों तो जातक की जिन्दगी ऐसी जैसे नकली धातु पर सोने का पानी चढ़ा हो। जातक अपनी चालाकी से धन कमा सकता है। मंगल बद होने पर 31 साल की उम्र तक फल अशुभ।

बृहस्पति + बुध : दसवें घर में बृहस्पति + बुध की युति जातक को भाग्यवान बनाती है। क्योंकि दसवां घर शनि का है, इसलिए यहां बुध ठीक रहता है।

बृहस्पति + शनि : दसवें घर में बृहस्पति + शनि की युति उत्तम फल देती है। ऐसा जातक श्रीगणेश जी की इज्जत का मालिक होता है। यदि सूर्य चौथे घर में होगा तो वह इस युति के फल को राख कर देगा। यदि इस युति वाला व्यक्ति घर नं. 4 में सूर्य के समय किसी से धोखा या बेइमानी करे तो उसकी दौलत बर्बाद होगी। लेकिन शनि की चीजों पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

बृहस्पति + राहु : दसवें घर में बृहस्पति + राहु की युति आमतौर पर कोई बुरा फल नहीं देती। दोनों ग्रह अपना–2 फल देते हैं। जातक की आर्थिक स्थिति ठीक रहती है।

बृहस्पति + केतु : दसवें घर में बृहस्पति + केतु की युति को अशुभ माना जाता है। जातक के जीवन, व्यवसाय या नौकरी में कई प्रकार की तब्दीलियां और अड़चनें आती हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

दसवें घर में इस युति के समय धर्म स्थान में पीले नीबू देना, दोनों ग्रहों के अशुभ फल को दूर करेगा।

बृहस्पति ग्यारहवें घर में

ग्यारहवां घर इन्साफ करने या करवाने का होता है जहां कोई भी ग्रह शनि की बदी और बृहस्पति की भलाई का निर्णय करता है। ग्यारहवें घर के बृहस्पति को खजूर का दरख्त भी कहा गया है। ग्यारहवां घर शनि का पक्का घर है और इस घर में बृहस्पति अपना फैसला ईमानदारी से नहीं कर पाता।

जातक की पत्नी दुःखी ही रहेगी, चाहे शुक्र किसी अच्छे घर में भी हो। बुध की कारक बहन, बुआ, बेटी और दोहती आदि सुखी नहीं होंगी। यदि बुध यहां पर उत्तम भी होगा तो भी बुध संबंधित व्यापार लाभ न देगा अथवा जातक ऋणी ही रहेगा। जब तक पिता का साथ रहेगा तब तक सुखी रहेगा।

ग्यारहवें में बृहस्पति वाले व्यक्ति के अंतिम समय में उसका कफन भी पराया होगा यानी उसकी मौत के समय उसका बहुत सम्मान न होगा। आम तौर पर ऐसे व्यक्ति को पिता की मौत के बाद पिता के धन से शुभ फल नहीं मिलता। ऐसे व्यक्ति को अपने वायदे पूरे करने चाहिए। बृहस्पति ग्यारहवें के समय मंगल तीसरे में हो तो जातक अपने खानदान में दूसरों की मौतों से दुखी हो। बृहस्पति ग्यारहवें के समय यदि उस पर राहु की दृष्टि हो तो जातक की बुआ, बहन, बेटी दुखी हों।

बृहस्पति ग्यारहवें के समय यदि बुध छठे और चंद्रमा दूसरे घर में हो तो जातक का बुढ़ापा मंदा, नजर कमजोर तथा भाग्य बुरा हो।

बृहस्पति ग्यारहवें के समय सूर्य यदि पहले, चौथे या पांचवें घर में हो तो ऐसे जातक का सरकार या आग से कमाया धन बहुत बर्कत देता है।

कष्ट

1. जातक आमदनी होते हुए भी कर्जदार रहे।
2. जातक की बहन, बुआ या बेटी दुखी हो।
3. दुःख के समय जातक का कोई हाल भी न पूछे।

कारण

1. जातक ने चाल–चलन गंदा किया होगा।
2. अपने परिवार और पिता से अलग रह रहा होगा।
3. बेईमान और झूठे वायदे करने का आदी होगा।
4. धर्म–कर्म से दूर रहता होगा।

उपाय

1. जातक भाई–बहन, पिता के साथ रहें।
2. बाद शरीर पर सोना धारण करें।
3. तांबे का कड़ा पहनना उत्तम फल देगा।
4. आग से संबंधित कारोबार से लाभ।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

5. सूर्य चौथे में हो या माता का साथ रखे तो बृहस्पति मंदा न होगा।
6. लावारिस लाश पर कफन दान करें।

ग्यारहवें घर में दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य : बृहस्पति + सूर्य की युति ग्यारहवें घर में आर्थिक दृष्टि से जातक के लिए जवानी में शुभ नहीं होती। लेकिन बुढ़ापे में इसका प्रभाव ठीक रहता है।

बृहस्पति + चंद्रमा : ग्यारहवें घर में बृहस्पति + चंद्रमा की युति हो तो व्यक्ति दूसरों के काम आने वाला होता है, आम जनता के लिए वह शुभ काम करने की इच्छा रखता है। यदि इस युति के समय तीसरा घर खाली हो तो ग्यारहवें घर में बृहस्पति व चंद्रमा सोये हुए गिने जाएंगे। ऐसी हालत में बुध का उपाय करना चाहिए। जैसे साबुत मूंग मंदिर में देना या बारह साल से कम उम्र की कन्याओं की सेवा करना शुभ रहता है।

बृहस्पति + चंद्रमा ग्यारहवें के समय तीसरे घर में यदि बुध शुक्र या राहु होगा तो दोनों ग्रह बर्बाद होंगे। बृहस्पति की उम्र 16 साल और चंद्रमा की उम्र 12 साल में माता पिता पर बुरा असर पड़े। ऐसे समय में शुक्र के लिए गाय की सेवा करना, बुध के लिए बहन–बुआ, बेटी को कुछ न कुछ देते रहना और राहु के लिए भंगी को दान के तौर पर कुछ देना चाहिए।

बृहस्पति + शुक्र : ग्यारहवें घर में बृहस्पति + शुक्र की युति का फल अच्छा नहीं होता। बृहस्पति यदि कुछ धन दे तो शुक्र उसे बर्बाद करे।

बृहस्पति + मंगल : ग्यारहवें घर में बृहस्पति + मंगल की युति शुभ मानी गई है, खासकर जब तक भाइयों और पिता का साथ रहे, जिन्दगी शाहराना रहेगी। यदि भाई न हो और पिता की मृत्यु हो चुकी हो, तो बृहस्पति की वस्तुएं केसर, हल्दी और मंगल की वस्तुएं शहद आदि घर में स्थापित करें।

बृहस्पति + बुध : ग्यारहवें घर में बृहस्पति के साथ बुध हो, तो आमदनी के लिए अति अशुभ। आमदनी के संबंध में इन दोनों ग्रहों के फल को उल्लू का पट्ठा कहकर पुकारा गया है।

बृहस्पति + शनि : ग्यारहवें घर में बृहस्पति के साथ शनि हो तो ऐसे व्यक्ति की दोस्ती से दूसरों को बहुत लाभ पहुंचता है। ऐसा व्यक्ति अपने दोस्तों के साथ सच्चा होता है। लेकिन इस युति के समय यदि बुध आठवें या बारहवें होगा तो दोनों के फल को खराब कर देगा। ऐसी हालत में व्यक्ति यदि शराब पीए या दूसरों से दान ले तो शनि खराब फल देगा।

बृहस्पति + राहु : ग्यारहवें घर में बृहस्पति + राहु की युति शुभ नहीं होती। आमतौर पर ऐसे जातक के पास पैसा नहीं टिकता।

बृहस्पति + केतु : ग्यारहवें घर में बृहस्पति + केतु की युति कोई शुभ फल नहीं देती।

बृहस्पति बारहवें घर में

बारहवां घर बृहस्पति की मिल्कियत है जिस पर राहु ने कब्जा किया हुआ है। बृहस्पति और राहु एक

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

दूसरे के शत्रु हैं। बृहस्पति मान–प्रतिष्ठा, धन–दौलत व शुद्ध विचारों का मालिक है, वहीं राहु चोरी, ठगी, झूठ, बुरे विचारों वाला है। बारहवें घर के बृहस्पति को उत्तम ज्ञानी कहकर पुकारा गया है।

बारहवें बृहस्पति वाला जातक दूसरों का भला चाहे और करे, तो उसका अपना भाग्य बढ़ता है। बारहवें घर में बृहस्पति वाला जातक माया पर पेशाब की धार मारने वाला कहा गया है यानी वो पैसे के पीछे नहीं भागेगा। यहां बृहस्पति वाले जातकों के पास लक्ष्मी खुद चलकर आती है। जिस जातक की कुण्डली में बृहस्पति बारहवें में हो उसकी सेवा करके आशीर्वाद लेने से दूसरों को उत्तम फल मिलता है। ऐसे व्यक्ति को जो सताएगा वह खुद बर्बाद हो जाएगा।

बारहवें बृहस्पति के समय शनि भी साथ हो या शनि दूसरे या ग्यारहवें में हो तो शनि की वस्तुओं के कारोबार से धन का लाभ होगा।

बृहस्पति बारह के समय यदि बुध आठवें या नौवें घर में हो, तो जातक की आयु लम्बी होगी। बृहस्पति बारह के समय अगर बुध मन्दा हो, तो उसका असर 34 साल की उम्र तक बुरा रहे। कोई भी काम करने से पहले नाक का पानी खुश्क करके नाक साफ रखनी चाहिए।

कष्ट

1. रात की नींद हराम और सुख की सांस न आए।
2. राहु की गैस और शनि के कारोबार में नुकसान हो रहा हो।
3. निर्धनता से परेशान हो रहा हो।

कारण

1. जातक धोखेबाज बेईमान और बदकार होगा।
2. जातक झूठी गवाही देने का आदी होगा।
3. साधु संतों का आदर न करता होगा।
4. गले में माला पहनने का आदी होगा।
5. जातक पीपल के पेड़ कटवाता रहता होगा।
6. शराब, मांस, अण्डे आदि का इस्तेमाल करता होगा।
7. राहु बृहस्पति पर प्रबल हो रहा होगा।

उपाय

1. जातक बुरे कामों से बचें।
2. सबके साथ नेकी का सलूक करें।
3 फरेब, धोखाधड़ी आदि से दूर रहें।
4. किसी की झूठी गवाही न दें।
5. शराब, मांस, अंडे आदि आदि से परहेज करें।
6. रात को सिरहाने में पानी और सौंफ रख कर सोएं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

7. मस्तक पर केसर का तिलक लगाने के आदी हों।
8. पूजा—पाठ और भगवान को याद रखें।
9. साधुओं की सेवा करें।
10. पीपल की पूजा करें।
11. नाक को साफ व खुश्क रखें।

निष्कर्ष

गुरु केंद्र में हो, पांचवे, नौ, बारह के बीच,
शत्रु हों इन घरों में तो करदें इसको नीच।
करदें इसको नीच जहां अच्छा कहलावें,
अच्छे घरों में होकर भी मन्दा हो जावें।।

बारहवें घर में दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य : बारहवें घर में बृहस्पति + सूर्य को आर्थिक स्थिति के लिए शुभ माना गया है। जातक के अपने परिवार की उन्नति भी होती है।

बृहस्पति + चंद्रमा : बारहवें घर में बृहस्पति + चंद्रमा की युति लड़की के जन्म दिन से या उसकी शादी के वक्त बुरा फल देती है। लेकिन बेटे के जन्म से उसकी हालत अच्छी होगी। ऐसा व्यक्ति खुले दिल का और धन—दौलत के मामले में त्यागी प्रवृत्ति का होता है।

बृहस्पति +चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए चान्दी का खाली बर्तन मकान की जमीन में दबाना चाहिए।

बृहस्पति + शुक्र : बारहवें घर में बृहस्पति + शुक्र की युति जातक को गृहस्थी की ओर से हर प्रकार का सुख देने वाली होती है लेकिन यदि वह सट्टा, जुआ आदि खेले तो बर्बाद होगा।

बृहस्पति + मंगल : बारहवें घर में बृहस्पति + मंगल की युति हर प्रकार से शुभ होती है। मीठी नींद सोने वाली किस्मत का मालिक होगा। ऐसा व्यक्ति यदि किसी को आशीर्वाद दे तो पूर्ण होगा, पर यदि श्राप दे तो पूर्ण नहीं होता।

बृहस्पति + बुध : बारहवें घर में बृहस्पति + बुध होने से जातक की आयु लम्बी होती है। ऐसा जातक यदि नौकरी करे तो उत्तम यदि अपना काम करे तो हालात मामूली होंगे।

बृहस्पति + शनि : बारहवें घर में बृहस्पति + शनि की युति हर प्रकार से शुभ मानी गई है। जातक का धन शादी के दिन से और भी बढ़ने लगता है। इस घर में बृहस्पति + शनि राशि के हिसाब से या किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि से खराब हो रहे हों तो मन्दिर में दूध देना चाहिए, फल शुभ होगा।

बृहस्पति + राहु : बारहवें घर में बृहस्पति + राहु की युति अधिक शुभ नहीं। आर्थिक तौर पर इस युति का कोई विशेष बुरा प्रभाव नहीं रहता, परंतु आध्यात्मिक तौर पर यह युति अशुभ है। जातक की नींद पर बुरा असर पड़ सकता है। एक छोटी सी लाल रंग की बोरी बनाकर उसमें सौंफ भरकर घर में सोने वाले कमरे में रखना शुभ फल देगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

बृहस्पति + केतु : केतु बृहस्पति का चेला है इसलिए बारहवें घर में केतु का बृहस्पति के साथ होना बहुत शुभ है। जातक आर्थिक हालात से अच्छा और सुख की नींद सोने वाला होता है।

बृहस्पति की जड़ यानी घर नं 9 या 12 में शुक्र, बुध और राहु हों केतु की जड़ यानी घर नं. 6 में चंद्र या मंगल हो तो दोनों ग्रहों का फल अशुभ हो सकता है। इनके अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए पीले नीबू धर्म स्थान में दान करने चाहिए।

बृहस्पति के साथ अन्य दो ग्रहों का फल

बृहस्पति + सूर्य + चंद्रमा : इस युति से जातक को उत्तम फल प्राप्त होता है। समाज में रुतबा और विद्या उत्तम होती है।

बृहस्पति + सूर्य + शुक्र : इस युति के समय पत्नी और धन संबंधी फल शुभ। जातक की शादी के दिन से किस्मत जागती है। पत्नी स्वभाव में अच्छी और सुन्दर होती है।

बृहस्पति + सूर्य + मंगल : इन तीन ग्रहों का फल अति उत्तम होगा। इस युति वाले जातक का ताम्बा भी सोने के भाव बिके। सांसारिक जीवन में दूसरों पर हुक्म चलाने वाला हो।

बृहस्पति + सूर्य + बुध : जब यह तीनों ग्रह दूसरे घर में हों और शुक्र तीसरे में तो जातक जिस लड़की से प्रेम करता हो उससे शादी नहीं हो पाएगी।

इस युति के समय यदि शनि घर नं. 1 में और घर नं. 7, 10 में कोई भी ग्रह हो तो शनि जब वर्षफल में घर नं. 1 में आए तो मकान आदि की बुनियाद रखने पर पिता पर बुरा असर पड़ें, जान भी जा सकती है। ऐसे में बुध का उपाय यानी नाक छेद करवाएं।

बृहस्पति + सूर्य + शनि : यह युति किसी भी घर में होने पर जातक को लाभ और सम्मान प्राप्त होगा।

बृहस्पति + सूर्य + राहु : इन तीनों ग्रहों की युति किसी भी घर में अच्छी नहीं होती। सरकार की ओर से अशुभ फल और लोगों की ओर से बुरा बर्ताव मिले।

बृहस्पति + सूर्य + केतु : इस ग्रह योग का किसी भी घर में होना सूर्य के फल को खराब करता है, यानी सरकार की ओर से शुभ फल नहीं मिलता।

बृहस्पति + शुक्र + चंद्रमा : इन ग्रहों की युति शुभ होती है। ऐसा व्यक्ति कभी शाह और कभी मलंग होता है। शादी के बाद ऐसे इन्सान की दौलत में कमी आनी शुरू हो जाती है। यदि मंगल खराब हो तो जातक की औलाद पर बुरा असर पड़ता है।

बृहस्पति + मंगल + चंद्रमा : इन तीनों ग्रहों की युति उत्तम होती है। इस युति को पीपल, नीम या बड़ का दरख्त कहकर पुकारा गया है, जिसका हर प्रकार से फायदा होता है।

बृहस्पति + बुध + चंद्रमा : इस युति के समय दलाली के कामों से जातक को लाभ होता है, लेकिन लाखों का मालिक होते हुए भी जातक मुसीबतों का मारा होता है। यही युति यदि तीसरे घर में हो तो

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

बुआ – बहन या माता पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। चौथे घर में भी यही असर और फल होता है। दूसरे घर में यह युति पिता के लिए अशुभ होती है।

बृहस्पति + शनि + चंद्रमा : घर नं. 2 और 9 के अलावा इस युति का फल शुभ रहेगा। ऐसा जातक दूसरों के लिए पारस का काम करें और वफादार रहे। यदि यह युति घर नं. 9 में हो, तोचंद्र का फल मंदा होगा। घर नं. 11 में हो तो माता, दादी, चाची या ताई आत्महत्या करे या अचानक मरे।

बृहस्पति + राहु + चंद्रमा : पत्नी और माता के लिए अशुभ। यदि बारहवें घर में हों तो माता–पिता दोनों के लिए खराब।

बृहस्पति + केतु + चंद्रमा : हर घर में तीनों का फल मंदा। होता है सांस की हवा खराब, जीवन में मायूसी। प्यास बुझाने के लिए पानी की जगह गन्दगी मिले।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. बृहस्पति के पक्के घरों के बारे में लिखें। विस्तारपूर्वक बताएं कि ये बृहस्पति के पक्के घर किन कारणों से हैं।
2. किन घरों में बृहस्पति होने से घर में मंदिर/धर्मस्थान स्थापित करना मना है।
3. जातक किसी को मुफ्त भोजन खिलाए, तो सजा पाए, यह बात किस घर के बृहस्पति पर लागू होती है।
4. बृहस्पति के पक्के घरों के अनुसार इसकी कारक वस्तुएं रखें।
5. बारह घरों में बृहस्पति को भिन्न–2 नामों से पुकारा गया है। वो नाम लिखें और उनके पीछे छिपे हुए तर्क का उल्लेख करें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खण्ड 2 – सूर्य

सूर्य और बारह घरों में प्रभाव

राजा तेज तपस्वी और विष्णु भगवान,
तांबे का पैसा, अक्ल सूर्य की पहचान।
पहाड़ी मंधरी गाय हो एक अकेला पूत,
दफ्तर का बाबू, कोई क्षत्री या राजपूत।
तांबा, गुड़, मासिक, गेहूं, शिलाजीत सरकार,
बन्दर, भूरी कीड़िया राजा रथ असवार।
भूरे रंग की भैंस हो नयौला काली गाय,
गुड़ की मानिंद रंग हो तो सूरज कहलाए।
अपना आप और बाजरा दिन व हुनर हिसाब,
रसम पुरानी तेज फल हाकम रोब व दाब।

इस संपूर्ण ब्रह्मांड का कर्ता सूर्य है। गायत्री मंत्र इसकी आराधना में लिखा गया है। सूर्य यदि राशि नं. 1, 5, 9 व 12 वें में हो तो जातक तेजस्वी, प्रतापी और शत्रु नाशक होता है। घर नं. 4 और 8 में सूर्य हानि करता है। राज, सरकार, अपना आप, सरकारी हिसाब किताब, सभी प्रकार की शिक्षा, शरीर हड्डी के रोग व दिल की धड़कन सब सूर्य से देखा जाते हैं।

घर नं. 1, 5 और 11 में बैठा सूर्य शुभ और श्रेष्ठ माना गया है। मंगल घर नं. 6 और केतु घर नं. 1 के समय भी सूर्य उच्च का प्रभाव देता है। यदि शत्रु ग्रह सूर्य के साथ हों तो भी सूर्य की सहायता ही करते हैं।

विशेष : सूर्य स्वयं में कभी नीच नहीं होता, अपनी नीचता का असर साथ बैठे ग्रह पर डाल देता है।

सूर्य पहले घर में : सतयुगी प्राणी, लम्बी आयु वाला, संतान गिनती की होती। परोपकार, सेवा के बिना तो सूर्य का फल निष्फल होता है। जातक इश्कबाजी से दूर रहने वाला। यदि घर नं. सात खाली हो तो विवाह जल्दी करना चाहिए ताकि सोया सूर्य जाग सके और प्रभाव देता रहे।

पहले घर में सूर्य वाले जातक पुराने विचारों पर बहुत विश्वास रखने वाले होते हैं। भाई–बहन गिनती के ही होते हैं। ऐसे जातक अपने पिता की आयु भर सेवा करते हैं मगर अपने बेटे से कोई उम्मीद नहीं रखते। ऐसा व्यक्ति अपनी मेहनत से अमीर होता है। औरत और औलाद का सुख मिलता है लेकिन जातक गुस्से वाला होता है। यदि अपनी कमाई का चौथा भाग, धर्म कर्म और परोपकार में लगाए तो अति शुभ रहे, विद्या बुद्धि का साथ रहेगा।

पहले सूर्य के समय इसका मित्र ग्रह, मंगल, बृहस्पति, चंद्र या बुध उसके साथ हो या उससे पांचवें स्थान पर हो तो दौलत ऐसे व्यक्ति के पांव चूमे, लेकिन वह माया का दास नहीं होता। सूर्य घर नं. 1 के समय चंद्र घर नं. 2 में और शनि घर नं. 11 में हो तो जातक बहुत भाग्यवान होता है। यदि बुध घर नं. 7 में

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

हो तो जातक नेक, धर्मात्मा, बुरे कामों से दूर रहने वाला होगा (यह केवल वर्षफल में संभव है)। यदि शुक्र घर नं. सात में हो तो माता पिता का सुख अधूरा मिलेगा। पत्नी की सेहत भी खराब हो, विशेष कर जब जातक दिन में संभोग करे। सूर्य नं. एक के समय मंगल घर नं. 5 में हो तो नर औलाद में कमी, पत्नी को गर्भपात होने का डर।

सूर्य नं. 1 के समय शनि घर नं. 8 में हो यानी दोनों का टकराव हो तो जातक की पत्नी की आय के लिए अशुभ। पहले घर में सूर्य के समय बुरे ग्रहों का असर दृष्टि आदि से हो तो जातक की अचानक मृत्यु हो।

माता, स्त्री को कष्ट, नाक और माथा ऊँचे, शरीर से दुर्बल, लेकिन स्वाभिमानी और हुक्मरान हो ।

उपाय

1. सातवां घर खाली हो तो विवाह के बाद सूर्य जागे।
2. पांचवां घर खाली हो तो मित्र ग्रहों की वस्तुएं धारण करें।
3. पानी का नल लगवाना चाहिए।

पहले घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + चंद्रमा : पहले घर में सूर्य और चंद्रमा की युति जातक को राजा समान बनाती है। यदि दोनों की जड़ों यानी चौथे और पांचवें घर में शत्रु ग्रह हों तो ऐसे व्यक्ति की मौत अचानक होती है।

सूर्य + शुक्र : पहले घर में सूर्य और शुक्र की युति जातक की स्त्री के लिए अशुभ होती है यानी जातक की स्त्री किस्मत की मारी होती है। ऐसा जातक शादी के बाद किसी से संबंध रखे तो वह पूरी तरह से बरबाद हो जाए।

पहले घर के सूर्य + शुक्र पर किसी भी प्रकार से राहु का संबंध बने तो जातक की स्त्री हमेशा बीमार रहे। दिमागी परेशानियां बनी रहें (केतु भी यही फल देता है)। ऐसे समय जातक किसी पराई स्त्री से संबंध रखे तो ऐसा संबंध उसे जेलघर तक ले जा सकता है।

सूर्य + मंगल : सूर्य + मंगल की युति पहले घर में शुभ मानी गई है। लेकिन यदि मंगल बद हो तो ऐसा जातक लड़ाई–झगड़े में मारा जाता है।

सूर्य + बुध : पहले घर में सूर्य–बुध इकट्ठे हों तो ऐसा व्यक्ति वजीर यानी दूसरों को राय देने वाला और ज्योतिष में रुचि रखने वाला अर्थात अच्छी बुद्धि का मालिक होता है। उसे राजदरबार यानी सरकार से नाम मिलता है। लेकिन यदि इस युति पर राहु या केतु की दृष्टि आ रही हो तो अपने से बड़े अफसरों से झगड़े होते हैं।

सूर्य + शनि : सूर्य + शनि की युति पहले घर में आदमी को ब्रह्मज्ञानी बनाती है। किंतु यदि इस युति पर बुरे ग्रहों का असर हो तो जातक की पत्नी के लिए अशुभ है।

सूर्य + राहु : सूर्य + राहु अगर पहले घर में हो तो सूर्य ग्रसित होगा यानी सूर्य खराब। कुण्डली में यदि बुध और शुक्र भी इकट्ठे हों तो ग्रसित सूर्य बुरा असर नहीं देता।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

पहले घर में सूर्य और राहु हों और यदि मंगल नौवें घर में हो तो जातक की नजर पर बुरा असर पड़ता है।

"सूर्य राहु के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए कच्चे कोयले पानी में बहाएं, जौ अंधेरी जगह में रखकर ऊपर पत्थर रखने से भी लाभ होगा। बुरे प्रभाव का असर चोरी या गुमनाम नुकसान होने से पता चलता है।"

सूर्य + केतु : सूर्य के साथ केतु का पहले घर में होना शुभ फल नहीं देता। इसका बुरा असर कई बार ननिहाल खानदान पर पड़ता है। "बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए राहु+केतु की वस्तुएं कोयले, जौ और तिल पानी में बहाने चाहिए।"

सूर्य दूसरे घर में

दूसरे घर का सूर्य स्त्री के कारण संबंधियों से झगड़ा करवाता है। जातक अपनी भुजाओं का स्वामी। तीनों लोकों का सुख भोगने वाला। स्वयं चमके औरों को भी चमकाए। यदि जातक स्त्री के झगड़ों से दूर रहे खूब तरक्की करे सवारी का सुख अवश्य प्राप्त हो। धार्मिक मुखिया, मंदिर–धर्मशाला बनवाने वाला तो पुरानी परंपराओं का पालक। अपने माता पिता के संबंधियों के भाग्य को चमकाने वाला। जातक के वंश में स्त्रियी मरती जाएं।

दूसरे सूर्य के समय यदि चंद्रमा छठे में हो तो दोनों का फल शुभ होता है। दूसरे सूर्य के समय मंगल घर नौ में हो या केतु नौ में हो तो जातक को तकनीकी कारोबार से लाभ।

सूर्य घर 2 में और बुध घर नं. 9 में हो (यह वर्षफल में हो सकता है) तो ऐसा व्यक्ति कई रंग बदले। प्रसिद्धि का शौकीन और प्रसिद्धि ऐसे जातक को मिलती भी है। सूर्य घर नं. 2 के समय राहु घर नं. 9 में हो तो जातक को चित्रकला का शौक हो। सूर्य घर नं. 2 के समय यदि घर नं. 8 खाली हो तो सूर्य उत्तम फल देता है। सूर्य घर नं. 2 के समय यदि शनि घर नं. 10 में हो तो जातक की दुनियावी इज्जत होगी और वह अपनी बुद्धि का ठीक प्रयोग करता है। यदि शनि 11 वें घर में हो तो जातक कभी खुश और कभी निराश रहता है। सूर्य घर नं. 2 के समय यदि मंगल घर नं. 1 में और चंद्रमा घर नं. 3 में हो तो जातक दरिद्र, आलसी और निर्धन होगा। सूर्य घर नं. 2 के समय मंगल घर नं. 8 में हो तो जातक लालची होता है।

उपाय

1. किसी से बाजरा मुफ्त नहीं लें लेवें। गेहूं भी मुफ्त न लें।
2. शनि का उपाय करें – नारियल, बादाम या तेल धर्म स्थान में दान करें।

दूसरे घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + चंद्रमा : दूसरे घर में यदि सूर्य के साथ चंद्रमा हों तो दोनों का फल शुभ हो जाता है। जातक को सरकारी कामों या अपने व्यवसाय में लाभ और उन्नति प्राप्त होती है। इस युति के समय जातक का

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

औरतों से बार–बार झगड़ा होने का डर रहता है।

सूर्य + मंगल बद : सूर्य के साथ यदि मंगल बद भी दूसरे घर में हो तो ऐसे जातक के जीवन में लड़ाई झगड़े होते रहते हैं जो उसके स्वयं के जीवन के लिए खतरनाक हो सकते हैं।

सूर्य + बुध : सूर्य और बुध की युति दूसरे घर में जातक को शारीरिक और दिमागी तौर पर शक्तिशाली बनाती है। लेकिन यदि सूर्य किसी कारण भी मंदा हो रहा हो तो जातक के भाग्य पर में और आर्थिक हालत परं बुरा असर पड़ सकता है।

सूर्य + राहु : दूसरे घर में सूर्य + राहु की युति ससुराल के खानदान विशेषकर साले के लिए आर्थिक और शारिरीक दृष्टि से अति अशुभ है।

सूर्य + केतु : दूसरे घर में सूर्य + केतु की युति मामा के परिवार पर बहुत बुरा प्रभाव डालती है। मामा की औलाद बर्बाद।

सूर्य तीसरे घर में

जातक छोटे भाइयों वाला, तीर्थ प्रेमी, स्वयं कमाकर घर वाला, संपत्ति का स्वामी होता है। यदि बुध मंदा हो तो मामा के लिए मंदा व अशुभ होता है। यदि चंद्रमा अशुभ न हो तो माता की आयु लंबी। होती है बाप/दादा चाहे निर्धन रहे हों, जातक स्वयं धनवान होगा।

तीसरे घर के सूर्य को दौलत का राजा भी कहा है। मंगल बद होते हुए भी बुरा प्रभाव नहीं देता। शुक्र ग्रह भी अच्छा फल देता है।

तीसरे घर के सूर्य के साथ बुध भी हो तो दिन में पैदा हुई औलाद और भतीजे वगैरह भी जीवन में शुभ योगदान देते हैं। लेकिन इस स्थिति में बुध की कारक चीजों यानी बहन, बुआ या बेटी पर बुरा असर पड़ सकता है।

सूर्य तीसरे घर के समय यदि चंद्रमा आठवें या बारहवें घर में हो या किसी अशुभ राशि में हो तो जातक के यहां दिन दहाड़े चोरी का डर बना रहता है।

सूर्य तीन के समय यदि घर नं. 11 में मन्दे ग्रह हों तो जातक के पड़ोसी बर्बाद होंगे।

कष्ट

1. यदि जातक निर्धन है तो बदचलन होगा।
2. पड़ोसी कष्ट में हो सकते हैं।

उपाय

1. जातक चालन–चलन ठीक रखें।
2. बुध की चीजें नहीं अपनाएं।
3. चंद्रमा अशुभ होने पर चंद्रमा के मित्र ग्रहों की मदद लें।
4. घर नं. 11 के मंदे ग्रहों के उपाय करें।

Future Point

तीसरे घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + चंद्रमा : तीसरे घर में सूर्य और चंद्रमा की युति जातक के लिए शुभ होती है। जातक मतलबपरस्त होता है।

सूर्य + बुध : तीसरे घर में सूर्य और बुध की युति हो और कुण्डली में शुक्र शुभ हो तो राहु का अशुभ असर समाप्त हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने प्रेम संबंधों में वफादार होता है। सूर्य और बुध के तीसरे में होने के समय यदि शनि तीसरे, चौथे या पांचवें में हो तो जातक को ज्योतिष विद्या के अध्ययन से शुभ फल प्राप्त हो सकता है। यदि बुध और सूर्य के साथ शनि भी तीसरे घर में हो तो सूर्य शनि का झगड़ा भी नहीं रहता।

तीसरे घर में सूर्य + बुध के समय यदि जातक गन्दा अधिक हो तो राहु और शुक्र दोनों का बुरा प्रभाव जातक को बर्बाद कर देगा और बदनामी का बायस बनेगा। बुध की आयु 17 या 34 साल की आयु में आर्थिक नुकसान होता है।

सूर्य + शनि : तीसरे घर में सूर्य + शनि की युति के समय दोनों ग्रहों अपना–2 फल देते हैं।

सूर्य + राहु : तीसरे घर में सूर्य + राहु की युति होने पर जातक की 24 साल तक की उम्र तक बुध और केतु दोनों का फल अुशभ रहेगा। बुध यानी बुआ, बेटी या बहन और केतु यानी कान, पांव तथा लड़के आदि पर बुरा असर पड़ेगा। ऐसे समय में जातक यदि हाथी दांत की बनी वस्तु धारण करे या हाथी की मूर्तियां कायम करे तो पूर्ण रूप से बर्बाद होगा।

सूर्य + केतु : तीसरे घर में सूर्य के साथ केतु का होना अशुभ फल नहीं देता। मगर इसका असर रीढ़ की हड्डी, जातक के मामा तथा औलाद पर अशुभ हो सकता है। कान में सोना धारण करने से केतु का बुरा प्रभाव कम होगा।

सूर्य चौथे घर में

चौथे घर का सूर्य उत्तम व प्रबल होता है। चंद्रमा का प्रभाव भी उत्तम होता है। चौथे घर के सूर्य के समय यदि बृहस्पति दसवें घर में हो तो बृहस्पति का प्रभाव श्रेष्ठ हो जाता है। राजदरबार में जातक अच्छा स्थान प्राप्त करता है। जातक ऐसे काम करता है जो कभी उसके पूर्वजों ने भी न किए हों। अगर कुण्डली में मंगल बद हो तो 15 वर्ष की उम्र तक तंगी की हालत उत्पन्न होती है। अगर मंगल नेक का साथ हो तो सूर्य की शक्ति बढ़ती है, परंतु आखों में कष्ट हो सकता है।

चौथे घर में सूर्य हो तो जातक धन जोड़–जोड़ कर मरे किंतु स्वयं उसका भोग न कर सके। औलाद पर भी बुरा असर पड़ता है, लेकिन जो औलाद बचेगी वह करोड़पति होगी।

सूर्य चौथे के समय चंद्रमा जिस घर में बैठ जाए, उस घर से संबंधित जो रिश्तेदार होगा उससे जातक को धन मिलेगा। जैसे चंद्रमा तीसरे घर में हो तो भाई से, छठे घर में हो तो मामा से आदि। सूर्य चौथे के समय यदि चंद्रमा भी चौथे घर में हो, तो जातक नए अविष्कारों से लाभ प्राप्त करता है।

सूर्य चार के समय यदि राहु अशुभ हो और शनि पहले घर में और बृहस्पति दसवें घर में हो, तो सूर्य का

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

असर बहुत मंदा हो जाता है।

सूर्य चार के समय यदि बृहस्पति दसवें में हो, तो सोने आदि के चोरी होने की भय रहता है तथा जीवन में बिना कारण झगड़े खड़े होते हैं। यदि मंगल दसवें हो तो, जातक एक आंख से काना होगा यानी आंख में खराबी होगी, लेकिन धनी होगा। सूर्य चार के समय चंद्रमा पहले घर या दूसरे घर में, शुक्र पांचवें घर में और शनि सातवें घर में हो, तो जातक नामर्द हिजड़ा हो सकता है।

सूर्य घर नं. 4 और शनि घर नं. 7 में – जातक नपुंसक होता है।
सूर्य घर नं. 4, शुक्र घर नं. 7 में और चंद्र घर नं. 1 में – जातक बुजदिल होता है।
सूर्य घर नं. 4, बृहस्पति घर नं. 10 में और चंद्र शुभ – भागयवान, जैसे सीप में मोती।
सूर्य घर नं. 4 और बृहस्पति घर नं. 1 में – अग्नि काण्ड होते रहें।
सूर्य चार के समय यदि वर्षफल के अनुसार बृहस्पति व चंद्रमा का मेल हो रहा हो तो, सोना, कपड़े के व्यापार में लाभ होगा।

उपाय

1. जद्दी (पुश्तैनी) मकान में अन्धों को रोटी खिलाना चाहिए।
2. शनि के कारोबार या उससे संबंधित चीज़ें नहीं लेनी चाहिए।

चौथे घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + चंद्रमा : चौथे घर में सूर्य + चंद्रमा की युति वाला जातक राजा जैसी हैसियत वाला होता है। अगर ऐसे में दसवां घर खाली हो, तो जातक को हर तरह का दुनियाबी आराम मिलेगा। ऐसे इन्सान की मौत अचानक होती है। अगर इस युति के समय दसवें घर में शनि हो, तो ऐसे जातक की मृत्यु दिन के समय किसी हादसे में या फिर पानी में डूबकर होगी।

सूर्य + बुध : चौथे घर में सूर्य + बुध की युति राजयोग बनाती है। दोनों ग्रह अपना–2 फल अलग–2 देते हैं। जातक की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है।

सूर्य + शनि : चौथे घर में सूर्य + शनि की युति को शुभ नहीं माना जाता है। इस युति को मकानों के अन्दर काले कीड़े कहकर पुकारा गया है।

सूर्य + राहु : चौथे घर में सूर्य + राहु की युति भी कोई शुभ फलदायक नहीं होती।

सूर्य + केतु : चौथे घर में सूर्य + केतु की युति जातक के कानों पर अशुभ असर डालती है और उसे कम सुनाई देता है।

सूर्य पांचवें घर में

पांचवा घर सूर्य का पक्का घर है। सूर्य घर नं. 5 के समय यदि बाकी ग्रह भी अपने–2 पक्के घरें में हों तो जातक पुत्र जन्म के बाद तरक्की करता है। पांचवें घर के सूर्य को पारिवारिक उन्नति का मालिक भी कहा है। पांचवें घर में सूर्य वाला जातक यदि अपने मकान की पूर्वी दीवार के साथ रसोई बनाए या रोटी घर की जगह स्थापित करे, तो सूर्य पांचवें का फल और भी शुभ हो जाएगा। ऐसे व्यक्ति को कोई

Future Point

राजा न तारे तो, कोई साधू तार देता है।

पांचवें सूर्य वाला जातक पढ़ाई में अच्छा, पेट की खराबियों और क्रोधी स्वभाव का होता है। राज्य या सरकार से सहायता पाने वाला होता है। ऐसा जातक परोपकारी, दीर्घायु का मालिक, सबको मिलाकर एक जगह रखने वाला और शूरवीर पुत्रों वाला होता है। ऐसे जातक का बुढ़ापा सुख से व्यतीत होता है।

सूर्य पांच के समय यदि शनि ग्यारहवें घर में हो, तो हर तरह से बरकत का योग है। इस स्थिति में सूर्य शनि का झगड़ा नहीं होता, बल्कि दोनों एक दूसरे की मदद करते हैं। सूर्य पांचवें के समय चंद्रमा चौथे घर में हो, तो ऐसा जातक राजा जैसे सम्मान का मालिक हो।

सूर्य पांचवें के समय यदि बृहस्पति दसवें घर में और शनि तीसरे घर में हो, तो सूर्य के फल में बहुत हद तक कमी आ जाती है। ऐसे आदमी की एक से ज्यादा शादियां हो सकती हैं। ऐसे इन्सान की औलाद की आर्थिक स्थिति भी मंदी रहेगी।

सूर्य घर नं. पांच के समय यदि शनि 9, या 11 में हो, तो दूसरों से हमदर्दी, पिता के लिए शुभ।
सूर्य घर नं. पांच के समय यदि बृहस्पति घर नं. 10 में हो, तो विवाह एक से ज्यादा हो।
सूर्य घर नं. पांच के समय यदि चंद्रमा 4 में व बृहस्पति 9 में हो, तो राजयोग बनता है।
सूर्य घर नं. पांच के समय यदि शनि 3 में हो, तो दुःखों का पहाड़, सन्तान नष्ट।
सूर्य घर नं. पांच के समय यदि मंगल 3 में बृहस्पति 9, 12 में हो तो उत्तम फल कारक होता है।

उपाय

1. सूर्य पांच के समय यदि बृहस्पति दसवें हो, तो बृहस्पति की वस्तुएं पानी में बहाएं।
2. लाल मुंह वाले बंदर की सेवा अच्छा फल देगी।

पांचवें घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + चंद्रमा : इस युति से जिन्दगी भर आराम मिले। जब जातक की स्त्री गर्भवती हो, उस दिन से शुभ समय आरंभ हो जाता है।

सूर्य + बुध : पांचवें घर में सूर्य के समय यदि बुध साथ हो और उसी समय शनि नौवें घर में हो, तो जातक की आयु लंबी और आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। यदि इस युति पर राहु–केतु या मंगल की दृष्टि आ जाए, तो ऐसे व्यक्ति की मौत अचानक हो सकती है।

सूर्य + शनि : पांचवें घर में सूर्य + शनि की युति जातक को बहुत पक्के इरादे का इन्सान बनाती है। यदि यही शनि किसी भी प्रकार से अशुभ हो रहा हो और वर्षफल के अनुसार फिर घर नं. 5 में आ जाए, तो उस दिन से लेकर नौ साल तक दोनों ग्रहों का असर मंदा ही रहेगा। जीवन में हर प्रकार का भय बना रहेगा।

सूर्य + राहु : पांचवें घर में सूर्य + राहु की युति के समय राहु का असर बुरा नहीं रहता। पांचवें घर में सूर्य + राहु के समय यदि चंद्रमा भी चौथे घर में हो, तो ऐसे जातक की औलाद बेशक 21 साल की उम्र तक बेअर्थ रहे, लेकिन राजदरबार के कामकाज में अशुभ असर नहीं मिलता।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

सूर्य छठे घर में

छठा घर बुध का पक्का घर है। इसे केतु का भी पक्का घर माना जाता है। केतु घर नं. 6 में हो तो बीमारी आसानी से समझ नहीं आती। जातक नानकों की ओर से दुखी रहे, मुकदमों पर फिजूल खर्च हो। छठे घर में सूर्य वाला जातक भाग्य पर भरोसा रखने वाला, बेफिक्र किस्म का इन्सान होता है।

छठे घर के सूर्य वाला जातक बहुत गुस्से वाला होता है। अगर इस सूर्य पर राहु, या केतु का बुरा प्रभाव पड़ रहा हो, तो इसका अशुभ असर खुद जातक, या उसके मामा के परिवार पर पड़ सकता है।

सूर्य छठे के समय जातक की पैदाइश आमतौर पर नाना के घर में होती है, या उसके जद्दी घर से बाहर होती है। ऐसे जातक की पैदाइश के समय से उसके परिवार की आर्थिक हालत ठीक होनी शुरू हो जाती है। स्वयं जातक के यहां जब लड़के का जन्म होगा, तो उसकी अपनी आर्थिक हालत ठीक होनी शरू हो जाएगी।

छठे घर में सूर्य के समय यदि केतु सातवें घर में हो, तो ऐसे व्यक्ति का राजदरबार, यानी काम काज उत्तम होता है। छठे घर के सूर्य के समय यदि जातक अपने मकान की पश्चिमी दीवार तोड़कर रोशनी अंदर आने का इन्तजाम करे तो बर्बाद हो जायेगा। रात के आराम और बुढ़ापे में नजर पर असर पड़ेगा।

छठे घर में सूर्य के समय चंद्रमा बारहवें, आठवें या अपनी नीच राशि में कहीं भी हो तो जातक की स्त्री की सेहत पर बुरा असर पडता है। सूर्य की आयु 21–22 वें साल में सूर्य अग्निबाण की तरह मंदा असर देता है। ऐसी हालत में अगर मंगल दसवें और शनि बारहवें हो, तो इसका असर और भी अशुभ हो जाएगा। इस ग्रह स्थिति में यदि घर नं. 3 खाली हो, तो जातक और उसका बाप, जातक के 22वें साल में सरकारी काम करेगें, तो अशुभ फल रहेगा। इस प्रकार की ग्रह स्थिति में दोनों एक मकान या एक शहर में रहकर धन नहीं कमा सकते। धर्म स्थान में कुत्ते की खुराक की चीजें देनी चाहिए।

छठे घर में सूर्य के समय यदि राहु, या शनि पहले भाव में हो, तो ऐसे जातक की किस्मत को ग्रहण लगा रहेगा और यह ग्रहण जातक की 45 साल की उम्र में समाप्त हो जाएगा। यदि राहु दूसरे घर में और शनि आठवें घर में हो, तो जातक की सेहत व काम काज पर बुरा असर पड़ता है। इस स्थिति में धर्म स्थान में दूसरे लोगों द्वारा दान की वस्तुएं यदि जातक अपने पास रखे तो शुभ रहेगा।"

छठे घर में सूर्य के समय यदि चंद्रमा बारहवें घर में हो तो जातक खुद या उसकी पत्नी एक आंख से काना/कानी हो, या एक आंख की खराबी हो सकती है।
सूर्य छठे के समय यदि बुध 12वें (वर्षफल) में हो, तो राजदरबार नष्ट, रक्तचाप रहे।
सूर्य छठे के समय यदि शनि 12वें में हो, तो औरत पर औरत मरती जाए।
सूर्य छठे के समय यदि मंगल 10वें में हो, तो संतान नष्ट या उसको कष्ट।

उपाय

1. कुत्ता पालें, यानी केतु को खुश करें।
2. बंदर को गुड़, या गेहूं देना चाहिए। (नानकों की सहायता के लिए)

Future Point

3. भूरी कीड़ीयों को गेहूं या बाजरा डालें।
4. चांदी की डिब्बी में दरिया का पानी डाल कर घर में रखें। (सरकार से लाभ)
5. शाम की रोटी बनने के बाद चूल्हे को दूध से बुझाएं। (सरकार से लाभ)
6. राशिफल को ठीक करने के लिए बुध का उपाय करें।
7. रात को पानी सिरहाने रखकर सोने से पिता की सेहत ठीक रहे।

छठे घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + चंद्रमा : छठे घर में सूर्य + चंद्रमा की युति हो, तो दोनों ग्रह अपना–2 उत्तम फल मगर देते हैं। यदि दूसरा घर खाली हो या उसमें राहु या केतु हों, तो माता पिता के लिए अशुभ। यदि दूसरा घर खाली हो, तो माता पिता की सेहत के लिए मीठी चीज़ें धर्मस्थान में देनी चाहिए।

सूर्य + बुध : छठे घर में सूर्य + बुध की युति के समय यदि सूर्य किसी कारण से मंदा हो रहा हो, तो दोनों का शुभ असर कम हो जाता है।

सूर्य + शनि : छठे घर में सूर्य + शनि की युति जातक के मन में भटकन पैदा करती है। लेकिन यदि सूर्य और शनि दोनों अच्छी हालत में हों, तो सूर्य का फल उत्तम होता है। इस युति के समय यदि शनि खराब होगा, तो उसका असर केतु यानी पुत्र पर पड़ेगा ऐसे समय में काला कुत्ता पालना चाहिए। यदि लड़के की सेहत या आंखें खराब रहीं तो जातक को अधिक लाभ पहुंचेगा। यदि घर नं. 2 में राहु या केतु के कारण सूर्य खराब हो रहा हो, तो घर में बुध की वस्तुएं यानी पौधे, फूल और राग–रंग का सामान रखना चाहिए।

सूर्य+राहु : छठे घर में सूर्य + राहु की युति अशुभ होती है। इस अशुभ फल को दूर करने के लिए काला कुत्ता पालना चाहिए।

सूर्य सातवें घर में

सातवां घर शुक्र का पक्का घर है। बुध कन्या का रूप है, इसलिए बुध का भी इस घर पर कब्ज़ा है। सूर्य आग का गोला और शुक्र फूल, यानी जब भी आग फूल के पास आए तो फूल मुरझा जाए मतलब सूर्य इस घर में हो, तो पत्नी की सेहत खराब।

सातवें घर में सूर्य होने से जातक गृहस्थी से तंग आकर भागा हुआ साधु होता है। 25 वर्ष की आयु तक स्त्री सुख कम, पहली स्त्री रोगी और व्यापार में हानि हो। सातवें घर के सूर्य वाले जातक के ससुराल खानदान का कारोबार बहुत अच्छा नहीं रहता। सातवें घर में सूर्य वाला जातक कंजूस नहीं होता वह अगर किसी को दान देता है या सहायता करता है तो खुले दिल से।

सातवें घर के सूर्य के समय यदि दूसरे, तीसरे या पांचवें घर में बुध(वर्षफल में संभव), गुरु या शुक्र(वर्षफल में संभव), शुभ हों तो ऐसा जातक बेशक सारी उम्र दूसरे देशों में घूमे, धन कमाए लेकिन उसकी मौत अपने घर या जद्दी इलाके में ही होगी।

सातवें घर के सूर्य के समय यदि शनि या केतु दूसरे घर में हो, या बुध वर्षफल में दूसरे घर में आ जाए

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

तो ऐसे जातक की स्त्री का भाग्य शुभ नहीं होता। यदि बृहस्पति, चंद्र या मंगल दूसरे घर में हों तो ऐसा व्यक्ति सम्मान और समाज में रुतवा प्राप्त करेगा।

सातवें घर के सूर्य के साथ यदि राहु या केतु हों, या शनि आदि की दृष्टि से सूर्य मंदा हो, तो जातक के जन्मदिन से घर की आर्थिक हालत खराब हो जाए। यदि सूर्य बहुत ही खराब हो, तो जातक के यहां कोई गूंगा या पागल लड़का भी पैदा हो सकता है। अकेला सूर्य जातक की त्वचा, कांसे के बर्तन, चरी ज्वार और सफेद गाय आदि पर बहुत बुरा असर डालता है।

सातवें घर के सूर्य वाले जातक को बेहद गुस्सा आता है और, ज्यादा नमक घर की आदत होती है। वह खुदगर्ज और खुशामपसंद होता है और उसे, गंदी मशहुरी की इच्छा, जातक की बर्बादी की निशानियां होंगी। अगर सातवें घर में सूर्य के समय यदि राहु, केतु या शुक्र भी मंदा हो, तो परिवार की कमी और आर्थिक स्थिति खराब होगी। ऐसे में बृहस्पति की चीज़ें पानी में बहानी चाहिए।

सातवें घर के सूर्य के साथ यदि शुक्र या पापी ग्रह राहु या केतु और दूसरे घर में शनि खराब हो, तो ऐसे इन्सान को किसी दुखिया पराई स्त्री की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है।

सातवें घर के सूर्य के समय यदि पहले घर में बृहस्पति, शुक्र या पापी ग्रह हों और बुध मंदा हो रहा हो तो घर में इतनी मौतें होंगी कि कफन तक भी कम पड़ेंगे (यह हालत वर्षफल के लिए उपयुक्त है)। जातक के व्यवसाय तथा सेहत के लिए हानिकारक, दमा, तपेदिक की बीमारियां आदि। घर में चोरी और आग की घटनाएं हो सकती है। ऐसी हालत में बुध घर नं. 9 में हो तो सूर्य का असर और भी खराब। सांतवें घर के सूर्य को यदि बुध का साथ या मदद प्राप्त न हो, तो जातक जन्म से चाहे करोड़पति हो, लेकिन जवान होते–2 गरीब हो जाएगा।

सूर्य सातवें घर के समय मंगल या शनि दूसरे या बारहवें घर में हो और चंद्रमा पहले घर में हो, तो जातक को फुलबहरी होने का डर रहता है।

सूर्य सात के वक्त यदि केतु घर नं. 1 और बुध घर नं. 11 में हो (वर्षफल में हो सकता है) तो जातक के दोहते, या पोते की पैदाइश के दिन से सेहत खराब होनी शुरू हो जाए।

सूर्य सात के समय अगर आर्थिक स्थिति मंदी हो या जातक के बेटे की सेहत मंदी हो, तो तांबे के चौकोर टुकड़े जमीन में दबाने से शुभ फल प्राप्त होगा।

उपाय

1. शनि और सूर्य का टकराव 1/8 हो, तो जिस पर शाम का घर पके। आग को दूध में बुझाना चाहिए, उसकी सुबह (अगली) दूसरे स्थान पर घर बनाना चाहिए।
2. स्त्री कष्ट में हो, तो काली गाय की सेवा शुभ फल देगी, लेकिन सफेद गाय की सेवा नहीं करनी चाहिए।
3. किसी काम पर जाने से पहले गुड़ खाकर ऊपर से पानी पीकर जाना शुभ फल देगा। ग्रह (मंगल+चंद्रमा) पानी की सहायता करते हैं।

Future Point

Future Point

4. अपनी रोटी का चौथाई हिस्सा आग में डालना शुभ फल देता है।
5. दिन के समय में संभोग नहीं करना चाहिए वर्ना स्त्री की सेहत खराब हो।
6. धन की स्थिति के लिए स्त्री के बालों में सोना लगाएं। औलाद के लिए शुभ होता है।

सातवें घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + शुक्र : सातवें घर में सूर्य + शुक्र की युति शुभ होती है। जातक की परवरिश अच्छी व आयु लंबी होती है। अगर इस युति पर किसी अशुभ ग्रह का असर हो, तो औरत से बेकार का झगड़ा, स्त्री की सेहत मंदी और स्वभाव शक्की होता है। यदि इस युति वाले जातक के मकान का फर्श लाल होगा तो और भी बुरा असर देगा।

स्त्री की खराब सेहत का उपाय : स्त्री के वजन के बराबर ज्वार धर्म स्थान में दान देना चाहिए।

सूर्य + बुध : सातवें घर में सूर्य + बुध की युति फलदायक है। इस युति वाले जातक की स्त्री अच्छे खानदान (अमीर) से होगी और उसका स्वभाव भी अच्छा होगा। यदि कुण्डली में शुक्र शुभ होगा तो जातक की आमदनी हमेशा जारी रहती है और उसे हर मुसीबत से निजात प्राप्त होती है। इस युति वाले जातक को ज्योतिष का इल्म शुभ फल देता है। यदि इस युति के समय शुक्र मंदा हो रहा हो, तो जातक को लड़के और स्त्री सुख में कमी होगी। इस युति के समय यदि घर नं. 9 में मंगल, चंद्र या बृहस्पति हो, तो जातक का काम–काज 34 साल तक मंदा रहता है।

सूर्य + शनि : सूर्य + शनि की युति सातवें घर में अच्छी नहीं होती। इस युति के समय यदि बुध घर नं. 5 (वर्षफल के अनुसार) और चंद्रमा घर नं. एक में हो, तो जातक कारावास भी जा सकता है।

सूर्य + राहु : सातवें घर में सूर्य + राहु की युति सट्टे–लाटरी व व्यापार आदि के लिए अति अशुभ है।

सूर्य आठवें घर में

आठवां घर शमशान का प्रतीक है। मंगल की जमीन है, लेकिन शनि जल्लाद का काम करता है, इसलिए इस घर पर शनि का प्रभाव आ जाएगा। सूर्य जिस घर में बैठता है उस घर के कारकत्व का नाश करता है। आठवां घर मृत्यु का है, इसलिए जब सूर्य इस घर में होगा, तो जातक के सामने किसी की मृत्यु नहीं हो सकती। स्वयं जातक की मृत्यु भी अचानक होगी, उसे तड़पना नहीं पड़ता।

आठवें घर में सूर्य होने से जातक क्रोधी, धैर्यहीन, स्त्रियों के लिए लालायित रहने वाला, गुप्त इन्द्रिय रोगी, राजदरबार वाला होता है उलझनें बनी रहें और बिमारी लगी रहे। आर्थिक स्थिति खराब और आखों की रोशनी कम होती है। यदि बहन और ससुराल के घर में न बसे और चोरी की आदत न हो, तो जातक को अच्छा फल प्राप्त होता है। यहां सूर्य जातक को दीर्घायु बनाता है।

सूर्य आठ के समय यदि शनि घर नं. 3 में हो और मंदा हो तथा घर नं. 1 और 5 में मंगल बद हो, तो ऐसे व्यक्ति की उम्र छोटी होती है। यदि मकान दक्षिणी दरवाजे वाला हो, तो अति बुरा फल देगा। सूर्य के समय यदि बृहस्पति मंदा हो, तो जातक दूसरों को बचाने वाला पर उसका अपना का भाग्य मंदा रहे।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

उपाय

1. सूर्य आठ के समय शनि से संबंधित काम न करें।
2. सूर्य विष्णु का प्रतीक है, इसलिए भगवान विष्णु का नाम लेना चाहिए।
3. चलते पानी में गुड़ फेंकें।
4. तांबे के पैसे जलती चिता में फेंके।
5. सूर्य 8 में और शनि 3 में हो, तो माता का आशीर्वाद लें।
6. लाल या काली गाय की सेवा करें, सफेद गाय की सेवा बुरा फल देगी।
7. गुड़ खाकर ऊपर से पानी पीकर काम पर जाएं।

विशेष : यदि कोई व्यक्ति बहुत बीमार यानी मृत्यु के करीब हो तो सूर्य आठवें वाला जातक उसके पास न बैठे ताकि बीमार व्यक्ति मुक्त हो सके।

उपाय

गेहूं 800 ग्राम और गुड़ 800 ग्राम रविवार से मंदिर में देना शुरू करें और अगले रविवार तक (8 दिन) लगातार देते रहें।

आठवें घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + बुध : आठवें घर में सूर्य + बुध की युति अच्छी नहीं होती। लेकिन इस समय यदि घर नं. 2 खाली हो, तो ग्रहों का असर शुभ हो जाता है।

अशुभ असर : जातक की बहन, बेटी या बुआ पर बुरा असर पड़े, तो यह युति अशुभ मानी जाएगी। उपाय के लिए शीशे के बर्तन में गुड़ भरकर श्मशान में दबाना चाहिए।

सूर्य आठ के समय यदि मंगल बद हो, तो नं. 2 के ग्रह बर्बाद होंगे और उनके कारक रिश्तेदारों को तकलीफें आएंगी। जैसे चंद्रमा घर नं. 2 में हो, तो मां पर असर पड़ेगा। ऐसे जातक का लड़का भी बुरे चाल–चलन का होगा।

सूर्य + शनि : आठवें घर में सूर्य + शनि की युति होने पर यदि राहु ग्यारहवें घर में तथा बृहस्पति घर नं. 12 में हो, तो 36 साल की उम्र में शनि जहरीले सांप जैसा फल देगा। लेकिन यदि शनि वर्षफल में भी मंदा होगा, तो शनि के काम करना जहर पीने के बराबर होंगा। यदि वर्षफल के अनुसार 37वें साल में सूर्य और शनि पाचवें घर में आ जाएं अैर उस वर्ष जातक मकान खरीदे या नया व्यापार शुरू करे, तो पूरी तरह से बर्बाद हो जाएगा।

सूर्य + राहु : सूर्य + राहु की आठवें में युति के समय उस पर शनि की दृष्टि भी आ जाए, तो जातक लकवे तथा मानसिक बिमारियों का शिकार हो सकता है। ऐसी हालत में दोनों ग्रहों के बुरे असर को दूर करने के लिए तांबे का पैसा रातभर भट्ठी में जला कर सुबह पानी में बहाना चाहिए।

इस युति के समय चोरी से बचने के लिए जौ को किसी अंधेरी जगह बोझ के नीचे दबाकर रखना चाहिए।

सूर्य + केतु : सूर्य + केतु की युति आठवें घर में शुभ नहीं होती। यह युति इन्सान के कानों में खराबी पैदा करती है, या उसके साथ धोखा होने का भय रहता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

सूर्य नौवें घर में

आठवें घर के सूर्य को ग्रहण से ग्रसित माना गया है और ग्रहण के बाद का सूर्य अति प्रबल होता है। इसलिए नौवें घर का सूर्य बहुत शक्तिशाली व प्रबल होता है। घर नं. 9 बृहस्पति का है जो कि बाप, दादा, इज्जत और मान का प्रतीक है। इसलिए नौवें घर में सूर्य वाला जातक बाप–दादा के नाम को चमकाने वाला होगा। सूर्य नौवें के समय यदि बृहस्पति तीसरे घर में हों तो उस का प्रभाव कम हो जाएगा।

नौवें घर सूर्य वाला जातक भाग्यवान और वाहन आदि से सुखी होता है। जातक के स्वभाव को दुष्ट बनाता है और वह सात पुश्तों को तारने वाला होता है। ऐसे इन्सान को दवाइयों आदि का इल्म चाहे न हो, लेकिन दूसरों की बीमारी दूर करने की शक्ति होती है।

नौवें घर में सूर्य के समय यदि सूर्य के मित्र ग्रह चंद्रमा, मंगल या बृहस्पति पांचवें घर से या शुभ दृष्टि से सूर्य को देखता हो, तो जातक के खानदान में सबकी उम्र लम्बी होती है। यदि बुध (वर्षफल)पांचवें घर में आ जाए तो जातक का भाग्योदय बुध की आयु 34 वें साल में होगा और उत्तम फलदायक होगा।

सूर्य नौवें के समय यदि राहु घर नं. 1, 3 या 5 में हो, तो जातक के लिए अति अशुभ रहे। ऐसा जातक धर्म में विश्वास नहीं रखता तथा दूसरों की चीज़ों पर ऐशो–आराम करना चाहता है।

उपाय

1. चांदी, चावल या दूध का दान करना चाहिए।
2. दान में या मुफ्त किसी से कुछ नहीं लेना चाहिए।
3. रसोई में खाली पीतल के बर्तनों में कुछ न कुछ भरकर रखें। (बुध सूर्य साथ)

नौवें घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + चंद्रमा : नौवें घर में सूर्य+चंद्रमा की युति होने पर जातक पर माता की कृपा रहती है। ऐसा जातक अगर माता से धन लेकर कारोबार करे, तो बहुत बरकत होती है।

सूर्य + शुक्र : नौवें घर में सूर्य + शुक्र की युति जातक के अमीर होने का शुभ प्रतीक है। इस युति पर यदि राहु या केतु की दृष्टि पड़े, तो पत्नी के जीवन में कोई न कोई कमी रहेगी।

सूर्य + मंगल : सूर्य + मंगल की युति इस घर में तब खराब होती है, जब कुण्डली में मंगल बद हो। अपने से छोटे रिश्तेदारों से पैसे के लिए झगड़ा रहता है।

सूर्य + बुध : नौवें घर में सूर्य + बुध की युति जातक के राज दरबार तथा कारोबार के लिए शुभ है। लड़की के जन्म से जातक का भाग्योदय होता है। किंतु यदि बुध, केतु से मंदा हो रहा हो, तो 17 साल से 27 साल तक मुसीबतों का अम्बार लगा रहे। यहां बुध को अच्छा करने के लिए जातक बहन से संबंध ठीक रखे। धर्म स्थान में दूध चावल का दान दें।

सूर्य + शनि : सूर्य + शनि की युति नौवें घर में हो, तो जातक धनवान होता है, लेकिन यही युति जातक को मतलब परस्त बनाती है। इस युति के समय यदि बुध तीसरे में हो या मंगल अशुभ हो, तो इसका असर जातक के जिस्म या शनि की कारक वस्तुओं पर यानी मशीनों आदि पर बुरा रहेगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

सूर्य + राहु : नौवें घर में सूर्य + राहु की युति अच्छा फल नहीं देती। जातक को गले की बीमारियां होने की संभावना रहती है। नौवें घर में इस युति के समय जौ दूध में धोकर पानी में बहाना चाहिए या किसी अंधेरी जगह पर वजन के नीचे रखना चाहिए।

सूर्य दसवें घर में

दसवां घर शनि का है, जहां सूर्य शत्रुता का व्यवहार करे। राज्य से लाभ प्राप्त हो, नौकर–चाकर और सवारी का सुख मिले। दसवें घर का सूर्य माता की सेहत के लिए अशुभ। जातक सेहत और संपत्ति का स्वामी मगर वहमी स्वभाव का होता है। राज दरबार वाला हो, पर उलझनें सदा बनी रहें। दसवें घर में सूर्य के समय यदि शुक्र (वर्षफल में) घर नं. 4 में हो, तो पिता के लिए और यदि घर नं. 5 में हो, तो माता के लिए कष्टकारी रहे। सूर्य 10 के समय संतान पक्ष निर्बल होता है।

दसवें घर का सूर्य, शनि की कारक चीजों यानी मशीनरी, जातक के घुटनों, लकड़ी आदि पर बुरा असर डालता है। जातक की नजर तथा उम्र पर अशुभ असर पड़े। दसवें घर के सूर्य के वक्त जातक यदि ससुराल के घर बहुत आए जाए या व्यक्ति उनके घर रहे, तो बिजली से संबंधित कारोबार होगा। इस समय राहु सूर्य के ग्रहण लगाएगा।

दसवें घर के सूर्य के वक्त जातक अपनी मुश्किलों या अपने स्वभाव का ढ़िंढोरा दूसरों के आगे पीटे, तो यह उसके मंदे वक्त की निशानी होगी, जो उसे तबाह करे। सूर्य दसवें के समय अगर जातक घर की पश्चिम दीवार में रोशनदान बनाए तो अशुभ रहे। अगर जातक के पड़ोसी के यहां लड़का न हो या पड़ोसी काना हो, तो यह दर्शाता हैं कि जातक का स्वयं का सूर्य मंदा है। इसका असर व्यक्ति पर और उसकी औलाद पर पड़ता है। जातक सफेद या शरबती रंग की पगड़ी या टोपी इस्तेमाल करे। नीले कपड़ों से परहेज़ करे।

सूर्य दस के समय यदि शुक्र चौथे में हो और शनि मंदा हो, तो पिता की आयु को खतरा। चंद्रमा दूसरे घर में उच्च हो तो माता के लिए कष्टकारी।

सूर्य दस के समय यदि शनि कुण्डली में मंदा हो और वर्षफल में भी अशुभ हो, तो मकान, मशीनरी और शनि की दूसरी वस्तुओं पर भी अशुभ असर रहे। धन दौलत की हालत मंदी रहे।

सूर्य दस के समय यदि घर नं. 4 खाली हो, तो राज दरबार सोया माना जाता है। ऐसा व्यक्ति सब कुछ होते हुए भी सफलता नहीं पा सकता। ऐसे में तांबे के पैसे 43 दिन तक लगातार दरिया में बहाने चाहिएं।

उपाय

1. सफेद या शरबती पगड़ी/टोपी का इस्तेमाल करना चाहिए। राहु से बचाव ।
2. नीले कपड़ों से परहेज करना चाहिए।
3. पानी में तांबे के पैसे 43 दिन डालना चाहिए अगर चौथा घर सो रहा हो।
4. सूर्य शनि से प्रभावित हो, तो घर के अंदर हैण्डपंप लगवाना चाहिए।
5. बृहस्पति की मदद के लिए केसर का तिलक लगाना चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

दसवें घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + शुक्र : सूर्य + शुक्र की युति दसवें घर में परेशानी का कारण होती है। ऐसा जातक राजा होते हुए भी व्यर्थ की ठोकरें खाता फिरे। ऐसे में अगर घर नं. 4 खाली हो, तो चांदी की डिब्बी में चावल रखना उत्तम रहेगा। जातक अपना चरित्र ठीक रखे, नहीं तो बर्बाद हो जाएगा।

यदि चमड़ी की बीमारियां, या खून की बीमारियां हों या गृहस्थी पर बुरा असर पड़ रहा हो तो सांप (शनि) को दूध पिलाना शुभ फल देगा।

सूर्य + मंगल : यदि दसवें घर में सूर्य + मंगल की युति के समय कुण्डली में मंगल बद हो, तो जातक पैसे के लिए या पत्नी के संबंध को लेकर नजदीकी रिश्तेदारों से झगड़ा रखता है। दसवें घर में सूर्य + मंगल के समय यदि शनि घर नं. 11 में और चंद्रमा घर नं. 6 में हो, तो भाग्य के संबंध में अच्छा फल प्राप्त हो।

सूर्य + बुध : दसवें घर में सूर्य+बुध की युति जातक को धनवान बनाती है बशर्ते पहला और दूसरा घर खाली हो। शनि का पक्का घर होने के कारण शनि का फल दोनों ग्रहों पर रहता है, जिसके कारण आदमी की बदनामी हो सकती है या काम बिगड़ सकता है।

सूर्य + शनि : सूर्य + शनि की दसवें घर में युति के समय यदि बुध भी दसवें घर में हो तो जातक ही बेवजह की तोहमत या बदनामी से परेशान रहता है।

सूर्य + राहु : दसवें घर में सूर्य + राहु की युति बुरी होती है और अशुभ फल देती है। यदि घर में खुली नाली गंदे पानी के लिए रखी जाए या जमीन के अंदर पानी जमा करने की जगह बनाई जाए, तो दोनों ग्रहों का फल और भी खराब मिलता है। इस युति के समय यदि सूर्य को पुरुष ग्रहों की मदद न मिलती हो तो जातक की उम्र कम होती है।

सूर्य + केतु : दसवें घर में सूर्य + केतु की युति होने से दोनों का ही फल अच्छा नहीं रहता और इसका विशेष असर व्यक्ति के व्यवसाय पर पड़ता है।

सूर्य ग्यारहवें घर में

ग्यारहवां घर शनि का पक्का घर है, क्योंकि 11 नं. राशि यहां पड़ती है। यह घर धन लाभ का भी है, इसलिए इस घर को गुरु का घर भी माना जाता है। इसे शनि की जमीन और बृहस्पति का मकान भी कहा जाता है। लाभ का फैसला बृहस्पति करता है। बृहस्पति के घर नं. 11 में कायम करने से पुत्र से लाभ होगा। जातक को राज्य से लाभ मिलता है और वह पूरा धर्मी लेकिन ऐशो आराम वाला होता है। यदि जातक शराब, मांस, अंडे आदि से परहेज करे तो अति उत्तम। शनि की चीज़ें सूर्य को काला कर देती हैं। यदि ऐसे में चंद्रमा 5 वें घर में हो, तो मृत्यु 12 वें साल में लिखी गई है। यदि बुध घर नं. 3 (वर्षफल में हो सकता है) में हो, तो वह भी नीच प्रभाव डालता है, भाग्य को चमकने नहीं देता, परंतु आयु की रक्षा करता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

11वें घर में सूर्य वाला जातक यदि मांस–मछली का लगातार इस्तेमाल करें, तो 45 साल तक उसके लड़का पैदा न होगा और अगर होगा तो बचेगा नहीं। यहां सूर्य के समय मांस–मछली घर का मतलब है अपनी ही औलाद को गोश्त समझकर खाना–विशेषकर ऐसे जातक के लिए जिसके मकान के आगे चौराहा हो और पड़ोस में दरख्त वाला मकान हो। ऐसे व्यक्ति को सांपों के सपने भी आते हैं।

11वें घर को कचहरी कहकर भी पुकारा गया है। इसलिए बृहस्पति की अदालत में शनि ने कसम खा रखी है कि वह सही फैसला करेगा। यदि जातक लड़ाई झगड़े का आदी, दूसरों की अमानत हड़पने का आदी या धोखेबाज होगा, तो उसी कलम से सही फैसला करते हुए अपने खानदान की तबाही का कारण बनेगा।

यदि इन्सान मांस मछली खाए तो 45 साल की उम्र के बाद जिंदा बकरा जंगल में छोड़ दे जिससे औलाद पैदा होने की संभावना हो सकती है।

सूर्य ग्यारह के समय चंद्रमा घर नं. 8 और बुध घर नं. 3 (वर्षफल में हो सकता है) में हो तथा शनि भी अच्छी हालत में न हो, तो ऐसा जातक चालाकी का पुतला और झूठ बोलने में शातिर होगा।

उपाय

1. मूली, गाजर या शलजम सिरहाने रख कर सोएं और सुबह मंदिर में दें।
2. शराब, मांस, अंडे से परहेज करें।
3. जो पाप किए हों उनके उद्धार के लिए अपने भार बराबर दूध देने वाली बकरियों का भार करके (जैसे पांच बकरीयां जातक के भार के बराबर) उन्हें जंगल में छोड़ें।
4. झूठ, फरेब से दूर रहें, अमानत में खयानत न करें।
5. पैसे को कायम करने के लिए तांबे का पैसा गर्म करना चाहिए।

ग्यारहवें घर में दो ग्रहों का फल

सूर्य + चंद्रमा : 11वें घर में सूर्य + चंद्रमा की युति का असर मंदा होता है। ऐसी युति वाला जातक यदि मांस, मछली, शराब से परहेज करे, तो उसकी आयु लंबी हो सकती है।

सूर्य + बुध : 11वें घर में सूर्य + बुध की युति के समय यदि उसके पुश्तैनी मकान में अच्छे लोग रहते हों। तो उसका भाग्य बढ़ता जाएगा। यदि इस मकान में मांसाहारी, या शराब का सेवन करने वाला होगा, तो जातक पर बहुत बुरा असर पड़ेगा।

सूर्य + शनि : 11वें घर में सूर्य + शनि की युति मंदा प्रभाव देती है। ऐसे इन्सान की आमदनी पर बुरा असर पड़ता है।

सूर्य + राहु : 11वें घर में सूर्य + राहु की युति अशुभ होती है। इस युति वाला जातक यदि नीलम या गोमेद की अंगूठी पहने, तो इसका असर बर्बाद करने वाला होगा।

सूर्य + केतु : 11वें घर में सूर्य + केतु की युति शुभ नहीं होती। ऐसी युति के समय कभी–कभी व्यक्ति को दूसरे की औलाद गोद लेनी पड़ती है।

Future Point

सूर्य बारहवें घर में

12वां घर बृहस्पति का घर है और सूर्य इसका मित्र, इसलिए इस घर में सूर्य अच्छे फल देता है। 12वें घर को आकाश भी कहा है और आकाश में सूर्य उत्तम होता है। लेकिन 12वें घर के सूर्य को सुख की नींद सोने वाला मगर पराई आग में जलकर मरने वाला कहा गया है इसलिए 12वें सूर्य वाला जातक ख्वामख्वह दूसरों की मुसीबत अपने सिर ले लेता है।

सूर्य बारहवें के समय यदि जातक मिस्त्री या मैकेनिक का काम खुद करे, तो अशुभ रहता है। सूर्य 12वें के समय शुक्र और बुध मंदे नहीं होते और न ही सूर्य और शनि का झगड़ा रहता है। सूर्य 12 के समय शनि यदि घर नं. 6 में हो, तो जातक की गृहस्थी पर बुरा असर नहीं पड़ता। शुक्र अशुभ भी हो, तो नेक फल देगा।

सूर्य 12वें पर यदि राहु या केतु की दृष्टि पड़े, तो सूर्य राहु की चीजों पर अपना शुभ असर देना बंद कर देगा। इन चीजों में सिर की हड्डी, दिमागी हरकत, दिमाग में विचारों का पैदा होना आदि है। दूसरे शब्दों में दिमागी बीमारियां भी पैदा हो सकती हैं। ऐसे व्यक्ति पर झूठे लांछन लगते हैं। ऐसा व्यक्ति किसी को बुरा शब्द कहे तो उसका असर खुद के लिए बुरा होता है। यदि जातक शीशा, बिजली या कोयले (राहु की चीजें) का कारोबार करे, तो पूरी तरह से तबाह हो जाएगा। ससुराल से मिलकर काम करना भी अशुभ फल देगा।

सूर्य बारह के समय चंद्रमा यदि घर नं. 6 में हो, तो जातक को या उसकी पत्नी को आंखों की बिमारी हो सकती है। राहु, या, केतु या मंदा शुक्र घर नं. एक में हो, तो पैसे की तंगी और इज्जत को खतरा रहे।

विशेष

1. यदि जातक के घर में आंगन न होगा, तो सूर्य का अच्छा फल नष्ट हो जाएगा।
2. बुध के कामों में उन्नति लेकिन हाथ के कामों में नुकसान।
3. नीच सूर्य आखों पर बुरा प्रभाव डालता है।
4. यदि राहु या शनि के काम अपनाए, तो रोटी के लाले पड़ जाएं।
5. चाहे घर बार बिक जाए, धर्महीन नहीं होगा।

उपाय

1. बंदरों को गुड़ डालना चाहिए।
2. धर्म का पालन करना चाहिए।
3. किसी की झूठी गवाही न दें।
4. साले, चाचा या ताऊ के साथ सांझे में काम करना भी हानिकारक रहेगा।

सूर्य + चंद्रमा : बारहवें घर में सूर्य + चंद्रमा की युति शुभ फल देती है। ऐसी जातक का खर्च बेकार की चीजों पर नहीं होता।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

सूर्य + बुध : बारहवें घर में सूर्य + बुध की युति के समय सोना धारण करना शुभ रहता है। दोनों ग्रहों का अपना–2 फल होता है। यदि इस पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो, तो बहन, बुआ और बेटी आदि पर फजूल का खर्च होगा। शारीरिक कष्ट भी हो सकता है, जिसमें नाड़ियों की तकलीफ तथा मिरगी आदि शामिल है।

सूर्य + शनि : 12वें घर में सूर्य+शनि की युति शुभ रहती है। दोनों में झगड़ा नहीं रहता है। बृहस्पति का पक्का घर है और बृहस्पति सूर्य से मित्रता रखता है और शनि के साथ सम होने के कारण इनका झगड़ा नहीं होने देता। 12वें घर में सूर्य + शनि की युति के समय शुक्र का फल भी मंदा नहीं होता।

सूर्य + राहु : बारहवें घर में सूर्य + राहु की युति अशुभ रहती है, क्योंकि राहु सूर्य को ग्रहण लगाता है। जातक को खोपड़ी संबंधित रोग हो सकते हैं।

विशेष : सूर्य के साथ दो अन्य ग्रहों की युति

सूर्य + चंद्र + शुक्र : सूर्य के साथ चंद्रमा व शुक्र की युति किसी भी घर में होने पर जातक या तो बहुत अमीर या फिर बहुत गरीब। यह असर विशेष तौर पर उस समय होगा जब यह तीनों ग्रह घर नं. 9 में हों।

सूर्य + चंद्र + बुध : इन तीनों ग्रहों की युति का असर 17 या 34 साल की उम्र में पिता की सेहत तथा धन पर पड़ेगा। चंद्रमा की चीज़ों जैसे माता, जातक की दिल की शांति और स्त्री की सेहत पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। यह असर और भी बढ़ जाएगा जब तीसरे घर में बृहस्पति, शनि या राहु होगा। आम तौर पर इस युति का बुरा असर नहीं रहता जब यह घर नं. 1,2 या 7 में हो।

सूर्य + चंद्र + राहु : यह युति किसी भी घर में होने से चंद्र बर्बाद होगा यानी यह माता, मन की शांति और धन–दौलत के लिए अशुभ है। घर नं. 5 में यह युति उपरोक्त वस्तुओं के लिए अशुभ नहीं, पर संतान के लिए अशुभ है।

इस युति के जहर को दूर करने के लिए दुर्गा पूजन या कुंवारी कन्याओं को भोजन खिलाना चाहिए।

सूर्य + चंद्र + केतु : इस युति से केतु का फल मंदा यानी जातक की औलाद पर बुरा असर पड़े। आदमी लखपति होते हुए भी दुखी रहे। यह युति घर नं. 5 में शुभ है।

इस युति के जहर को दूर करने के लिए कन्याओं को भोजन खिलाना चाहिए।

सूर्य + शुक्र + बुध : इस युति के समय केतु यदि नीच या मंदा होगा, तो जातक के यहां बहुत देरी से औलाद पैदा होगी। औरत के कुण्डली में इस युति के समय लड़का होने पर और मर्द के कुण्डली में लड़की होने पर स्त्री की सेहत खराब होगी। जातक को जुबान की बीमारियां हो सकती है जो इस युति के अशुभ फल को दर्शाती है। "जुबान की बिमारियों के समय शनि की चीजें शराब आदि का प्रयोग अच्छा फल देती है।

यदि यह युति घर नं. 8 में होगी, तो जातक की शादी 17 या 34 साल की उम्र में होगी और उसकी पत्नी शादी के तीन साल के अंदर –2 दिन के समय किसी दुर्घटना में मर सकती है।

Future Point

यह युति घर नं. 3 में और शनि घर नं. 12 में हो, तो मकान की जमीन के नीचे अंधेरी कोठरी में बादाम दबाना चाहिए। यह युति यदि नौवें घर में हो, तो किसी फकीर को सात रोटियां एक साथ देनी चाहिए।

यह युति यदि दसवें घर में हो, तो जातक को साली का रिश्ता अपने घर में करना अशुभ फल देगा। ऐसी हालत में यदि घर में निवार के गोले या कोई ऐसी वस्तु गोले के आकार में रखी हों, तो, उन्हें खोलकर रख देना चाहिए। निवार हो तो चारपाई बना लेनी चाहिए।

सूर्य + शुक्र + शनि : इन तीनों ग्रहों की युति किसी भी घर में होने से पति पत्नी आपसी गलतफहमी का शिकार होंगे और बर्बादी का कारण बनेंगे।

उपाय के लिए मिट्टी के गोल बर्तन में लाल पत्थर के टुकड़े डालकर यह युति जिस घर में हो उस दिशा में वीराने में वीराने में जमीन के नीचे दबाने चाहिए।

सूर्य + शुक्र + राहु : इन तीनों ग्रहों की युति का असर जातक की पत्नी पर पड़ता है, खासकर उस समय जब यह युति घर नं. 1 में हो।

सूर्य + शुक्र + केतु : इन तीनों ग्रहों की युति घर नं. 1 में हो, तो शुक्र (पत्नी) और केतु (लड़का) की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कान, रीढ़ की हड्डी या पांव आदि में खराबी आ जाए, तो ग्रहों का असर बुरा होता है। जब तक स्त्री पति के जद्दी मकान में रहे, सेहत की ओर से दुःखी रहे।

सूर्य + मंगल + बुध : यह युति इन्सान को एक ही वक्त में दो काम करने की ताकत देती है। जातक हिम्मत वाला होता है और किसी भी बात को गुप्त रख सकता है।

सूर्य + मंगल + शनि : इन तीनों ग्रहों की युति धन–दौलत के लिए उम्दा होती है। लेकिन यही युति अगर घर नं. 11 में हो, तो व्यक्ति झूठा, जिद्दी व मंद भाग्य होगा।

सूर्य + बुध + शनि : इन तीनों ग्रहों की युति के समय फल उत्तम ही होता है, लेकिन यह युति पिता की सेहत व उसके कारोबार के लिए अच्छी नहीं मानी जाती।

सूर्य + बुध + राहु : इस युति से जातक के राजदरबार या काम काज पर बुरा असर नहीं पड़ता। बुध के कारक रिश्तेदारों यानी बुआ, बहन व बेटी के पति पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है–विशेषकर उनके काम काज पर। चंद्रमा का उपाय करने से लाभ होगा। चांदी की डिब्बी में चावल डाल कर घर में रखने चाहिए।

सूर्य + बुध + केतु : इन तीनों ग्रहों की युति के समय जातक के भतीजे या भांजे मंदा असर देंगे। वो जातक की दौलत खा–पीकर बर्बाद करेंगे। जातक की नेकी को भुलाकर उसका अहसान तक याद नहीं रखेंगे।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. सूर्य का पक्का घर कौन सा है ?
2. सूर्य घर नं. 6 के समय यदि चंद्रमा घर नं. 12 में हो, तो क्या प्रभाव रहता है?
3. सूर्य घर नं. 6 के समय यदि शनि घर नं. 12 में हो, तो क्या कुप्रभाव होगा?
4. सूर्य घर नं. 4 के समय यदि शनि घर नं. 7 में हो, तो क्या कुप्रभाव होगा?
5. सूर्य और राहु की युति 12 घरों में क्या प्रभाव रखती है?
6. सूर्य की कारक वस्तुओं के बारे में लिखें।
7. सूर्य की विभिन्न भावों में स्थिति के अनुसार उपाय लिखें।
8. घर नं. 8 के सूर्य में क्या खास बात है? विस्तार पूर्वक लिखें।
9. पैसा कायम करने के लिए घर नं. 11 के उपाय का सविस्तार वर्णन करें
10. सूर्य घर नं. 11 के समय यदि जातक मांस, मछली, अण्डे आदि का सेवन करता है, तो लाल किताब में इसकी व्याख्या कैसे की गई है और इसका उपाय क्या है?

Future Point

खण्ड 3 – चंद्रमा

चंद्रमा

ज्योतिष शास्त्र (चाहे वैदिक हो या लाल किताब) में सूर्य और चंद्र को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। दोनों ग्रह रोशनी के कारक है। चंद्रमा चौथे घर का मालिक है और मां का प्रतीक, मन की शांति का कारक है। नीयत, घोड़ा, घोड़ी, चावल, दूध, खोया, जल, हृदय, चांदी, मोती, समुद्री व्यापार, ,बरगद भूमि, खेती आदि का विचार चंद्रमा से किया जाता है।

सभी ग्रह इसके चरणों में सिर झुका कर बुराई न करने की कसम खाते हैं। चंद्रमा मां का प्रतीक है, इसलिए मां के चरण छूना और आशीर्वाद लेना हमेशा लाभदायक होता है। चंद्रमा के चौथे घर में सभी पापी ग्रह शांत हो जाते हैं।

जैसे शनि का जहर चंद्रमा के दरिया में धुल जाता है।
राहु का सिक्का चंद्रमा के दरिया में डूब जाता है।
केतु के नींबू चंद्रमा के दरिया में खटास फैला देते हैं।
यह सब उपाय करने से चंद्रमा पीड़ित होने का डर रहता है, इसलिए उपाय के पहले और बाद में जल में दूध बहाना चाहिए।

बड़ के वृक्ष को दूध डालकर उस गिली मिट्टी का तिलक लगाने से चंद्रमा शांत हो जाता है।

अगर उपाय गलत हो जाए तो मां को कष्ट होगा।

चंद्रमा छठे, आठवें व बारहवें घरों में कमजोर माना जाता है। चौथे घर में राहु आ जाए, तो चंद्रमा कमजोर हो जाता है। इस समय चंद्रमा संबंधित वस्तुएं धारण करनी चाहिए।

पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें व नौवें घर में चंद्रमा बलवान होता है और शुभ फल देता है। चंद्रमा का सबसे बड़ा शत्रु केतु है क्योंकि यह चंद्रमा को ग्रहण लगाता है। चंद्रमा अगर आठवें घर में हो और उस समय तीसरे चौथे घर में चंद्रमा के शत्रु ग्रह न हों, तो चंद्रमा अशुभ फल नहीं देता।

- छठे घर में केतु और चंद्रमा घर नं. 11 में हो, तो पुत्र सुख में बाधा हो।
- अगर चंद्रमा बुरे घरों में हो, तो चांदी का कड़ा धारण करना चाहिए। यह तीसरे घर का उपाय है।
- जिस कुण्डली में चंद्रमा घर नं. 1 में हो उस जातक को मंगल, सूर्य और बृहस्पति संबंधी चीज़ेधारण करनी चाहिए–चंद्रमा शुभ फल देगा।
- चंद्रमा के दरिया को कोई पापी ग्रह पार नहीं कर सकता, इसलिए चौथे घर में पापी ग्रह शांत रहते हैं।
- लाल किताब के अनुसार पूर्णमासी के बाद दूज का चंद्रमा बहुत बली माना जाता है। यदि पूर्णमासी के शीघ्र बाद पति, पत्नी का मिलन हो तो पुत्र प्राप्त होता है जो सूर्य की शक्ति का प्रतीक है।
- किसी बृद्ध स्त्री के पांव छू कर आशीर्वाद लेने से चंद्रमा के शुभ फल मिलने लगते हैं।
- ब्याज घर, दूध से बनी चीजें बेचना आदि पुत्र सुख में बाधा का कारक बनते हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

- अगर किसी व्यक्ति के पुत्र संतान न हो, तो कुल पुरोहित, गुरु, बाप और दादा का आशीर्वाद लेते चाहिए।
- अगर चंद्रमा छठे, आठवें या बारहवें में नष्ट या कमजोर हो, तो शनि, राहु या केतु संबंधित चीजें पानी में बहाने से माता की जिन्दगी को खतरा बन सकता है। जैसे इन घरों में चंद्रमा हो और राहु चौथे घर में हो, तो राहु का उपाय न करके चंद्र की चीज़ें अपनानी चाहिए।

चंद्रमा पहले घर में

कुण्डली का पहला घर मंगल का पक्का घर है और सूर्य इसमें उच्च का प्रभाव देता है। चंद्रमा घर नं. 1 में दो मित्रों का साथ लेकर लाभकारी प्रभाव देता है। जब चंद्रमा घर नं. 1 में हो तो सूर्य और मंगल को गुणों को साथ लेकर चलता है। सूर्य इज्जतमान का प्रतीक और मंगल भाइयों का कारक है। चंद्रमा 1 के समय जातक यदि सूर्य + मंगल के गुणों को अपनाए, तो लाभदायक होगा। माता का आदर करने से और माता से चांदी और चावल लेकर रखने से जातक उन्नति करेगा।

सूर्य और मंगल अपने मित्र चंद्रमा को लग्न यानी राज सिंहासन पर देखकर खुश होंगे तथा उसका साथ देंगे। ऐसा व्यक्ति नर्म दिल होगा।

चांदी में कलई (बुध) खोट बन जाती है, यानी जातक बुध की जानदार या बेजान वस्तुओं को साथ रखे, तो नुकसान में रहेगा। साली को घर में रखना, हरे रंग का इस्तेमाल आदि नुकसानदायक सिद्ध होंगें। बुढ़ी स्त्रियों से आशीर्वाद लेने से लाभ होगा। दूध को जलाना या दूध का मुनाफे के लिए बेचना जातक की आयु व संपत्ति के लिए नुकसानदायक होगा। चंद्रमा घर नं. 1 वाले व्यक्ति को चाहिए कि घर आए मेहमान की सेवा दूध व पानी से करें। यदि सातवां घर खाली हो, तो 24 वर्ष की आयु तक जातक को शादी करके चंद्रमा को जगाना चाहिए–राज दरबार में कामयाबी और सम्मान पाता रहेगा, दूध की खैरात से उन्नति करता रहेगा।

चंद्रमा 1 के समय यदि आठवें घर में शनि हो, तो जातक के जन्म से पहले उसका कोई भाई–बहन मर चुकी होगी। चांदी के बर्तन में दूध पीना चंद्रमा की शक्ति को बढ़ाता है। चांदी के बर्तन के आगे बुध की नाली नहीं लगी होनी चाहिए। ऐसे बर्तन में दूध पीने से मां की सेहत पर बुरा असर पड़ेगा। इस घर में चंद्रमा के अशुभ असर को दूर करने के लिए जब इन्सान सौ दिन के लिए सफर पर जा रहा हो, तो नदी या समुद्र में ताम्बे के पैसे फेंके।

यदि चंद्रमा घर नं. 1 में हो, तो रात को आराम की जिन्दगी गुजारने के लिए चारपाई के चारों पायों में ताम्बे कीलें लगवानी चाहिएं। बड़ के पेड़ को पानी डालना शुभ होगा। चंद्रमा एक वाला जातक यदि अपनी आयु के 24 से 31 साल के बीच सफर पर जाए और सफर से वापिस आकर माता के चरण छूए तो मां की उम्र बढ़ेगी, वरना माता का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। इस बुरे असर को दूर करने के लिए मंगल की चीज़ें लाल रंग के पत्थर या गुड़ मिट्टी के नीचे दबाना चाहिए।

चंद्र घर नं. 1 के समय सूर्य, मंगल या बृहस्पति घर नं. 1 या 10 में हो, तो समुद्री सफर से फायदा होगा। यदि बृहस्पति घर नं 4 में और शनि घर नं. 10 में हो, तो जातक को हर किस्म की सवारी का सुख प्राप्त होता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्र घर नं. 1 के समय यदि शुक्र घर नं. 7 में हो, तो सास–बहु का रिश्ता मां–बेटी की तरह से होगा, मगर यह औलाद के लिए कुछ अशुभ है। इस अशुभ फल को दूर करने के लिए जातक शादी के दिन से घर में कुत्ता पाले।

चंद्र घर नं0 1 के समय यदि शुक्र–बुध या मंगल–बुध घर नं. 7 में इकट्ठे हो, तो शुभ फल देंगे। लेकिन यदि घर नं. 8 में अशुभ ग्रह राहु, शनि और केतु का टकराव चंद्रमा से हो, तो भाग्य बर्बाद होगा।

यदि चंद्र 1 के समय इन्सान दूसरों से मुफ्त चीज़ें लेना शुरू कर दे, तो यह चंद्र के बुरा होने की निशानी है। यहां पर यदि शुक्र ठीक भी बैठा हो किंतु चंद्र पर बुरे ग्रहों का असर हो, तो जब तक जातक की माता जीवित रहेगी तब तक पत्नी की सेहत खराब रहेगी या वह दुखिया रहेगी। उपाय के तौर पर बरसात का पानी घर में रखना शुभ फल देगा।

खाना नं. 7 खाली होने पर घर नं. 1 का चंद्र सोया माना जाता है। ऐसे में 24 साल के पहले शादी करना, गाय की सेवा करना और किसी स्त्री को घर में नौकर रखना चाहिए, नहीं तो 25 साल में चंद्र खुद जागा हुआ होगा और मंदा फल देगा। इस मंदे असर को दूर करने के लिए मंगल की चीज़े सौफ या शहद जमीन में दबानी चाहिए।

चंद्र घर नं. 1 के समय यदि सूर्य और शनि घर नं. 6 में हों, तो ऐसे व्यक्ति की जिंदगी गरीबी से बीतती है। चंद्र एक के समय यदि बृहस्पति घर नं. 11 में हो, तो व्यक्ति बेकार के इश्क में फंस कर बुरी तरह से बर्बाद हो जात है। इसका असर जातक की सास, माता और भाइयों पर भी पड़ता।

चंद्र घर नं. 1 के समय यदि शुक्र भी साथ हो, तो जातक की स्त्री मानसिक बीमारी से परेशान। यदि शनि साथ हो, तो चंद्रमा की शुभता में काफी हद तक कमी आ जाती है। यदि केतु साथ हो तो जातक की माता और पुत्र पर बुरा असर पड़ेगा।

उपाय

1. पुत्र सुख के लिए भूमि के नीचे सौंफ दबाएं।
2. जातक को 24–27 वर्ष के बीच शादी नहीं करनी चाहिए।
3. शादी 24 वर्ष से पहले या 28 वर्ष की आयु के बाद करें।
4. जातक 24 से 27 वर्ष के बीच की कमाई की दौलत से मकान न बनाए।
5. चांदी की गड़बी में बुध की नाली लगवाकर घर में न रखें।
6. हरे रंग और साली से दूर रहें।
7. बरगद की जड़ में कभी–2 पानी डाला करें।
8. चारपाई के चारों पायों में तांबे की कील लगवाएं।
9. दरिया पार करते वक्त तांबे के पैसे दरिया में फेंकें।
10. घर में चांदी की थाली रखनी शुभ होगी।
11. लाल रंग के पत्थर या गुड़ जमीन के नीचे दबएं

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

12. बरसात का पानी घर में रखें।
13. सौंफ या शहद जमीन के नीचे दबाएं।
14. माता से चांदी की थाली में चावल लेकर नहीं घर में रखें।
15. दूध को जलाएं या मुनाफे के लिए बेचे नहीं।
16. घर आए मेहमान की सेवा दूध से न करके पानी से करें।
17. गुरु, बाप, दादा का आशीर्वाद लेना चाहिए।
18. ब्याज की कमाई नहीं खानी चाहिए।
19. किसी वृद्धा के पांव छूकर आशीर्वाद लेना चाहिए।
20. शनि की चीजों का इस्तेमाल न करें।

चंद्रमा दूसरे घर में

दूसरा घर बृहस्पति और शुक्र दोनों से प्रभावित है। किंतु चंद्रमा को इसमें उत्तम माना गया है क्योंकि इस घर में कालपुरुष की राशि नं. 2 पड़ती है जिसमें चंद्रमा उच्च का होता है। दूसरे चंद्रमा अपने मित्र बृहस्पति से भी प्रभावित है इसलिए बृहस्पति का इस घर में प्रभाव चंद्रमा के साथ होगा, न कि अपने शत्रु शुक्र के साथ। माता–पिता की जायदाद में से जातक को हिस्सा जरूर मिलेगा।

दूसरे घर में चंद्रमा को खुद पैदा की हुई माया की देवी कहकर पुकारा गया है। यदि चंद्रमा घर नं. 2 वाला जातक घर में मंदिर स्थापित करेगा, घंटे या घड़ियाल बजाएगा, तो चंद्रमा बेकार होकर पूर्ण नष्ट हो जाएगा और इसका असर जातक की औलाद पर पड़ेगा। वैसे चंद्रमा घर नं. 2 वाले के औलाद कम ही होती है। चंद्रमा घर नं. 2 के समय वर्षफल में चंद्रमा यदि घर नं. 1 में आ जाए, तो बृहस्पति और चंद्रमा दोनों का ही फल उत्तम होगा। नं. 2 का चंद्रमा, बृहस्पति जहां कहीं भी बैठा हो, उसके फल को उत्तम करेगा।

खाना नं. 2 के चंद्रमा वाले जातक का जन्म यदि कृष्ण पक्ष में हुआ हो, तो वृद्धावस्था बहुत उत्तम रहती है। ऐसा जातक अपनी उम्र लम्बी रखने के लिए मकान में चांदी की चीजें दबाए। इसके अतिरिक्त बहते दरिया का पानी भी घर में रखना शुभ फल देता है। घर नं. 2 वाले जातक को घर में कच्ची मिट्टी का स्थान जरूर रखना चाहिए।

सफेद घोड़े का साथ या किसी बुजुर्ग बुढ़िया की सेवा से मैदाने जंग या परिवार में कभी जातक की हार नहीं होगी। चंद्रमा घर नं. 2 के समय जब घर नं. 4,6,8,10 या 12 में राहु, केतु या शनि बैठा हो, तो माता जातक की 48 साल की आयु तक साथ जरूर रहेगी। जब चंद्र जागता हो यानी छठे घर में बैठे ग्रह को देखता हो, तो जातक की ससुराल की माली हालत शुभ होगी।

चंद्रमा घर नं. 2 के समय यदि शुक्र दूसरे या 12वें घर में हो, तो चंद्रमा का फल उत्तम रहता है। चंद्र घर नं. 2 के समय यदि केतु घर नं. 12 में हो, तो चंद्र को खराब करेगा, जिससे जातक को शिक्षा या औलाद (लड़का) में से एक चीज़ नसीब होगी।

चंद्रमा घर नं. 2 में हो और यदि घर नं. 1, 2, 7, 10, 11 अशुभ हों, तो चंद्र का फल बहुत अशुभ हो जाएगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

इसका असर पिता और पत्नी पर भी पड़ेगा। चंद्रमा 2 के समय सूर्य घर नं. 1 हो तो आयु 25 वर्ष तक मानी गई है, यदि आयु लंबी होगी, तो जातक को 25वें और 34 वें वर्ष में गरीबी का सामना करना पड़ेगा। चंद्रमा 2 के समय यदि शनि दसवें घर में हो तो ऐसा व्यक्ति वृद्धावस्था में बुरे दिन देखेगा। जब बृहस्पति घर नं. 11 में और बुध घर नं. 6 में हो, तो जातक का वृद्धावस्था में बुरा हाल होगा और नजर छोटी उम्र में कमजोर होने का डर रहता है।

चंद्रमा घर नं. 2 में हो और घर नं. 9, 10, 12 में चंद्र का शत्रु ग्रह राहु, केतु या शनि बैठा हों तो 18, 36 साल की उम्र (जातक की) में उसकी माता की सेहत खराब, उम्र पर भी बुरा असर पड़ सकताहै। यदि बुध घर नं. 3 और बृहस्पति घर नं. 9 में हो तो कारोबार में बरकत तो होगी लेकिन के बाद "उपाय के तौर पर कुंवारी लड़कियों को हरे कपड़े 40 दिन तक लगातार देने चाहिए।"

दूसरे घर में चंद्रमा के साथ बृहस्पति व शुक्र हो तो पिता का हाल मंदा रहे। ऐसा व्यक्ति दुनियावी प्रेम संबंधों के कारण बर्बाद हो सकता है। यदि चंद्रमा के साथ बुध होगा तो पिता को धन का लाभ हो सकता है।

यदि चंद्रमा के साथ शनि होगा तो शुभ ही रहेगा। काला घोड़ा रखना या कुआं लगवाना दोनों के फल को शुभ करेगा। किंतु चंद्र + शनि की युति दूसरे घर में किसी हादसे या दुर्घटना का कारण भी बन सकती है, जिससे आदमी की मौत हो या किसी हथियार से घाव हो।

यदि दूसरे घर में चंद्रमा के साथ केतु हो तो चंद्रमा ग्रसित होगा। जातक को निमोनिया, सांस की बीमारी, गठिया आदि हो सकतो हैं। उपाय के तौर पर नये जन्मे लड़के और गाय के नये जन्मे बछड़े के पांव में चांदी का छल्ला डालना चाहिए।

चंद्रमा तीसरे घर में

घर नं. 3 मंगल का पक्का घर और बुध से भी प्रभावित है। मंगल चंद्रमा का मित्र और हिम्मत का कारक है। चंद्रमा घर नं. 3 में हो, तो जातक अपने बाहुबल से धन संपत्ति इकट्ठी करेगा। आठवां घर मौत का घर है और तीसरा आठवें से आठवां यानी मौत का दरवाजा। चंद्रमा तीसरे घर में मौत का दरवाजा बंद करेगा अतः जातक दीर्घायु होगा।

तीसरे घर के चंद्रमा को उम्र का मालिक फरिश्ता कहकर पुकारा गया है यानी तीसरे घर में शुभ चंद्रमा होने पर परिवार में अचानक मौतें नहीं होतीं। तीसरे घर का चंद्रमा मन की शांति प्रदान करता है। यदि जातक गृहस्थ होगा तो धन दौलत का मालिक और यदि साधू तो निधि सिद्धि की साधना करने वाला होगा। यानी दोनों हालतों में वह दौलतमन्द ही होगा।

तीसरे घर के चंद्रमा वाले व्यक्ति के घर में स्त्रियों की पूरी इज्जत होती है। ऐसे व्यक्ति का जन्म बेशक गरीबी की हालत में हुआ हो लेकिन जातक को कुदरत की ओर से मदद मिलती है। ऐसा जातक गरीब पर तरस घर वाला होता है। चंद्रमा तीसरे में हो और यदि बुध अच्छा हो यानी दूसरे या छठे घर में हो, या फिर मिथुन या कन्या राशि में हो तो जातक गंदे प्रेम से नफरत करने वाला होता है। ऐसे जातक का रिज़क कभी बंद नहीं होता और न ही उसके घर कभी चोरी होती है। जब तक राहु–केतु मंदे हों

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

तब तक बुध पूजन यानी छोटी कन्याओं को भोजन खिलाना व लाल रंग के कपड़े देना शुभ रहता है। राहु केतु मंदे के समय अगर यह उपाय न किया जाए तो घर की नौकरानी धोखा दे सकती है और लड़कियों की तरफ से दुख होता है।

चंद्रमा तीन में हो और यदि घर नं. 9 और 11 खाली हों तो शुक्र खराब यानी पत्नी की सेहत पर बुरा असर हो। अगर कुण्डली में मंगल बद भी हो तो बुरा असर न देगा यानी भाइयों से संबंध ठीक और घर की स्त्रियां दुखिया हालत में कभी न होंगी।

चंद्रमा 3 के समय यदि बुध मंदा हो और चंद्र वर्षफल में घर नं. 1 में आ जाए या चंद्रमा 1 के समय बुध घर नं. 11 में हो तो दोनों ही शुभ फल देंगें। ऐसे जातक के लिए घर की स्त्रियों की सेवा करना उत्तम होगा।

चंद्रमा 3 के समय यदि राहु और केतु शुभ हों तो दूध, मिट्टी या मवेशियों को पालने के काम से जातक को लाभ होगा।

चंद्रमा 3 के समय यदि मंगल घर नं. 4 में हो तो व्यक्ति का दिमाग बहुत तेज काम करता है। यदि बुध 11 में हो तो चंद्र 3 वाले जातक की उम्र 80 साल से कम न होगी। यदि घर नं. 8 में मंदे ग्रह हों तो के कारण धन हानि का भय रहता है।

यदि चंद्रमा घर नं. 3 वाला व्यक्ति भाइयों के साथ धोखा करके, मंगल को नष्ट करके या अपनी लड़की की शादी के लिए ससुराल से पैसे लेकर बुध को खराब कर ले तो यह सब जातक के लिए जहर का काम करेंगे – इस बुरे असर को दूर करने के लिए घर आए मुसाफिर को दूध पिलाएं। जब जातक के घर लड़की पैदा होगी तो बुध स्थापित हो जाएगा, उस समय दूध आदि का दान करना चाहिए। छोटी कन्याओं को भोजन खिलाना चाहिए। यदि ऐसा व्यक्ति, जिसकी अपनी बेटी न हो, किसी गरीब की बेटी का कन्यादान करे तो बहुत शुभ फल मिलेगा। लड़के के जन्म के बाद सूर्य की वस्तुओं गेहूं आदि का दान शुभ फल देगा। धन दौलत, चोरी, बीमारी से रक्षा के लिए शुक्र स्थापित करें –वस्तु खरीदे तो बनावटी सूर्य (सूर्य के रंग की चीजें) का दान शुभ फल देगा।

चंद्रमा 3 के समय मंगल और बुध या अकेला मंगल घर नं. 10 में हो तो माता और भाई के लिए मंगल की चीजों का असर बुरा होगा। उनसे जुदाई या रंजिश हो सकती है। ऐसी हालत में अगर केतु घर नं. 11 में हो तो रंजिश की संभावना और भी बढ़ जाती है।

तीसरे घर में चंद्रमा के साथ बुध हो तो शनि, राहु और शुक्र का फल अशुभ होगा – शनि की वस्तुएं चाचा आदि, राहु की वस्तुएं ससुराल बिजली का सामान आदि और शुक्र की वस्तु स्त्री की हालत मंदी। यह बुरा असर और भी अधिक बढ़ जाएगा जब खना नं. 6 में बुध के दोस्त ग्रह सूर्य आदि न हों तो।

उपाय

1. पुत्र जन्म के समय गेहूं, गुड़ का दान करें।
2. पुत्री के जन्म पर बुध का साथ हो तो चावल, चांदी या दूध का दान करें।
3. यदि राहु साथ हो तो कन्यादान करें, शुभ फल देगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

4. आठवें घर में मंदे ग्रह होने पर घर आए मेहमान की सेवा दूध से करें।
5. बुध पूजा/दूर्गा पूजा से (यानी दैविक शक्ति से) मदद प्राप्त होगी।

तीसरे घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + शनि : यदि चंद्रमा के साथ तीसरे घर में शनि भी हो तो जातक के पास बहुत जायदाद होती है। किंतु इस युति के समय यदि शनि किसी भी तरह से खराब हो रहा हो और केतु भी कुण्डली में मंदा हो तो इसे चोरी का घर कहा गया है। घर में पैसे रखने की जगह खाली ही रहेगी – ऐसी हालत में लाल रंग की फिटकरी (बुध का उपाय) को जमीन में दबाने से शुभ फल मिलता है।

चंद्रमा + राहु : तीसरे घर में चंद्रमा के साथ राहु होने पर जातक की 34 साल की उम्र तक बुध और केतु दोनों का फल मंदा रहेगा। बुध की वस्तुओं यानी बहन, बुआ, बेटी और केतु की वस्तुओं यानी कान, रीढ़ की हड्डी, घुटना और लड़का पर बुरा असर पड़ेगा।

चंद्रमा चौथे घर में

चौथा घर हर प्रकार से चंद्रमा की मिल्कियत है। चंद्रमा चौथे घर में प्रबल होता है। जातक जितनी ही चंद्रमा की वस्तुएं अपनाएगा उतना ही अधिक लाभदायक रहेगा। घर आए अतिथि को पानी की जगह दूध पिलाना चाहिए। बूढ़ी माता या उसके बराबर की स्त्रियों के पांव छूकर आशीर्वाद लेना चाहिए इससे सुख के साधन बढ़ते जाएंगे। कुएं में से जितना भी पानी निकालो उसमें कमी नहीं होती। इसी प्रकार जातक जितना भी धन खर्च करेगा उतना ही आता जाएगा।

जमीनों के मुरब्बे और उनमें बहती दूध की नदियां। जातक अपने इलाके या नगर में प्रसिद्ध और माननीय व्यक्ति होगा। ऐसे व्यक्ति के पास बाग–बगीचे, दूध देने वाले पशु और खेती करने वाले बैल होंगे। स्त्री, पुत्र और माता–पिता का पूर्ण सुख होगा। मुसीबत में शेर की तरह बहते पानी का छाती तानकर मुकाबला करने वाला होगा। मामूली ताम्बे का पैसा भी सोने की कीमत देकर जाएगा।

चौथे घर के चंद्र को खालिस दूध भी कहा गया है। चंद्रमा को और भी शक्तिशाली करने के लिए मिट्टी के बर्तन में दूध भरकर घर में रखना शुभ फल देगा। चौथे चंद्रमा वाले जातक का जन्म यदि शुक्ल पक्ष में हुआ हो तो बुढ़ापा अच्छा और यदि कृष्ण पक्ष में हुआ हो तो बचपन अच्छा होता है।

चंद्रमा घर नं. 4 में हो और यदि बृहस्पति घर नं. 6 में हो तो जातक को जद्दी कारोबार उत्तम फल देंगे। कई बार पराई अमानत भी ऐसे व्यक्ति के पास रह जाती है। चौथे चंद्रमा के साथ 3 ग्रह और हों तो 4 ग्रहों के टोसे माया दौलत चार गुणा उम्दा होगी।

चंद्रमा चौथे के समय यदि शनि घर नं. 9 या 11 में हो तो जातक बहुत अच्छा इन्सान होता है। बृहस्पति व सूर्य घर नं. 5 में या बृहस्पति घर नं. 2, 9 में और सूर्य 5 में या शुक्र या बुध या मंगल घर नं. 10 में हो या अकेला चंद्रमा घर नं 4 में और शुक्र घर नं. 7 में हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत ऊंचा रुतबा पाता है। पुत्र जन्म के बाद उसकी हालत और भी उम्दा हो जाती है।

चंद्रमा चार के समय व्यक्ति यदि हलवाई का काम करे या दूध जलावे या दुध बेचे तो दौलत बर्बाद। चंद्रमा

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

चार के समय यदि राहु घर नं. 10 में हो तो व्यक्ति के सर के फटने का डर रहता है। ऐसे राहु का अशुभ असर बहन या बुआ पर भी पड़ता है।

चौथे चंद्रमा के साथ दो ग्रह और हों और उसी समय शुक्र या शनि 9 में हो तो हर ग्रह का फल मंदा हो जाएगा। यहां पर जहर से मरने की दुर्धटनाएं होने का डर रहता है।

चंद्रमा चार के समय यदि बृहस्पति घर नं. 10 में हो तो दूसरों का भला करने पर जातक नुकसान पाएगा। चंद्र 4 के साथ शुक्र हो और घर नं. 10 में शनि हो तो माता के लिए उत्तम होता है।

चंद्रमा चौथे के समय कष्ट और कारण

1. जातक दूध जलाए या खोया बनाए – आमदनी, आयु कम और मन की शांति भंग।
2. गंदा प्यार, इश्क, धन–दौलत व मान–प्रतिष्ठा के हानि।
3. मुनाफे के लिए दूध बेचे – पुत्र सुख में कमी।
4. चंद्र घर नं. 4 के समय बृहस्पति 10वें घर में – किसी भूखे को रोटी खिलाने से इल्जाम लगे और जेल तक जाना पड़े।

उपाय

1. बृहस्पति दसवें के समय – बाबा+पोता या नाना+दोहता की जोड़ी एक साथ जाकर धर्म स्थान में माथे टेकें या यज्ञ करवाएं तो दसवें घर के बृहस्पति का दोष दूर होगा।
2. दूध का व्यापार नहीं करें यानी धन के फायदे के लिए दूध नहीं बेचें।
3. दूध का खोया मत बनाएं।
4. घर में आए मेहमान की सेवा दूध और पानी से करें, अगर दूध नहीं, तो पानी जरूर पिलाएं।
5. शुभ काम आरंभ करने से पहले मिट्टी के बर्तन में दूध भरकर घर में रखें
6. माता या उसकी उम्र की बूढ़ी औरतों के पांव छूकर आशीर्वाद लेना चाहिए।
7. शुभ काम के लिए पैसा खर्च करने में कंजूसी न करें, जितना अधिक खर्चा उतना ही पैसा आए।
8. गंदी औरतों के चक्कर से बचकर रहना चाहिए।

चौथे घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + शुक्र : चौथे में चंद्र+शुक्र की युति के समय यदि सूर्य दसवें घर में हो तो पिता के लिए शुभ रहे। यदि सूर्य पांचवें में हो तो माता के लिए शुभ। यदि जातक भले काम नहीं करता तो नशेबाज होगा।

चंद्रमा + मंगल : चौथे घर में चंद्र + मंगल की युति धन–दौलत के लिए शुभ होती है बशर्ते बुध या शनि चौथे या दसवें में न हो।

चंद्रमा + बुध : चौथे घर में चंद्र+बुध की युति धन–दौलत के लिए शुभ होती है। जीवन के गुप्त भेदों को जानने की इच्छा पैदा होती है। दसवें घर से केतु या शनि की दृष्टि पड़ती हो तो दुनियावी हाल मंदा ऐसे में जातक दूसरों की मुसीबत अपने सिर लेगा तथा मन में फर्जी वहम भी हो सकता है। इसलिए कई बार जातक आत्महत्या के बारे में सोच सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्रमा + शनि : चौथे घर में चंद्र + शनि की युति वाला जातक शारीरिक तौर पर मजबूत होता है परंतु दूसरों के लिए खूनी सांप जैसा होता है। यदि इस युति पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो तो जातक की मौत पानी से होने की संभावना रहती है। इस युति के समय यदि सूर्य घर नं. 1 या 7 में हो तो जातक का धन दूसरे लोगों के काम आता है। किसी विधवा औरत का दुनियावी खर्च या फजूल की ईश्कबाजी जातक के धन को बर्बाद कर देगी। इस युति के समय पिता की मौत गोली लगने के कारण भी हो सकती है।

"चौथे घर में इस युति पर इस जहर को दूर करने के लिए सांप को दूध पिलाना सबसे उत्तम उपाय है।"

चंद्रमा + केतु : चौथे घर में चंद्रमा और केतु की युति के समय यह कुण्डली धर्मी कुण्डली कहलाएगा। अशुभ ग्रहों का असर इसमें शामिल नहीं होगा।

चंद्रमा पांचवें घर में

पांचवां घर सूर्य का है जो पुत्र सुख को दर्शाता है। चंद्रमा पांचवें के समय यह सूर्य +केतु+चंद्रमा से प्रभावित होगा। सच्चाई को न छोड़े तो राजा की तरह इन्साफ करने वाला अधिकारी हो। यदि हठधर्मी छोड़े तो लंबी आयु वाला हो और जनसेवा करता रहे तो औलाद आबाद रहे।

पांचवें घर के चंद्रमा को ममतामयी दूध की नहर भी कहा गया है। यहां चंद्रमा के समय जातक हीरे की तरह उत्तम व्यक्ति होगा जो कभी किसी के आगे झुकेगा नहीं। ऐसा जातक इन्साफपसंद रहमदिल इन्सान होता है। लड़ाई–झगड़े के फैसले के समय वह जिसका साथ देगा जीत उसी की होगी। ऐसे जातक को सरकारी नौकरी से लाभ परंतु व्यापार में फल अच्छा नहीं होता। पांचवें घर के चंद्रमा वाला जातक यदि लोगों के हित के लिए बिना कोई आस रखे काम करे तो औलाद के भाग्य के लिए बड़ा अच्छा रहेगा।

चंद्रमा पांच के साथ यदि सूर्य, मंगल और बृहस्पति घर नं. 8 या 3 में ,राहु, केतु, शनि या शुक्र, बुध घर नं. 9 व 11 में हों तो जातक के लिए शुभ होंगे। यदि बुध घर नं. 7 या 11 में होगा तो चंद्र अति उत्तम फल देगा। यदि केतु 12वें घर में या शुभ हालत में हो तो ऐसे जातक के लड़के गिनती में पांच से कम नहीं होते।

चंद्रमा पांच के समय यदि घर नं. 9 खाली हो, तो चंद्रमा का फल सोया हुआ होगा। उपाय के तौर पर घर से जाते वक्त मीठा भोजन (मीठा–मंगल) करना चाहिए और घर का सामान साथ लेकर जाना चाहिए।

चंद्रमा पांच के समय यदि दसवें या बारहवें घर में नेक ग्रह भी हों तो चंद्रमा का फल अशुभ रहेगा, क्योंकि दसवें घर का ग्रह चंद्रमा को टक्कर मारेगा जिससे चंद्रमा का फल बर्बाद हो जाएगा। ऐसे समय में शख्स अपनी मंदी/गंदी जुबान के कारण बर्बाद होगा। यदि वह किसी से गाली गलौच करे तो फल बुरा रहे। इसका फल बुआ, बहन और बेटी पर भी पड़ सकता है। चंद्रमा पांच वाले जातक को धन के भेद छिपा कर रखने चाहिए। लालच और खुदगर्जी से बचना चाहिए। चंद्र पांच के समय यदि सूर्य घर नं. 10 या 11 में हो और चंद्रमा को मित्र ग्रहों की मदद न मिलती हो तो ऐसे जातक की उम्र 12 दिन या 12 साल की होगी।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्रमा पांच वाले जातक को बुध के कामों से परहेज करना चाहिए यानी मंदी जुबान, होना या ट्रांजिस्टर, घड़ी और कंप्यूटर आदि के कारोबार मंदा फल देंगे।

चंद्रमा पांच के समय कष्ट व कारण

1. यदि जातक अपनी जुबान (बुध) मंदी या कड़वी करे तो लड़क (केतु) पर बुरा असर।
2. लालच, बेईमानी और खुदगर्जी के कारण में हानि।
3. दसवें घर का बुध पांचवें घर के चंद्रमा और पांचवें घर का चंद्रमा 12वें घर के बुध को खराब करेगा यानी बुआ, बहन, बेटी और साली पर बुरा असर पड़े।

उपाय

1. दूसरे व्यक्ति (सूर्य) की सलाह लेना (केतु) उत्तम प्रभाव देगा।
2. सच्चाई, ईमानदारी और न्याय पर चलने से लाभ होगा और जीवन में तरक्की होगी।
3. बिना फायदा सोचे जन कल्याण के लिए शुभ कार्य करना मान–प्रतिष्ठा और धन में वृद्धि करे।

पांचवें घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + शनि : पांचवें घर में चंद्रमा + शनि की युति वाला जातक दुखी ही रहेगा। धन की कमी या औलाद की कमी रहेगी। माता की नजर पर मंदा असर पड़ सकता है। चंद्र + शनि के जहर को दूर करने के लिए पैसे रखने वाले सेफ या अलमारी में मंगल + शनि की चीजों यानी बादाम (शनि की वस्तु) और छुहारे (मंगल की वस्तु) रखना। शुभ फलदायक होगा।

चंद्रमा छठे घर में

छठा घर बुध व केतु से प्रभावित है। इस घर में चंद्रमा घर नं. 2, 8, 12 और 4 में बैठे ग्रहों से प्रभावित होगा। जातक नेकी के काम करे तो छठे घर का चंद्रमा उत्तम फल देगा और बुरे काम उसकी बर्बादी का कारण बनेंगे।

आम तौर पर घर नं. 6 के चंद्रमा को सिफर कहा गया है। इस घर के चंद्रमा को धोखे की माता और खारा तथा कड़वा पानी कहा गया है। घर नं. 6 के चंद्रमा के समय यदि कोई शुभ ग्रह घर नं. 2 में इसे देखता होगा तो जातक इज्जतदार होगा और अशुभ ग्रह बदनामी का बायस बनेगा। व्यवसाय के लिए घर नं. 4 के ग्रहों को देखना जरूरी है। यदि 4 में कोई अशुभ ग्रह होगा या घर नं. 5 खाली होगा तो कारोबार के लिए अच्छा नहीं है। घर नं. 6 में चंद्रमा के समय यदि घर नं. 8 में शत्रु ग्रह हो, तो आयु के लिए अच्छे नहीं होते यदि सूर्य, मंगल या बृहस्पति घर नं. 8 में हो, तो जातक की आयु लम्बी होती है।

गृहस्थी के सुख व रात की नींद के लिए घर नं. 6 के चंद्रमा पर शुभ या अशुभ ग्रहों का प्रभाव देखा जाता है। घर नं. 2, 6, 8 और 12 में शुभ ग्रह हों तो ऐसा जातक तकलीफ से तड़पते किसी आदमी के मुंह में पानी डाल दे तो वह भी आराम पाएगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

घर नं. 6 के चंद्रमा के साथ यदि केतु हो या केतु चंद्रमा को देख रहा हो तो मुफ्त कुआं लगवाना, धर्मार्थपानी के लिए पैसे देना जातक को मृत्यु तुल्य कष्ट देगा, परंतु अगर जातक कष्ट में हो तो अस्पताल में नल या कुआं लगवाना केतु के बुरे फल को दूर करेगा। यहां पर चंद्रमा और केतु खराब असर जातक की औलाद और माता–पिता की उम्र के लिए हानिकारक साबित हो सकता है। ऐसी हालत में रात को दूध नहीं पीना चाहिए।

यदि घर नं. 2, 4, 8 और 12 में अशुभ ग्रह होंगे तो शुक्र जातक की स्त्री और केतु जातक की औलाद के लिए बुरे साबित होंगे। पिता का खानदान बर्बाद होगा तथा माता व बहिन के लिए भी जातक की 34 साल की उम्र तक अशुभ रहेगा।

चंद्रमा घर नं. 6 के समय यदि बुध घर नं. 2 या 11 में हो तो जातक मानसिक परेशानी के कारण आत्महत्या तक की सोच सकता है। किंतु इसका कारण गरीबी न होगी। यदि सूर्य घर नं. 12 में हो तो जातक की अपनी या उसकी स्त्री की एक आंख में खराबी होगी।

चंद्रमा घर नं. 6 के समय यदि मंगल चौथे या आठवें घर में हो या बुध चंद्रमा के साथ घर नं. 6 में हो तो जातक की माता के साथ संबंध न होने के बराबर होते हैं।

चंद्रमा घर नं. 6 के साथ मंगल या मंगल घर नं. 12 में हो और ऐसे में बुध घर नं. 8 में हो तो अल्पायु योग बनता है।

चंद्रमा घर नं. 6 के समय शुक्र आठवें घर में हो या किसी पापी ग्रह की दृष्टि के कारण मंदा हो रहा हो तो ससुराल के खानदान बर्बाद होगा। यहां चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए चंद्रमा के मित्र ग्रहों की वस्तुएं धर्म स्थान में देनी चाहिए। जैसे बृहस्पति की दाल, सूर्य का गेहूं और मंगल का गुड़। धर्म स्थान में माथा टेकना भी मददगार होगा। दूध सिर्फ दिन के समय पीना चाहिए। नर्स या दाई का काम करने वाली औरतों का चंद्रमा आमतौर पर 6ठे घर में होता है। छठे का चंद्र औरत की कुण्डली में प्रसव के समय कष्टकारी होता है।

उपाय

1. दही का इस्तेमाल लाभदायक होगा।
2. पुत्र सुख के लिए धर्मार्थ कुआं सिर्फ अस्पताल में लगवाएं।
3. धर्मस्थान में देशी खांड, शहद, केसर और गेहूं आदि चढ़ाना चाहिए।
4. पिता को दूध पिलाना लाभदायक होगा।
5. रात को दूध पीना हानिकारक होगा। खरगोश पालना लाभदायक है।

छठे घर में दो ग्रहों का फल

चंद्र + बुध : घर नं. 6 में चंद्रमा + बुध की युति होने पर जातक को बजाजी के कारोबार में लाभ होता है। यदि मंगल घर नं. 4 या घर नं. 8 में हो तो जातक को माता–पिता का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता। घर नं. 6 में चंद्र + बुध की युति वाला जातक लाखों का मालिक होते हुए भी मुसीबत दर मुसीबत झेलता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्र + शनि : घर नं. 6 में चंद्रमा + शनि की युति के समय दोनों का फल खराब होता है। चंद्रमा यानी माता और शनि यानी चाचा, मशीन, लकड़ी आदि पर अशुभ असर पड़ता है। किंतु व्यक्ति के खुद के बनाए मकान शुभ फल देंगे।

चंद्रमा + केतु : घर नं. 6 में चंद्रमा और केतु की युति के समय चंद्रमा का फल बहुत अशुभ हो जाएगा, जिसके कारण जातक की माता और खुद की मन की शांति पर बुरा असर पड़ेगा।

चंद्रमा सातवें घर में

सातवां घर शुक्र का पक्का घर है, परंतु यह घर बुध से भी प्रभावित रहता है, क्योंकि बुध कन्या का कारक है। सातवें घर के चंद्रमा के सामने यानी घर नं. 1 के सूर्य और मंगल से प्रभावित होने के कारण चंद्रमा 7 वें घर में सूर्य से संबंधित चीजों के लिए लाभकारी होता है। धन–दौलत आभूषण आदि में वृद्धि करता है। शायद इसी कारण सातवें घर के चंद्रमा को बच्चों की माता और लक्ष्मी का अवतार कहा गया है।

सातवें घर का चंद्रमा बुध को किसी हद तक खराब कर देता है। राहु या केतु का बुरा असर सातवें घर के चंद्रमा पर न पड़े तो ऐसा जातक जन्मजात गरीब होने के बावजूद अपने जन्म से ही अपने खानदान में मिट्टी में चांदी की चमक पैदा कर देता है। चंद्रमा घर नं. 7 वाला व्यक्ति कहीं भी रहे लेकिन उसकी मौत उसके जद्दी इलाके में ही होती है। चंद्रमा 7 वाले व्यक्ति का दिल दूध की तरह साफ होता है। वह बेशक अपनी बहन, बुआ आदि से मेल जोल कम रखे, लेकिन पराई स्त्रियों से बुरे संबध नहीं बनाता। सातवें घर का चंद्रमा जातक की रुचि गीत–संगीत और ज्योतिष की तरफ करता है। वैसे भी ऐसा जातक यदि इन चीजों में रुचि रखे तो उसका चाल चलन ठीक रहेगा वरना बुरा होगा।

चंद्रमा घर नं. 7 के समय यदि बुध शुभ हो और घर नं. 8 खाली हो तो ऐसे जातक की आंतरिक बुद्धि बहुत तेज होती है। यदि बुध उम्दा हो तो उसे धन दौलत की कमी कभी नहीं रहती। यदि शुक्र शुभ हो तो व्यक्ति के व्यवसाय व गृहस्थी पर बहुत शुभ असर पड़ता है। चंद्रमा घर नं. 7 के समय यदि व्यक्ति वृद्ध माता से झगड़ा करे तो धन–दौलत खाक हो जाएगी। यदि ऐसा व्यक्ति दूध बेचे तो व्यक्ति की औलाद और धन–दौलत में कमी आ जाएगी।

चंद्रमा घर नं सात में हो और शादी के समय जातक ससुराल से पत्नी के साथ दूध, चांदी, मोती आदि (चंद्रमा की कारक वस्तुएं) लाए या व्यक्ति के घर में दाखिल होने से पहले (शादी के पहले दिन) पत्नी के वजन के बराबर चांदी, दूध या चावल या बहते हुए दरिया का पानी (बृहस्पति का कारक) घर में स्थापित करे तो औलाद पर बहुत शुभ असर पड़ेगा। यदि जातक ऐसा न करेगा तो चंद्र और शुक्र में अगले दिन से झगड़ा शुरू हो जाएगा और जातक की माता और धन–दौलत बर्बाद होना शुरू हो जाएगा।

चंद्रमा घर नं. 7 के समय यदि बृहस्पति भी घर नं 7 में हो और दूसरे या 8वें घर में बुध अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति का बचपन शुभ नहीं गुजरता और भाई के लिए भी अशुभ होता है और बुध से संबंधित कार्य जैसे रेडियो, टेलिविजन, कंप्यूटर आदि का व्यवसाय शुभ फल नहीं देता।

चंद्रमा घर नं. 7 के समय शुक्र, राहु या केतु के साथ कहीं भी बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति के औलाद का बचपन

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

में गुजर जाने का डर रहता है। चंद्रमा घर न. 7 के समय यदि शुक्र या बुध घर नं. 1 में हो और किसी भी तरह से इनका संबंध शनि से बन रहा हो तो कुण्डली वाले की माता और पत्नी में झगड़ रहता है। ऐसा व्यक्ति नशेबाजों का सरदार होता है और इसी में वह अपनी जायदाद बर्बाद करता है।

कष्ट और कारण

1. सास–बहू का झगड़ा रहे।
2. माता की सेहत जरूरत से ज्यादा खराब।
3. दूध का व्यापार व बूढ़ी मां से झगड़ा बर्बादी का कारण बनें।
4. पुत्र सुख नष्ट हो।

उपाय

1. शादी चौबीसवें साल में न करें।
2. शादी के वक्त पत्नी चांदी, चावल या दूध आदि लेकर आए।
3. जातक बूढ़ी माता से झगड़ा न करें।
4. दूध का व्यापार न करें, दूध का खोया ना बनाएं, दूध न जलाएं।

सातवें घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + शुक्र : सातवें घर में चंद्रमा + शुक्र की युति यदि शुभ हालत में हो तो ऐसा व्यक्ति ईश्वर में विश्वास रखने वाला और दानी होता है। यदि सूर्य पहले घर में होगा तो जातक के भाग्य में उसके पिता का शुभ योगदान होगा। यदि यह युति राहु या केतु से खराब हो रही हो तो माता की नजर पर बुरा असर पड़ सकता है और ऐसे जातक का धन विवाह के दिन से कम होना शुरू हो जाएगा।

चंद्रमा + मंगल : सातवें घर में चंद्रमा + मंगल की युति जातक को धनवान तथा भरे–पूरे कबीले वाला बनाती है। इस युति वाला व्यक्ति लालची होता है। यदि इस युति पर केतु की दृष्टि हो तो व्यक्ति की मौत किसी दुर्घटना में हो सकती है। इस युति के समय यदि शनि घर नं. 1 में हो तो जातक को बुजुर्गों की दौलत से कोई लाभ प्राप्त नहीं होता।

चंद्रमा + बुध : सातवें घर में चंद्रमा + बुध की युति कोई अच्छा फल नहीं देती। ऐसा व्यक्ति लखपति होते हुए भी दुखी ही रहेगा। जातक की माता की मृत्यु जल्दी हो सकती है यदि जिन्दा रहे तो आंखें खराब होगी। जातक की खुद की मानसिक हालत ठीक नहीं होती।

चंद्रमा + शनि : सातवें घर में चंद्रमा + शनि की युति अशुभ होती है। यह युति जातक की आंखों को न ठीक होने वाली बीमारी दे सकती है। व्यक्ति की 42 साल की उम्र तक मां बाप में से एक ही जीवित रह सकता है और जो जीवित रहेगा असकी हालत भी कुछ बहुत अच्छी नहीं रहेगी।

चंद्रमा + राहु : सातवें घर में चंद्रमा + राहु की युति के समय यदि उच्च राशि का शुक्र, सूर्य के साथ घर नं. 11 में हो तो व्यक्ति की ससुराल का खानदान बर्बाद होगा। किंतु जातक की पत्नी या व्यवसाय पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ता।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्रमा आठवें घर में

आठवां घर शनि व मंगल से प्रभावित है। आठवें घर का चंद्रमा व्यक्ति को कल्पनाशील बनाता है। आठवें घर को शमशान भी कहा गया है। इसलिए शमशान में चंद्रमा बली हो या निर्बल है।

चंद्रमा घर नं. 8 में वृषभ राशि का हो और बृहस्पति से दृष्ट हो तो व्यक्ति को दीर्घायु बनाता है। 8वें घर का चंद्रमा काले धन की कमाई का प्रतीक है। 8वें घर का चंद्रमा कुएं, तालाब में डूब कर मरने का प्रतीक है। अगर राहु या केतु साथ हो तो मिर्गी का भय होगा।

चंद्रमा घर नं. 8 में वृषभ या वृश्चिक राशि का हो और बृहस्पति घर नं. 5 या 9 में हो तो धन के लिए शुभ होता है। 8वें घर के चंद्रमा को मुर्दा माता या जला हुआ दूध कहकर पुकारा गया है। यदि चंद्रमा आठ वाले व्यक्ति के घर में छत के नीचे कुआं हो तो औलाद पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

चंद्रमा घर नं. 8 के समय यदि बुध शुभ हो यानी घर नं. 6 या अपनी राशि का हो तो व्यक्ति की आयु के लिए शुभ होता है। यहां पर चंद्रमा के साथ यदि सूर्य या शुक्र शुभ होकर बैठा हो तो जातक के लिए अति शुभ असर देगा। चंद्रमा 8 के समय बुध घर नं. 2 और बृहस्पति घर नं. 9 या 12 में हों तो व्यक्ति के माता–पिता की आयु के लिए शुभ रहेंगे।

चंद्रमा घर नं. 8 में औलाद पर कोई बुरा असर नहीं डालता यानी ऐसे व्यक्ति के यहां लड़का अवश्य होता है। जातक की जद्दी जायदाद शुक्र के कारोबार यानी खेती और स्त्री उसके जीवन में योगदान नहीं देंगे। यदि उसके जद्दी मकान के पास कुआं या तालाब होगा तो यह और भी मंदे भाग्य की निशानी है।

चंद्रमा घर नं. 8 के समय वहां पर अशुभ मंगल या बुध या राहु या केतु या शनि हो तो इनका अशुभ प्रभाव व्यक्ति की मौसी, नानी और दादी आदि पर पड़ता है और व्यक्ति की ससुराल के लिए भी अशुभ होता है। औलाद के लिहाज से लड़कों के लिए अशुभ परंतु लड़कियों के लिए शुभ है।

यदि चंद्रमा 8 के समय राहु, केतु या अशुभ शनि या शुक्र और बुध ग्यारहवें घर में हों और घर नं. 2 खाली हो, या घर नं. 1 में राहु, केतु या अशुभ शनि हो तो व्यक्ति की 24 साल की उम्र तक माता की उम्र को खतरा रहे।

चंद्रमा 8 के समय घर नं. 3 या 4 में कोई तीन अशुभ ग्रह बैठे हों तो माता पिता, जद्दी जायदाद और औलाद के लिए अशुभ हों।

चंद्रमा घर नं. 8 के समय शुक्र मंदा हो और व्यक्ति चरित्रहीन औरतों से संबंध रखे तो बर्बाद होगा।

चंद्रमा घर नं. 8 के समय बुध घर नं. 4 या 12 में हो या शनि व राहु घर नं. 12 में हों तो व्यक्ति की आंखों की रोशनी के लिए अशुभ हों। प्रभाव को दूर करने के लिए नाक छेदन करवाना उत्तम उपाय है। यदि घर नं. 1 में या चंद्रमा के साथ उसके शत्रु ग्रह बैठे हों तो 34 साल की उम्र तक धन दौलत की कमी रहेगी।

चंद्रमा घर नं 8 के समय घर नं. 2 में राहु और बृहस्पति या केवल बुध हो तो व्यक्ति अपनी मूर्खता से ही बर्बाद होगा। शुक्र (पत्नी) चंद्र (माता) पर इसका असर अशुभ रहेगा। यहां पर चंद्रमा के अशुभ होने के आसार यह होंगे कि जातक के शरीर में महसूस करने की ताकत कम हो जाएगी है।

Future Point

Future Point

उपाय

1. कुआं ढककर मकान मत बनाएं।
2. बूढ़ी मता या स्त्री के पांव छूकर आशीर्वाद लें।
3. शमशान के पंप का पानी बोतल में भरकर घर में रखें।
5. पितरों का श्राद्ध करते रहना चाहिए।
6. चंद्रमा की वस्तुएं घर में कायम करें।
7. स्त्रियों के गंदे प्यार से दूर रहें।
8. झूठ और कपट से दूर रहें।
9. मंदिर में चने की दाल चढ़ाएं।
10. शनि के बुरे कामों (मांस, अंडे, शराब) से बचें।
11. अगर गुप्तांगों में पानी संबंधित रोग हों, तो श्राद्ध के वक्त दूध का दान करें।
12. अगर दूसरे घर में पाप ग्रह हों तो बोतल में दूध भरकर वीरान जगह में दबाएं।

आठवें घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + शुक्र : आठवें घर में चंद्रमा + शुक्र की युति अशुभ होती है। यह युति व्यक्ति को बुज़दिल या नपुंसक बनाती है। व्यक्ति अपने गंदे कामों की वजह से चंद्र का धन और शुक्र की गृहस्थी बर्बाद करता है। यदि इस युति पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो व्यक्ति का चरित्र भी संदेहास्पद होता है। "धन–दौलत और स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिए माता, वृद्ध औरतों व गाय की सेवा करना उत्तम फलदायक होगा।"

चंद्रमा + बुध : आठवें घर में चंद्रमा + बुध की युति होने से व्यक्ति की दुनियावी हालत अच्छी नहीं होती। जातक दूसरों की मुसीबत अपने गले डालकर बर्बाद होता है और वहमी हो जाता है। वहम के कारण व्यक्ति सुखदकुशी करने तक को तैयार हो जाता है।

चंद्रमा + शनि : आठवें घर में चंद्रमा + शनि की युति होने से व्यक्ति की मौत किसी हादसे से होने का डर रहता है। वृद्धावस्था में नेत्र की ज्योति जरूरत से ज्यादा कमजोर हो जाती है, लेकिन जातक को यह युति नेत्रहीन नहीं बनाती।

चंद्रमा + केतु : आठवें घर में चंद्रमा + केतु की युति दोनों के फल को नष्ट करती है। चंद्र यानी माता और मन की शांति और केतु यानी औलाद, कान, घुटने आदि पर बुरा प्रभाव डालती है। इस अशुभ जहर को दूर करने के लिए तीन केले 48 दिन तक लगातार धर्म स्थान पर दें बुध की साबुत मूंग पानी में बहाना भी शुभ फल देता हैं।

चंद्रमा नौवें घर में

घर नं. 9 हर प्रकार से चंद्रमा के मित्र बृहस्पति की मिल्कियत है। अतः जब चंद्रमा घर नं. 9 में होगा तो उसमें हर प्रकार से चंद्रमा और बृहस्पति के गुण मौजूद होंगे। ऐसा व्यक्ति शराफतपसंद, नेक दिल और सबका भला चाहने वाला होता है। धर्म–कर्म, तीर्थयात्रा और शुभ कामों में रुचि रखने वाला होता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

दीर्घायु होता है। यदि पांचवें घर से मित्र ग्रहों की मदद प्राप्त हो तो पुत्र सुख में वृद्धि और धर्म के कार्यों में रुचि बढ़ेगी। यदि तीसरे घर में सहायक या मित्र ग्रह होंगे तो धन – दौलत में बरकत होगी।

घर नं 9 के चंद्रमा को "घड़े बराबर मोती" और "दुनिया का रक्षक समुद्र" कहकर पुकारा गया है। इस घर में चंद्रमा होने से व्यक्ति गणित में निपुण होता है।

घर नं. 9 के चंद्रमा के समय जब घर नं. 9 में कोई मित्र ग्रह हो तो ऐसे व्यक्ति की किस्मत अति शुभ होती है। ऐसे व्यक्ति को माता–पिता का सुख लंबी उम्र तक प्राप्त होता है। जब घर नं. 9 के चंद्रमा के साथ बृहस्पति हो या दृष्टि से संबंध बनाए तो ऐसा व्यक्ति गरीब घर में जन्म लेकर भी अपनी एक विशेष पहचान स्थापित करता है।

यदि घर नं. 9 के चंद्रमा के साथ किसी प्रकार भी राहु का संबंध बने तो व्यक्ति की अक्ल धोखा खा जाती है जिस कारण वह अच्छे बुरे की पहचान नहीं कर पाता। चंद्रमा घर नं. 9 के समय यदि केतु घर नं. 2 में हो और बुध घर नं. पांच में हो तो व्यक्ति की 48 साल तक की उम्र के लिए अशुभ होते हैं।

चंद्रमा घर नं. 9 के समय यदि शुक्र घर न. 3 में हो तो माता की आखों की ज्योति के लिए बुरा रहे, खासकर जातक की 24 या 27 साल की उम्र में।

चंद्रमा घर नं. 9 के समय यदि घर नं. 4 में राहु, केतु या शनि हो, तो व्यक्ति संतान की ओर से दुःखी रहे।

उपाय

1. बुजुर्गों की सेवा करें, आशीर्वाद ले, बृहस्पति शुभ होगा।
2. मजदूर को खुश करना चाहिए, दूध पिलाएं।
3. सांप को दूध पिलाना चाहिए या मछलियों को चावल डालने चाहिएं।

नौवें घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + मंगल : नौवें घर में चंद्रमा + मंगल की युति वाले व्यक्ति की औलाद उत्तम होगी। ऐसा जातक गलत तरीकों से धन कमाकर भी भाग्यवान हो सकता है। यदि इस युति पर राहु, केतु या शनि की दृष्टि हो तो व्यक्ति की मृत्यु किसी दुर्घटना में भी हो सकती है।

चंद्रमा + शनि : नौवें घर में चंद्रमा + शनि की युति व्यक्ति के धन दौलत पर कोई अशुभ असर नहीं डालती। माता की सेहत के लिए अशुभ है। कई बार यह युति व्यक्ति के लिए चर्म रोग का कारण भी बन सकती है, शरीर पर छाले आदि हो सकते हैं। यदि इस युति के समय राशि के कारण फल अशुभ हो रहा हो या इन पर राहु या केतु की दृष्टि हो तो दूध में ज़हर जैसा असर होगा यानी चंद्रमा का फल अशुभ।

चंद्रमा + राहु : नौवें घर में चंद्रमा + राहु की युति के समय चंद्रमा का फल आधा रह जाएगा। ऐसे व्यक्ति के जद्दी घर–परिवार में रौनक होगी और सूखे कुओं में भी दोबारा पानी फिर से आ जाएगा। लेकिन चंद्रमा का फल मध्यम रह जाएगा यानी व्यक्ति की माता और उसके अपने मन की शांति के लिए अशुभ।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्रमा + केतु : नौवें घर में चंद्रमा + केतु की युति हर प्रकार से अशुभ होगी और दोनों ग्रह नीच फल के होंगे। इसका असर व्यक्ति की माता (चंद्रमा) और लड़के (केतु) पर पड़ेगा।

चंद्रमा दसवें घर में

दसवां घर हर प्रकार से शनि का है। इस घर का चंद्रमा जातक की लंबी आयु और धन में वृद्धि का कारक होता है, क्योंकि दसवां घर शनि से प्रभावित है। इस घर में बैठा चंद्रमा जातक से दवाइयों का कारोबार करवा सकता है। लेकिन दसवें चंद्रमा वाले जातक को किसी बीमार व्यक्ति को तरल दवाई नहीं देनी चाहिए। दूसरा और चौथा घर खाली हों तो चंद्र का फल उत्तम और धन की वर्षा होगी। लोहे के घोड़े यानी कार–स्कूटर का साथ होगा।

चंद्रमा घर नं. 10 के समय यदि शनि घर नं. 4 में या शुक्र घर नं. 1 में हो तो ऐसे व्यक्ति को माता–पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होगा, लेकिन ऐसे व्यक्ति को पराई औरतें, खासकर विधवा औरतें, बर्बाद करती हैं। चंद्रमा घर नं. 10 के समय यदि सूर्य , मंगल या बृहस्पति घर नं. 4 में हो तो चंद्रमा और भी शुभ फल देगा।

अगर माता के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव पड़ रहा हो तो इसका अर्थ है कि दसवें घर का चंद्रमा खराब फल दे रहा है, इसके लिए जातक को मंदिर जाना चाहिए। यदि दसवें घर का चंद्रमा राहु–केतु की दृष्टि या शनि के संबंध से अशुभ हो रहा हो और जातक डाक्टरी या हकीमी का काम करता हो तो उसके हाथ से पानी से बनी दवाई या रात्रि में किया मरीजों का ईलाज बहुत ही अशुभ प्रभाव देगा।

चंद्रमा घर नं. 10 के समय, शनि यानी मकान, राहु यानी ससुराल, दोनों का ही हाल खराब होगा। दसवें चंद्रमा के समय रात को दूध पीना जहर का असर देगा। घर में दूध देने वाले जानवर नहीं रह सकते।

चंद्रमा घर नं. 10 के समय जब घर नं. 5, 6 में कोई भी ग्रह बैठा हो तो घोड़ी घोड़ा, या दुधारू पशु खरीदने पर व्यक्ति को मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। शनि अगर घर नं. 1 या 4 में हो तो शनि की चीजों यानी मशीनरी, लकड़ी आदि का कारोबार फायदा देगा। ऐसा व्यक्ति धोखाघड़ी से लोगों का गला काटकर धन कमाता है। किंतु ऐसा व्यक्ति यदि बाजारू औरतों या प्रेमिकाओं से संबंध रखे या विधवा औरतों की सहायता करे तो नाजायज तरीके से कमाया धन बर्बाद हो जाएगा।

चंद्रमा घर नं. 10 और शनि घर नं. 3 में होते व्यक्ति चोर–डाकू और पैसे से तंग रहे। चंद्रमा घर नं. 10 और सूर्य घर नं. 7 व्यक्ति की मृत्यु दिन के समय पानी में डूबकर हो सकती है।

चंद्रमा घर नं. 10 और राहु, केतु या मंदा शनि घर नं. 4 में और शुक्र घर नं. 7 में होने पर व्यक्ति की औलादें मरती जाती हैं, माता की आयु भी कम होती है।

चंद्रमा घर नं. 10 के समय घर नं. 5 में या आठ में पापी ग्रह या बुध और शुक्र हों और व्यक्ति यदि धर्म पर विश्वास न करे तो चंद्रमा की चीजों से नुकसान होगा। चंद्रमा घर नं. 10 के साथ बुध और शनि का संबंध हो जाए तो तीनों ग्रहों का फल मंदा होगा और ऐसा व्यक्ति हर जगह मनहूस ही सिद्ध होगा।

चंद्रमा घर नं. 10 के समय अगर मंगल घर नं. 10 में और सूर्य जिस घर में हो उससे अगले घर में शनि

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

हो तो ऐसा व्यक्ति अंगहीन होगा। चंद्रमा घर नं. 10 के समय मंगल कुण्डली में कहीं भी अशुभ हो यानी मंगल–केतु या मंगल–बुध इकट्ठे हों तो ऐसा व्यक्ति चोर, धोखेबाज और तैरते को डुबोने वाला होता है।

उपाय

1. धर्म स्थान पर जाना चाहिए।
2. शराब, मांस, अंडे से परहेज।
3. बाजारू औरतों के इश्क से दूर रहें।
4. विधवा औरतों की मदद न करें।
5. रात को दूध मत पीएं।
6. दरिया का पानी या बारिश का पानी लगातार 10 साल तक घर में रखें।
7. रात होने पर अपने हाथ से किसी को दवाई मत देवें।

दसवें घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + मंगल : घर नं. 10 में चंद्र+मंगल की युति के समय यदि घर नं. 4 में चंद्र और मंगल के शत्रु ग्रह बैठे हों तो दोनों का फल नष्ट हो जाता है। यदिशत्रु ग्रह और भी मंदे हो रहे हों तो व्यक्ति की मौत किसी दुर्घटना में होती है।

चंद्रमा + बुध : घर नं. 10 के चंद्रमा के साथ यदि बुध शुभ होकर बैठा हो तो इसका फल अच्छा होता है। व्यक्ति को व्यापार में लाभ होगा। किंतु व्यक्ति की औलाद और पत्नी के संबंध में यह युति ठीक नहीं। अगर इस युति के समय घर नं. 8 में कोई अशुभ ग्रह हो तो दुर्घटनापूर्ण मौत का खतरा रहता है।

चंद्रमा + शनि : घर नं. 10 में चंद्रमा + शनि की युति होने पर व्यक्ति खर्च करके माया के कुएं भी खत्म कर देगा। नाजायज संबंध पूर्ण बर्बादी का कारण बनेंगे।

चंद्रमा ग्यारहवें घर में

ग्यारहवां घर हर प्रकार से शनि और बृहस्पति से प्रभावित होता है। इस घर में जो भी ग्रह होगा, अपने शत्रु ग्रह का कारक वस्तुओं को नाश करेगा। चंद्रमा अपने शत्रु केतु की कारक वस्तु पुत्र (पुत्र सुख) को बर्बाद करेगा। चंद्रमा इस घर में होने पर दादी पोते का झगड़ा हो या दादी पोते के लिए तड़पे। शत्रु को हानि पहुंचाने के चक्कर में शनि + केतु दोनों का मुकाबला इस घर में बैठे चंद्रमा को करना पड़ेगा जिससे चंद्रमा कमजोर होगा। यदि केतु चौथे घर में होगा तो माता का सुख नष्ट होगा। बुधवार को बहन का जन्म हो या बुध की वस्तुओं कारोबार हो, तो बुध बलवान होकर शनि का साथ देगा। रात 12 बजे के बाद प्रातः समय कन्यादान ले या करे या गुरु उपदेश सुने या सुनाए या शुक्रवार को किसी शादी में शामिल हो, तो बुध + शनि + शुक्र मिलकर चंद्रमा की हानि करें और धन दौलत को बर्बाद करें।

11वां घर शनि का पक्का घर है। इसमें बैठे चंद्रमा को शून्य कहकर पुकारा गया है इसलिए इस घर के चंद्रमा का फल खराब होता है। 11वें घर के चंद्रमा को खूनी कुआं भी कहा गया है। चंद्रमा 11 के समय शनि घर नं.10 में हो या अपनी उच्च राशि में हो तो दूध का दान देना शुभ फल देता है। घर नं. 10 के

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्रमा को बृहस्पति शुभ दृष्टि से देखे या बृहस्पति खुद शुभ जगह पर बैठा हो तो धन–दौलत के लिए शुभ रहे। यदि घर नं. 4 में सूर्य + बुध हों या बुध अकेला घर नं. 5 में हो तो मन की शांति और आमदनी के लिए शुभ है। यदि वर्षफल के अनुसार चंद्रमा घर नं. 1 या 2 में आ जाए तो उस वर्ष घर नं. 11 का चंद्रमा भी शुभ फल देगा। चंद्रमा नं. 11 वाले जातक को दादी 43 दिन तक न देखे तो शुभ रहे।

लाल किताब के अनुसार चंद्रमा घर नं. 11 के समय केतु कमजोर होता है और लालकिताब केतु को पुत्र का कारक मानती है। इसलिए व्यक्ति में पुत्र पैदा करने की शक्ति कम हो जाती है।

चंद्रमा घर नं. 11 के समय यदि शनि घर नं. 3 में हो तो जातक की माता उसके बचपन में मर सकती है या सेहत बहुत खराब रहेगी। वैसे भी घर नं. 3 में यदि अशुभ ग्रह होंगे तो व्यक्ति का बचपन मंदा रहेगा। ऐसे व्यक्ति को नीचे लिखीं पांच बातों से हमेशा परहेज करना चाहिए।

1. यदि बुधवार के दिन बहन या लड़की का जन्म हो तो व्यक्ति बुध की चीजें जैसे गाने–बजाने का सामान, घड़ी आदि खरीदे।
2. जातक की अपनी शादी या किसी खून के रिश्तेदार की शादी शुक्रवार को हो।
3. प्रातःकाल के समय शनिवार को मकान बनाना या गिराना या शनि की दूसरी चीजों का दान लेना।
4. बच्चों के खेलने के खिलौनों आदि के सामान का कारोबार करना।
5. राहु के समय यानी शाम के वक्त गुरु उपदेश सुनना या सुनाना।

चंद्रमा घर नं. 11 के समय केतु यदि खाना नं. 3 में हो तो माता की मंदी सेहत का असर कम करने के लिए 11 आदमियों की खुराक के बराबर दूध लेकर उसका खोया बनाकर बच्चों में बांटें या पानी में बहाएं।

उपाय

1. नंगे पांव लगातार 43 दिन धर्म स्थान पर जाकर सिर झुकाएं।
2. राहु घर नं. 8 में हो तो सिक्का पानी में गिराएं।
3. भैरों के मंदिर में दूध का दान करें
4. बच्चे के जन्म के बाद दादी 43 दिन बच्चे को न देखे, अगर देख ले तो हैंडपंप का पानी जिस पत्थर पर गिरता हो उसे जातक की मां दूध से धोए।
5. सोने की सलाई को गर्म करके (लाल सुर्ख) 11 बार दूध में बुझा कर पीएं। यदि किसी कारणवश दूध न पीना हो तो पानी में बुझाकर पीना चाहिए।
6. ग्यारह व्यक्तियों की खुराक के बराबर पेड़े बच्चों में बांटें (लगभग 125 पेड़े)या पानी में बहाएं, परंतु घर का कोई सदस्य नहीं खाए।
7. राहु के समय (यानी पक्की) शाम के वक्त धर्मोपदेश करना या सुनना मना।

ग्यारहवें घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + मंगल : ग्यारहवें भाव में चंद्रमा + मंगल की युति व्यक्ति को वहमी बनाती है और लालच उसमें जरूरत से ज्यादा होता है।

Future Point

चंद्रमा + बुध : घर नं. 11 में चंद्रमा + बुध की युति होने पर व्यक्ति यदि अपनी लड़की की शादी करता है तो उसका भाग्योदय अवश्य होता है।

चंद्रमा + राहु : यदि घर नं. 11 में चंद्रमा के साथ राहु हो और बृहस्पति घर नं. 2 में व बुध घर नं. 3 में हो, तो सोने को आग में तपाकर और दूध में बुझाकर इस्तेमाल करने से औलाद की पैदाइश में बरकत होती है।

चंद्रमा बारहवें घर में

बारहवां घर चंद्रमा के मित्र बृहस्पति का है, इसलिए इस घर में चंद्रमा अपने मित्र मंगल से संबंधित वस्तुओं पर उत्तम प्रभाव डालेगा और अपने शत्रु ग्रहों बुध और केतु को हानि पहुंचाएगा। चंद्रमा घर नं. 12 के समय मंगल जिस घर में होगा उससे संबंध रखने वाली वस्तुओं में उत्तम फल देगा। जैसे यदि मंगल घर नं. एक में होने से राजदरबार से लाभ, दूसरे में ससुराल पक्ष, तीसरे में बड़े भाई, ताया चाचा, चौथे में छोटे भाई, मामा और माता खानदान, पांचवें में पुत्रों, छठे में बुआ, बेटीयों, सातवें में गृहस्थ, आठवें में जातक की मृत्यु, नौवें में बड़ों के घर–बार, दसवें में मन की शांति, ग्यारहवे में इन्साफ पसन्दी और बारहवें में जातक की खुद की जिन्दगी में मिठास बढ़ाता है।

12वें घर पर राहु का भी अधिकार है, इसलिए 12वां घर चंद्रमा के मित्र बृहस्पति का होते हुए भी राहु के कारण इसमें बैठा चंद्रमा शुभ फल नहीं दे पाता। 12 वें घर के चंद्रमा को "रात के वक्त का तूफान'' कहकर पुकारा गया है। घर नं. 12 के अशुभ फल को दूर करने के लिए वर्षा का पानी घर में स्थापित करना चाहिए।

12वें घर में चंद्रमा वाले जातक को अपने मां बाप की ओर से प्राप्त धन–दौलत सब बर्बाद हो जाएंगे, मगर व्यक्ति का खुद का कमाया धन साथ देगा है। ऐसा व्यक्ति मुसीबत पर मुसीबत उठाता रहता है। एक बुरी घटना को भूलने से पहले दूसरी घटना हो जाती है जिससे व्यक्ति की रातों की नींद हराम हो जाती है। सिर की चमड़ी भी खराब हो जाती है।

चंद्रमा घर नं. 12 के समय यदि वर्षफल में चंद्रमा घर नं. 1 में आ जाए तो व्यक्ति की अपनी और उसकी ससुराल की जायदाद पर बुरा असर पड़ता है। उपाय के तौर पर धर्म स्थान में जाना चाहिए।

चंद्रमा घर नं. 12 के समय मंगल घर नं. 1 में और सूर्य घर नं. 2 में हो तो व्यक्ति आलसी होता है और उसके धन में बरकत नहीं होती।

चंद्रमा घर नं. 12 के समय सूर्य घर नं. 6 में होने पर व्यक्ति की खुद या उसकी पत्नी की आखों पर बुरा असर पड़ेगा। दोनों में से एक काना हो सकता है। चंद्रमा सास का कारक भी है इसलिए घर नं. 12 का चंद्रमा सास–बहु का झगड़ा करवाता है।

घर नं. 12 का चंद्रमा किसी न किसी रूप में हस्पताल पहुंचाए। घर नं. 12 में चंद्रमा और घर नं. 6 में केतु हो, तो जवानी में पुत्र का नुकसान। जिस घर में कुआं या पम्प बन्द कर दिया जाए उस घर में लड़कियों की शादी नहीं होती।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

उपाय

1. केतु घर नं. 6 में हो तो सोने का बिना जोड़ काला छल्ला धारण करें, बृहस्पति कायम होगा।
2. चंद्रमा घर नं. 12 के समय छत के नीचे कुआं या नल नहीं लगवाएं।
3. मटके में पानी डालकर छत पर रखें।
4. कानों में सोना डालें।
5. केतु घर नं. 4 में हो तो धर्म स्थान पर जाना चाहिए और सोना दूध में बुझाकर पीना चाहिए।

"जब कोई उपाय सुझाई न दे तो तीन तार (सोना, चांदी, ताम्बा) का छल्ला धारण करें।"

बारहवें घर में दो ग्रहों का फल

चंद्रमा + बुध : घर नं. 12 में चंद्रमा + बुध की युति अशुभ होती है। दोनों ग्रहों का असर खराब होता है। इसका अशुभ प्रभाव माता, बहन, बुआ, बेटी पर पड़ सकता है। घर नं. 12 में चंद्रमा + बुध के इकट्ठे होने पर शनि जहरीला असर देगा, यानी शनि की कारक वस्तुएं हानि पहुचाएंगी।

चंद्रमा + शनि : घर नं. 12 में चंद्रमा + शनि की युति वाला व्यक्ति एक बेगर्ज तबीयत इन्सान होता है जिसे माया आदि की परवाह नहीं होती। ऐसा व्यक्ति दूसरों का काम बिना किसी लालच के करता है। ऐसे व्यक्ति को स्त्री सुख कम मिलता है।

चंद्रमा + राहु : घर नं. 12 में चंद्रमा + राहु की युति के समय चंद्रमा की कारक वस्तुएं माता और मन की शांति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही शुक्र की कारक यानी पत्नी की सेहत पर भी बुरा असर रहता है।

चंद्रमा + केतु : घर नं. 12 में चंद्रमा + केतु की युति होने पर व्यक्ति धन तो खूब कमाएगा लेकिन बचत नहीं होगी। इस बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए बुध की वस्तुएं जैसे साबुत मूंग आदि दान करने चाहिएं।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. चौथे घर में यदि चंद्रमा के शत्रु ग्रह हों तो क्या प्रभाव होगा?
2. दूसरे घर का चंद्रमा यदि केतु से खराब हो तो क्या अशुभ प्रभाव होगा?
3. यदि कुआं या नल मकान बनाया जाय तो किस कारक की हानि होगी।
4. दसवें घर में चंद्रमा के समय किसी को तरल दवाई नहीं देनी चाहिए, क्यों ?
5. चंद्रमा घर नं. 7 तथा बुध घर एक में हो तो क्या प्रभाव होगा।
6. छठे घर का चंद्रमा औरतों के किस कारोबार को दर्शाता है।
7. चंद्रमा घर नं. 6 तथा सूर्य घर नं. 12 में होने से प्रभाव किस अंग पर पड़ेगा।
8. किन घरों में चंद्रमा का शुन्य या सिफर कह कर पुकारा है।
9. घर नं. आठ में चंद्रमा के साथ राहु या केतु हों तो क्या प्रभाव होगा।
10. बारह घरों में चंद्रमा को किन भिन्न–2 नामों से पुकारा गया है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खण्ड 4 – मंगल

मंगल का फल

1. पीछे से चलते आ रहे मंदे मंगल की निशानी यह होगी कि व्यक्ति की कुण्डली में सूर्य और शनि एक घर में होंगे या फिर दृष्टि द्वारा एक दूसरे को देख रहे होंगे। इन चीज़ों के कारण व्यक्ति मंदे मंगल से परेशान रहेगा। कुंडली में सूर्य बुध इकट्ठे होने पर मंगल नेक माना जाता है।
2. व्यक्ति के घर में फर्श के नीचे भट्ठियां होगी और उनके अंदर राख, कोयला आदि दबे होंगे। ऐसी भट्ठियों को खोलकर दबा हुआ राख कोयला आदि निकाल कर दरिया में बहा देना चाहिए और उसकी जगह मिट्टी भरकर जमीन बराबर कर लेनी चाहिए।
3. व्यक्ति के मकान के अंदर तीन, तेरह, आठ या अठारह कोने होने पर भी मंगल बुरा प्रभाव देता है।
4. व्यक्ति के मकान में तहखाना होगा और उसकी दीवार में हवा आने के लिए रोशनदान बना होगा।
5. मकान का मुख्य द्वार दक्षिण की ओर नहीं खुलना चाहिए, इसे अच्छा नहीं माना जाता और मंगल नीच प्रभाव देता हैं।
6. मकान से बाहर निकलने के रास्ते से रसोई या आग का स्थान दाएं और स्नान घर बाएं होना भी मंदे मंगल की निशानी है।
7. मकान में उपर किसी वृक्ष की छाया पड़ती हो या मकान के सहन में बेर या कीकर का वृक्ष हो, तो यह भी मंगल को नीच करेगा।
8. मकान की दीवार के साथ कटा–फटा, लुंड–मुन्ड पीपल का वृक्ष या मकान के पास पीपल का वृक्ष हो जहां घर का गंदा पानी जाता हो। अतः ऐसे पीपल के वृक्ष को निकाल कर विधिपूर्वक किसी धर्म स्थान में स्थापित करना चाहिए।
9. रिहायशी मकान में किसी भड़भूजे या हलवाई की भट्ठी या आग से संबंधित कारोबार भी मंगल के फल को नीच करते हैं।

मकान के उपरोक्त दोषों को दूर करके अपने भाइयों के साथ नेकी और प्यार से बर्ताव करें।
दूसरों की उन्नति देखकर अपने मन में जलन न पैदा होने दें, बल्कि खुश हों।
दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझ कर दूसरों का साथ दें और हौसला अफजाई करें।
अपने खान–पान, चाल–चलन को शुद्ध रखें तो पहले मन फिर कर्म शुद्ध होगा और मंगल शुभ फल देने लगेगा।

मंगल पहले घर में

जिस किसी व्यक्ति की कुण्डली के खाना नं. 1 में मंगल होगा वह अकेला भाई न होगा। मंगल खाना नं. 1 वाले व्यक्ति के मुंह में 32 दांत होंगे जो शुभ मंगल की निशानी है। ऐसा व्यक्ति किसी की नेकी और अपनी सच्चाई कभी नहीं भूलता। लोहा, लकड़ी, मशीनरी तथा मकानों से संबंधित काम शुभ फल देंगे।

मंगल खाना नं. 1 वाला व्यक्ति यदि अपने ताये, चाचे, भतीजे या पोते के साथ मिल कर कम करे तो इसका फल शुभ रहेगा। खाना नं. 1 वाला व्यक्ति यदि दूसरों के लिए बुरी बात बोले तो वह पूरी हो जाती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

खाना नं. 1 में मंगल वाला व्यक्ति यदि दूसरों से चीजें मुफ्त लेने का आदी होगा तो दर–बदर के धक्के खाएगा। खाना नं. 1 वाले व्यक्ति की बहन नहीं होती अगर हो तो रानी के समान होगी।

खाना नं. 1 में मंगल के समय बुध खाना नं. 3 में हो तथा खाना नं. 7,9 व 11 खाली हों तो ऐसे व्यक्ति के लिए फकीर या साधु का साथ अशुभ होगा। साले को साथ रखना भी अशुभ रहता है। ऐसा करने से भाई के बीमार होने का डर रहता है।

मंगल खाना नं. 1 के समय खाना नं. 7 में सूर्य, चंद्र, या बृहस्पति के साथ बुध हो या कोई और पापी ग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरों की बला अपनेसर लेकर बर्बाद हो जात है यानी आ बैल मुझे मार वाली कहावत सच करता है।

उपाय

1. किसी से मुफ्त सामान लेने का आदी न हों।
2. साली, साधु, फकीर का साथ न करें।
3. किसी को भूल से भी बुरी बात न कहें।
4. चंद्रमा की वस्तुएं घर में स्थापित करें।
5. सोना धारण करें।
6. पीपल के पेड़ की सेवा करें।

पहले खाने में दो ग्रहों का फल

मंगल + बुध : पहले खाने में मंगल + बुध की युति को "कंठी वाला तोता" या "मौत का बहाना" कहकर पुकारा गया है। इस घर में शुभ मंगल होने पर व्यक्ति मजबूत शरीर वाला और स्त्री के खानदान की सहायता करने वाला होता है। इस घर पर मंदे ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, या मंगल बद हो तो औलाद और भाइयों के लिए अशुभ प्रभाव देता है। ऐसे व्यक्ति को सारा जीवन खुशी की कमी महसूस होती रहती है।

मंगल + बुध के बुरे असर को दूर करने के लिए मिट्टी की सुराही में सौंफ या शहद डालकर और सुराही के इर्द गिर्द ढाक के पत्ते रख कर वीराने में दबाना चाहिए।

मंगल + शनि : पहले खाने में मंगल + शनि की युति के समय व्यक्ति जब नौकरी या व्यवसाय शुरू करता है तो दोनों ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। अगर मंगल नेक हो तो इस युति वाले जातक की ससुराल भी मालामाल हो जाती है। यदि इस युति पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो तो दोनों ग्रहों का फल खराब हो जाता है और इसका प्रभाव बुध के कारक रिश्तेदारों यानी बहन, बुआ, बेटी की दौलत पर पड़ता है। व्यक्ति को खून संबंधी बीमारियां हो सकती हैं। यदि इस युति वाला व्यक्ति किसी पराई स्त्री से संबंध बनाएगा तो उसकी बर्बादी निश्चित है। व्यक्ति की पत्नी की आखें काले रंग की हों तो वह जातक के लिए अशुभ और बर्बादी का कारण बने यदि भूरे रंग की हों, तो जीवन में सहयोगी होगी।

मंगल दूसरे घर में

दूसरे घर के मंगल को धर्ममूरत कहा गया है। यदि व्यक्ति अपने भाइयों के साथ अच्छा व्यवहार करे,

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

उनकी पालना करे तो धन दौलत में इतनी बर्कत होगी कि दूसरों के लिए लंगर लगाए। ऐसा व्यक्ति कौल का पक्का होता है। अपने पास कुछ न भी होते हुए दूसरों की मदद अवश्य करेगा। मंगल में बुध या केतु का असर मिले तो बिजली से संबंधित कामों से धन का नाश हो।

मंगल खाना नं. 2 के समय खाना नं. 8, 9, 10, 12 पर सूर्य–बृहस्पति–शनि या बुध का असर पड़ रहा हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी मेहनत से अमीर होता है। पैसे के संबंध में ऐसे व्यक्ति को दैविक मदद मिलती है जिससे उसके काम कभी नहीं रुकते।

यदि खाना नं. 2 के मंगल पर शत्रु ग्रहों का या बुध का असर पड़े तो इन्सान कच्चे इरादे का होता है। यदि सूर्य, चंद्र और बृहस्पति तीनों ग्रह खाना नं. 8, 9, 10 और 12 से अपना असर मंगल पर डालें और साथ में केतु का असर भी पड़े तो व्यक्ति बहुत भाग्यवान व हुकूमत करने वाला होता है। यदि मंगल अशुभ हो रहा हो तो कई बार ऐसे व्यक्ति की मौत लड़ाई झगड़े के दौरान हो जाती है।

उपाय

1. व्यक्ति छोटा भाई होकर बड़ा बनने की कोशिश मत करे।
2. लंगर और भंडारों में धन खर्च करे तो धन दौलत में वृद्धि होगी।
3. चंद्रमा की वस्तुएं कायम करने पर बजाजी के काम से लाभ हो।
4. ससुराल के खानदान में घोड़ी, कुंआ आदि स्थापित करने पर जातक को सुख और ससुराल के खानदान को लाभ हो।

खाना नं. 2 में दो ग्रहों का फल

मंगल + बुध : खाना नं. 2 में मंगल + बुध की युति के समय यदि खाना 8 खाली हो तो ऐसा व्यक्ति दौलतमंद होगा। व्यक्ति की ससुराल अमीर होगी और वहां से धन की प्राप्ति होगी।

मंगल + शनि : खाना नं. 2 में मंगल + शनि की युति वाले व्यक्ति कि जिस दिन शादी होगी उसी दिन से ससुराल का खानदान तरक्की करने लगेगा। व्यक्ति की खुद की दौलत भी बढ़ती है। ऐसी युति वाले व्यक्ति की ससुराल में कोई बेऔलाद नहीं मरता। इस युति पर कोई अशुभ असर पड़ रहा हो तथा चंद्रमा और राहु खाना नं. 12 में हों, तो रात के समय धर्म स्थान में माता, या ससुर के साथ जाना अशुभ होगा। कोई हादसा या नुकसान हो सकता है।

मंगल + केतु : खाना नं. 2 में मंगल + केतु की युति के समय दोनों ग्रहों का फल जुदा–जुदा हुआ करता है लेकिन फल उत्तम होता है। व्यक्ति की आर्थिक हालत अच्छी होती है और वह हुकूमत करने वाला होता है।

मंगल तीसरे घर में

तीसरा घर बुध और मंगल से प्रभावित होता है। तीसरे घर को फलों का जंगल कहा जाता है, क्योंकि मंगल फल और बुध जंगल है। बुध भेड़ बकरियों जैसा और मंगल शेर, किंतु ऐसा शेर जिसकी हालत भेड़ बकरियों जैसी होती है। जातक को अपनी शक्ति यादि नहीं रहती। तीसरे घर के मंगल वाले व्यक्ति

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

का मन चंचल होता है।

यदि तीसरे घर का मंगल अशुभ हो तो इसे "चिड़िया घर का शेर" कहा गया है यानी ऐसा शक्तिशाली इन्सान जो पिंजरे में बंद हो। तीसरे घर के मंगल वाले जातक की ससुराल का परिवार जातक के परिवार से दौलत के मामले में अच्छा होता है।

यदि मंगल तीसरे के समय बृहस्पति खाना नं. 9 में, सूर्य खाना नं. 7 में और चंद्र खाना नं. 11 में हो तो ऐसा मंगल राहु से खराब नहीं होता और उसका गृहस्थ जीवन सुखी रहता है। बृहस्पति खाना नं. 9 में हो, तो ससुराल का खानदान अमीर होता है।

मंगल तीन के समय शनि खाना नं. 9 में हो तो व्यक्ति का घर बहुत अच्छी हालत में होता है। यह जातक की सेहत व धन के लिए भी उत्तम है। यदि यह मंगल किसी कारण अशुभ हो रहा हो तो ऐसा व्यक्ति चालाक व धोखेबाज होता है, खाना–पीना , ऐयाशी ही जिन्दगी का मकसद समझता है। यदि व्यक्ति का सिर छोटा और पेट मोटा हो तो खून की खराबी हो सकती है।

मंगल खाना नं. 3 के समय बृहस्पति खाना नं. 11 में हो, तो ऐसा व्यक्ति रिश्तेदारों की मौत से दुखी होगा। मंगल तीन के समय बुध खाना नं. 3, 9 या 11 में हो अथवा बुध–शनि दोनों खाना नं. 7 में हो, तो जीवन में कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं।

मंगल खाना नं. 3 के समय यदि बृहस्पति, सूर्य और चंद्रमा खाना नं. 7 , 9 और 11 में हों तथा टेवे में मंगल बद हो, तो व्यक्ति 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत पर अमल करता है और मुसीबतें मोल लेता है, इसलिए दूसरे लोगों की मुसीबतें उसके अपने गले पड़ेंगी । मगर ऐसे व्यक्ति की ससुराल पक्ष के खानदान पर इसका बुरा असर नहीं पड़ता।

उपाय

1. व्यक्ति नर्म दिल रहे, अखड़ खां न बने तो सुखी रहेगा।
2. अपने भाइयों या उनके समान व्यक्तियों के साथ नर्मी का बर्ताव करें प्यार बनाये रखें तो उन्नति करेंगे।
3. मंगल बद हो तो, हाथी दांत की वस्तुएं घर में रखें।
4. चंद्रमा, सूर्य व वृहस्पति से मदद लें।

खाना नं. 3 में दो ग्रहों का फल

मंगल + बुध : मंगल और बुध की युति खाना नं. 3 में हो और जातक का बड़ा भाई साथ रहे तो अच्छा। माता का सुख लंबे समय तक रहता है। लेकिन किसी कारण दोनों ग्रह खराब हो रहें हो तो धन दौलत के नुकसान और चोरी का डर रहता है। ऐसे व्यक्ति का दिल बुरे कामों की ओर भागता है।

मंगल + शनि : मंगल + शनि की युति खाना नं 3 में होने पर ऐसे व्यक्ति के लड़की पैदा होने से या जब लड़की के मासिक धर्म शुरू होंगे उस समय दोनों ग्रहों का फल उत्तम हो जाएगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

यदि इस युति पर केतु की दृष्टि पड़ रही हो तो दोनों ग्रह मंदा फल देने लगते हैं। उसके अपने भाई–बंधु भी विरोध करने लगते हैं। पत्नी के खानदान में जहर आदि के कारण दुर्घटनाएं हो सकती हैं। धन गुम होने का भय रहता है। शनि की कारक वस्तुएं चाचा और मंगल की कारक वस्तुएं छोटा भाई भी अपनी औलाद से दुखी रहते हैं।

मंगल खाना नं. चार में

चौथा घर चंद्रमा की मिल्कियत होता है इस खाने में मंगल रूपी आग चंद्रमा के पानी को भाप बनाए यानी इन्सान को परेशान रखे। मंगल कुंडली में शुभ हो तो व्यक्ति सूझबूझ वाला होता है। इस घर का मंगल मां और उसके परिवार की स्त्रियों पर बुरा प्रभाव डालता है। चौथे खाने का मंगल स्त्री की सेहत के लिए भी हानिकारक है।

चौथे घर के मंगल को "डीक का दरख्त" कहकर पुकारा गया है। इस घर का मंगल नाभि के नजदीक की बीमारियों का कारण बनता है। चौथे घर के मंगल के साथ यदि कोई दो पापी ग्रह जैसे शनि + राहु या शनि + केतु, या ऐसे ग्रह जो आपस में शत्रु हों जैसे बुध + केतु हों तो यह मंगल अशुभ नहीं रहता।

चौथे घर के मंगल के साथ चंद्र या शुक्र हो, तो इन ग्रहों का असर खराब हो जाता है, लेकिन इसका मंगल पर कोई असर नहीं पड़ता । यदि इस घर का मंगल शुभ हो, तो ऐसे व्यक्ति का जन्म ऐसे घर में होता है, जहां एक या दो पीढ़ी पहले के बुजुर्ग शाहाना हालत में रहते होंगे। चौथे घर के मंगल वाला जातक का भाग्य मंद होता है। इस घर का मंगल मां, सास, पत्नी या नानी के लिए भी अशुभ है।

चौथे घर के मंगल का फल और भी अशुभ हो जाएगा जब घर के अंदर या घर के पास कीकर (शनि का कारक) का पेड़ होगा। इसके अलावा घर के पास भूनने वाले की भट्ठी या हलवाई की दुकान हो तो चौथे मंगल के फल को नष्ट कर देता है। चौथे घर में मंगल के समय यदि दक्षिण द्वार का घर हो तो मंगल का फल अशुभ हो जाता है।

चौथे मंगल वाले के बाहर निकलने के रास्ते में दाईं ओर रसोई तथा बाईं ओर पानी आदि का स्थान हो या मकान के ऊपर किसी पेड़ का साया पड़ता हो या घर के आगे कीकर या बेरी हो अथवा पीपल का पेड़ जिसकी टहनियां आदि कटी हों, तो मंगल अशुभ फल देगा।

यदि मंगल अकेले खाना नं. 4 में हो और बुध खाना नं. 3 और केतु खाना नं. 8 में हो या दोनों ही इन घरों में हों, तो मंगल खराब फल देता है। खानदान में औरतों का विधवा होना दर्शाता है।

मंगल चार के समय यदि शुक्र खाना नं. 4 या 8 में हो तो ऐसा व्यक्ति अपने ताया या चाचा के हाथों बर्बाद होगा। इस बुरे असर को दूर करने के लिए किसी विधवा ताई या चाची अथवा माता के पांव छू कर आशीर्वाद लेना चाहिए।

मंगल खाना नं. 4 के समय बुध खाना नं. 6 में हो तो जातक की छोटी उम्र में मां की सेहत खराब रहने का अन्देशा अथवा जातक को स्वयं को जुबान की बीमारी हो सकती है। यदि पापी ग्रह राहु–केतु अथवा मंदा शनि खाना नं. 9 में हो तो मंगल पर बुरा असर नहीं पड़ता।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

मंगल खाना नं. 4 के समय यदि बुध खाना नं.12 में हो तो जातक दुःखों का मारा और बेवकूफ होता है। यदि बृहस्पति खाना नं. 8 में हो तो जातक बुजदिल व आलसी होता है। मंगल चार के समय यदि शनि खाना नं. 1 में हो तो व्यक्ति में चोरी व दगाबाजी की आदत होती है।

उपाय

1. मृगछाला पर बैठना चाहिए।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर शमशान/वीराने में दबाना चाहिए।
3. हर रोज सुबह सबसे पहले सादे पानी से दांत साफ करने चाहिए।
4. बड़ के पेड़ को मीठा दूध डालकर गीली मिट्टी का तिलक लगाना चाहिए।
5. कपड़े की छोटी–2 बोरियां बनाकर खांड से भरकर छत पर रखें।
6. चांदी का चौकोर टुकड़ा दक्षिणी दरवाजे में तांबे की कील से ठोक दें।
7. काले, काने और बेऔलाद इन्सान से संबंध न बढ़ाएं।
8. सूर्य की चीज़ें तांबा, गुड़ और गेहूं, चंद्रमा की चीजें चांदी और दूध और बृहस्पति की चीजें सोना वगैरह घर में स्थापित करें।
9. चिड़ियों को मीठा डालना चाहिए।
10. हाथी दांत की चीज़ें अपने पास रखनी चाहिए।

खाना नं. 4 में दो ग्रहों का फल

मंगल + बुध : खाना नं. 4 में मंगल + बुध की युति वाले व्यक्ति पर कहर टूटता रहता है, यानी दूसरे लोग ऐसे जातक के लिए मुसीबतें खड़ी करते हैं।

मंगल + शनि : खाना नं. 4 में मंगल + शनि की युति वाले जातक को खेती करने वाली जमीन खरीदना अशुभ फल देता है। ऐसे व्यक्ति की मौत भी किसी दुर्घटना में हो सकती है।

मंगल + केतु : खाना नं. 4 में मंगल + केतु की युति यानी शेर और कुत्ते की लड़ाई। मंगल यानी भाई और केतु यानी बेटा दोनों पर अशुभ असर पड़ सकता है। मंगल और केतु इकट्ठे होने के समय यदि मंगल का असर अशुभ हो रहा हो तो घर में दो कुत्ते, एक सफेद एक काला, पालना शुभ रहता है।

मंगल खाना नं. 5 में

पांचवां घर सूर्य से प्रभावित होता है। औलाद का घर होने से केतु भी इस घर पर अपना प्रभाव रखता है। इस घर का मंगल उत्तम फल देता है। औलाद की पैदाइश के बाद से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। अगर पांचवें मंगल के समय खाना नं. 9 में बृहस्पति या सूर्य हो तो मंगल अति उत्तम फल देता है।

पांचवें घर के मंगल को भाई या "नीम का दरख्त" कहा गया है। टेवे में मंगल शुभ हो तो घर में नीम का पेड़ लगाना भाग्य के लिए शुभ रहे। इसके अलावा खाना नं 5 के मंगल को "रइसों का बाप–दादा" कहा गया है। ऐसा व्यक्ति यदि जद्दी मकान से हमेशा दूर रहे तो बेटे के लिए तरसे।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

मंगल पांच के समय व्यक्ति ज्यों–2 बूढ़ा होता जाएगा उसकी अमीरी बढ़ती जाएगी। पांचवें घर में मंगल होने से औलाद पर अच्छा असर पड़ता है। ऐसे जातक की रिश्तेदारी में हकीमी या डाक्टरी करने वाले लोग होते हैं।

पांचवें घर के मंगल के अशुभ होने की निशानी होगी कि बेटे (केतु) पर कोई कष्ट आए, कानों की तकलीफ, घुटनों व जोड़ों का दर्द आदि हों। ऐसा व्यक्ति यात्रा बहुत करता है बल्कि यात्रा खुद उसके गले पड़ जाती है।

मंगल खाना नं. 5 के समय यदि खाना नं. 1 में मंगल के शत्रु ग्रह हों, तो जातक की रात की नींद पूरी नहीं होती। ऐसी हालत में चंद्रमा यानी पानी सिरहाने रख कर सोना शुभ उपाय है।

खाना नं. 5 में दो ग्रहों का फल

मंगल + शनि : खाना नं. 5 में मंगल + शनि की युति होने पर यदि दोनों ग्रह शुभ हों तो लड़के के जन्म दिन से किस्मत जागे। इस युति के समय केतु खाना नं. 1 में हो, और दूसरा लड़का 42 साल की उम्र में पैदा हो तो व्यक्ति के भाग्य के संबंध में अच्छा फल दे।

मंगल खाना नं. 6 में

खाना नं. 6 बुध केतु से प्रभावित होता है। दोनों ही मंगल के शत्रु हैं और इनके दबाव के कारण मंगल कमजोर। अगर यहां मंगल नीच राशि का हो तो जातक साधु प्रवृत्ति, धर्मी, कर्मयोग और, हुनरमंद होगा। यदि कुंडली में सूर्य + मंगल+शनि इस खाने में इकट्ठे हो जाएं तो अधिक कष्टकारी, भाइयों, माता खानदान और पुत्रों पर भारी। अगर मंगल खाना 6 वाले की औलाद बदन पर सोना धारण करेगी तो जातक को नुकसान पहुंचेगा।

मंगल के अच्छे प्रभाव के लिए सूर्य + शनि की स्थिति विचार में रखनी चाहिए। यहां मंगल शुभ हो और सूर्य + बुध टेवे में इकट्ठे हों तो बहनोई के लिए लाभकारी।

खाना नं. 6 के मंगल को "तरसेवें की औलाद" भी कहा गया है। मंगल 6 वाले जातक की कलम में तलवार से ज्यादा ताकत होती है। मंगल जिस घर को देख रहा हो उस घर में कोई ग्रह न हो तो जातक के भाग्य में बहुत वृद्धि होगी। यदि टेवे में शुक्र शुभ हो या खाना नं. 7 उम्दा हो, तो जातक पोते–परपोते देख कर मरे।

खाना नं. 6 में मंगल अगर बुध + केतु से दूषित हो रहा हो या कुण्डली में सूर्य + शनि इकट्ठे हों तो ऐसे व्यक्ति के भाइयों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। लेकिन अगर जातक के भाई अमीर हो जाएंगे तो जातक बर्बाद हो जाएगा। इस दोष को दूर करने के लिए जातक को अपने भाइयों से कुछ लेते रहना चाहिए। मंगल खाना नं. 6 के समय बुध खाना नं. 8 में हो तथा मंगल को सूर्य + चंद्रमा की मदद न मिलती हो तो जातक की मां का देहांत बचपन में हो सकता है।

उपाय

Future Point

Future Point

1. जातक की औलाद शरीर पर सोना धारण करे।
2. जातक को अपने भाइयों से कुछ न कुछ लेते रहना चाहिए।
3. पुत्र के जन्म पर और जन्म दिन पर नमकीन बांटे। (मीठा अकेला नहीं बांटना चाहिए)
4. मंगल को नीच करना अशुभ फल देगा।
5. शनि का उपाय करें।
6. कन्याओं को मीठा भोजन करवाना चाहिए। (6 दिन लगातार)

खाना नं. 6 में दो ग्रहों का फल

मंगल + बुध : खाना नं. 6 में मंगल + बुध की युति यदि खराब न हो तो फल शुभ रहता है।

मंगल + शनि : मंगल + शनि की युति खाना नं. 6 के समय यदि कुतिया जातक के घर के आगे बच्चे दे या छिपकली पांवों से शरीर पर चढ़े तो जातक की किस्मत जाग उठती है। इस युति के समय यदि केतु खाना नं. 2 में हो तो व्यक्ति खुदगर्ज होगा और उसके पेट में तकलीफ रहेगी। उपाय के लिए धर्म स्थान में मीठा भोजन देना चाहिए।

मंगल + केतु : खाना नं. 6 में मंगल + केतु की युति होने पर दोनों ग्रहों का फल मंदा होता है और इसका प्रभाव बेटे और भाई दोनों पर बुरा हो सकता है।

मंगल खाना नं. 7 में

खाना नं. 7 शुक्र व बुध से प्रभावित होता है। बुध + शुक्र दोनों सूर्य के मनसूई ग्रह। सूर्य, मंगल का मित्र ग्रह, इसलिए खाना नं. सात में शुक्र + बुध इकट्ठे हों तो सूर्य व मंगल का प्रभाव देंगे।

खाना नं. 7 में मंगल के साथ बुध हो तो मंगल का प्रभाव बढ़ जाता है, क्योंकि मंगल + बुध = शनि। सूर्य और शनि आपस में शत्रु । इसलिए खाना नं. 7 का मंगल गृहस्थ जीवन में अशांति फैलाते है। इसलिए जब मंगल खाना नं. 7 में हो तो बुध की वस्तुओं यानी तोता, मैना, बड़े पत्तों वाले पेड़ (मनी प्लांट) आदि से परहेज करें।

खाना नं. 7 में मंगल के साथ बुध हो तो शनि का उपाय करें। बहन को मीठा खिलाएं। चांदी की ठोस गोली पास रखें। दीवार बना कर गिराएं, नुकसान से बचेंगे।

मंगल खाना नं. 7 के समय यदि गुरु या शुक्र में से कोई एक ग्रह खाना नं. 1 में हो तो जातक को जिस वस्तु की तीव्र इच्छा होगी वह वस्तु जीवन में एक बार अवश्य मिलेगी। लेकिन दूसरी दफा या बार–2 मिलने की गारंटी नहीं।

यदि मंगल बद होकर खाना नं. 7 में हो और बुध खाना नं. 1, 7 या 8 में या कहीं और मंदा होकर पड़ा हो, तो जातक के लिए अति अशुभ। यह अशुभ असर और भी बढ़ जाएगा यदि घर में या घर के पास खाली कुआं हो तो। ऐसे में व्यक्ति यदि कारोबार करे और बहन, बुआ आदि से मिली वस्तुएं अपने पास रखे तो बहन विधवा हो सकती है। अगर विधवा बहन साथ रहे तो व्यक्ति के नर औलाद पैदा न होगी। ऐसे व्यक्ति के शरीर में खून की खराबी भी पैदा हो सकती है। ऐसे में शनि की वस्तु जली हुई ईंट या शुक्र की वस्तु लस्सी का वाजिब ढंग से प्रयोग करना शुभ रहेगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मंगल सात के समय यदि बुध + शनि खाना नं. 6 में हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरों की बला अपने गले डाले। लेकिन ऐसा व्यक्ति अपने खानदान की परवरिश पूरी तरह से करता है। ऐसे व्यक्ति के भतीजे उसकी किस्मत में बहुत योगदान देते हैं।

उपाय

1. साली, नर्स, मौसी, चौड़े पत्तों का पेड़, तोता, मैना, बकरी आदि घर में न रखें।
2. यदि बुध लग्न में हो, तो शनि की वस्तुएं सातवें घर में कायम करें।
3. छोटी सी दीवार बनाकर गिराते रहें। हर वर्ष।
4. घर आई बहन को मीठा देकर विदा करें।
5. घर में ठोस चांदी रखें।

मंगल खाना नं. 8 में

खाना नं. 8 में मंगल की राशि वृश्चिक होने के कारण मंगल का प्रभाव पड़े। खाना नं. 8 शमशान कहलाता है, इसलिए इस पर शनि की मिल्कियत भी है। आठवें घर का मंगल भाइयों के लिए कष्टकारी है।

खाना नं. 8 के मंगल पर राहु का प्रभाव हो, तो घर में किसी को लकवा आदि हो सकता है। खाना नं. 8 का मंगल नजर भी कमजोर करता है।

खाना नं. 8 के मंगल के साथ बुध भी हो तो मामाओं के लिए नुकसानदायक होता है। खाना नं. 8 वाला व्यक्ति हमेशा चौकन्ना रहता है।

खाना नं. 8 के मंगल को मौत का फंदा कहकर पुकारा गया है। इस घर के मंगल वाला व्यक्ति शत्रुओं का मुकाबला करने की हिम्मत रखता है। खाना नं. 8 में मंगल के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो या उसमें चंद्र या बृहस्पति हो तो मंगल शुभ फल देता है।

खाना नं. 8 के मंगल के समय चंद्रमा यदि खाना नं. 1, 3, 4, 8 या 9 में हो तो ऐसे में बद मंगल भी शुभ फल देता है।

मंगल खाना नं. 8 वाले व्यक्ति को किसी विधवा स्त्री को तंग नहीं करना चाहिए, यदि तंग होकर वह श्राप देगी तो जातक पूर्ण बर्बाद हो जाएगा।

मंगल 8 के समय खाना नं. 2 में बुध और केतु हों तो ऐसे व्यक्ति का छोटा भाई कम आयु का होता हैं

खाना नं. 8 में मंगल वाले के घर में जमीनदोज़ भट्ठी या तन्दूर हो तो यह मातम का कारण बनेगा। ऐसी भट्ठी पर अगर बेटे–बेटी की शादी का सामान पकाया जाए तो वह बेऔलाद रहेंगे।

मंगल खाना नं. 8 के समय यदि बुध खाना नं. 6 में हो तो व्यक्ति को मां का सुख नसीब नहीं होता।

उपाय

1. धर्म स्थान में चावल, चने की दाल दें।
2. किसी विधवा का आशीर्वाद लें।
3. जहां रोटी पके वहीं खाएं (कभी कभी)।

Future Point

4. मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर शमशान में दबाएं।
5. हाथी दांत पास रखें।
6. घर में तंदूर न रखें।
7. तंदूर में मीठी रोटियां, बिना लोहा लगे 43 दिन कुतों को खिलाएं।
8. गर्म तवे पर पानी का छीटां देकर बाद में रोटी पकाएं।
9. अगर साथ में बुध हो तो घर के आखरि में अंधेरी कोठरी (शनि) स्थापित करें।

खाना नं. 8 में दो ग्रहों का फल

मंगल + बुध : खाना नं. 8 में मंगल व बुध की युति होने पर अगर दोनों में से कोई एक ग्रह मंदा होगा तो दोनों ही शुभ फल देने लगेंगे। यदि दोनों ग्रह अशुभ हों तो मामा का खानदान बर्बाद हो जाए।

मंगल + शनि : खाना नं. 8 में मंगल + शनि एक साथ होकर अशुभ हो रहे हों तो घर में हमेशा परेशानियां रहे। अचानक मौतें हों।

मंगल + केतु : खाना नं. 8 में मंगल + केतु की युति हर प्रकार से अशुभ है, इसका असर भाइयों और लड़के पर पड़ेगा।

मंगल खाना नं. 9 में

बृहस्पति की विरासत यानी मंगल मित्र के घर में हो, तो मंगल खाना नं. 9 में हर प्रकार से उत्तम होता है। खाना नं. 9 में मंगल वाले व्यक्ति को नास्तिक नहीं होना चाहिए। बड़ों का आशीर्वाद उत्तम फल देता है। मंगल अशुभ होने से जातक नास्तिक हो जाता है और उस पर झूठा लांछन लग सकता है।

मंगल खाना नं. 9 वाला व्यक्ति यदि भाइयों से बनाकर रखे तो हर प्रकार से शुभ रहे। भाई की औरत व्यक्ति की किस्मत की बुनियाद होगी।

खाना नं. 9 के मंगल के साथ चंद्रमा और शुक्र का दृष्टि संबंध बने तो शुभ फल देता है। ऐसे व्यक्ति को पैसे के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता। यदि कुण्डली में चंद्रमा ठीक हो तो माता की सेहत के लिए अच्छा और यदि बृहस्पति अच्छा हो तो पिता की सेहत व कारोबार के लिए उत्तम होता है। ऐसा व्यक्ति धर्म–कर्म के कामों में रुचि रखे तो शुभ हो।

यदि मंगल बद हो यानी सूर्य और शनि कुण्डली में इकट्ठे हो, या मंगल बुध की दृष्टि से खराब हो रहा हो तो शेर (मंगल) गीदड़ से मांगकर खाए और यदि बुध भी मंदा हो तो माता–पिता की हालत भी खराब रहे।

उपाय

1. नास्तिक न बनें।
2. मंदिर में दूध चावल दान करें।
3. खून संबंधी बीमारी हो, तो नीम के पेड़ को पानी दें।
4. बड़े भाई से बनाकर रखें, उसकी सलाह मानें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

5. पुराने रस्म व भगवान की पूजा न छोड़ें।

दो ग्रहों का फल

मंगल + शनि : खाना नं. 9 में मंगल + शनि की युति के समय घर में यज्ञ करने व उत्सव मनाने से व्यक्ति की किस्मत जागे। यदि इस युति पर बुध की दृष्टि पड़े तो दोनों का फल नष्ट। ऐसे में बुध की चीजों को न अपनाएं, बल्कि दान करें।

मंगल खाना नं. 10 में

पक्का खाना शनि का, यानी खाना नं. 10 का मंगल शनि से प्रभावित होता है। मंगल शनि से शत्रुता रखता है परंतु शनि नहीं। खाना नं. 10 में मंगल नीच और निर्बल नहीं होता। खाना नं. 10 के सामने खाना नं. 4 यानी मंगल के मित्र चंद्रमा का घर। चंद्रमा दूध + मंगल मीठा यानी जिंदगी बढ़िया रहती है। परंतु जब मंगल खाना नं. 10 में हो और कुंडली में शनि खराब हो तो मंगल शुभ प्रभाव नहीं दे पाता।

तीसरा घर 10वें घर को टक्कर मारता है। इसलिए यदि तीसरे में मंगल के मित्र ग्रह भी हों तो मंगल उनकी टक्कर से दुखी होकर उस ग्रह की कारक वस्तुओं को नुकसान पहुंचाएगा।

खाना नं. 10 के मंगल को "उच्च, मीठा भोजन और शहद" कह कर पुकारा गया है। जिस व्यक्ति का मंगल खाना नं. 10 में हो वह चाहे गरीब घर में जन्म ले, लेकिन उसके जन्म के बाद उसका खानदान जरूर अमीर हो जाएगा।

खाना नं. 10 वाला जातक जायदाद खुद बनाता है और अपनी मेहनत से दौलत पैदा करता है। ऐसे व्यक्ति के धर बेटा भी जरूर होगा। यदि ऐसे में चंद्रमा खाना नं. 4 में हो तो सरकारी काम शुभ फल देंगे। दौलत में भी बरकत रहेगी।

मंगल खाना नं. 10 के समय यदि शनि भी साथ बैठा हो, तो व्यक्ति शेर से ज्यादा शरारती चीते की मानिंद होता है। यदि शनि खाना नं. 3 में हो, तो जमीन–जायदाद तो बहुत हो लेकिन नगद माया की हालत साधारण रहेगी।

मंगल 10 के समय यदि खाना नं. 5 खाली हो तो मंगल का शुभ असर और भी बढ़ जाएगा। ऐसी स्थिति में मंगल अकेला खाना नं. 10 में हो और बुरी दृष्टि से भी बचा हो, तो अति शुभ होता है।

मंगल खाना नं. 10 वाला व्यक्ति यदि घर का सोना बेचे तो औलाद व परिवार के लिए अशुभ होगा। मंगल यदि अशुभ ग्रहों यानी बुध, केतु आदि के साथ हो तो अशुभ फल देने लगता है। ऐसे व्यक्ति को काला जादू, तंत्र मंत्र जैसी बेकार की विद्याएं सीखने का शौक होगा। मंगल खाना नं. 10 के समय चंद्रमा, शुक्र या पापी ग्रह खाना नं. 2 में हों तो व्यक्ति के औलाद देर से होती है।

यदि खाना नं. 10 का मंगल अशुभ हो रहा हो और सूर्य खाना नं. 4 में या चंद्रमा खाना नं. 6 में हो और व्यक्ति का साला या दोहता उसके पास रहता हो, तो व्यक्ति की एक आंख खराब हो सकती है। इसी अशुभ मंगल के समय शनि यदि खाना नं. 4 में हो, तो ऐसे व्यक्ति को नाहक बदनामी मिलती है। चोरी

Future Point

के झूठे इलजाम में जेल भी जा सकता है।

उपाय

1. हिरण की सेवा करें या हिरण पालें।
2. बेऔलाद या काने व्यक्ति की सेवा करें।
3. तीसरे घर में मित्र ग्रह हों, तो सूर्य, बृहस्पति और चंद्रमा की वस्तुएं पानी में बहाएं।
4. मंगल नीच या बद हो तो तीन तार का छल्ला धारण करें।

दो ग्रहों का फल

मंगल + शनि : खाना नं. 10 में मंगल + शनि की युति वाले व्यक्ति के घर में दिन के समय में सांप आ जाए, तो उसकी किस्मत जाग उठती है। इस सांप को मारना नहीं चाहिए।

मंगल + राहु : मंगल के साथ राहु खाना नं. 10 में हो और केतु खाना नं. 4 के समय यदि सूर्य खाना नं. 6 में हो, तो व्यक्ति को पेशाब से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं और यह औलाद के लिए अशुभ है। इस दोष को दूर करने के लिए मिट्टी के बर्तन में राहु की वस्तु जौ डालकर पानी में बहाना चाहिए।

मंगल + केतु : खाना नं. 10 में मंगल + केतु की युति के कारण 28 वर्ष की उम्र से 45 साल की उम्र तक दोनों ग्रहों का प्रभाव अशुभ रहेगा। औलाद के लिए यह समय बहुत अशुभ साबित होगा। खाना नं. 10 में मंगल + केतु के जहर को दूर करने के लिए मकान की नींव में दूध या शहद दबाना चाहिए।

मंगल खाना नं. 11 में

खाना नं. 11 हर प्रकार से शनि व बृहस्पति से प्रभावित होता है। शनि मंगल के साथ शत्रुता नहीं रखता और बृहस्पति मंगल का मित्र है। यदि बृहस्पति कुण्डली में उच्च का हो तो मंगल अति शुभ फल देता है।

तीसरा खाना मंगल + बुध (मनसूई ग्रह शनि के) से प्रभावित है, अतः तीसरे घर की दृष्टि के कारण अगर शनि कुण्डली में अच्छा हो तो मंगल उत्तम फल देगा और यदि शनि अशुभ हो तो मंगल नीच का अशुभ फल ही देगा।

खाना नं. 11 में मंगल वाले व्यक्ति के तीन दुनियावी कुत्ते या रिश्तेदार शुभ फल देते हैं। इन तीन रिश्तेदारों में बहनोई ससुराल और नाना के खानदान को ही गिना जाता है। ग्यारहवें मंगल वाले की नौकरी या व्यवसाय ऊंचे दर्जे का होगा।

खाना नं. 11 का मंगल सोने की जंजीर से बंधा और गुरु के हाथों जकड़ा हुआ चीता माना जाता है। जिस घर में बृहस्पति होगा उस घर से व्यक्ति के भाइयों (बहनों) का पता चलता है। जैसे अगर मंगल खाना नं. 11 के समय बृहस्पति खाना नं. 1 में हो तो 11–2=9 यानी 9 तक भाई हो सकते हैं। यदि बृहस्पति खाना नं. 11 में ही हो तो दो भाई होंगे और अगर बृहस्पति खाना नं. 12 में हो तो अकेला भाई ही होता है।

Future Point

मंगल खाना नं. 11 वाले व्यक्ति की कुण्डली में यदि बुध और शनि उम्दा या उत्तम हालत में हों तो 24 या 28 वर्ष तक की उम्र में व्यक्ति के पास काफी दौलत आ जाती है। यदि यह मंगल केतु या बुध की दृष्टि या युति से मंदा हो रहा हो और खाना नं. 3 खाली हो, तो पिता से प्राप्त जायदाद की कौड़ी–2 बिक जाएगी। इसका अशुभ असर मामा परिवार पर भी पड़ता है। ऐसी स्थिति में लड़का पैदा होने पर दोहता, साला और जमाई के साथ काम करे या उनको अपने पास रखे, तो इस मंगल का जहर दूर हो जाएगा।

उपाय

1. बहनोई, दोहता या साला (दुनियाबी कुत्ते) पालना करें।
2. मिट्टी के तीन खड़े कुत्ते, घर में स्थापित करें।
3. शीशे के 2 गिलासों में गुड़ भरकर, ऊपर शीशे का ढक्कन लगाकर वीराने में दबाएं। (उपाय मंगलवार 12 बजे से पहले करें, जिस औजार से गड्ढा उसे खोदें वहीं फेंक दें)
4. घर में शहद हमेशा रखें।

दो ग्रहों का फल

मंगल + बुध : खाना नं. 11 में मंगल + बुध की युति व्यक्ति के मकान, पिता की आर्थिक स्थिति के लिए अशुभ है। व्यक्ति की आखों में भी नुक्स हो सकता है। उपाय के लिए सुबह गंगाजल की कुछ बुदें पीनी चाहिए। केसर या चंदन घर में स्थापित करें।

मंगल + शनि : खाना नं. 11 में मंगल + शनि की युति हो और दोनों ग्रह अशुभ हो रहे हों तो व्यक्ति अच्छी आमदनी के बावजूद कर्जदार रहता है।

मंगल + केतु : खाना नं. 11 में मंगल + केतु की युति हो और दोनों ग्रह अच्छी हालत में न हों तो 28 से 45 साल की आयु प्रभाव बुरा रहता है। यदि मंगल अकेला अशुभ हो तो यह बुरा असर काफी हद तक खत्म हो जाता है।

मंगल खाना नं. 12 में

खाना नं. 12 बृहस्पति व राहु से प्रभावित होता। मंगल खाना नं. 12 के समय राहु कहीं भी हो, शरारत नहीं करेगा। परंतु राहु खाना नं. 12 में हो तो लाल रंग का रूमाल पास रखें।

मंगल खाना नं. 12 के समय सूर्य + शनि कहीं भी हो, तो वियोग योग बनता है। अगर घर में भाई आएं तो उन्हें फल और दूध खिलाएं। मंगल को सबसे ज्यादा ताकत चंद्रमा से मिलती है, इसलिए पैसे की तंगी आए तो मित्रों व भाइयों को दूध में शहद मिला कर पिलाएं।

यदि मंगल खाना नं 12 में हो और शनि खाना नं. 2 में और मंगल मकर राशि का हो 12वें घर में हो, तो सरकार पक्ष से हानि, बंधन योग यानी जेल यात्रा।

इस स्थिति में मंगल यदि कुंभ राशि का हो तो जेल यात्रा राजनीति संबंधी होगी – "12 दिन लगातार बताशे मंदिर में देने से योग कटता है, लेकिन यदि घर में कोई खुण्डा या जंग लगा हथियार हो तो और दूसरे घर में शत्रु ग्रह हों तो 12 दिन तक लगातार चलते पानी में गुड़ फेंके।"

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

खाना नं. 12 में मंगल वाला व्यक्ति गर्म स्वभाव का होता है। ऐसे व्यक्ति को गुरु या ब्राह्मण की सेवा करना उत्तम फल देगा। मंगल खाना नं. 12 के समय बुध खाना नं. 3, 8, 9 या 12 में हो, तो मंगल बहुत अच्छा फल नहीं दे पाता। मंगल 12 के समय व्यक्ति की 24 या 28 साल की उम्र में जब पहला लड़का पैदा हो या उसका दूसरा भाई पैदा हो, तो मंगल शुभ फल देना शुरू कर देता है।

मंगल खाना नं. 12 के वक्त केतु खाना नं. 3 में हो, या बृहस्पति मंगल के साथ हो, या बृहस्पति खाना नं. 4 में हो, या बृहस्पति, शुक्र और केतु खाना नं. 1, 3, 8 या 11 में हों, तो व्यक्ति गरीब से धनवान हो जाएगा और उसके गले पड़ी मुसीबत अपने आप टल जाएगी।

मंगल खाना नं. 12 के समय सूर्य खाना नं. 3, या 1 में हो तो मौत (अचानक) हो सकती है, परंतु बीमारी से बचाव होता रहेगा, बशर्ते खाना नं. 11 में बैठा ग्रह खाना नं. 8 में बैठे ग्रह का शत्रु न हो।

मंगल खाना नं. 12 के समय जब बुध खाना नं. 4, या 9 में हो और चंद्रमा और सूर्य का मंगल से कोई दृष्टि संबंध न हो, तो मंगल अशुभ हो और व्यक्ति की 12 साल की उम्र तक खतरनाक साबित हो और उसके बाद माता की आयु भी खत्म हो सकती है।

उपाय

1. मंगल को नीच होने से बचाएं।
2. खुद मीठी रोटी खाना और कुत्तों को मीठी रोटी शुभ फल दे।
3. मीठा खाना और मीठा डालकर जल सूर्य को चढ़ाना शुभ फल देगा।
4. लाल रंग की पगड़ी , टोपी या रूमाल इस्तेमाल करें।
5. सिरहाने सौंफ रख कर सोना लाभदायक होगा।
6. मंदिर में या पानी में बताशे देना शुभ रहेगा।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. तीसरे घर में मंगल की व्याख्या किस प्रकार की गई है?
2. चौथे घर में मंगल जिस्म के किस अंग की बीमारी देता है?
3. मीठे के साथ नकमीन बांटना, किस घर के मंगल का उपाय है?
4. सातवें घर के मंगल को मीठा हल्वा क्यों कहा गया है?
5. मंगल आठवें घर में हो तो किन चीजों से परहेज करना चाहिए?
6. नौवें घर में मंगल किन कारणों अशुभ से होता है?
7. खाना नं. 10 का मंगल शुभ है या अशुभ? कारणों सहित लिखें।
8. खाना नं. 11 में मंगल "सोने की जंजीर में जकड़ा गुरु के हाथों में,'' तशरीह करें।
9. तीन दुनयावी कुत्ते क्या हैं, विस्तारपूर्वक लिखें।
10. मंगल खाना नं. 12 में हो तथा राहु मंगल के पक्के घरों में, तो क्या नुकसान करेंगे।

Future Point

खण्ड 5 – शुक्र

शुक्र खाना नं. 1 में

शुक्र खाना नं. 1 में सूर्य व मंगल से प्रभावित होता है और दोनों शुक्र के शत्रु ग्रह हैं। सूर्य शुक्र का परम शत्रु है और मंगल सम है। इसलिए शुक्र खाना नं. 1 में सूर्य की शत्रुता से पीड़ित होगा। शुक्र खाना नं. 1 में होने से पति या पत्नी दोनों में से एक को लंबी बीमारी (तपेदिक जैसी) हो सकती है।

शुक्र खाना नं. 1 में होने से, जातक राजा या राजा के समान होता है और प्यार–मोहब्बत और वासना में लीन होता है। जात–पात में विश्वास न रखे यानी जिस पर दिल आ जाए उस पर सब कुर्बान। ऐसा व्यक्ति गर्म तबीयत होने के कारण दिन में भी विपरीत सैक्स की ओर आकर्षित होता है, परंतु दिन के समय सहवास उसके सर्वनाश का कारण बनता है।

शुक्र खाना नं. 1 के समय वर्षफल में शुक्र जब सातवें खाने में आता है, तो खून, खांसी यानी तपेदिक, दमा जैसी बीमारियां देता हैं। ऐसे में गोदान, मोती दान, जौ, सरसों और सात अनाज का दान कल्याणकारी होता है।

नौकरी या कारोबार से पहले शादी हो जाती है तथा विवाह यदि 25वें वर्ष में हो जाए, तो न स्त्री रहे न धन।

शुक्र पहले खाने में हो, तो शुक्र का फल नीच होता है, परंतु सूर्य का फल उत्तम रहता है क्योंकि इश्क को धर्म का परहेज नहीं।

शुक्र खाना नं. 1 के समय राहु खाना नं. 7 में – स्त्री की सेहत खराब, दिमागी परेशानी।
शुक्र खाना नं. 1 के समय चंद्रमा खाना नं. 7 में – सास हूं बहू का झगड़ा।
शुक्र खाना नं. 1 के समय मंगल खाना नं. 7 में – सतान, धन–संपत्ति में वृद्धि।
शुक्र खाना नं. 1 के समय सूर्य खाना नं. 7 में – स्त्री सदा के लिए बिमार। (सूर्य खाना नं. 7 में वर्षफल में हो सकता है)
शुक्र खाना नं. 1 के समय अगर मंगल खाना नं. 6, 7 या 12 में हो तो व्यक्ति की आयु लंबी होती है और वह अपने से आगे कई पीढ़ियों के बच्चे देखकर मरता है।
शुक्र खाना नं. 1 के समय यदि कुंडली में शनि उच्च का हो तथा पहला और सातवां घर खाली हो तो व्यक्ति की आमदनी बहुत होती है, लेकिन बचत नहीं होती। – उपाय के तौर पर घर में नौकर रखना शुभ रहता है।
शुक्र खाना नं. 1 के समय यदि बुध खाना नं. 3 या 6 में (वर्षफल में हो सकता है) उच्च का हो, तो व्यक्ति मुकदमा कभी नहीं हारता।
शुक्र खाना नं. 1 के समय यदि शनि मंदा हो, तो औरत खूबसूरत व ऐशो ईशरत की शौकीन होगी।
शुक्र खाना नं. 1 के समय यदि खाना नं. 1 और 7 में राहु , चंद्र, सूर्य अेर बुध हों, तो ऐसे व्यक्ति के पराई स्त्रियों से संबंध बहुत रहते हैं। इससे व्यक्ति की सेहत व कारोबार पर बुरा असर पड़ता है। उपाय के

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

तौर पर सतनाजा या चरी, ज्वार का दान शुभ फल देता है।

उपाय

1. विवाह के समय ससुराल से खालिस चांदी साथ लाएं।
2. दूसरों की सलाह मान कर काम करें।
3. घर की नौकरानी या पराई औरत से संबंध न बनाएं।
4. आदमी कन्यादान और स्त्री गोदान करें।
5. गुड़ न खाएं।
6. दिन में संभोग न करें।
7. दही से स्नान करना लाभकारी होगा।
8. काली गाय की सेवा करें।

दो ग्रहों का फल

शुक्र + बुध : खाना नं. 1 में शुक्र + बुध की युति शुभ रहती है। व्यक्ति का राजदरबार उत्तम रहता है। यदि इस युति पर मंगल, केतु आदि की दृष्टि हो तो व्यक्ति की आयु के लिए हानिकारक रहे।

शुक्र + शनि : खाना नं. 1 में शुक्र + शनि की युति के समय साथ में राहु या केतु हो और सूर्य (वर्षफल में) सातवें घर में हो, तो व्यक्ति जीवन भर दुःख भोगता रहेगा।

शुक्र + राहु : खाना नं 1 में शुक्र के साथ राहु की युति व्यक्ति की औरत के लिए खराब होती है। वह किसी मानसिक रोग से परेशान रहेगी। व्यक्ति की खुद की सेहत भी खराब हो सकती है।

शुक्र + केतु : खाना नं. 1 में शुक्र के साथ केतु हो और खाना नं. 8 में मंगल या सूर्य (वर्षफल में) हो, तो औलाद नहीं होती। यदि मंगल चौथे घर में हो तो ऐसा व्यक्ति अपने रिश्तेदारों की मौतों से दुःखी रहे।

शुक्र खाना नं. 2 में

खाना नं. 2 बृहस्पति और शुक्र से प्रभावित होता है। बृहस्पति + शुक्र का मिलन शनि बने। इसलिए दूसरे घर को शनि का पहाड़ भी कहा गया है। शनि शुक्र का आशिक। शुक्र ग्रह बृहस्पति से शत्रुता रखता है परंतु बृहस्पति शुक्र से शत्रुता का व्यवहार नहीं करता। ऐसा व्यक्ति शुक्र, यानी स्त्री की ताबेदारी में रहे तो तरक्की करे।

शेर के मुंह वाले मकान में रहना हानिकारक रहे, परंतु गौमुख मकान अति लाभकारी रहे। सोने के कारोबार में व्यक्ति हानि पाए।

शुक्र खाना नं. 2 में हर प्रकार से कायम माना जाता है। इस घर का शुक्र 60 वर्ष की आयु तक धन–संपत्ति और संतान में वृद्धि का प्रतीक है। व्यक्ति धनी होते हुए भी परिश्रमी होता है। यदि गृहस्थी न हो तो जगत गुरु होता है।

शुक्र खाना नं. 2 के समय खाना नं. 6, 8 व 12 खाली हों तो अति उत्तम। अगर शनि खाना नं. 9 में हो

Future Point

तो शुक्र चाहे कहीं भी हो, शुभ होता है। यही फल शुक्र खाना नं. 2 का है, चाहे कहीं भी हो। यदि स्त्री की कुंडली में शुक्र खाना नं. 2 में हो, तो वह बांझ होगी।

शुक्र खाना नं. 2 के समय यदि बृहस्पति भी साथ हो परंतु कुंडली में मंगल बद हो, या मंगल बुध इकट्ठे हों, तो ऐसा व्यक्ति कामयाब आशिक होता है।

शुक्र खाना नं. 2 के समय यदि सूर्य राहु या चंद्रमा–केतु कुंडली में इकट्ठे हों, तो इसका प्रभाव स्त्री की सेहत पर पड़ेगा व गृहस्थ जीवन दुःखमय रहेगा। यदि शुक्र के साथ खाना नं. 2 में शनि + राहु या केतु हों तो ऐसे व्यक्ति के औलाद नहीं होती, लेकिन यदि वह किसी को गोद ले तो उसके औलाद हो जाएगी। यदि खाना नं. 9 और 12 में मंदे ग्रह हों, तो ऐसे में व्यक्ति की दौलत की हैसियत से स्थिति चाहे जितनी भी अच्छी हो उसकी पत्नी दुखिया ही रहेगी।

शुक्र खाना नं. 2 के समय यदि बृहस्पति के पक्के घरों (2, 5, 9, 12) में राहु–केतु हों, तो ऐसे व्यक्ति के बाजारू औरतों से संबंध बर्बादी का कारण बन सकते हैं। खाना नं. 2 में यदि शुक्र अशुभ हो, तो व्यक्ति के शुक्राणुओं में कमी हो सकती है, जिससे औलाद की पैदाइश में दिक्कत आती है। ऐसे में व्यक्ति को दवाइयों में मंगल की वस्तु (मीठा) डालकर खाने से जल्दी लाभ होता है।

उपाय

1. स्त्री की सलाह लेकर काम करें तो लाभकारी रहे।
2. सोने का कारोबार तबाही का कारण बने।
3. मंगल की वस्तुएं (सौंफ, शहद व चीनी आदि) चलते पानी में बहाएं।
4. स्त्री की कुण्डली में मंदे शुक्र के समय 2 किलो आलू हल्दी से पीले करके गाय को खिलाएं और 200 ग्राम गाय के दूध से बना पीला घी मंदिर में दें।
5. घर में घी को ज्योत में न जलाएं।

खाना नं. 2 में दो ग्रहों का फल

शुक्र + मंगल : शुक्र + मंगल की युति खाना नं. 2 में होने से व्यक्ति को पत्नी के खानदान से जायदाद और दौलत प्राप्त होने के आसार बनते हैं। व्यक्ति का ससुराल खानदान अमीर होता है और व्यक्ति को उनकी ओर से लाभ प्राप्त होता है।

शुक्र + बुध : खाना नं. 2 में शुक्र + बुध की युति वाला व्यक्ति यदि अपना चाल–चलन और चरित्र ठीक रखे तो दोनों ग्रहों का फल शुभ रहता है।

शुक्र खाना नं. 3 में

खाना नं. 3 मंगल व बुध से प्रभावित होता है, इसलिए तीसरे खाने का शुक्र मंगल और बुध के प्रभाव में होता है। शुक्र तीसरे खाने वाले व्यक्ति के यहां चोरी नहीं होती। ऐसे व्यक्ति का स्त्रियों से संपर्क शीघ्र बन जाता है। खाना नं. 3 के शुक्र को सती या सत्यवान कहकर भी पुकारा गया है। अगर व्यक्ति अपनी औरत की इज्जत करे और उसकी सलाह माने तो शुभ फल की बुनियाद खुद औरत बन जाती है। वैसे

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शुक्र खाना नं. 3 वाला व्यक्ति पराई औरत से और औरत पराए मर्द से संबंध रखे तब भी शुक्र का बुरा फल नहीं मिलता। शुक्र खाना नं. 3 के समय बुध, शनि, केतु या मंगल दूसरे या सातवें घर में हों, तो ऐसे व्यक्ति को कम मेहनत से अच्छी आमदनी होती है।

शुक्र खाना नं. 3 के समय यदि कुण्डली में बुध नेक हो, तो 20 साल की उम्र तक तीर्थ यात्रा का उत्तम फल मिलता है। यदि खाना नं. 8 में मंदे ग्रह हों और चंद्रमा अच्छी हालत में हो तो शुक्र शुभ फल देगा।

शुक्र खाना नं. 3 के समय अगर बृहस्पति खाना नं. 9 में हो तो शुक्र जहरीला फल देता है, जिसका असर व्यक्ति की खुद की सेहत व खानदान के अन्य सदस्यों की सेहत पर भी पड़ता है।

शुक्र खाना नं. 3 के समय यदि बुध खाना नं. 11 में हो, तो शुक्र बर्बाद होगा। व्यक्ति को विरासत में चाहे कितनी भी दौलत, महल व गाड़ियां आदि मिलें वह 34 साल की उम्र तक सुख की नींद न सो पाएगा। लेकिन यदि बुध और मंगल दोनों ही मंदे हों, तो इस बुरे शुक्र का असर सिर्फ औरत पर ही होगा, यानी टेवे वाले का स्त्री के साथ बर्ताव ठीक नहीं होगा।

खाना नं. 3 में दो ग्रहों का फल

शुक्र + मंगल : खाना नं. 3 में शुक्र के साथ मंगल हो, तो ऐसे व्यक्ति का धन अपने भाई–बहनों को तारेगा। यदि मंगल बद हो रहा हो, तो व्यक्ति पराई औरतों से संबंध रखने वाला अय्याश तबीयत का होगा।

शुक्र + बुध : खाना नं. 3 में शुक्र बुध की युति शुभ फल देती है। कई बार व्यक्ति को सौतेली मां का सुख भी प्राप्त होता है। यदि इस युति पर मंगल की दृष्टि हो, तो व्यक्ति की ससुराल के खानदान के लोग यदि कारोबार में भागीदार होंगे तो तबाही का कारण बनेंगे।

शुक्र + शनि : खाना नं. 3 में शुक्र के साथ यदि शनि हो, तो खुद व्यक्ति व उसकी पत्नी दोनों ही आरामपसंद होंगे। इस घर में इस युति के समय व्यक्ति की कमाई का फायदा दूसरों को ही मिलता है। यदि इस युति पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो व्यक्ति का चाचा पराई औरतों से संबंध रखे और उसकी (चाचे की) औरत भी बुरे चरित्र की होगी।

शुक्र + राहु : तीसरे घर में शुक्र के साथ राहु हो, तो व्यक्ति की 34 साल की उम्र तक बहन, बुआ, बेटी, लड़के, घुटने पांव तथा केतु की कारक चीजों के लिए अशुभ रहेगा।

शुक्र खाना नं. 4 में

खाना नं. 4 हर प्रकार से चंद्रमा से प्रभावित। शुक्र चंद्रमा के घर में और दोनों ही स्त्री ग्रह। शुक्र खाना नं. 4 वाले व्यक्तियों की दो शादियां हो सकती हैं। शुक्र खाना नं. 4 के समय बृहस्पति खाना नं. 10 में हो, तो व्यक्ति नास्तिक न बने, वरना नुकसान होगा।

शुक्र खाना नं. 4 के समय अगर स्त्री से विवाद रहे, तो अपनी ही स्त्री से दोबारा शादी करे, उसे दो नामों से पुकारे।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अगर शुक्र खाना नं. 4 वाला व्यक्ति कुएं को छत कर मकान बनाए, तो चंद्रमा और शुक्र टकरा जाएंगे। व्यक्ति पुत्र सुख से वंचित रहेगा।

चौथे घर के शुक्र को "खुशकी का सफर" भी कहा गया है। ऐसे व्यक्ति को यात्राएं बहुत करनी पड़ती हैं, जो जातक के लिए शुभ रहती हैं। चौथे घर का शुक्र मामा परिवार के लिए अशुभ रहता है।

शुक्र खाना नं. 4 के समय जब खाना नं. 2 और 7 खाली हों और शुक्र किसी दूसरे ग्रह का साथी ग्रह न बन रहा हो, तो ऐसे व्यक्ति की एक ही समय में दो औरतें होती हैं। लेकिन औलाद न होने की परेशानी बनी रहे।

शुक्र खाना नं. 4 के समय व्यक्ति यदि गंदे प्रेम संबंध रखेगा, तो बर्बाद होगा। ऐसे आदमी को चाहिए कि दूसरों की ऐब छुपा कर रखे और उनकी खूबियों का बखान करे। यदि मकान की छत टूटी–फूटी रखेगा तो स्त्री की सेहत खराब रहेगी।

शुक्र खाना 4 के साथ यदि शनि होगा, तो ऐसा व्यक्ति नशाखोरी के कारण से बर्बाद होगा। बहन, बुआ, बेटी से संबंध बनाकर रखने चाहिए। रेड़ियों, घडियों या बिजली का सामान बेचना बर्बादी का कारण बने।

शुक्र खाना नं. 4 के समय यदि बृहस्पति खाना नं. 1 में हो, तो व्यक्ति की माता और स्त्री दोनों पर बुरा असर पड़े। मामा का खानदान भी बर्बाद होगा।

उपाय

1 बारिश का पानी चांदी की डिब्बी में भरकर घर में रखें।
2. कुएं पर छत डालकर मकान न बनवाएं।
3. सास – बहू का झगड़ा हो, तो कच्चे दूध में सफेद मक्खन (बिना नमक) डाल कर धर्म स्थान में दें। (43 दिन लगातार)
4. जब शुक्र और चंद्र दोनों मंदे हो रहे हों, तो आडू की गुठली में सुरमा भरकर घास वाली जगह घर से बाहर दबाएं।

दो ग्रहों का फल

शुक्र + मंगल : शुक्र + मंगल की युति खाना नं. 4 में मामा खानदान के लिए अशुभ रहे। कुंडली वाले की साली का हाल भी मंदा ही रहे।

शुक्र + बुध : खाना नं. 4 में शुक्र के साथ बुध की युति होने पर व्यापार के काम में दोनों शुभ फल देंगे। शुक्र + बुध की इस घर में युति के समय मामा से भी सहायता मिलने की आशा रहती है। गाने बजाने के समान का काम और खेतीबाड़ी आदि मामा खानदान व ससुराल खानदान की बर्बादी का कारण बनें। ऐसे काम करने से व्यक्ति का चरित्र खुद ब खुद खराब होना शुरू हो जाएगा। अगर ऐसा व्यक्ति मामा या मौसी के साथ कारोबार करेगा, तो यह उसकी तबाही का बायस बनेगा।

शुक्र + शनि : खाना नं. 4 में शुक्र के साथ शनि हो तो दोनों ग्रहों का अपना–2 प्रभाव रहता है। ऐसे

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

में यदि सूर्य खाना नं. 10 में हो, तो तांबे के पैसे पानी में बहाना शुभ फल देता है।

इस युति के समय यदि सूर्य खाना नं. 10 में हो, तो व्यक्ति का चाचा अय्याश तबीयत होता है, उसका संबंध पराई औरतों से बना रहता है।

शुक्र खाना नं. 5

खाना नं. 5 सूर्य का पक्का घर। शुक्र इस खाने में सूर्य की गर्मी से तपता रहे, यानी स्त्री की सेहत बर्बाद हो। शुक्र पांचवें के समय रिजक कभी बंद नहीं होता। अगर खाना नं. 9 में बृहस्पति हो तो पुत्र प्राप्ति अवश्य होगी। गाय और माता की सेवा धन में बर्कत का कारण बने।

शुक्र खाना नं. 5 में हो, तो व्यक्ति को विद्वान व शत्रुनाशक बनाता है। जातक यदि आशिक मिजाज, व अधिक काम वासना वाला होगा तो भाग्य कटी पतंग की तरह हो जाएगा। यदि पराई स्त्रियों से बचे तो भवसागर से पार उतर जाने वाला होगा। जब तक स्त्री जीवित रहेगी, काम काज में रुकावट नहीं आएगी।

शुक्र खाना नं. 5 के समय यदि शुक्र के मित्र ग्रह – बुध, शनि, केतु आदि शुभ हों, तो व्यक्ति साधु तबीयत का होगा। यह स्थिति धन के लिए शुभ रहेगी।

शुक्र खाना नं. 5 के समय खाना नं. 1 में बुध, राहु या केतु हो तथा शुक्र मंदा हो, तो खाना नं.1 व 9 के कारक ग्रह के रिश्तेदार शुक्र की बदौलत फले–फूलेंगे। जैसे बृहस्पति खाना नं. 1 या 9 में हो, तो पिता के लिए और, चंद्रमा हो तो माता के लिए शुभ होता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के रिश्तेदारों पर असर पड़ेगा। (नर ग्रह)

शुक्र खाना नं. 5 के समय यदि शुक्र के शत्रु ग्रह सूर्य, चंद्रमा, राहु खाना नं. 1 और 7 में हों, तो व्यक्ति के खाना नं. 12 पर असर पड़ेगा, यानी खर्च बढ़ जाएगा। शुक्र 5 की दृष्टि में यदि कोई ग्रह न हो तो औरत पर अशुभ असर पड़ेगा। ऐसा व्यक्ति ज्ञान का दिखावा करने वाला और तबीयत से आशिक होता है।

शुक्र खाना नं. 5 वाला व्यक्ति यदि प्रेम विवाह करे, तो उसकी औरत उसके किसी काम नहीं आती। यदि शुक्र खाना नं. 5 के समय चंद्रमा खराब हो, तो इसका असर व्यक्ति की औरत पर पड़ेगा। चांदी की डब्बी में पानी डाल कर घर में रखें। यदि मंदे शुक्र का असर व्यक्ति की सेहत पर पड़ रहा हो, तो गुप्तांगों को दूध से धोना चाहिए।

उपाय

1. गंदे प्रेम चक्करों से बचें।
2. गाय की सेवा करें। वजन के बराबर हरा चारा डालें।
3. चांदी के बर्तन में पानी भरकर घर में रखें।
4. गुप्तांगों को दूध से साफ करें।

खाना नं. 5 में दो ग्रहों का फल

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शुक्र + बुध : खाना नं. 5 में शुक्र + बुध की युति कोई बुरा असर नहीं डालती। इस युति वाले व्यक्ति को घर की जमीन में भट्ठी आदि नहीं बनवानी चाहिए, वरना दोनों ग्रहों का फल अशुभ हो जाएगा।

शुक्र खाना नं. 6 में

खाना नं. 6 बुध और केतु द्वारा प्रभावित होता है। शुक्र दोनों का मित्र है, इसलिए दोनों को मिलाकर रखे। ऐसे व्यक्ति की औरत बन संवर कर रहे, तो घर में लक्ष्मी का वास होता है। खाना नं. 6 में शुक्र वाले व्यक्ति की औरत को बाल नहीं काटने चाहिए, बल्कि बाल बढ़ाकर सोने का क्लिप लगाना चाहिए।

खाना नं. 6 के शुक्र का अगर किसी नर ग्रह से संबंध हो तो व्यक्ति खूब धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी वासना पूर्ति के लिए स्त्रियों की प्रशंसा के पुल बांध देता है। सफेद गाय की सेवा मंदा फल देती है, विद्या में रुकावट, पिता सुख से वंचित, कामोत्तेजना में कमी और विवाह में विलंब होता है। ऐसे व्यक्ति के यहां लड़कों की अपेक्षा लड़कियां अधिक पैदा होती हैं। शुक्र खाना नं. 6 वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, विशेषकर जुबान और आंख की शक्ति प्रबल होती है।

खाना नं. 6 में शुक्र हो तो "लल्लू करे कब्बलियां रब्ब सिद्धियां पावे" यानी इस खाने के शुक्र वाला व्यक्ति कोई गलत काम भी कर बैठे, तो परमात्मा की कृपा से है। ऐसे व्यक्ति की दुनियावी हालत अच्छी और बुढ़ापा सुखपूर्ण होता है। (चंद्र का उपाय करें)

खाना नं. 6 में शुक्र वाले व्यक्ति की स्त्री को नंगे पांव जमीन पर नहीं चलना चाहिए, यानी शुक्र और शनि को इक्कट्ठा नहीं करना चाहिए। ऐसा करना अति अशुभ होता है और आर्थिक नुकसान व चोरी का भय रहता है।

यदि शुक्र खाना नं. 6 के समय सूर्य या बृहस्पति खाना नं. 2 या 6 में हो तथा खाना नं. 12 खाली हो, तो ऐसा व्यक्ति खूब दौलतमंद होगा। लेकिन ऐसे व्यक्ति की औलाद नालायक होती है। शुक्र खाना नं. 6 वाले मर्द को ऐसी स्त्री से शादी करनी चाहिए, जिसका बड़ा भाई न हो और शुक्र खाना नं. 6 वाली स्त्री को ऐसे मर्द से शादी करनी चाहिए, जिसकी बड़ी बहन न हो।

शुक्र खाना नं. 6 के समय यदि खाना नं. 6 या 7 में कोई साथी ग्रह हो, सिवाय मंगल और बृहस्पति के, तो शुक्र और साथी ग्रह दोनों ही बर्बाद होंगे। (घर में ठोस चांदी रखें)।

शुक्र खाना नं. 6 के समय यदि सूर्य खाना नं. 6 में हो, या फिर खाना नं. 2 खाली हो, तो औलाद के लिए अशुभ रहे। ऐसे व्यक्ति का पिता बचपन में गुजर सकता है।

शुक्र खाना नं. 6 के समय यदि केतु शुक्र के साथ हो और बृहस्पति खाना नं. 11 में हो, तो सभी ग्रहों का फल मंदा होगा।

शुक्र खाना नं. 6 के समय अगर राहु खाना नं. 2 में हो, तो पहली औरत मर भी सकती है। व्यक्ति की 42 साल से 47 साल की उम्र के बीच शत्रुओं की ओर से कष्ट मिले।

शुक्र खाना नं. 6 के समय यदि बुध मंदा हो रहा हो (सिवाय खाना नं. 5 के), तो व्यक्ति की सेहत खराब

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

रहे। मगर ऐसी हालत में अगर खाना नं. 1 में अच्छा ग्रह हो, तो वह शुक्र की मदद करेगा।

शुक्र खाना नं. 6 के समय बुध खाना नं. 8 में हो, तो लड़का पैदा होने की संभावना कम हो जाती है। धन दौलत भी दिन ब दिन कम होती जाएगी।

शुक्र खाना नं. 6 के समय यदि केतु भी खाना नं. 6 में हो, तो व्यक्ति हरदम दुखी रहे। ऐसी हालत में अगर पराई औरतों से संबंध स्थापित करे, तो बर्बादी का बहाना बने। ऐसे व्यक्ति (औरत या मर्द) के यहां अगर लड़का पैदा न होता हो, तो गुप्तांग को सौंफ (मंगल) के पानी से धोना चाहिए, जिससे शुक्र शुभ फल देगा।

शुक्र खाना नं. 6 में बैठा किसी ग्रह की दृष्टि से खाली हो, तो फल मंदा रहे। यदि बृहस्पति खाना नं. 7 से 12 तक किसी भी खाने में हो, या सूर्य खाना नं. 6 से 12 तक के घरों में हो तो स्त्री की सेहत खराब हो, और दौलत के लिए असर बुरा रहे।

उपाय

1. व्यक्ति की औरत नंगे पांव जमीन पर न चले।
2. धर्म स्थान में दूध, चावल व देसी खांड दान करें।
3. कन्याओं को 6 दिन लगातार दूध में मिसरी डालकर दें।
4. सफेद चंदन का तिलक 6 दिन लगातार पत्थर पर लगाएं फिर, चंदन को पानी में बहा दें।
5. शादी के समय सोने के दो (छोटे) टुकड़े ससुराल से लें, एक पास रखें और एक पानी में बहा दें।
6. व्यक्ति की औरत बाल न काटें।

खाना नं. 6 में दो ग्रहों का फल

शुक्र + बुध : खाना नं. 6 में सूर्य + बुध की युति हो और सूर्य का इनसे संबंध बना रहा हो तो स्त्रीयों से झगड़े होंगे यह स्थिति औलाद के लिए अशुभ रहेगी।

शुक्र + केतु : जब शुक्र + केतु की युति छठे खाने में हो, तो दोनों का फल मंदा हो जाता है और इसका प्रभाव व्यक्ति की पत्नी और लड़के के लिए बुरा होता है।

शुक्र खाना नं. 7 में

खाना नं. 7 शादी व गृहस्थ जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। शुक्र शादी का कारक ग्रह है और खाना नं. 7 शुक्र का अपना घर है। पहले और सातवें घर का संबंध हो, तो गृहस्थ जीवन उत्तम। पहले घर में शुक्र के मित्र ग्रह हों, तो पत्नी नर्मदिल होती है और गृहस्थ जीवन में हर प्रकार की उन्नति होती है।

शुक्र खाना नं. 7 के समय खाना नं. 1 में शुक्र के शुभ ग्रह हों, तो पत्नी और गृहस्थ जीवन दोनों ही मंदे। ऐसे में ससुराल खानदान के किसी व्यक्ति के साथ साझे में व्यापार नहीं करना चाहिए। पत्नी को नीले कपड़ों से परहेज करना चाहिए। जातक के लिए पराई स्त्री से संबंध तबाही का कारण बने। शुक्र खाना नं. 7 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 1 में हो, तो सास–बहू में मां–बेटी जैसा प्रेम हो,, परंतु संतान उत्पत्ति

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

में गड़बड़ होती है। सफेद गाय की सेवा अशुभ फल देगी। बिल्ली की जेर घर में रखना अशुभ रहे। यदि इसे चमड़े के बटुए में रखें, तो धन संपत्ति का नाश हो।

खाना नं. 7 में शुक्र अकेला अच्छा फल देता है। यदि किसी ग्रह के साथ होगा, तो वैसा ही फल देगा। शुक्र खाना नं. 7 वाले व्यक्ति की कमाई अपने जद्दी मकान से दूर, या सफर यात्राओं द्वारा होती है। इसी कारण व्यक्ति को घर का सुख कम नसीब होता है। लेकिन यदि बृहस्पति कुंडली में सोया हो, तो ऐसे व्यक्ति की मृत्यु परदेश में न होकर घर में ही होती है।

शुक्र खाना नं. 7 वाले की स्त्री मीठे स्वभाव की होती है, उसकी शक्ल भी खूबसूरत होती है।

शुक्र खाना नं. 7 के समय यदि बुध खाना नं. 2, 4 या 6 में शुभ होकर पड़ा हो, तो व्यक्ति की शादी के बाद से शुक्र–बुध दोनों ग्रह उत्तम फल देने लगते हैं। यदि शुक्र अकेला खाना नं. 7 में और चंद्रमा अकेला खाना नं. 4 में हो, तो ऐसा व्यक्ति काम वासना पर काबू रखने वाला और पराई स्त्रियों से दूर रहने वाला होता है।

कुण्डली में शुक्र खाना नं. 7 के समय जब वर्षफल में चंद्रमा और राहु खाना नं. 1 में आ जाएं और खाना नं. 3 में कोई मंदा ग्रह हो, तो चोरी या धन में हानि होती है। ऐसी चोरी या नुकसान की संभावना 16वें, 18वें , 22वें, 40वें, 52वें या 69वें साल में होती है।

शुक्र खाना नं. 7 के समय यदि सूर्य खाना न. 4 (वर्षफल के अनुसार) में, चंद्रमा खाना नं. 1 में और शनि खाना नं. 7 में हो तो व्यक्ति नामर्द और औरत बांझ है।

शुक्र खाना नं. 7 के समय यदि छत के ऊपर से रोशनी घर में आती हो तथा सूर्य या बुध खाना नं. 8 में हो, तो व्यक्ति की औरत की मौत का अंदेशा होता है।

शुक्र खाना नं. 7 के समय खाना नं 8 खाली हो तो ऐसा व्यक्ति, बेशर्म और हर समय काम वासना के विचारों में डूबा रहने वाला होता है।

शुक्र खाना नं. 7 के समय चंद्रमा–शनि खाना नं. 6 में हों, तो औरत की सेहत पर बुरा असर पड़ता है, उसे दिल की बीमारी हो सकती है। इस बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए व्यक्ति की औरत अपने गुप्तांग को अल्कोहल(शराब) से धोए।

उपाय

1. भाई–बंधु, मित्रों या ससुराल वालों के साथ मिलकर व्यापार न करें।
2. लाल गाय की सेवा करनी चाहिए।
3. स्त्री बीमार हो, तो उसके वजन का दसवां हिस्सा ज्वार धर्म स्थान में दें।
4. माता–पिता का आशीर्वाद शुभ रहे।
5. गंदे नाले में नीले फूल फेंकने चाहिए।
6. कांसे का बर्तन शुक्रवार वाले दिन मंदिर में दान करें।

Future Point

खाना नं. 7 में दो ग्रहों का फल

शुक्र + बुध : शुक्र + बुध की युति खाना नं. 7 में उत्तम फल देती है। व्यक्ति सफल व्यापारी होता है। यदि यह युति राहु, केतु अथवा चंद्रमा से खराब हो रही हो, तो औलाद की पैदाइश में विघ्न आता है।

उपाय : घर में कांसे का बर्तन रखें।

शुक्र + शनि : शुक्र + शनि की युति खाना नं. 7 हो, तो व्यक्ति के रिश्तेदार उसके साथ शामिल होकर उसके धन को हड़प कर जाएंगे।

शुक्र + राहु : खाना नं. 7 में शुक्र के साथ राहु हो, तो ऐसा व्यक्ति गंदा आशिक और खुदगर्ज स्वभाव का होता है। इसका असर व्यक्ति की स्त्री की आयु, औलाद और सालों पर पड़ता है।

उपाय : राहु का पक्का उपाय (चांदी का टुकड़ा, टीन का डिब्बा, गंगाजल)

शुक्र खाना नं. 8 में

खाना नं. 8 शमशान कहलाता है। कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार यहां वृश्चिक राशि पड़ती है, जिसका स्वामी मंगल और खाना नं. 8 मौत का घर जिसका स्वामी शनि है। इसलिए कुण्डली का खाना नं. 8 मंगल और शनि से प्रभावित होता है। इस घर में कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता।

शमशान की मिट्टी जली और विषैली होती है, इसलिए इस घर का शुक्र व्यक्ति की पत्नी को क्रोधी और चिड़चिड़े स्वभाव की बना देता है।

आठवें घर में शुक्र होने से जातक दुःखी होता है और उसका गृहस्थ जीवन खराब होता है। खाना नं. 8 गुप्त शक्तियों का भी प्रतीक है और किसी हद तक शुक्र का संबंध ज्योतिष से रहता है, इसलिए खाना नं. 8 का शुक्र गुप्त ज्ञान तो देगा लेकिन कथन में सच्चाई कम होगी।

आठवें घर का शुक्र आमदनी होते हुए भी व्यक्ति को कर्जदार बनाता है, कारण धन स्थान (खाना नं. 2) के मालिक का मौत के घर में बैठना है।

आठवें खाने में शुक्र हो, तो व्यक्ति की औरत के मुंह से निकला शब्द पत्थर की लकीर साबित होता है। वह जो कुछ भी किसी के लिए बुरा कहेगी वह सच हो जाएगा, लेकिन शुभ बात के पूरा होने की शर्त नहीं। इसलिए खाना नं 8 वाले व्यक्ति को अपनी औरत को तंग नहीं करना चाहिए। शुक्र खाना 8 के समय यदि कोई ग्रह खाना नं. 2 में होगा, तो शुक्र उसी ग्रह के जैसा असर देने लगेगा।

शुक्र खाना नं. 8 के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो, तो ससुराल के लिए अशुभ होता है। इसका असर खाना नं. 5 पर भी पड़ सकता है, यानी औलाद की बर्बादी।

शुक्र खाना नं. 8 के समय यदि शत्रु ग्रह सूर्य, चंद्रमा और राहु भी खाना नं. 8 में हों, तो किसी के लिए कसम खाना या जमानत देना बुरा साबित होगा। ऐसे ग्रहों के होने से व्यक्ति का चाल–चलन खराब हो जाता है, और व्यक्ति यौन बीमारियों का शिकार बन सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

उपाय

1. खाना नं. 8 वाले को किसी से दान में कोई चीज़ नहीं लेनी चाहिए।
2. मंदिर में माथा टेकना चाहिए (माथा जमीन को छुए), दुश्मन बर्बाद होगा।
3. काली गाय की सेवा करते रहें।
4. जिमीकंद या गाजर, 800 ग्राम या 8 किलो धर्म स्थान में दें।
5. तांबे के पैसे या नीले फूल गंदे नाले में 43 दिन लगातार फेंकें।
6. स्त्री की सेहत मंदी हो तो ज्वार जमीन में दबाना शुभ फल देगा।
7. यौन रोग से बचने के लिए गऊ दान उत्तम उपाय है।
8. आठ शुक्रवार, काली गाय को गुड़ लगाकर आटे का पेड़ा दें।
9. वजन के बराबर हरा चरा गाय को खिलाएं।
10. अगर गुप्तांगों संबंधी रोग हों, तो गुप्तांग दही से धोने चाहिए।

खाना नं. 8 में दो ग्रहों का फल

शुक्र + मंगल : शुक्र + मंगल की युति को बहुत अशुभ माना गया है। यहां तक कहा गया है कि "ऐसे जन्म चंद्रभान, चूल्हे आग न मंजे बान" यानी खाने को रोटी और सोने के लिए चारपाई तक नसीब नहीं होती। लेकिन ऐसा व्यक्ति हिम्मत और हौसले का मालिक होता है।

शुक्र + बुध : शुक्र + बुध की युति आठवें घर में मंदा फल देती है। इसको कहा गया है कि "रब बनाई जोड़ी, ईक अंधा ते ईक कोढ़ी"। यानी दोनों ग्रहों का फल अशुभ। गृहस्थ जीवन अस्त–व्यस्त हो तथा औलाद बीमार रहे।

शुक्र खाना नं. 9 में

नौवां खाना हर प्रकार से बृहस्पति की मिल्कियत। बृहस्पति शुक्र का शत्रु है, इसलिए खाना नं. 9 का शुक्र शत्रु के घर में है इस घर में शुक्र होने से व्यक्ति हर तरह से परेशान, ऐसी काली आंधी में घिरा जो व्यक्ति को रास्ता भटकाए। भाई–बंधु, पत्नी हर ओर से परेशानी।

व्यक्ति धनवान होते हुए भी सारा समय काम में बिताए, यानी सुख कम। जिसका शुक्र खाना नं. 9 में हो उसे 25वें साल में शादी नहीं करनी चाहिए। गाय पालने या खेती बाड़ी के कामों से नुकसान रहे। सास, ससुर, साला, साली साथ रखे तो तबाही का कारण बनें। शुक्र खाना नं. 9 वाले की पत्नी हमेशा अपने मायके वालों की तरफदारी करे।

शुक्र खाना नं. 9 में हो, तो भी मंगल बद माना जाता है। अतः धन–संपत्ति और संतान के लिए बुरा असर देता है।

शुक्र खाना नं. 9 के समय चंद्रमा या मंगल साथ हो, तो घर में घोड़ी, कुआं, चांदी और शहद रखने से शुक्र की शुभता को नौ नौ गुनी बढ़ जाएगी। यह स्थिति मन की शांति व धन दौलत के लिए उत्तम रहे।

शुक्र खाना नं. 9 के साथ राहु–केतु, या मंदा शनि, या बुध शुक्र को देखता हो या साथ हो, तो व्यक्ति

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

को 17 साल की उम्र से नशे की आदत व बीमारियां तंग करेंगी। ऐसे समय यदि इन्सान की शादी होती है तो पत्नी की सेहत खराब होती है, उसे खून से संबंधित बीमारियां तंग करती हैं।

शुक्र खाना नं. 9 के समय वर्षफल के अनुसार खाना नं. 4 के ग्रह खाना नं. 1 में आ जाएं तो उस वर्ष व्यक्ति की धन–दौलत का नुकसान होगा।

शुक्र खाना नं. 9 के समय खाना नं. 1 खाली हो तथा बृहस्पति शुक्र के साथ बैठा हो, या टेवे में बृहस्पति मंदा हो तो व्यक्ति में खून की कमी की बीमारियां होना मंदा होने की पहली निशानी होगी, इसके अलावा लेन–देन व व्यापार का फल भी मंदा होगा।

उपाय

1. सफेद दही का इस्तेमाल न करें (केसर डाल कर खाएं)
2. नर संतान की शादी 25 वर्ष की उम्र के बाद करें।
3. सफेद रंग की गाय की सेवा अशुभ फल देगी।
4. नीम के पेड़ में चांदी के चौकोर टुकड़े रोजाना एक 43 दिन दबाएं।
5. भूरे या काले रंग की गाय की सेवा करें।
6. मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद दबाएं।
7. पत्नी को चांदी की चूड़ी लाल रंग करके पहनाएं।
8. पत्नी से अच्छे संबंध न बनें तो कुल पुरोहित को विधि पूर्वक गोदान करें।

दो ग्रहों का फल

शुक्र + मंगल : शुक्र मंगल की युति खाना नं. 9 में होने पर व्यक्ति की पत्नी की सेहत पर अशुभ असर डालती है। पत्नी अपने भाइयों से दवाइयां लेकर खाए तो असर शुभ रहेगा।

शुक्र + बुध : खाना नं. 9 में शुक्र के साथ बुध हो और ऐसे में खाना नं. 1, 3, 6, 7, 9 या 12 में अगर चंद्रमा, केतु या बृहस्पति बैठा हो, तो बुध का फल मंदा न होगा। लेकिन यदि बुध राशि के हिसाब से मंगल की दृष्टि से खराब हो रहा होगा, तो पहली लड़की की पैदाइश पर बहुत अशुभ प्रभाव डालेगा।

शुक्र + शनि : खाना नं. 9 में शुक्र के साथ शनि का होना व्यक्ति को औरत और धन के सुख के मामले में शुभ फल देता है। इसी समय यदि बृहस्पति खाना नं. 5, 6 या 10 में हो, तो जमीन–जायदाद के कारोबार में शुभ फल देता है।

शुक्र + केतु : खाना नं. 9 में शुक्र के साथ केतु का होना शुभ फल देता है।

शुक्र खाना नं. 10 में

खाना नं. 10 शनि का यानी खाना नं. 10 पर शुक्र और शनि दोनों का प्रभाव। शनि सांप इसलिए शुक्र भी शनि की मानिंद होता है। औरत अपने खाविंद को अपनी इच्छा अनुसार चलाए। जब तक पत्नी का साथ रहे, कोई कष्ट नहीं होता।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शनि से संबंधित कामों से लाभ हो। सफर के समय यदि व्यक्ति की औरत साथ होगी तो व्यक्ति को कोई नुकसान नहीं होगा।

शुक्र खाना नं. 10 वाला व्यक्ति लोभी, शक्की और दस्तकारी में रुचि रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति में काम वासना की इच्छा भरी रहती है, इससे बचने के लिए पत्नी पति दोनों ही गुप्तांगों को प्रतिदिन दही से धोयें। शुक्र खाना नं. 10 के समय यदि शनि 9 या 11 नं. खाना में हो तो दुर्घटना नहीं होती।

दसवें घर के शुक्र को "ख्वाबे हुरां" यानी परियों के सपने देखने वाला कहा गया है। शुक्र खाना नं. 10 के समय यदि खाना नं. 4 खाली हो, तो शुक्र खुद शनि का फल देगा। शुक्र खाना नं. 10 के समय जब खाना नं. 1 और 5 में कोई भी ग्रह हो, चाहे मित्र चाहे शत्रु, तो व्यक्ति खूब ऐशो आराम पाता है। यदि चंद्रमा खाना नं. 2, 4 या 7 में हो तो फल बहुत शुभ होता है। व्यक्ति को सवारी का सुख प्राप्त होता है, लेकिन ऐसे व्यक्ति को अपना चरित्र ठीक रखना चाहिए, वरना औलाद का फल शुभ न होगा।

शुक्र खाना नं. 10 के समय यदि व्यक्ति बीमार चल रहा हो, तो गाय दान करना चाहिए, अगर उसकी आयु शेष होगी, तो स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा, वरना वह व्यक्ति बीमारी और जीवन दोनों से निजात पा जाएगा।

शुक्र खाना नं. 10 के समय शनि खाना नं. 5 में हो, या फिर मंदा हो, तो व्यक्ति की पत्नी के सेहत पर, खासकर आखों पर असर डालेगा न ऐसे में व्यक्ति को बकरी दान करनी चाहिए।

उपाय

1. शनि मंदा न करें।
2. धर्म स्थान में बादाम देने चाहिए।
3. पराई स्त्री से संपर्क बर्बादी का कारण बनें।

(अगर पराई स्त्री से संपर्क बनाए तो पुत्र प्राप्ति में बाधा। शादी के 13 वें वर्ष में स्त्री की सेहत खराब।)

4. अगर शनि नीच हो, तो व्यक्ति अत्यंत दुःखी हो।

दो ग्रहों का फल

शुक्र + मंगल : दसवें खाने में शुक्र के समय मंगल हो, तो ससुराल अमीर होती है। इस युति के समय खाना नं. 2 के ग्रह खास महत्व रखते हैं। अगर ससुराल के लोगों का रंग काला और व्यक्ति की पत्नी का रंग साफ हो, तो टेवे वाला एक अमीर इन्सान होता है। यदि इस युति पर राहु या केतु की दृष्टि होगी तो व्यक्ति निर्धन और झगड़ालू तबीयत का होगा। ऐसा व्यक्ति औरत के लिए भाइयों तक को मरवा देगा।

शुक्र +बुध : खाना नं. 10 में शुक्र + बुध की युति व्यक्ति को अच्छी सेहत का मालिक और बुद्धिमान बनाती है, लेकिन यदि आठवें खाने में अशुभ ग्रह होंगे तो शुक्र + बुध का फल मंदा होगा।

शुक्र + शनि : खाना नं. 10 में शुक्र यानी औरत का प्रतीक और शनि यानी शराब का, व्यक्ति जवानी में ऐश और इश्क की लहर में रहेगा, लेकिन इसका फल बुरा नहीं होगा। व्यक्ति के पास धन–दौलत और जायदाद होगी। इस युति के समय सूर्य खाना नं. 4 में हो, तो व्यक्ति की मौत दुखिया हालत में

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

नहीं होती और न ही धन–दौलत पर कोई बुरा असर पड़ता है।

शुक्र खाना नं. 11 में

खाना नं. 11 शनि व बृहस्पति से प्रभावित होता है। खाना नं. 11 का शुक्र व्यक्ति में वीर्य की खराबी पैदा करता है, या व्यक्ति जो अपनी शक्ति बचपन में नष्ट कर चुका होता है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी देखने में भोली–भाली परंतु व्यवहार में विषैली होती है। इस घर का शुक्र घूमते लट्टू की तरह व्यक्ति के जीवन को चक्कर में डालता है।

यदि शुक्र सोया हो, यानी खाना नं. 5 खाली हो, तो देवी आराधना से पुत्र प्राप्ति हो, यदि ऐसा न हो, तो स्त्री के तीन भाई होंगे जो उसकी सहायता करते रहेंगे।

शुक्र ग्यारहवें खाने में हो, तो व्यक्ति पैसे के पीछे भागने वाला होता है, लेकिन उसका स्वभाव भोला होता है। यदि कुण्डली में बुध और चंद्रमा अच्छी स्थिति में हों, तो व्यक्ति गुप्त काम करने का आदी होगा मगर यह स्थिति धन के लिए शुभ हो।

शुक्र खाना नं. 11 के समय यदि राहु खाना नं. 12 में हो, तो लड़कियां ज्यादा पैदा होंगी। लेकिन ऐसी लड़कियां अपना भाग्य साथ लेकर आती हैं यानी जितनी ज्यादा लड़कियां होंगी, उतना ही धन ज्यादा होगा। यदि व्यक्ति की पत्नी धन की बागडोर अपने हाथ में ले ले, तो धन में बरकत नहीं होती।

शुक्र खाना नं. 11 के समय यदि खाना नं. 3 खाली हो तथा मंगल की दृष्टि शुक्र पर हो, तो मंगल का उपाय करना चाहिए या स्त्री के भाइयों से सहायता लेनी चाहिए। ऐसा करना स्त्री के लिए शुभ रहे। यदि खाना नं. 5 खाली हो, तो शादी के तीन साल बाद ही घर की हालत खराब होने लगती है।

यदि लड़के की सेहत पर कोई बुरा असर पड़ रहा हो, तो सरसों के तेल का दान करना चाहिए, या काले कपड़े में काले उड़द बांध कर तेल मांगने वाले को दान करें।

उपाय

1. मंगल की वस्तुएं धर्म स्थान में दान करें।
2. मछली के तेल का इस्तेमाल करें।
3. सोने की सलाई आग पर गर्म करके दूध में बुझाकर पीएं।
4. विवाह के समय काली या लाल गाय का दान करें।
5. बुध खाना नं. 3 में हो तो दही, रूई आदि मंदिर में दें।

दो ग्रहों का फल

शुक्र+बुध : खाना नं. 11 में शुक्र के साथ बुध की युति में और दोनों ग्रह पापी ग्रहों की दृष्टि से अशुभ हो रहे हों, तो ऐसा व्यक्ति अपने प्रियजनों से न चाहने के बावजूद जुदा रहता है यदि इस युति वाला व्यक्ति सरकारी नौकरी करे, तो पहली नौकरी में उसे अच्छा अफसर नहीं मिलता।

शुक्र खाना नं. 12 में

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

खाना नं. 12 बृहस्पति का परंतु राहु से भी प्रभावित होता है। शुक्र बृहस्पति का शत्रु, इसलिए विपरीत सेक्स से संबंध का कारण बने। खाना नं. 12 राहु से भी प्रभावित, इसलिए इस खाने का शुक्र स्त्री की सेहत पर बुरा असर डालता है। खाना नं. 12 में शुक्र के साथ चंद्रमा हो, तो बदनामी का बायस बनता है। लाल किताब में खाना नं. 12 के शुक्र को कामधेनु गाय भी कहा गया है।
अगर लड़ाई–झगड़े का डर हो या तलाक की नौबत हो, तो नीले रंग के फूल वीरान जगह में दबाने चाहिए।
खाना नं. 12 का शुक्र उच्च का माना गया है। व्यक्ति अपने वंश की पालना करने वाला होता है। शुक्र खाना नं. 12 के समय व्यक्ति के भाग्य का सब कुछ स्त्री के हाथ में होता है। जहां कोई भी व्यक्ति का सहायक न होगा, वहां उसकी स्त्री उसका भाग्य बन कर उस की सहायता करती है।

खाना नं. 12 में शुक्र वाला व्यक्ति कुछ वहमी तबीयत का होता है वह छोटी–2 बीमारियों को भी बढ़ा–चढा कर बयान करने का आदी होता है। व्यक्ति औरत की इज्जत करे तो फल अच्छा मिलता है। शुक्र खाना नं. 12 के समय शादी के लिए धन का लाभ उत्तम होता है।

शुक्र खाना नं. 12 के समय बृहस्पति और शनि खाना नं. 7 में हों या दृष्टि से संबंध बन रहा हो, तो व्यक्ति का भाग्य तो अच्छा रहता है, लेकिन पत्नी दुखिया रहती है। शुक्र खाना नं. 12 के समय यदि बुध दूसरे या खाना नं. 6 में हो, तो व्यक्ति कवि या रागी हो सकता है।

शुक्र खाना नं. 12 के समय यदि खाना नं. 2 और 7 खाली हो, तो शुक्र मिट्टी का फल देता है। यदि बुध मंदा हो, तो व्यक्ति की औरत अच्छे स्वभाव की नहीं होती और वह जबानदराज भी होगी।

शुक्र खाना नं. 12 के समय राहु यदि खाना नं. 2, 6, 7 या 12 में हो तो गृहस्थ सुख बर्बाद होता है। घर में नीले रंग की गाय नहीं रखनी चाहिए। राहु के साथ संबंध रखने वाली चीजें, यानी साले वगैरह के साथ काम करना अशुभ फल देगा। सफेद रंग की गाय घर में रखना या उसकी सेवा करना शुभ फल देता है। व्यक्ति धार्मिक बनकर रहे, तो उन्नति करेगा।

उपाय

1. राहु से खराब शुक्र को ठीक करने के लिए नीले फूल वीराने में दबाने चाहिए।
2. सफेद गाय की सेवा करना शुभ फल देगा।
3. स्त्री की सेहत खराब हो, तो गुड़, चावल, जौ आदि वीरान जगह में दबाएं।
4. स्त्री के वजन के बराबर ज्वार मंदिर में दान करें।
5. बुध को खाना नं. 6 में कायम करें।

दो ग्रहों का फल

शुक्र + बुध : खाना नं. 12 में शुक्र+बुध की युति होने पर व्यक्ति की आयु लम्बी होती है। यदि इस युति पर किसी शत्रु ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो तो, जिस दिन व्यक्ति के यहां लड़की की पैदाइश होगी उसी दिन से गृहस्थ जीवन बर्बाद होना शुरू हो जाएगा क्योंकि बुध का फल मंदा हो जाता है और शुक्र भी काम करना बंद कर देता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

शुक्र + शनि : खाना नं. 12 में शुक्र + शनि की युति व्यक्ति के परिवार के लोगों की गिनती बढ़ाती है। ऐसे व्यक्ति को खेती बाड़ी (शुक्र का काम) से लाभ होता है। इस युति के समय यदि बुध खाना नं. 6 में हो (वर्षफल के अनुसार) तो व्यक्ति बेरहम होता है, लेकिन उसके मान–सम्मान में कमी नहीं रहती। यदि बृहस्पति खाना नं. 5, 6 या 10 में हो तो व्यक्ति के पास जायदाद बहुत होती है। ऐसे में व्यक्ति को पूर्ण सुख भी प्राप्त होता है।

शुक्र + राहु : खाना नं. 12 में शुक्र + राहु की युति कोई शुभ फल नहीं देती। व्यक्ति की औरत की सेहत तथा आर्थिक हालात पर बुरा असर पड़ता है।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. शुक्र खाना नं. 1 में हो, तो सूर्य से प्रभावित होता है। इसका क्या प्रभाव होगा? विस्तार से लिखें।
2. शुक्र खाना नं. 2 में कैसा प्रभाव देगा? विस्तार से लिखें।
3. "ल्लू करे कव्वलियां रब सिद्धियां पावे" व्याख्या करें।
4. सातवें घर का शुक्र यदि चंद्रमा के साथ हो, तो क्या फल होगा? और यदि सातवें शुक्र के समय चंद्रमा खाना नं. 1 में हो, तो फल क्या होगा?
5. "चंगे जन्मे चंद्रभान चुल्हे आग न मंजे बान" यह नियम कैसे लागू होता है? व्याख्या करें।
6. खाना नं. 9 का शुक्र शादी के लिए अशुभ माना जाता है। तर्कसंगत व्याख्या करें।
7. शुक्र अशुभ कैसे होता है और इसका प्रभाव क्या होता है?
8. किन–कन घरों में शुक्र हो तो पराई स्त्री से संबंध बनने की संभावना होती है।
9. बारह घरों में शुक्र की व्याख्या संक्षिप्त रूप से लिखें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खण्ड 6 – बुध

बुध बारह खानों में

बुध की आदत जिस ग्रह के साथ हो उसी की तरह हो जाए। हरियाली, खाली स्थान, खोल, खांचा, बुद्धि, नकलची, दलाल, सट्टेबाज, जी हजूरिया, हिजड़ा, बहन, लड़की, साली, मासी, नर्स, बुआ, मूंग, दांत, पन्ना, जबान, मुंह का स्वाद, तबला, ढोलक, शंख, सीप, मटका, प्याज और चौड़े पत्तों का वृक्ष आदि सब बुध की वस्तुएं है।

बृहस्पति का पीला रंग और राहु का नीला रंग मिले तो हरा रंग यानी बुध बनता है, अर्थात बृहस्पति और राहु इकट्ठे हों, तो बुध का फल देते हैं।

सूर्य बंदर और बुध उसकी पूंछ, इसलिए जब बुध सूर्य से मिलता है, तो सूर्य अधिक शक्तिशाली हो जाता है।

बुध अपने मित्र शुक्र के साथ खुश। बुध की हरियाली शुक्र की मिट्टी के कारण होती है। अगर पौधा मिट्टी से अलग कर दिया जाए तो पीला हो जाता है, या बृहस्पति का रूप ले लेता है। शुक्र सांड का कारक है और बुध सींग का। अगर सांड के सींग न हों, तो नकारा हो जाता है। बुध लड़की है, तो शुक्र कामदेव।

बुध का तीसरा मित्र राहु है। राहु हाथी और बुध उसकी सूंड, इसलिए बुध सूंघने की शक्ति का कारक भी है। राहु और बुध कुंडली में मंदे हों, तो सारी कुंडली खराब। बुध + राहु कुंडली में खराब हों और वर्षफल में भी खराब आ जाएं, तो कोई उपाय काम नहीं करता। बुध और राहु अलग–2 रहें, तो फल अच्छा रहता है, लेकिन खाना नं. 3 व 6 में दोनों अच्छा फल देते हैं।

बुध ग्रह चंद्रमा से शत्रुता रखता है, इसलिए खाना नं 4 में बुध अच्छा फल नहीं देता। बुध चौथे घर में हो, तो व्यक्ति करोड़पति होकर भी परेशान रहे। बुध बकरी और उसका दूध चंद्रमा जो कि मजबूरी में पिया जाता है। बुध नाक और चंद्रमा चांदी, जिसे नाक में डालने से बुध की शक्ति बढ़े। बुध दांत और बच्चे का दूध चंद्रमा, ज्योंहि बच्चा दांत निकाले मां का दूध मिलना बंद हो जाए। छठा घर शत्रुओं का और 8वां घर मौत और दोनों के बीच में घिरा 7वां घर जिस पर बुध यानी लड़की और शुक्र यानी कामदेव का राज।

बृहस्पति, सूर्य और मंगल एक ओर तथा बुध, शनि, राहु और केतु दूसरी ओर और बीच में शुक्र जो सबको लड़ाता है। बुध को जब भी मौका लगे, वह बृहस्पति के रास्ते में रोड़ा अटकाता है। इस तरह झगड़ा बढ़ता है, ग्रह दो गुटों में बंटे हो जात है और शुक्र बीच में तमाशा देखता है।

चमगादड़ सीधा नहीं बैठता जब वृक्ष की टहनी पर लटक जाए तो पीछे की ओर देखे यानी चारों ओर से सतर्क इसलिए बुध कुंडली में अकेला हो, तो अच्छा होता है।

इन सब बातों के अलावा इस बात को समझना अति आवश्यक है कि बुध किन हालतों में अशुभ हो जाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

जब बुध+केतु टेवे में इकट्ठे हों, तो दोनों का फल मंदा, लेकिन केतु अधिक मंदा फल देता है।
जब मंगल और बुध इकट्ठे हों या मंगल बुध को देखे, तो बुध का फल अच्छा नहीं रहता।
जब शुक्र और बुध कुंडली के खाना नं. 1, 4, 7 और 10 से बाहर वर्षफल में कहीं भी आमने सामने हों, तो दोनों का फल खराब लेकिन वर्षफल में ही शुक्र खाना नं. 12 में और बुध खाना नं. 6 में हो, तो फल उत्तम होता है।
बुध के साथ बृहस्पति मिले, तो बुध का फल किसी सीमा तक कम, लेकिन बृहस्पति का फल नष्ट हो जाता है। केवल खाना नं. 2 और 4 में दोनों ग्रहों का फल ठीक रहता है।

बुध खाना नं. 1 में

खाना नं. 1 सूर्य व मंगल से प्रभावित होता है। मंगल की जमीन और सूर्य का पक्का घर और बुध इसमें किराएदार। बुध इस खाने में सूर्य रूपी तख्त पर बैठा होता है, इसलिए जातक का राजदरबार उत्तम होता है। इस घर का बुध अगर सोया हो, या अपनी नीच राशि में हो तो झूठा इल्जाम लगता है, इस हालत में हरे रंग की दवाईयों और चीज़ो का इस्तेमाल नुकसानदेह साबित होगा। व्यक्ति को मांस, अंडा, शराब आदि का व्यापार नहीं करना चाहिए। एक जगह टिक कर काम करना ठीक रहेगा, ऐसा व्यापार जिसमें जगह–2 घूमना पड़े अशुभ फल देगा। बुध खाना नं. 1 के समय खाना नं. 9 में जो ग्रह होगा उससे संबंध रखने वाली कारक चीजों के लिए शुभ होता है।

खाना न. 1 में बुध वाले व्यक्ति की लड़की राज करे, या जिस घर में सूर्य होगा उससे संबंध रखने वाले रिश्तेदारों को मालामाल कर दे।

बुध खाना नं. 1 के समय यदि मंगल खाना नं. 12 में हो, तो बुध का फल धन और व्यक्ति के सुख के लिए अच्छा रहता है। बुध खाना नं. 1 में हो और व्यक्ति यदि मांस अंडा और शराब का आदि हो, तो ससुराल और औलाद के लिए अशुभ।

बुध खाना नं. 1 वाला व्यक्ति दूसरों के दिलों को अपने काबू में करने वाला होता है, क्योंकि बुध जबान का कारक है इसलिए जबान से वह दूसरों के दिल पर राज करता है। बुध खाना नं. 1 के समय चंद्रमा खाना नं. 7 में हो, तो व्यक्ति किसी न किसी नशे का शौकीन होता है। ऐसे व्यक्ति को खाने–पीने का चस्का लगा रहता है।

उपाय

1. सिरहाने सौंफ रखें।
2. हरे रंग की चीजों से परहेज करें।
3. शराब, मांस, अंडे आदि का सेवन न करें और न ही इन चीजों का व्यापार करें।
4. इधर–उधर घूमकर काम करने की बजाए एक जगह टिककर काम करें।

दो ग्रहों का फल

बुध + राहु : खाना नं. 1 में बुध + राहु की युति व्यक्ति के खुद के लिए अशुभ होती है। मगर जिसके साथ संबंध या कारोबार हो, उनपर कोई अशुभ असर नहीं पड़ता। यदि यह घर बुध, राहु , केतु या मंगल की दृष्टि से अशुभ हो रहा हो और व्यक्ति की औलाद पर मंदा असर पड़ रहा हो, तो लोहे का बिना जोड़

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

का छल्ला धारण करें।

बुध खाना नं. 2 में

खाना नं. 2 बृहस्पति का मकान और शुक्र की जमीन। बुध खाना नं. 2 में एक किराएदार। शुक्र + बुध मिलकर सूर्य बने, इसलिए खाना नं 2 में बुध शक्तिशाली होता है। बुध जुबान का कारक और शुक्र लिखाई का, इसलिए व्यक्ति कलम का माहिर होगा। बुध खाना नं. 2 के समय व्यक्ति धन के लेन–देन संबंधी कार्य करे, तो कामयाब रहे।

बुध और शुक्र दोनों बृहस्पति के शत्रु, इसलिए पिता या बाबा (बृहस्पति होते हुए भी न होने के बराबर। जातक ऐसा पुत्र, जो चाहते हुए भी पिता को सुख न दे सके, ऐसा व्यक्ति जो पुत्रों के होते हुए भी उनके सुख से वंचित रहे। बहन ,बुआ, पुत्री सबका हाल मंदा।

खाना नं. 2 के बुध को योगी राजा भी कहा गया है, क्योंकि दूसरे घर का बुध बृहस्पति से प्रभावित होता है।

बुध खाना नं. 2 के समय यदि राहु खाना 8 में हो, तो व्यक्ति एक नंबर का हाजिर जबाव होता है। यदि राहु खाना नं. 9 में हो, तो ऐसे व्यक्ति की जबान और कलम दोनों में हर तरह की बरकत होती है। ऐसे समय यदि मंगल खाना नं. 8 में हो तो बुध की यह सिफत और भी बढ़ जाती है।

दूसरे घर में बुध अकेला हो, तो सबको तारने वाला योगी राजा होगा, यानी जो उसके संपर्क में आएंगे उन्हें लाभ ही होगा।

बुध खाना नं. 2 के समय यदि बृहस्पति खाना नं. 9 या 12 में हो तो व्यक्ति को दूसरों को बेबजह नसीहतें देने की आदत होती है।

बुध खाना नं. 2 के समय यदि बृहस्पति खाना नं. 9 या 12 में हो तो व्यक्ति की मान–इज्जत अच्छी होती है और यह स्थिति उसकी माता के लिए भी शुभ होती है।

बुध खाना नं. 2 के समय सूर्य यदि खाना नं. 8 में हो, (ऐसा वर्षफल में हो सकता है) तो व्यक्ति लालची व पैसे का पीर होगा लेकिन व्यापार में लाभ रहेगा।

बुध खाना नं. 2 के समय यदि शनि खाना नं. 6 में हो, तो व्यक्ति की बुद्धि बहुत तेज होती है।

बुध खाना नं. 2 वाला व्यक्ति अपनी मेहनत से धनवान हो जाता है। यदि यह बुध, केतु या मंगल से मंदा हो रहा हो, तो व्यक्ति का बाप चाहे लखपति हो लेकिन टेवे वाले को उस दौलत से कोई लाभ नहीं होता।

बुध खाना नं. 2 के समय यदि चंद्रमा + शनि खाना नं. 12 में हों तो 17वें, 34वें या 75वें साल में बाप की कमाई दौलत का नुकसान व्यक्ति के हाथों से होता है।

उपाय

1. नाक छेदन एक उत्तम उपाय है।
2. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।

Future Point

3. शराब, मीट, अंडे आदि से परहेज करें।
4. रात को सिरहाने पानी रखकर सोएं, सुबह उसे पीपल को डालें।
5. भेड़, बकरी, तोता आदि न पालें।
6. बुध की कारक वस्तुओं का व्यापार न करें।
7. साली को साथ न रखें।

दो ग्रहों का फल

बुध + शनि : खाना नं. 2 में बुध + शनि की युति के समय व्यक्ति यदि शनि की कारक वस्तुओं यानी मशीनरी, लकड़ी आदि से संबंधित काम करे, तो लाभ होता है। ऐसी हालत में व्यक्ति का स्वास्थ्य व भाग्य ठीक और मां–बाप का सुख लंबे अरसे तक रहे।

यदि दूसरे खाने में बुध + शनि राशि स्थित न हों, या शत्रु ग्रहों की दृष्टि से खराब हो रहे हों, तो जब जातक की आयु 17 या 34–35 वर्ष की होगी, उसके पिता की मृत्यु हो जाएगी। मशीनरी, मोटरगाड़ी, शराब व जहर यानी शनि की वस्तुएं हादसे का कारण बनेंगी।

बुध + राहु : खाना नं. 2 में बुध के साथ राहु होने पर व्यक्ति के खुद के लिए इनका असर शुभ रहेगा।

बुध + केतु : खाना नं 2 में बुध + केतु की युति के समय एक ग्रह के कारक रिश्तेदारों का हाल शुभ रहेगा। यानी अगर बुध के कारक रिश्तेदार –बहन, बुआ, साली आदि ठीक तो बेटे का हालत खराब और यदि केतु के कारक रिश्तेदार बेटे की हालत अच्छी तो बाकी लोगों की हालत खराब रहेगी।

बुध खाना नं. 3 में

खाना नं. 3 पर मंगल व बुध का अधिकार है। मंगल का इसलिए कि खाना नं. 3 भाइयों और पराक्रम का है और मंगल इन चीजों का कारक ग्रह है और बुध का इसलिए कि कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार इस खाने में बुध की पहली राशि मिथुन पड़ती है। बुध + मंगल शनि के मनसुई ग्रह हैं। बुध इस खाने में बुरा प्रभाव देता है। क्योंकि मंगल ग्रह बुध और शनि दोनों का शत्रु है, इसलिए इस घर में बैठा बुध, बहनों और भाइयों के लिए हानिकारक है।

खाना नं. 3 में बैठा बुध खाना नं. 9 और खाना नं. 11 को देखता है, इसलिए नीच बुध का प्रभाव आमदनी (खाना नं. 11) और बाप–दादा (खाना नं. 9) पर पड़ेगा में इसके अलावा इन खानों में जो ग्रह बैठे होंगे उनकी कारक वस्तुओं व रिश्तेदारों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा।

तीसरे घर को आठवें घर का दरवाजा भी कहा गया है। मौत के बाद यमराज के सामने पेशी लगती है और यमराज का दरबार दक्षिण दिशा में है या शमशान में। तीसरा घर आठवें घर का दरवाजा है, इसलिए बुध खाना नं. 3 के समय यदि मकान का दरवाजा दक्षिण दिशा में हो, तो अति हानि कारक होगा। ऐसा होने पर बुध तीसरे से तीसरे यानी पांचवें घर तक पर प्रभाव डालेगा, यानी संतान पक्ष के लिए हानिकारक है।

तीसरे खाने में बैठे बुध को "थूकने वाला कोढ़ी" भी कहा गया है। इसके अलावा भूत की शक्ति जो बिना साया के हो। इस घर में बुध को दीमक भी कहा गया है, जो व्यक्ति के धन को चाट जाए। तीसरे खाने

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

में बुध वाले के संपर्क में जो लोग भी आएंगे वे कोई लाभ नहीं उठा पाएंगे, बल्कि नुकसान में रहेंगे।

बुध खाना नं. 3 के समय यदि मंगल खाना नं. 1 में हो, तो ऐसे व्यक्ति का धन, परिवार बढ़ता है। ऐसी स्थिति में बृहस्पति यदि खाना नं. 9 में हो, तो फलों का काम, खेतीबाड़ी, कांसे के बर्तनों का काम आदि लाभदायक सिद्ध होंगे।

बुध खाना नं. 3 के समय यदि खाना नं. 9 और 11 खाली हों, (बुध सोया हुआ) तो बुध हर तरह से उत्तम फल देता है। यदि मंगल या केतु से बुध खराब हो रहा हो, तो ताये–चाचे के लिए अशुभ रहे। अगर बुध टेवे में खराब हो रहा हो, तो पहला असर केतु यानी बेटे पर पड़ेगा। इसके अलावा व्यक्ति के खुद के कान, पांव आदि पर भी असर बुरा रहे।

बुध खाना नं. 3 के समय खाना नं. 4 की चीज़ें जैसे – तोता, कलई आदि पर और जद्दी जायदाद, आमदनी और दिल की शांति पर बुरा असर पड़े। खाना नं. 4 के रिश्तेदार जिसमें मौसी की लड़की भी शामिल है अपनी जद्दी जगह से उजड़ कर कहीं और जाकर बसेंगे। यहां बुध के इस जहर को दूर करने के लिए साबुत मूंग रात को पानी में भिगोकर सुबह पक्षियों को डालें (43 दिन लगातार)

बुध खाना नं. 3 के समय यदि शुक्र खाना नं. 4 में हो तो ऐसे व्यक्ति के औलाद देर से पैदा होती है। यदि बुध के शत्रु ग्रह जैसे चंद्रमा खाना नं. 6 में और मित्र ग्रह खाना नं. 8 में न हों, तो शनि का असर मंदा होगा।

बुध खाना नं. 3 के समय राहु, केतु या मंगल, शनि खाना नं. 6 या 7 में हों तो व्यक्ति के पिता की दौलत और मामा खानदान बर्बाद होकर रहेंगे – उपाय के लिए बकरी का दान किसी डकौत को करना चाहिए।

उपाय

1. गले में चांदी, मूंगा आदि धारण करें।
2. सूर्य को जल देना चाहिए।
3. कुत्ता पालना चाहिए।
4. फिटकरी से दांत साफ करने चाहिए।
5. साबुत मूंग पानी में भिगोकर सुबह पक्षियों को डालें। (43 दिन)
6. पीली कौड़ियां जल में प्रवाहित करें।
7. बकरी किसी डकौत को दान करें।
8. कन्या (101) पूजन करें।
9. नाक छेदन करवाएं और माता दुर्गा को चांदी की नथ भेंट करें।
10. ढाक के पत्तों को दूध से साफ करके वीराने में दबाएं।
11. अगर मकान का दरवाजा दक्षिण की ओर हो, तो उसे बदलें।

दो ग्रहों का फल

बुध + राहु : खाना नं. 3 में बुध + राहु की युति हो, तो शुभ फल देता है, लेकिन यदि इन पर बुरे ग्रहों की दृष्टि हो, तो उसकी बहन दौलतमंद तो हो सकती है, उसका वैवाहिक सुख अच्छा नहीं होता।

Future Point

बुध + केतु : खाना नं. 3 में बुध के साथ केतु होने पर दोनों का ही फल बर्बाद होगा।

बुध खाना नं. 4 में

चौथा खाना हर प्रकार से चंद्रमा की मिल्यिकत होता है। बुध इस खाने में अपनी कारक वस्तुओं के लिए शुभ फल देता है। आमदनी का दरिया बढ़ता रहेगा। इस समय यदि चंद्र, बुध के घर नं. 3 या 6 में हो और कुंडली में बृहस्पति उत्तम हो तो बुध खाना नं. 4 में हर प्रकार से उत्तम फल देगा।

खाना नं. 4 के बुध को हुनरमंद कहा गया है। चौथे खाने का बुध यदि मंदा हो, तो माता पर बुरा असर पड़ता है। यदि खाना नं. 4 में बुध अशुभ हो और इसका असर व्यक्ति की दौलत पर पड़ रहा हो तो बृहस्पति का उपाय उत्तम फल देगा। पीतल के बर्तन में गंगा जल भरकर घर में स्थापित करें।

खाना नं. 4 में अशुभ बुध के समय यदि राहु भी बुरे घर में हो या मंदा हो रहा हो, तो घर के सभी मर्दों की हालत मंदी ही होगी। यदि केतु मंदा हो, तो व्यक्ति के सलहाकार ही व्यक्ति की बर्बादी का कारण बनेंगे। बुध खाना नं. 4 के समय यदि खाना नं. 2 या 5, 9 या 10 में राहु या शुक्र बैठा हो, तो यह पितृ ऋण की निशानी होती है। इसका अशुभ असर व्यक्ति की पत्नी, दौलत एवं गृहस्थ सुख सब पर पड़ता है और यह असर खानदान में कई पीढ़ियों तक चल सकता है।

बुध खाना नं. 4 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 6 में हो और बुध अशुभ हो रहा हो तो व्यक्ति के हौसले में कमी आ सकती है।

उपाय

1. बंदर को गुड़ व चने खिलाएं।
2. धर्म स्थान पर गुड़ व चने की दाल चढ़ाएं।
3. चावल और दूध का दान करना शुभ फल देगा।
4. पुरोहित को सोना या पीतल के बर्तन दान करें।

दो ग्रहों का फल

बुध + शनि : खाना नं. 4 में बुध + शनि की युति वाला व्यक्ति खूनी स्वभाव का होगा। ऐसा होने पर चंद्रमा यानी माता का फल खराब रहेगा। चंद्रमा के दूसरे श्तिेदारों के लिए व्यक्ति खूनी सांप सिद्ध होगा।

बुध + राहु : खाना नं. 4 में बुध के साथ राहु की युति होने पर इसका असर व्यक्ति के खुद के लिए अशुभ होता है, परंतु दूसरे संबंधियों या रिश्तेदारों पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता।

बुध खाना नं. 5 में

खाना नं. 5 सूर्य का है। इसमें बुध को सूर्य का साथ मिलता है और बुध सूर्य की शक्ति को बढ़ाता है। बुध का नीच प्रभाव भी नहीं रहता। इसलिए खाना नं. 5 में सूर्य + बुध का प्रभाव होने से मंगल नेक फल देगा।

खाना नं. 5 के बुध को "फकीर की आवाज" कहा गया है। व्यक्ति खुशहाल होगा और उसके मुंह से

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

निकला शब्द उत्तम फल का होगा। इसका अर्थ यह है कि बुध खाना 5 वाला व्यक्ति बिना सोचे समझे कोई बात कह दे, तो सच हो जाएगी। लेकिन खाना नं. 5 का बुध व्यक्ति को चक्करों में डालता है और राजदरबार भी मंदा करता है।

बुध खाना नं. 5 के समय यदि बुध सोया हो, यानी खाना नं. 9 खाली हो, तो इन्सान अच्छे चरित्र व गुणों का मालिक होता है। उसकी जद्दी जायदाद गृहस्थी व औलाद पर भी शुभ असर पड़ता है। यदि खाना नं. 9 में सूर्य, (वर्षफल के अनुसार) चंद्रमा या बृहस्पति हो तो 34 साल की उम्र के बाद व्यक्ति का भाग्य बुलंदी पर आ जाएगा।

बुध खाना नं. 5 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 1,2, या 4 में हो, या खाना नं. 6 या 12 में शुभ ग्रह हो, तो खाना नं. 4, 6, 7, 8 और 9 के ग्रहों की कारक वस्तुओं पर बहुत अशुभ असर पड़ेगा। व्यक्ति के लड़के को तड़ागी पहनाना चाहिए। बुध के असर को शुभ करने के लिए चांदी की डिब्बी में चावल डालकर रखना शुभ रहेगा।

खाना नं. 5 का बुध पिता के लिए अशुभ होता है। इस अशुभ असर को दूर करने के लिए तांबे का पैसा गले में धारण करना चाहिए। अगर बृहस्पति या चंद्र टेवे में नीच हो, या अशुभ हो, विशेषकर जब चंद्रमा बुध के बाद वाले घरों में हो, तो ऐसे व्यक्ति की जुबान ही उसकी बर्बादी का बहाना बनती है।

उपाय

1. चंद्रमा व सूर्य की वस्तुएं धारण करनी चाहिए।
2. तांबे के पैसे में छेद करके गले में धारण करें।
3. कीकर की दातुन करनी चाहिए।
4. किसी को बुरा ना बोलें, क्योंकि मुंह से निकली बात पूर्ण हो सकती है।
5. मकान आगे से तंग और पीछे से चौड़ा होना शुभ होगा।

दो ग्रहों का फल

बुध + राहु : खाना नं. 5 में बुध + राहु की युति का असर खुद व्यक्ति पर और उसके सबंधियों पर अच्छा ही रहेगा।

बुध + केतु : खाना नं. 5 में बुध + केतु की युति हो और टेवे वाले की 17 साल की उम्र में उसकी बहन के घर लड़का पैदा हो, तो लड़के की लंबी आयु के लिए दान–पुण्य, पूजा–पाठ आदि शुभ फल देंगे।

बुध खाना नं. 6

काल पुरुष की कुंडली के अनुसार छठे घर में बुध राशि कन्या (6) पड़ती है जहां बुध उच्च का होता है। बुध अपने घर में है और फूल का कारक है, इसलिए खाना नं. 6 का बुध एक ऐसा फूल जो जिंदगी में बहार लाए। दूसरा घर चंद्र से प्रभावित है, इसलिए चंद्रमा की जानदार कारक वस्तुओं के अतिरिक्त सब वस्तुओं का सहायक होगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

खाना नं. 6 वाले व्यक्ति के मुंह से निकला वाक्य चाहे अच्छा हो या बुरा, अवश्य पूर्ण होगा। वह स्वयं अपने आप को धनी बनाने वाला व्यक्ति होता है। खेती की जमीन से लाभ, छापाखाने से लाभ एवं कागज के काम से लाभ होगा।

खाना नं. 6 वाला व्यक्ति यदि नया मकान बनवाए और उसका दरवाजा उत्तर की ओर खुले, तो नीच प्रभाव होगा। हकीम या वैद्य हो, परंतु लालची हो तो बर्बाद होगा। उत्तर दिशा में अगर पुत्री की शादी करेगा तो दुखी रहेगा।

खाना नं. 6 के बुध को "गुमनाम योगी और दिल का राजा" कहा गया है।

बुध खाना नं. 6 के समय शुक्र या खाना नं. 2 के ग्रह जैसे भी होंगे, बुध उन जैसा असर देगा। समुद्री सफरों से लाभ होगा।

बुध खाना नं. 6 के समय हर ग्रह का फल दो गुना हो जाएगा। यदि बुध, केतु या मंगल से मंदा हो रहा हो, तो व्यक्ति की 34 साल की उम्र में माता पर असर पड़ेगा। बुध खाना नं. 6 के समय शनि खाना नं. 9 या 11 में हो, तो पत्नी अमीर घराने की होगी।

बुध खाना नं. 6 के समय खाना नं. 1 में सूर्य , बृहस्पति या शनि हो तो यह व्यक्ति के लिए राजयोग होगा, जिससे उसकी दौलत व जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी।

बुध खाना नं. 6 में मंदा हो रहा हो, तो इसका व्यक्ति की बहन या बुआ पर असर मंदा होगा। ऐसे समय अगर शुक्र भी मंदा हो रहा हो, तो दूध से भरा बर्तन वीरान जगह में दबाना चाहिए।

अगर मंदे बुध के समय चंद्रमा टेवे में ठीक बैठा हो, तो बोतल में गंगाजल भरकर वीरान जगह में दबाना चाहिए। अगर मंगल चौथे या आठवें खाने में हो, तो व्यक्ति की मां की मौत छोटी आयु में हो सकती है।

बुध खाना नं. 6 के समय यदि शुक्र खाना नं. 4 में हो और केतु भी अशुभ हो, तो ऐसे व्यक्ति की औलाद 34 साल की उम्र के बाद ही जिन्दा रहेगी। इसके बुरे असर को दूर करने के लिए पत्नी के बाएं हाथ में चांदी का बिना जोड़ का छल्ला पहनाना चाहिए।

बुध खाना नं. 6 के समय चंद्रमा + बृहस्पति खाना नं. 2 में हों या चंद्रमा खाना नं. 2 में और बृहस्पति खाना नं. 11 में हो, तो जवानी में ही व्यक्ति की आंखों पर बुरा असर पड़ सकता है।

उपाय

1. दूध का बर्तन वीराने में दबाएं।
2. पत्नी के बाएं हाथ में चांदी का छल्ला डालें।
3. गंगाजल की बोतल खेती वाली जमीन में दबाएं।
4. नया मकान बनवाएं तो दरवाजा उत्तर दिशा की ओर न रखें।
5. पेशे से डाक्टर, हकीम, या वैद्य हो, तो किसी की बेबसी का लाभ न उठाएं

दो ग्रहों का फल

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

बुध + राहु : खाना नं. 6 में बुध + राहु की युति व्यक्ति के खुद के लिए शुभ होती है और दुश्मन दबकर रहते हैं।

बुध + केतु : खाना नं. 6 में बुध + केतु की युति हो तथा खाना नं. 2 के ग्रहों के कारण केतु मंदा हो रहा हो, तो केतु की कारक चीज़ें यानी लड़के कान, पांव, शरीर के जोड़ आदि पर मंदा असर पड़ेगा। यदि बुध मंदा हो रहा हो, तो बहन, बुआ, अशुभ असर पड़ सकता है।

बुध खाना नं. 7 में

खाना नं. 7 बुध और शुक्र दोनों से प्रभावित होता है। बुध कन्या और खाना नं. 7 में शुक्र की राशि तुला। दोनों ग्रह आपस में मित्र और एक दूसरे के सहायक होते हैं। अतः खाना नं. 7 का बुध दूसरों के लिए अति उत्तम रहे भले ही खुद जातक को बहुत अच्छा फल न दे। सोया बुध (जब पहला खाना खाली होगा) अच्छा फल नहीं देगा। व्यक्ति की कलम में तलवार से अधिक ताकत होगी। व्यक्ति के लिए पत्नी की बहन तक जान निछावर कर दे। हाज़र माल का व्यापार लाभकारी और जबानी सट्टा व्यापार हानिकारक रहेंगे। साझेदारी और मित्रों से हानि का डर।

खाना नं. 7 के बुध को "दुनिया के लिए पारस" कहा है। जिस लड़के के टेवे में बुध खाना नं. 7 में होगा वह दूसरों को तार देगा। ऐसा व्यक्ति अपने दोस्तों या परिचित लोगों की बहुत सहायता करता है। ऐसे बुध के वक्त झगड़ा–फसाद या किसी प्रकार की मुकदमेबाजी से उलझनें पैदा नहीं होतीं। बुध खाना नं. 7 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 1 में हो, तो व्यक्ति को समुद्री यात्राओं से बहुत लाभ प्राप्त होता है।

बुध खाना नं. 7 के समय यदि शनि खाना नं. 3 में हो तो व्यक्ति के ससुराल का खानदान बहुत अमीर होगा। खाना नं. 7 में बुध अपने पक्के घर में होता है, जिस पर शुक्र का भी अधिकार है, इसलिए ऐसा व्यक्ति औरत (पराई) के प्रेम में पड़कर सुख प्राप्त करता है और उसे किसी प्रकार की झंझट भी पैदा नहीं होती। यदि खाना नं. 7 के बुध पर मंगल–केतु आदि की दृष्टि हो या फिर राशि के हिसाब से बुध खराब हो रहा हो तो व्यक्ति की बहन, बुआ, बेटी तथा साली दुःखी रहें।

बुध खाना नं. 7 के समय यदि केतु खाना नं. 1 या 8 में हो, तो व्यक्ति की साली और व्यक्ति का भाई व्यक्ति की औरत के लिए उलझनों का कारण बनेंगे।

बुध खाना नं. 7 के समय खाना नं. 10 या खाना नं. 1 में पड़े ग्रह मित्र हों या शत्रु, इन ग्रहों का असर मंदा नहीं होगा। शुक्र और बुध अपना–2 उत्तम फल देंगे।

बुध खाना नं. 7 के समय अगर बुध मंदा हो और बृहस्पति खाना नं. 9 में हो, तो व्यक्ति का गृहस्थ जीवन खराब रहेगा, पर व्यापार पर कोई अशुभ असर नहीं होगा।

उपाय

1. किसी से साझा व्यापार न करें।
2. सट्टा व्यापार न करें
3. साली को साथ न रखें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

दो ग्रहों का फल

बुध + शनि : खाना नं. 7 में बुध + शनि की युति वाला व्यक्ति शराबी कबाबी होता है। स्वभाव से खुदगर्ज, दूसरों की नेकी को भुला देने वाला होता है।

बुध + राहु : खाना नं. 7 में बुध + राहु की युति हो और उन पर शत्रु ग्रहों की दृष्टि न हो, तो दोनों ग्रह अपना–2 शुभ फल देते हैं।

बुध खाना नं. 8 में

खाना नं. 8 शनि और मंगल से प्रभावित होता है। खाना नं. 8 में कोई ग्रह शुभ नहीं होता। बुध मंगल के घर में शनि का फल देगा। बुध खाना नं. 8 में नीच ग्रह जैसा फल देता है। बीमारी, धन की हानि व दातों और नाड़ियों से संबंधित रोग हो। बुध खाना नं. 8 के समय कुंडली में राहु मंदा हो तो व्यक्ति एक जिंदा लाश की तरह होता है।

खाना नं. 8 के बुध को बीमारी और जहमत" कहा गया है। ऐसा बुध, जो खुफिया तबाही का कारण बने। कई जगह इस बुध को मुर्दा फूल या मुर्दे पर चढ़ाया जाने वाला फूल भी कहा गया है। कई बार जातक के कारोबार या नौकरी में रुकावटें व खराबियां पैदा करता है। जब वर्षफल में बुध खाना नं. 8 में आ रहा हो, तो जन्मदिन के 34 दिन पहले और 34 दिन बाद मिट्टी के बर्तन में देसी खांड, या शहद भरकर वीरान जगह में दबाएं। लेकिन यदि यह समय गुजर चुका हो, तो तांबे की गड़वी में साबुत मूंग भरकर बहते दरिया में बहाएं अथवा नित्मबों पर काले रंग का सुरमा लगाएं। इसके अलावा छत पर बारिश का पानी या दूध का मटका भी इस जहर को कम करता है।

वास्तव में खाना नं. 8 में बुध सबसे ज्यादा अशुभ होता है। इस घर में अकेला बैठा बुध व्यक्ति को कभी अच्छा असर नहीं डालता। बुध खाना नं. 8 के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो, तो बुध का जहरीला असर व्यक्ति की 34 साल तक की उम्र तक रहता है और यदि व्यक्ति बुध की कारक चीज़ो के काम करे तो इसका असर व्यक्ति को तबाह कर सकता है। इसके अलावा इस बुध का असर व्यक्ति की बुआ, बहन व बेटी पर भी पड़ सकता है।

यदि बुध खाना 8 के समय खाना नं. 2 में बृहस्पति हो तो व्यक्ति की 16 साल से 21 साल की उम्र तक व्यक्ति के पिता की उम्र तथा दौलत खतरे में रहेगी, क्योंकि 8वें घर का बुध अपनी वक्र दृष्टि से दूसरे घर को देखता है और अपना जहर उसमें डाल देता है।

बुध खाना नं. 8 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 2 में हो, तो बुध के बुरे असर के समय चंद्रमा की चीज़ें चावल, दूध आदि उस ग्रह के रिश्तेदारों को दें, जो वर्षफल के अनुसार खाना नं. 2 में आ जाए और बुध भी उस समय खाना नं. 8 में हो। चंद्रमा खाना नं. 2 में हो और व्यक्ति के 34 वें साल में केतु खाना नं. 2 में आ जाए और बुध उस वक्त खाना नं. 8 में बैठ गया हो, तो चंद्रमा की वस्तुएं दूध, खीर आदि केतु की वस्तु यानी कुत्ते को या बुध के रिश्तेदार बेटी, भतीजे आदि को दें। इसके अलावा दूध के बने 24 पेड़े, जिसमें खांड न डाली गई हो, कुत्ते को दें या नदी में बहाएं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खाना नं. 8 में मंदे बुध के समय यदि खाना नं. 6 खराब हो और बृहस्पति के अलावा सभी ग्रहों के असर में बुध का असर शामिल हो, तो उन्हें चक्कर में डाल देगा।

बुध खाना नं. 8 के समय यदि नर ग्रह खाना नं. 6 में हो, तो व्यक्ति की माता की आयु कम होती है या फिर व्यक्ति का खुद का और उसकी माता का हाल मंदा होता है। इसका अशुभ असर जातक की औलाद तथा मामाओं पर भी पड़ सकता है।

बुध खाना नं. 8 के समय यदि खाना नं. 12 खाली हो, तो व्यक्ति को पुट्ठो की बीमारियां हो सकती हैं।

उपाय

1. तांबे की गड़वी में साबुत मूंग भरकर ऊपर से टांका लगवाकर पानी में बहाएं।
2. किसी हिजड़े को सफेद कमीज़ और काली जुरावें दें।
3. छत पर दूध या बारिश का पानी रखें।
4. बेटी की नाक में चांदी डलवाएं।
5. लड़की को लाल कपड़े न पहनने दें।
6. सिर की तरफ सौंफ रख कर सोएं।
7. मिट्टी की कुजी में शहद भरकर वीराने/शमशान में दबाएं।

नोट : जन्म दिन से पहले और बाद वाला उपाय बार–बार करें।

दो ग्रहों का फल

बुध+राहु : खाना नं. 8 में बुध + राहु की युति के समय इसका बुरा असर टेवे वाले पर ही पड़ता है।

बुध खाना नं. 9 में

खाना नं. 9 हर प्रकार से बृहस्पति से प्रभावित होता है और बृहस्पति बुध से शत्रुता रखता है। अतः खाना नं. 9 में बुध नीच प्रभाव या फल देगा। मन की शांति भंग, बिना बात के तोहमत लगना, खाना नं. 9 में बुध का मंदा होना दर्शाते है। बुध की कारक वस्तुओं को साथ रखना या घर में कायम करना बुध को और भी मंदा करेगा। किसी साधु द्वारा दिया गया यंत्र–ताबीज, विभूति आदि पास रखना भी बुध को मंदा करेगा।

लाल किताब के असली संस्करणों में खाना नं. 9 के बुध को "जादू का भूत" कहकर पुकारा गया है। अगर किसी ग्रह के साथ हो, तो "कोढ़ी व राजा" यानी कोढ़ी के साथ राजा कहकर भी पुकारा गया है। इस घर में अकेला बुध इतना बुरा नहीं होता जितना किसी अन्य ग्रह के साथ हो जाता है।

खाना नं. 9 के बुध की हालत को पूरी तरह से समझने के लिए खाना नं. 11 के ग्रहों देखना बहुत जरूरी हो जाता है। अगर 11 का घर खाली हो, तो खाना नं. 9 के बुध को "बेशरम–बेहया लौण्डी" कहकर पुकारा गया है। ऐसे में व्यक्ति अपने बाप के नाम को बदनाम करेगा।

बुध खाना नं. 9 के समय यदि खाना नं. 1, 3, 6, 7, 9 और 11 वें घरों में चंद्रमा, केतु या बृहस्पति हों

Future Point

तो बुध शुभ फल देता है। धन दौलत में बरकत और मन की खुशी बरकरार रहती है।

खाना नं. 9 का बुध वैसे भी मंदा होता है और यदि किसी ग्रह की दृष्टि से मंदा हो रहा हो तो व्यक्ति की पैदाइश में कोई गड़बड़ी और इसकी निशानी होगी व्यक्ति की जुबान की तुतलाहट। बुध खाना नं. 9 के समय नौवें भाव की राशि के स्वामी का फल बर्बाद हो जाता है। इस जहर को दूर करने के लिए लोहे की गोली लाल रंग कर के पास रखनी चाहिए।

बुध खाना नं. 9 के समय यदि खाना नं. 11 में चंद्र या केतु न हो, तो यह बुध जीवन में हर कदम पर धोखा देता है। बुध खाना नं. 9 के समय यदि अकेला बृहस्पति खाना नं. 8, 6, 10 या 11वें घर में हो, तो ऐसे व्यक्ति की आयु कम हो सकती है। व्यक्ति की औलाद व स्त्री का फल भी मंदा ही रहेगा। बुध खाना नं. 9 के समय चंद्रमा व बृहस्पति दोनों खाना नं. 5, 6 या 7 में हों तो व्यक्ति की आयु लंबी होती है मगर औलाद और गृहस्थ जीवन खराब रहता है।

बुध खाना नं. 9 में हो तथा वर्षफल में बुध खाना नं. 11 में आ जाए और व्यक्ति किसी साधु–फकीर से ताबीज, यंत्र या विभूति लेकर रखे या शरीर पर धारण करे, तो 43 दिन के अंदर –2 पूर्ण रूप से बर्बाद हो जाएगा।

उपाय

1. ताबीज, यंत्र, शंख, विभूति आदि चीज़ें पास न रखें।
2. बहन, बुआ, साली यानी बुध के कारक रिश्तेदारों को अपने पास न रखें
3. नया कपड़ा पानी के छीटें देकर पहनें।
4. बृहस्पति, और चंद्रमा की वस्तुएं धारण करें।
5. बृहस्पति के रंग पीले रंग की टोपी या पगड़ी धारण करें।
6. नाक छेद करवाएं 101 घंटे या 43 दिन के लिए।
7. घर की दहलीज में चांदी दबाएं।
8. मिट्टी के कुओं में खुम्ब भरकर मंदिर में रखें।
9. बाप यानी बृहस्पति से संबंध अच्छे रखें।
10. गले में तांबे का पैसा धारण करें।
11. हरा रंग इसतेमाल न करें।
12. किसी भी तरह के कागज को बिना पढ़े दस्तखत न करें।
13. फिटकरी से दांत साफ करते रहना शुभ रहेगा।

दो ग्रहों का फल

बुध + शनि : खाना नं. 9 में बुध + शनि की युति वाले व्यक्ति को 34–35वें साल में बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा।

बुध + राहु : खाना नं. 9 में बुध + राहु की युति होने से पिता (बृहस्पति) पर बुरा प्रभाव पड़ता है। स्वयं

Future Point

व्यक्ति के लिए भी यह युति शुभ नहीं होती।

उपरोक्त युतियों के समय इनका जहर दूर करने के लिए दरिया के पानी से धोया कपड़ा दिन के समय इस्तेमाल करना चाहिए।

बुध खाना नं. 10 में

खाना नं. 10 हर प्रकार से शनि से प्रभावित होता है। बुध यहां शनि से मित्रता रखे, परंतु शनि बुध से मित्रता का व्यवहार नहीं करता, क्योंकि शनि एक चालाक ग्रह है और बुध की तासीर को भली भांति पहचानता है। परंतु बुध इस घर में बैठा यह समझता है कि शनि का जी हजूरीया बनकर काम निकलवालेगा। मतलब यह कि बुध खाना नं. 10 वाला व्यक्ति खुदगर्ज और जी हजूरिया किस्म का होता है।

शराब, मांस, अंडे का प्रयोग करने से शनि नीच होगा और मान प्रतिष्ठा में कमी का कारण बनेगा।

खाना नं. 10 के बुध को "नास्तिक या भूत की खुराक" या ''खुश गुज़रान" यानी जी हजूरी करके खुश रहने वाला भी कहा गयाहै। ऐसा व्यक्ति चालबाज़ और चालाक होता है। ऐसे व्यक्ति की जुबान का शब्द ऐसा मीठा होता है कि वह दूसरों को अपने चक्कर में फंसाने में माहिर होता है।

बुध खाना नं. 10 के समय चंद्रमा खाना नं. 1, 3, 4 या 5 में हो, तो तिज़ारत आदि में व्यक्ति के लिए शुभ रहे, लेकिन परिवार की ओरतों और बच्चों के लिए अशुभ।

बुध खाना नं. 10 के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो, तो व्यक्ति समुद्री यात्राओं से धन कमाए और हुनरमंद हो, ऐसा व्यक्ति बेशर्म स्वभाव का नहीं होता।

बुध खाना नं. 10 के समय खाना नं. 2 में शुभ ग्रह हों तो बुध दो गुणा शुभ फल देगा। घर में पड़े खाली घड़े भी मोतियों से भर दे।

बुध खाना नं. 10 के समय यदि मंगल या केतु की दृष्टि में हो या अपनी नीच राशि में हो, तो ऐसे व्यक्ति को जुबान का चस्का यानी बहुत ही स्वादिष्ट चीज़ें खाने की आदत होती है जो बुध के मंदा होने की निशानी है। इन चीज़ों का असर व्यक्ति के लिए अशुभ होगा

बुध खाना नं. 10 में मंदा हो रहा हो या शराब आदि का इस्तेमाल करके मंदा कर लिया जाए, तो सांप का फन साबित होगा। पिता के जीवन का कोई भरोसा नहीं और व्यक्ति की खुद की नज़र का भी एतबार नहीं होता। दसवें घर के बुध के समय 36 से 58 साल तक की उम्र तक व्यक्ति का हाल मंदा रहेगा।

उपाय

1 टेवे में शनि नीच हो, तो मंदिर में दूध, चावल व चांदी चढ़ावें।
2. अपनी रोटी से कौवे को रोटी डालें।
3. शराब, मांस, अंडे से सख्त परहेज रखें।
4. शेर मुख भवन रहने की बजाए कारोबार के लिए इस्तेमाल करें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

दो ग्रहों का फल

बुध + राहु : खाना नं. 10 में बुध + राहु की युति व्यक्ति के खुद के लिए शुभ है, लेकिन ऐसा व्यक्ति दूसरों के लिए बेवकूफ दोस्त सिद्ध होता है।

बुध खाना नं. 11 में

खाना नं. 11 शनि व बृहस्पति से प्रभावित होता है और बुध यहां पर आकर दोनों ग्रहों के प्रभाव में। बुध बृहस्पति का शत्रु है। वह शनि से मित्रता रखे परंतु शनि बुध से मित्रता का व्यवहार न करे। इसलिए बुध इस घर में नीच फल देगा। व्यक्ति की 34 वर्ष की आयु तक सब काम अपूर्ण रहेंगे। बुध और बृहस्पति की शत्रुता के कारण हर काम मुर्खतापूर्ण हो। धन की बर्बादी, मन अशांत और मान हानि का भय रहे। सख्त मेहनत करने पर भी मन को शांति नसीब नहीं होती।

कई पुराने लेखकों ने खाना नं. 11 के बुध को दौलतमंद के साथ–2 "उल्लू का पट्ठा" और "कोढ़ी" कहकर भी पुकारा है। इस घर के बुध को 34 साल के बाद हीरा भी कहा है। बुध खाना नं. 11 के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो तो व्यक्ति हुनरमंद और शर्मीला होता है।

बुध खाना नं. 11 के समय यदि खाना नं. 3 खाली हो और वर्षफल के अनुसार बुध जब खाना नं. 3 में आएगा, तब व्यक्ति के भाग्य का पूरी तरह से उदय कर देगा और व्यक्ति उस वर्ष अकस्मात धन प्राप्त कर सकता है।

खाना नं. 11 का बुध व्यक्ति को 34 वर्ष की उम्र तक मंदबुद्धि रखता है इसलिए व्यक्ति की 34 साल की उम्र तक इस खाने का बुध बाप (बृहस्पति) शनि (चाचा) और शनि की कारक वस्तुओं के अलावा चंद्रमा यानी माता पर भी अशुभ प्रभाव डालता है, लकिन 34 साल की उम्र के बाद बुध का प्रभाव खुद ब खुद ठीक होना शुरू हो जाता है।

उपाय

1. हरे रंग की वस्तुओं से दूर रहें।
2. विधवा बहन, बुआ, मासी आदि को पास रखकर उसका पालन न करें।
3. तांबे का पैसा छेद करके गले में धारण करें।
4. पीतल के बर्तन में गंगाजल भरकर घर में स्थापित करें।
5. किसी साधु–फकीर से ताबीज, यंत्र, विभूति आदि न लें।

दो ग्रहों का फल

बुध + राहु : बुध के साथ राहु की युति खाना नं. 11 में व्यक्ति के खुद के लिए तो शुभ है, लेकिन दोस्त व मित्रों के लिए ठीक नहीं। ऐसे समय में व्यक्ति की बहन अमीर तो हो सकती है, लेकिन उसके विधवा होने या तलाक की संभावना बन सकती है। बुध + राहु के असर को दूर करने के लिए फौलाद का बेजोड़ छल्ला धारण करना एक उत्तम उपाय है।

बुध + केतु : खाना नं. 11 में बुध + केतु की युति के समय दोनों ही ग्रह अशुभ फल देते हैं। बुध की

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

कारक चीज़ों, बहन, बुआ, साली आदि और केतु की कारक चीज़ें, बेटों, पांवों जोड़ों या कानों पर बुरा असर पड़ सकता है।

बुध खाना नं. 12 में

खाना नं. 12 बृहस्पति का घर है। बुध इस खाने में नीच का फल देता है, क्योंकि कालपुरुष की कुंडली के अनुसार यहां बुध की नीच राशि मीन होती है। बुध खाना 12 वाला व्यक्ति अपनी बात से मुकरने वाला होता है।

लाल किताब में खाना नं. 12 के बुध को "नेक तबीयत का मालिक लेकिन किस्मत के फेरवश रात की नींद उज़ाड़ने वाला" कहा गया है।

बुध खाना नं. 12 के समय यदि बृहस्पति या शनि खाना नं. 2, 3 या 12 में अकेला हो तो यही बुध परिवार और धन–दौलत से संबंधित अच्छा फल देगा। अकेला बृहस्पति खाना नं. 2 या 12 में (बुध के साथ) हो, तो यही बुध व्यक्ति को शोहरत, मान और इज्जत दिलाएगा, मगर धन की हानि होती रहेगी। अगर शनि और बृहस्पति इकट्ठे खाना नं. 7 में हों तो बहन, बुआ आदि को अपने साथ रखना बुरा फल देगा।

बुध खाना नं. 12 वाला व्यक्ति आमतौर पर मतलबपरस्त और झूठ बोलने वाला होता है। कई बार अपने किए वायदे से मुकर भी जाता है। वह अपने दिमाग में समाई धन की इच्छा पूरी करने के लिए पूरी ताकत लगा देता है। बिना यह सोचे कि इस बात से उसे उलझन होगी या लाभ। आदमी झूठ बोले, वायदे से मुकरे, शराब का आदी हो जाए यह खाना नं. 12 के बुध के मंदे होने की निशानी है। अगर औरत और मर्द दोनों के टेवे में बुध खाना नं. 12 में हो, तो व्यक्ति की औरत दुःखों की मारी हुई होगी।

बुध खाना नं. 12 वाला व्यक्ति यदि हवाई काम, सट्टा, कलम का काम या प्रिंटिंग आदि का कारोबार करेगा तो उसे बुरा फल ही मिलेगा और साथ ही बदनामी भी।

बुध खाना नं. 12 वाला व्यक्ति यदि 25वें साल में शादी करेगा तो पत्नी या पिता बर्बाद होगा। घर के लोग या धन बर्बाद होगा और व्यक्ति का हर तीसरा साल अशुभ साबित होगा। जिस व्यक्ति के खाना नं. 12 में बुध हो उसके सिर के ढ़ांचे, जुबान या नाड़ियों आदि में कोई नुक्स जरूर होता है।

खाना नं. 12 के बुध के साथ यदि मन्दे राहु का संबंध बन जाए तो जेलखाने या पागलखाने तक पहुंचने की नौबत आ जाती है। चोरी, गबन, बेईमानी, धोखाफरेब आदि व्यक्ति की नस–2 में बसे होते हैं जो उसकी बेइज्जती का बायस बन सकते हैं।

बुध खाना नं. 12 के समय यदि मंगल छठे घर में हो (या वर्षफल में सूर्य खाना नं. 6 में आए) तो माता, मामा आदि दुखी होंगे। माता की आयु भी कम हो सकती है। यदि बृहस्पति खाना नं. 6 में हो तो पिता की उम्र कम और धन बर्बाद होगा। मंगल खाना नं. 6 में हो तो भाई ही जातक के खून के प्यासे होंगे। यदि राहु खाना नं. 6 में हो तो ससुराल खानदान बर्बाद और यदि केतु हो, तो औलाद के लिए बुरा होगा। औलाद की मौतें भी हो सकती है।

बुध खाना नं. 12 के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो तो व्यक्ति कमअक्ल और जल्दबाज होता है। यदि

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

ऐसा व्यक्ति मंदिर जाता रहे तो बुध के मंदे असर में कमी आ सकती है।

बुध खाना नं. 12 के समय यदि राहु खाना नं. 8 में हो तो व्यक्ति को पागलखाने या जेलखाने जरूर जाना होगा। ऐसे व्यक्ति को मंदिर में सजदा करना चाहिए।

बुध खाना नं. 12 के समय चंद्रमा खाना नं. 6 में हो तो मां की किस्मत मंदी होगी। व्यक्ति खुद या उसकी मां आत्महत्या तक कर सकती है। यदि शनि खाना नं. 6 में हो तो शनि के कारोबार या रिश्तेदारों आदि पर अशुभ असर पड़ सकता है। यदि राहु खाना नं. 2 में हो तो ससुराल में किसी की मौत किसी हादसे में हो सकती है। यदि सूर्य खाना नं. 6 में हो तो राजदरबार से आमदन या व्यवसाय में अड़चनें पैदा हो सकती हैं।

बुध खाना नं. 12 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 5 और शनि खाना नं. 9 में हो तो इसका अजीब फल मिलता है। ऐसे में व्यक्ति यदि हरे रंग की गाड़ी खरीदे और उसमें खुद, उसके घर व ससुराल के रिश्तेदार सफर कर रहे हों तो उस मोटर का ऐसा हादसा होगा कि उसका अगला हिस्सा चकनाचूर होकर जमीन से लग जाएगा। ऐसी हालत में व्यक्ति को बुध खाना 12 के सभी उपाय कर लेने चाहिए। वर्ना शरीर का कोई हिस्सा बर्बाद होने की संभावना बन सकती है।

उपाय

1. केसर का तिलक लगाएं।
2. बुध राहु से प्रभावित हो तो कुत्ता पालें।
3. मंदिर में सज़दा करें, इसकी आदत बनाएं।
4. खाली घड़ा पानी में बहाएं।
5. स्टील का बिना जोड़ का छल्ला धारण करें, इसे जंग नहीं लगना चाहिए।
6. यदि चंद्रमा खाना नं. 2 में हो तो बिना बर्तन पानी (स्पंज में) रखना शुभ रहेगा।
7. बहनोई, साला व दोहता से उपाय के तौर पर सलाह लें।
8. नाक छेद करवाना (43 दिन के लिए) अति उत्तम रहेगा।

दो ग्रहों का फल

बुध + शनि : खाना नं. 12 में बुध + शनि की युति शुभ फल नहीं देती। यह पिता की आयु के लिए हानिकारक है और शनि की वस्तुएं मशीनरी, जहर और शराब आदि पिता की मृत्यु का कारण बन सकती हैं। अगर बुध + शनि शुभ हों तो व्यक्ति के लिए शुभ रहेंगे।

बुध + राहु : खाना नं. 12 में बुध + राहु की युति हो तो बिजली का कारोबार व्यक्ति को बर्बाद करे। साले, नाना–नानी आदि की बर्बादी का कारण भी बन सकती है। बारहवें घर में राहु और बुध होने से ससुराल खानदान बेऔलाद भी हो सकता है। इसके निवारण के लिए कच्ची मिट्टी की 100 गोलियां बनाकर छांव में सुखाएं और रोजाना एक गोली धर्म स्थान पर रखें। उपाय 100 दिन करें। धर्मस्थान बदला जा सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

बुध + केतु : खाना नं. 12 में बुध + केतु की युति के समय दोनों ग्रह मंदा फल देंगे। 17 वें साल या 34 वें साल में टांग, कमर, पांव, रीढ़ की हड्डी, कान आदि पर बहुत बुरा असर पड़ सकता है।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. बुध के कारक रिश्तेदारों की व्याख्या करें।
2. लाल किताब के अनुसार खाना नं. 12 के बुध को क्या कहा गया है?
3. "भाग्य गोलों में लिप्टा हुआ" व्याख्या करें।
4. बुध के मनसूई ग्रह लिखें। अगर बुध दूसरे खाने में हो, तो उपाय किस प्रकार किया जाएगा?
5. बुध को अलग–2 घरों में अलग–2 नामों से पुकारा गया है। तशरीह करें।
6. पापी ग्रहों से प्रभावित बुध क्या–2 बीमारी दे सकता है।
7. बुध के पक्के घरों के बारे में लिखें। व्याख्या करें कि खाना नं. 3 बुध का होते हुए भी किस अन्य ग्रह से प्रभावित है।
8. सूर्य बुध के साथ सातवें घर में हो, तो किस ग्रह की कारक वस्तु पर प्रभाव पड़ेगा? व्याख्या करें।
9. बुध खाना नं. 12 के समय क्या उपाय किये जाते हैं? उपाय करने का ढंग लिखें।
10. बुध – शुक्र के साथ खाना नं. 9 में हो, तो क्या प्रभाव होगा?

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खण्ड 7 – शनि

शनि

मनसूई ग्रह : शनि यदि केतु जैसा – शुक्र + बृहस्पति
शनि यदि राहु जैसा – मंगल + बुध

शनि, पापी ग्रहों का सरताज है। राहु और केतु इसके सेवक है। अगर शनि, राहु और केतु टेवे में मिल जाएं, तो खतरनाक योग को जन्म देते हैं। शनि शुक्र का प्रेमी और शुक्र इसकी प्रेमिका है। अगर बुध इनके साथ (शनि–राहु–केतु) हो तो इन्हीं के जैसा असर दे।

काला रंग, लोहार, मिस्त्री, मजदूर, लोहे के औजार, जल्लाद, सर्जरी करने वाला डाक्टर, चालाक तेज नजर वाला मगरमच्छ, सांप, नशीली वस्तुएं, बादाम, नारियल एवं जूता आदि इसकी वस्तुएं हैं।

- घर की दीवारें शनि का प्रतीक हैं तो राहु छत का प्रतीक है।
- सरसों का तेल शनि की वस्तु परंतु सरसों के बीज राहु की वस्तु हैं।
- राहु के गंदे विचार शनि की शरारतों को जन्म देते हैं।
- राहु के बिना शनि और शनि के बिना राहु नकारा है।
- केतु भी शनि के उपदेश का पालन करता है, परंतु राहु बिल्ली और केतु कुत्ते का रूप है।
- शनि की अच्छाई या बुराई राहु और केतु पर आधारित है।
- शनि सांप है, तो बुध उसकी बाम्बी यानी सांप के रहने की जगह।
- बुध का खोल ऊपर शनि का चमड़ा यानी ढ़ोल, सारंगी, तबला आदि।
- शनि के धन को स्त्री (शुक्र) कहते हैं। इसके अलावा शुक्र गोबर भी है और शनि रूपी बिच्छू इसी में पैदा होता है।

विशेष

1. शनि जब खाना नं. 8 का स्वामी बन रहा हो, तो जिस घर में बैठेगा उस घर को नुकसान पहुंचाएगा।
2. शराब पीना, जुआ खेलना, झूठ बोलना, इश्कबाजी करना आदि शनि को नीच करते हैं।
3. शनि पर यदि सूर्य की दृष्टि पड़े तो टेवे में शुक्र खराब होता है यानी स्त्री बीमार होती है या उसे क्लेश।
4. शनि पर शुक्र की दृष्टि हो, तो धन की हानि होती है, परंतु शुक्र पर शनि की दृष्टि से लाभ प्राप्त होता है।
5. राहु पहले के घरों में, शनि बीच में और केतु बाद के घरों में हो, तो शनि के फल को खराब करते हैं।
6. टेवे में शनि मंदा हो और वर्षफल में भी मंदे घरों में आ जाए, तो 9, 12, 27 व 36वें वर्षों में भारी हानि करता है।
7. शनि चंद्रमा या राहु के साथ खाना नं. 12 में हो, तो विषैला प्रभाव बीमार करे, परंतु यदि खाना नं. 2 में शनि के मित्र ग्रह हों तथा टेवे में मंगल और शुक्र कायम हों तो बिमार को भी ठीक करे।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

8. शनि बृहस्पति के घरों 2, 9, 12 में कभी मंदा असर नहीं करता। परंतु खाना नं. 3 और 8 में मंगल की तरह व्यवहार करे। खाना नं. 4 में चंद्रमा की हानि करता है। खाना नं. 8 का शनि दुर्घटनाओं का कारण बनता है।
9. खाना नं. 9 में शनि उत्तम फल देता है बशर्ते खाना नं. 2 में मित्र ग्रह हों।
10. शनि और चंद्रमा का टकराव आंखों का आपरेशन करवा देता है।
11. यदि शनि सूर्य से पहले के घरों में बैठा हो, तो अच्छा फल देता है।
12. खाना नं. 1 में तीन गुणा नीच फल और खाना नं. 3 में दो गुणा नीच फल देता है।

टेवे में शनि मंदा होने की पहचान

1. घर गिर जाए।
2. भैंस आदि मरने लगें।
3. आग से नुकसान हो।
4. जूतियां चोरी होना।
5. कान की बीमारी खांसी और आंखों की रोशनी कम होना।
6. शराब, मांस का अधिक मात्रा में प्रयोग शुरू कर देना और झूठ बोलना।
7. इश्कबाजी करना।

यह घटनाएं टेवे के अनुसार और वर्षफल में शनि के मंदा होने पर भी घट सकती हैं।

शनि खाना नं. 1 में

पहला घर सूर्य + मंगल से प्रभावित होता है। मंगल सूर्य का मित्र और शनि का शत्रु है। शनि खाना नं. 1 में होने पर खाना नं. 3, 7 व 10 खाली हों, तो शनि उत्तम प्रभाव देता है।

राहु या केतु में से कोई ग्रह खाना नं. 7 में हो, तो खाना नं. 1 का शनि अच्छा माना जाता है। शनि खाना नं. 1 के समय व्यक्ति को 48 वर्ष की उम्र तक मकान नहीं बनवाना चाहिए।

खाना नं. 1 में अगर मेष राशि में शनि नीच का हो, तो अत्यधिक बुरा हो जाता है। इस हालत में व्यक्ति के जन्म से पूर्व उसके घर में कितनी भी संपदा हो, जन्म के पश्चात धन की हानि होती रहती है। यदि टेवे में बुध मंदा हो, तो शिक्षा अधूरी रह जाती है।

शनि खाना नं. 1 में हो और खाना नं. 10 में शनि का शत्रु ग्रह हो, तो व्यक्ति आलसी, दरिद्र, व बीमार रहता है, अन्यथा शक्की मिजाज होता है। खाना नं. 4 में मंगल हो तो जद्दी जायदाद नष्ट करता है। मंगल खाना नं. 6 या 12 में हो, तो धन संपत्ति अधिक रहे। यदि व्यक्ति के शरीर पर बाल अधिक हो तो निर्धनता देते हैं। खाना नं. 7 में कोई ग्रह हो तो तीन गुना मंदा फल मिले। अगर सूर्य खाना नं. 7 में हो, तो राजदरबार खराब हो।

शनि खाना नं. 1 के समय यदि खाना नं. 4 में सूर्य, चंद्रमा, मंगल या राहु हो, तो इस शनि का फल 3 गुणा मंदा फल होगा।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

शनि खाना नं. 1 के समय यदि बुध खाना नं. 8 में हो तब भी दोनों ग्रहों के टकराव के कारण व्यक्ति की शिक्षा अधूरी रह जाती है। यदि बुध खाना नं. 7 में हो, तो केतु का असर देगा यानी व्यक्ति के बाद भाई पैदा होगा बहन नहीं। ऐसे में अगर टेवे में चंद्रमा अशुभ न हो, तो व्यक्ति के मां–बाप के पास धन की कमी नहीं होगी।

शनि खाना नं. 1 के समय केंद्र के घरों यानी 1, 4, 7 और 10 में शनि के शत्रु ग्रह हों, तो ऐसी हालत में व्यक्ति के जन्म से घर की आर्थिक स्थिति पर ऐसा बुरा असर पड़ेगा कि घर का सब कुछ नीलाम करवा देगा और व्यक्ति की शिक्षा भी संपूर्ण नहीं हो पाएगी। शनि को शुभ करने के लिए जमीन में सुरमा दबाना चाहिए या बड़ के दरख्त की जड़ में दूध डालकर उसका तिलक करना एक उत्तम उपाय है।

शनि खाना नं. 1 के समय जब टेवे में राहु केतु मंदे हों, या खाना नं. 7 में कोई भी ग्रह हो, तब भी शनि तीन गुणा मंदा ही माना जाता है जिसके कारण व्यक्ति की शिक्षा, माता, पत्नी और दौलत पर बुरा असर पड़ता है। यदि बुध खाना नं. 12 में या खाना नं. 8 में हो, तो व्यक्ति को खानदानी कामों में असफलता प्राप्त होगी।

शनि खाना नं. 1 के समय सूर्य खाना नं. 10 या 11 में हो और मंगल मंदा हो, तब भी व्यक्ति की किस्मत बहुत खराब होती है यदि मंगल बद हो, तो ऐसा व्यक्ति चोर, दगाबाज तथा झगड़ालू तबीयत का हो सकता है। इसके अलावा व्यक्ति की औलाद, आमदनी और नज़र पर भी इसका खराब असर पड़ सकता है।

उपाय

1. जमीन में सुरमे की डली दबाएं।
2. सरसों का तेल जमीन पर छिड़कें।
3. मांगने वाले को चिमटा, तवा व अंगीठी दान में देने चाहिए।
4. धन के लिए बंदर पालें।

शनि खाना नं. 2 में

खाना नं. 2 शुक्र व बृहस्पति से प्रभावित होता है। शनि खाना नं. 2 में शुभ फल देता है। खाना नं. 6, 8 व 12 के ग्रहों को ध्यान में रखना चाहिए। शनि खाना नं. 2 के समय चंद्रमा शुभ हो, तो हर प्रकार से शुभ परिणाम मिले, अगर चंद्रमा खाना नं. 11 में हो, तो व्यक्ति मान प्रतिष्ठा वाला होगा।

शनि खाना नं. 2 के समय खाना नं. 5, 9, 10 व 11 में कोई भी ग्रह हो, तो व्यक्ति उदासीन तबीयत का होता है। बृहस्पति खाना नं. 4 में हो, तो शक्ति तीक्ष्ण बुद्धिवाला, बृहस्पति खाना नं. 10 में हो, तो ईर्ष्यालु कंजूस होगा। सूर्य + शनि या शुक्र + बुध टेवे में इकट्ठे हों, तो मंगल बद होगा 31 साल तक बीमारी गले पड़ी रहे। अगर राहु खाना नं. 8 में हो तो शनि, राहु से शत्रुता करेगा, इसलिए ससुराल पर बुरा प्रभाव पड़े। यदि सूर्य खाना नं. 12 में होगा तो व्यक्ति जुआ खेलने वाला।

शनि खाना नं. 2 के समय यदि शरीर के रोयों से तीन बाल निकलें, तो व्यक्ति ईश्वरभक्त व पूजापाठी

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

होगा। व्यक्ति को माथे पर तेल लगाना अशुभ फल देगा, दूध का तिलक लगाना चाहिए। व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक रहेगा और वह स्वयं बुद्धिमान होगा।

शनि खाना नं. 2 के समय यदि बुध खाना नं. 12 में हो और टेवे वाले के यहां कन्या का जन्म हो और उसका पालन टेवे वाला अपने धन से करे, तो अशुभ होगा। शादी के बाद वही कन्या ससुराल वाले के लिए अमृत कुण्ड साबित होगी।

खाना नं. 2 बृहस्पति का पक्का खाना होने के कारण इसमें बैठे शनि को "गुरुशरण" भी कहा गया है। शनि खाना नं. 2 के समय यदि खाना नं. 7 में शुक्र हो, तो ऐसा व्यक्ति देखने में चाहे प्रभावशाली न हो और बुद्धू लगे, मगर शक्ति और अक्ल से बहुत बलवान होता है।

शनि खाना नं. 2 के समय व्यक्ति को मकान बनाना या खरीदना शुभ फल देता है। यदि केतु खाना नं. 8 में हो, तो व्यक्ति मासूम और बच्चों जैसी भोली बातें करने वाला होता है। यदि बृहस्पति खाना नं. 11 में हो तो व्यक्ति इरादे का कच्चा और मुर्दादिल तबीयत का मालिक होता है।

शनि खाना नं. 2 के समय यदि खाना नं. 8 में सूर्य, बुध और बृहस्पति हों तो ऐसे व्यक्ति का मन उदासी से भरा रहता है। यदि अकेला सूर्य खाना नं. 8 में हो, तो ऐसे व्यक्ति पर झूठे लांछन लगने का भय रहता है।

शनि खाना नं. 2 के समय यदि राहु भी साथ ही हो, तो ऐसे व्यक्ति के बाएं हाथ में कई बार शेष नाग का निशान भी पाया जाता है। ऐसी हालत में यह शनि इच्छाधारी सांप का काम करता है और व्यक्ति को तारने वाला होता है।

उपाय

1. माथे पर तेल की बजाए दूध या दही का तिलक लगाना शुभ फल देगां।
2. भूरे रंग की भैंस पालना लाभकारी रहेगा।
3. यदि सेहत खराब हो, तो राहु से संबंधित वस्तुओं का उपाय करें।
4. नंगे पांव मंदिर जाकर माथा टेकें, 43 दिन लगातार।
5. ससुराल के लाभ के लिए सांप को दूध पिलाएं।

शनि खाना नं. 3 में

खाना नं. 3 मंगल व बुध से प्रभावित होता है। जब मंगल + बुध मिलते हैं, तो शनि बनता है, इसलिए खाना नं. 3 में शनि बलवान होता है। खाना नं. 3 खाना नं. 8 का दरवाजा है। खाना नं. 8 शमशान, इसलिए जितना शनि को मंदा करेंगे उतना ही शनि मंदा प्रभाव देगा। खाना नं. 3 में बैठा शनि खाना नं. 5 को देखता है और खाना नं. 5 सूर्य से प्रभावित होता है, इसलिए शनि मंदा करने पर सरकार या राजदरबार खराब हो। खाना नं. 5 संतान का भी है इसलिए मंदा शनि संतान हानि या व्यक्ति संतान की ओर से नाखुश होता है।

वैसे खाना नं. 3 का शनि शुभ फल देता है। व्यक्ति नीरोगी, विद्वान और विवेकी हो, परंतु खर्चा अधिक

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

करे। खाना नं. 3 मंगल से प्रभावित होने के कारण दो शेर एक ही घर में माने जाएंगे। यदि इस शनि पर केतु की दृष्टि पड़ रही हो या केतु साथ ही बैठा हो, तो शनि का प्रभाव श्रेष्ठ होगा।

विशेष

1. यदि केतु खाना नं. 3 या 10 में हो, तो धन संपत्ति की कमी नहीं रहेगी।
2. यदि टेवे में मंगल बद हो, तो प्रभाव बुरा हो, लेकिन पराए लोग सहायक सिद्ध होंगे।
3. यदि खाना नं. 10 में चंद्रमा हो तो शनि की जड़ कटे। घर में कुआं हो तो मौत का कारण बने। चोरी आदि से धन की हानि हो।
4. मकान के साथ यदि पत्थर गड़े हों, तो शनि जहर का काम करेगा।
5. उत्तम किस्म के मकान बनाने में जातक की रुचि होगी। जब तक केतु की पालना करता रहे, धन बढ़ता रहेगा।

खाना नं. 3 में शनि वाला व्यक्ति यदि नजर की गवाही दूसरों को देगा तो खुद की नजर के लिए शुभ फल मिलेगा। शनि खाना नं. 3 के समय यदि मकान का दरवाजा दक्षिण में हो और उसके साथ कोई पत्थर गड़ा हुआ हो, तो जब भी घर में मौत होगी, उसके 40 दिन के अंदर तीन मौतें होने का डर रहता है। मकान के अंदर अगर अंधेरी कोठरी हो और उसमें सूर्य की रोशनी न जाती हो, तो यह धन–दौलत के लिए शुभ सिद्ध होगी।

शनि खाना नं. 3 के समय यदि सूर्य खाना नं. 1, 3 या 5 में हो, तो केतु और शनि दोनों का फल अशुभ यानी कान, टांग, रीढ़ की हड्डी मोटरगाड़ी व व्यक्ति के चाचा पर अशुभ असर पड़े।

खाना नं. 3 में शनि के साथ राहु हो और चंद्रमा अगर खाना नं. 11 में हो, तो माता की सेहत व उम्र के लिए चलते पानी में चावल डालना शुभ फल देगा।

उपाय

1. कुत्ता पालें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी बनवाएं।
3. पैसे के लिए 3 कुत्ते पालना अति लाभदायक रहे। अगर कुत्ते न पालना चाहें, तो मिट्टी के तीन कुत्ते घर में स्थापित करें।
4. अगर केतु खाना नं. 3 या 10 में हो, तो एक भूरा काला कुत्ता पालें।
5. घर की दहलीज पर लोहे की कील ठोंक लें।

शनि खाना नं. 4 में

खाना नं. 4 हर प्रकार से चंद्रमा की मिल्कियत होता है। जब शनि खाना नं. 4 में होता है, तो शनि, चंद्रमा इकट्ठे हो जाते हैं। शनि घोड़ा, यानी व्यक्ति को सवारी का सुख नसीब हो। व्यक्ति को नशीली वस्तुओं के कारोबार से लाभ प्राप्त हो। ऐसे व्यकित को पानी में खुलने वाली दवाई की बजाए गोलियां आदि लेनी चाहिए। पेट कीं खराबी से नशीली/जहरीली दवाई फायदा पहुचाए। ऐसे व्यक्ति के लिए सांप को मारना

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

नुकसानदेह साबित होगा। शराब, मांस व अन्डे का इस्तेमाल करने से शनि मंदा प्रभाव देगा।

शनि खाना नं. 4 के समय चंद्रमा खाना नं. 10 में हो तो माता दुखी, रात को दूध पीना बिमारी का बहाना बने। सांप मारन या, रात को नींव खुदवाना हानिकारक होगा। पराई स्त्री से संबंध या विधवा स्त्री पर खर्चा करना व्यक्ति को कंगाल करे।

खाना नं. 4 के शनि को पानी का सांप कहकर पुकारा गया है, यानी ऐसा सांप जो पानी में रहता हो और किसी को डंसे नहीं या उसका जहर किसी पर न चढ़े। सबसे पहले छपी लाल किताब में यह जिक्र भी आता है कि बीमारी के वक्त यदि व्यक्ति शनि की वस्तु शराब या शराब से बनी दवाई इस्तेमाल करे तो लाभदायक रहे।

शनि खाना नं. 4 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 2 या 3 में हो, तो व्यक्ति को मां–बाप और गृहस्थी का सुख लंबे समय तक नसीब होगा। यदि बृहस्पति खाना नं. 3 में हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरों को लूट कर, ठग कर अपनी जायदाद बनाने वाला होता है।

शनि खाना नं. 4 में हो और यदि व्यक्ति की छाती पर बाल न हों, तो वह विश्वासपात्र नहीं होता।

उपाय

1. मन्दी सेहत के लिए शराब से बनी दवाई लाभदायक साबित हो।
2. मछली, भैंस, कौआ आदि को खाना डालना शुभ रहेगा।
3. मजदूर पेशा आदमी की सेवा लाभकारी होगी।
4. कुंए में दूध गिराना आर्थिक स्थिति के लिए शुभ रहे।
5. सांप को दूध पिलाना चाहिए।
6. तेल और काले कपड़े में बांध कर काले माह शनिवार को दान करें।

शनि खाना नं. 5 में

खाना नं. 5 सूर्य का खाना है। शनि सूर्य से शत्रुता रखे। खाना नं. 5 में शनि वाले व्यक्ति को अपने नाम से मकान नहीं बनाना चाहिए। मकान बनाने का मतलब शनि कायम करना है, जिससे सूर्य और शनि में झगड़ा हो, जिसके कारण पुत्र सुख में बाधा उत्पन्न हो सकती है। व्यक्ति को 48 वर्ष की उम्र से पहले मकान न बनाना चाहिए। पुत्र जन्म पर मीठे की बजाए नमकीन बांटना चाहिए।

शनि खाना नं. 5 के समय यदि शुक्र खाना नं. 7 या 12 में, सूर्य चंद्रमा 5, 9 या 10 में और मंगल खाना नं. 10 में हो, तो संतान के लिए हानिकारक नहीं होगा, परंतु संतान योग्य नहीं हो, यानी नालायक होती है। ऐसी औलाद घर का सोना बाहर ले जाकर लोहे के भाव बेचने वाली होती है।

शनि खाना नं. 5 के समय वर्षफल के अनुसार खाना नं. 1 में आ जाए, तो धन संपत्ति नष्ट होती है।

राहु टेवे में अच्छा हो, तो व्यक्ति के मकान तो बनेंगे, परंतु 48 साल की उम्र के बाद। अगर टेवे में खाना नं. 11 खाली हो, तो खाना नं. 5 का शनि धर्म देवता के समान होगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शनि खाना नं. 5 के समय यदि बृहस्पति खाना नं. 9 में हो, तो 5, 17, 29, 41, 53, 65, 77 व 89 वर्ष की आयु में व्यक्ति को अच्छा फल मिलेगा।

शनि खाना नं. 5 के समय केतु खाना नं. 4 में हो, तो संतान के लिए बुरा नहीं होता, लेकिन कुल पुरोहित व उसके वंश को नाश करने का कारण बनता है।

उपाय : तीन कुत्ते पालने चाहिए।

शनि खाना नं. 5 वाले व्यक्ति के 9वें, 18वें, और 36वें वर्ष में शनि सेहत के लिए कष्टकारी साबित होगा। इन वर्षों में सांप भी काट सकता है। शनि खाना नं. 5 वाला व्यक्ति यदि 48 साल के पहले मकान बनाएगा तो चाहे जितने भी ब्याह कर ले, संतान नष्ट हो जाएगी, विशेष रूप से यदि शुक्र खाना नं. 7 या 12 में और सूर्य और चंद्रमा 5 या 9 में न हों।

उपाय के तौर पर व्यक्ति अपने वजन के दसवें हिस्से के बराबर बादाम ले। उन्हें मंदिर में चढ़ाकर आधे वापिस आए, एक वर्ष तक घर में रखकर बाद में चलते पानी में बहा दे।

"यदि वर्षफल में शनि खाना नं. 5 में आए तो 13 दिन पहले रोजाना 43 दिन तक बादाम मंदिर में चढ़ाकर आधे वापिस लावें और 43 दिन बाद उन्हें पानी में बहा देवें।

लाल किताब के पहले संस्करण में खाना नं. 5 के शनि को 'बुद्धू लड़का' कहा गया है, लेकिन बाद के संस्करणों में इस शनि को "बच्चे खानेवाला सांप" कहकर पुकारा गया है। किंतु खाना नं. 5 वाला व्यक्ति देखने में बेशक बुद्धू लगे, लेकिन अपने अभिमान और अक्ल की बारीकी से वह अपनी जिन्दगी बनाता है।

शनि खाना नं. 5 के समय यदि वर्षफल में भी शनि खाना नं. 5 में ही आ जाए और व्यक्ति उस वर्ष मकान बनाए तो यह संतान हानि का कारण बनें, परंतु यदि औलाद अपने धन से मकान बनाए तो व्यक्ति के खुद के लिए व उसकी औलाद के लिए शुभ फल देगा।

उपाय

1. व्यक्ति 48 वर्ष तक मकान न बनाए।
2. औलाद अपनी कमाई से खुद मकान बनाए।
3. खाना नं. 2 और 12 में शुक्र की चीज़ें स्थापित करें।
4. धर्म स्थान पर 10 बादाम चढ़ाएं, आधे वापिस लाएं और उन्हें टीन की डब्बी में बंद करके रखें, खाएं नहीं।
5. औलाद के जन्म पर मीठी चीज़ें न बांटे।
6. जद्दी मकान की अंधेरी कोठरी में साबुत मूंग या हथियार रखें।
7. कुत्ता पालें।
6. घर में सूर्य की वस्तु गुड़, चंद्रमा की वस्तु दूध या चांदी व मंगल की वस्तु सौंफ या तांबा स्थापित करें। यदि केतु खाना नं. 10 में हो तो गुड़, दूध और सौंफ अर्थात् सूर्य, चंद्रमा और मंगल की वस्तुएं

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

जलाएं।

शनि खाना नं. 6 में

खाना नं. 6 बुध व केतु से प्रभावित। दोनों ग्रह एक दूसरे के शत्रु हैं। शनि दोनों का मित्र है, इसलिए शनि यहां बैठा शुभ प्रभाव देगा। अगर टेवे में बुध और केतु भी अच्छे हों, तो खाना नं. 6 का शनि अधिक प्रभावशाली होगा। खाना नं. 6 का शनि तीसरी दृष्टि से खाना नं. 8 को देखता है, इसलिए 28 साल तक शादी करना अशुभ रहे। अगर राहु टेवे में मंदा पड़ा हो, तो शनि भी अशुभ प्रभाव देगा।

खाना नं. 6 का शनि शत्रुनाशक माना जाता है, लेकिन छोटा भाई शत्रुता का व्यवहार करता है। बड़े पुत्र का व्यवहार टेवे वाले के साथ ठीक नहीं होता, लेकिन अंत में वही काम आता है।

खाना नं. 6 का शनि उल्टी दृष्टि से खाना नं. 2 को देखता है और इसका मंदा असर खाना नं. 10 पर यानी कारोबार पर पड़ता हैं शनि खाना नं. 6 में होने के समय यदि वर्षफल में शनि खाना नं. 2, 7, 9 या 12 में आ जाए। तो अच्छा प्रभाव देगा। अगर केतु खाना नं. 10 में हो या उच्च का होकर 6, 9, 12 में बैठा हो तो व्यक्ति एक प्रतिभावान खिलाड़ी होगा। इस समय सूर्य चाहे खाना नं. 12 में हो, तो व्यक्ति की स्त्री सुखी होगी। खाना नं 6 का शनि कारोबार या नौकरी में व्यर्थ की उलझनें पैदा करता है।

खाना नं. 6 के शनि को "लेख की स्याही यानी "किस्मत लिखने का मालिक" कहा गया है, लेकिन किसी न किसी प्रकार अशुभ फल भी देता है। यदि व्यक्ति की शादी 28 वर्ष से पहले होगी तो बुध यानी बुआ, बहन, लड़की , चंद्रमा यानी माता, घोड़ा, दूध और शुक्र यानी पत्नी , गाय, बैल सबके लिए मंदा रहे।

शनि खाना नं. 6 के समय वर्षफल में राहु खाना नं. 6 में या 3 में आ जाए, तो बहुत ही शुभ प्रभाव होगा। व्यक्ति के सारे दु:ख धो डालेगा।

खाना नं. 6 का शनि यदि राशि के अनुसार या दृष्टि के अनुसार अशुभ हो रहा हो, तो इसकी निशानी शनि की वस्तुओं पर अशुभ प्रभाव पड़ेगा, यानी जूते आदि गुम हों, मशीनरी आदि बिना कारण खराब हों। यदि शनि वर्षफल में भी खाना नं. 8 में आ रहा हो और व्यक्ति शराब का आदी हो, तो अदालत, कचहरी, मुकदमा व पुलिस की ओर से परेशानियां मिलें।

शनि खाना नं. 6 के समय यदि मंगल खाना नं. 12 में और राहु खाना नं. 1 में हो, तो व्यक्ति के बड़े भाई, ताया और मामा पर बुरा असर पड़ेगा। खासकर मामा व्यक्ति के 21वें साल में अंधा हो सकता है।

शनि खाना नं. 6 के समय यदि बुध, शुक्र व राहु खाना न. 4 या 10 में हो या बुध खाना नं. 2 में हो या खाना नं. 6 में सूर्य, चंद्रमा व मंगल किसी प्रकार संबंध बनाए तो ऐसे व्यक्ति की मौत किसी हादसे में सिर कटने से होगी।

शनि खाना नं. 6 के समय खाना नं. 2 में शुक्र या चंद्रमा हो, तो इसका बुरा असर गाय, बैल स्त्री और माता पर पड़ेगा–खासकर उस समय यदि राहु खाना नं. 8 में हो तो।

उपाय

Future Point

1. सांप की सेवा करनी चाहिए।
2. भूरा, काला कुत्ता पालना शुभ रहेगा।
3. मिट्टी के बरतन में सरसों का तेल भरकर, ऊपर से ढक्कन बंद करके छप्पर के नीचे दबाएं–जहां पानी रहता हो।
4. किसी को भी जूते आदि दान करने से लाभ होगा।
5. नई मशीनें लगवाएं, तो साथ एक पुरानी मशीन भी लगवाएं।
6. बीमारी के समय 6 नारियल लगातार 6 दिन पानी में बहाएं।
7. बादाम पानी में बहाएं।

शनि खाना नं. 7 में

खाना नं. 7 शुक्र का पक्का खाना है। बुध कन्या, इसलिए यह घर बुध + शुक्र से प्रभावित होता है। शुक्र शनि की माशुका, इसलिए खाना नं. 7 में शनि उत्तम फल देगा। लोहे, चमड़े व मशीनरी में कारोबार के लाभ प्राप्त हो। खाना नं. 7 में शनि वाला व्यक्ति यदि पत्नी से बनाकर रखे, तो धनवान होगा और आयु लंबी होगी।

शनि खाना नं. 7 के समय यदि बृहस्पति खाना नं. 1 में हो, तो शनि उत्तम हो जाता है और जातक को राजदरबार से लाभ प्राप्त होता है।

शनि खाना नं. 7 वाले व्यक्ति को किसी के साथ साझे में काम नहीं करना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को मकान जायदाद आदि विरासत में मिलने की संभावना होती है। यदि टेवे में मंगल शुभ हो तो मासिक आय लाखों की होती है।

शनि खाना नं. 7 के समय यदि बुध खाना नं. 11 में हो तथा मंगल और शुक्र इकट्ठे बैठे हों जातक धनी मानी और गांव का मालिक होगा। शनि खाना नं. 7 में और बुध खाना नं. 1 में हो, तो मृत्यु सर कटने से होगी। यदि सूर्य खाना नं. 4 में हो, तो व्यक्ति नपुंसक होगा।

शनि खाना नं. 7 वाले व्यक्ति के जिस्म पर एक रोयें से एक ही बाल निकले, यानी शरीर पर अधिक बाल न हों, तो शनि का फल शुभ रहता है, लेकिन व्यक्ति को हठी बनाता है। ऐसे व्यक्ति के पास पैसे का आना–जाना लाखों में होगा, पर जायदाद भी हो यह जरूरी नहीं। यदि ऐसे व्यक्ति की शादी 22 साल की उम्र में न हो, तो नजर पर बुरा असर पड़ता है।

शनि खाना नं. 7 के समय यदि बुध, शुक्र और राहु खाना नं. 3, 5, 7 या 11 में हों, तो धन के लिए शुभ होंगे। इसी प्रकार यदि खाना नं. 7 के शनि को मंगल + बृहस्पति या मंगल + शुक्र दृष्टि द्वारा प्रभावित करें, तो व्यक्ति के पास बड़ी मात्रा में दौलत होती है। ऐसा दृष्टि संयोग अगर वर्षफल में हो, तो उस साल अकस्मात धन प्राप्त होने की संभावना बनती है।

शनि यदि शत्रु राशिगत हो या शत्रु ग्रहों द्वारा दूषित हो रहा हो, तो व्यक्ति अहंकारी हो जाता है। वर्षफल के अनुसार जब भी सूर्य, चंद्रमा या मंगल खाना न. 7 में आएगा, तो जातक के स्वास्थ्य पर बुरा असर

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

डालेगा।

शनि खाना नं. 7 वाला व्यक्ति किसी पराई स्त्री के ईश्क में फंस जाए, तो यह औलाद के लिए अशुभ होता है और धन–दौलत भी बर्बाद होती है। – ऐसे में पुराने जद्दी मकान की दहलीज स्थापित करनी चाहिए।

शनि खाना नं. 7 के समय यदि मंगल, चंद्रमा, शुक्र सभी ग्रह बुरी अवस्था में हों, तो व्यक्ति दुःखों का पुतला होता है।

खाना नं. 7 के शनि के साथ यदि शुक्र हो, तो ऐसा व्यक्ति गंदा आशिक होता है और इसका प्रभाव व्यक्ति की पत्नी की सेहत पर पड़ता है शनि खाना नं. 7 के समय यदि पहला घर खाली हो तो शहद से भरा बरतन घर में रखना चाहिए, वरना ज्यों ही व्यक्ति के यहां पोते का जन्म होगा, सब धन–दौलत बर्बाद हो जाएगी। वर्षफल के मुताबिक बुध खाना नं. 7 में आ जाए, तो व्यक्ति की आंखें खराब होने का भय बना रहता है।

उपाय

1. स्त्री के बालों में सोना लगाना चाहिए।
2. किसी के सांझेदारी में कारोबार न करें।
3. मीट, अंडा, शराब व पराई स्त्री से दूर रहें।
4. काला कुत्ता पालें।
5. पीतल के बर्तन में शहद भरकर घर में रखें।
6. बासुरी में खांड भरकर वीरान जगह में दबाएं।
7. काली गाय की सेवा करें।

शनि खाना नं. 8 में

खाना नं. 8 शमशान यानी मृत्यु स्थान। शनि कारक ग्रह और खाना नं. 8 मंगल से प्रभावित होता है। आठवें घर में कोई ग्रह शुभ नहीं होता। शनि खाना नं. 8 में जल्लाद का काम करे। शनि खाना नं. 8 वाला व्यक्ति यदि मांस, अण्डा, शराब आदि सेवन करे तो शनि अति बुरा प्रभाव देगा। शनि खाना नं. 8 के समय यदि टेवे में बृहस्पति अच्छा हो, तो पैतृक जायदाद मिलती है।

शनि खाना नं. 8 के समय राज भय बना रहता है। पिता की आयु कम होने का अंदेशा रहता है लेकिन जातक की खुद की उम्र लंबी होती है शनि खाना नं. 2 के समय यदि कुंडली में राहु भी खराब हो तो चोट, दुर्घटना आदि का भय रहता है। इस घर का शनि टेवे में बुध और राहु की तरह बर्ताव करता है, यानी यदि बुध और राहु मंदे हों तो शनि भी मंदा फल देगा।

खाना नं. 8 में अकेला शनि कभी बुरा नहीं करता, क्योंकि मृत्यु का देवता मृत्यु स्थान में रहता है। यदि व्यक्ति के शरीर पर बाल अधिक हों, तो सारी उम्र गुलामी में कटे। इस खाने में जो भी ग्रह शनि के साथ होगा शनि उसको हानि पहुंचाएगा। यदि खाना नं. 12 खाली हो, तो सारी जिंदगी निर्धनता में बीते।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खाना नं. 8 के शनि के साथ जब सूर्य, चंद्रमा तथा मंगल साथ हों या एक–दूसरे को देख रहे हों तो शनि का असर अशुभ हो जाएगा और ऐसा शनि परिवार में मौतें ही मौतें खड़ी रखेगा। शनि खाना नं. 8 के समय यदि केतु खाना नं. 1 में हो तो शनि का फल खराब नहीं होगा और यदि केतु भी खाना नं. 8 में शनि के साथ बैठ जाए, तो दोनों ग्रहों का फल उत्तम होगा।

उपाय

1. 8 किलो काले उड़द की दाल चलते पानी में बहाएं, हर साल। उड़द को सरसों का तेल लगाएं।
2. 8 बादाम पानी में बहाएं।
3. चिमटा, अंगीठी, तवा आदि दान करें।
4. छुहारे पानी में फेंके।
5. चांदी का चौकोर टुकड़ा पास रखें।
6. स्नान करते समय पानी में दूध मिला लें (1 चम्मच)
7. लकड़ी का फट्टा पांव के नीचे रख कर स्नान करना चाहिए।
8. नशे की आदते छोड़ें।

(क) खाना नं. 8 का शनि अगर चंद्रमा को खाना नं. 2 में देखे, तो जातक को शराबी बनाए, क्योंकि खाना नं. 2 मुंह का कारक है।

(ख) शनि टांगों का कारक होने के कारण खाना नं. 8 का शनि जातक को टांगों का दर्द देता है।

शनि खाना नं. 9 में

खाना नं. 9 बृहस्पति का खाना है और इस खाने में शनि उत्तम फल देता है। अगर शनि खाना नं. 9 वाला व्यक्ति परोपकारी होगा, तो शनि शुभ फल देगा क्योंकि बृहस्पति कायम होगा।

शनि खाना नं. 9 के समय यदि कुंडली में बृहस्पति अच्छा हो, तो व्यक्ति का मकान तीन मंजिला होगा, या वह 3 मकानों का मालिक होगा है। लेकिन यदि व्यक्ति तीन से अधिक मकान बनाए, तो कष्टकारी हों। ऐसे व्यक्ति का मकान कोने का होगा या आगे–पीछे जगह खाली होगी।

शनि खाना नं. 9 के समय वर्षफल में शुक्र खाना नं. 2 में आए, तो शनि 9 गुणा लाभकारी हो जाएगा। यदि खाना नं. 9 के शनि को बुरे ग्रह टक्कर मार रहे हों तो शुक्र का फल खराब हो जाएगा। खाना नं. 6 या 7 में बुध हों, तो शनि श्रेष्ठ फल देता है। घर की अंधेरी कोठरी के अंदर प्रकाश के आने की जगह बना दी जाए, तो एक साल के अंदर जातक बर्बाद हो जाए।

शनि खाना नं. 9 के समय यदि व्यक्ति की पत्नी गर्भवती हो और व्यक्ति की आयु 36 वर्ष की हो और वह मकान बनाना शुरू कर दे, तो संतान के जन्म से पहले ही मृत्यु का मुंह देखे। मकान की छत पर चौखट, लकड़ी का सामान और टूटी लकड़ी का विद्यावन रखना मंदे भाग्य की निशानी होंगे।

शनि खाना नं. 9 वाले व्यक्ति की शिक्षा ऊंचे दर्जे की होती है। आम तौर पर ऐसा व्यक्ति कभी कर्जदार नहीं होता। शनि खाना नं. 9 के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो, तो शनि मंदा फल देता है। ऐसे व्यक्ति

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

के घर से मुर्दों की दुर्गंध आती है। यदि चंद्रमा खाना नं. 4 में हो, तो व्यक्ति की किस्मत अपने मां–बाप से अच्छी होती है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी अमीर खानदान से होगी और भाग्यवान भी।

शनि खाना नं. 9 के समय यदि बृहस्पति खाना नं. 12 में हो, तो ऐसे व्यक्ति के पास बहुत धन होगा, लेकिन वह पैसे का पीर नहीं होता।

शनि खाना नं. 9 वाले व्यक्ति के औलाद देर से होती है। यदि खाना नं. 2 खाली हो और शनि को राहु या केतु देख रहा हो, तो ऐसा व्यक्ति दुष्ट मगर भाग्यवान होता है जो दूसरों का कफन तक बेच खाए। ऐसा व्यक्ति यदि साहूकारी करे, तो निर्धन हो जाएगा और औलाद के लिए तरसेगा।

खाना नं. 9 के शनि के साथ राहु हो और व्यक्ति शराब पीने का आदी हो, तो दोनों ग्रहों का फल बर्बाद हो जाएगा।

उपाय

1. बृहस्पति, सूर्य व चंद्रमा की वस्तुओं को जंगल में छोड़ना चाहिए।
2. चावल और बादाम चलते पानी में बहाएं।
3. घर पर छत साफ रखनी चाहिए।
4. चांदी का चौकोर टुकड़ा पास रखें।

शनि खाना नं. 10 में

खाना नं. 10 हर प्रकार से शनि की मिल्कियत है,, इसलिए इस घर का शनि हर प्रकार से उत्तम फल देने वाला होता है। जमीन जायदाद से लाभ होगा। व्यक्ति यदि शनि की तरह चालाक बनकर रहे, तो हर तरह से मौज करे। अगर धार्मिक कार्य करेगा, तो व्यर्थ की मुसीबतों में घिरा रहेगा। खाना नं. 10 में शनि होने पर व्यक्ति ऐसे कारोबार करता है जिसमें सफर करना पड़े।

खाना नं. 10 में शनि होने से व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है। सरकार से लाभ पानेवाला। ऐसा व्यक्ति यदि शराब, मांस आदि से दूर रहे, तो भाग्य जागे, वरना सोया रहेगा। ऐसे जातक के पास मकान बनाने के लिए धन इकट्ठा हो जाता है, लेकिन मकान बनने के बाद जातक तंगी में आ जाता है। जातक यदि दूसरों का आदर करेगा, तो उसका खुद का मान बढ़ेगा।

लाल किताब के प्रथम और सन 1942 के संस्करणों में खाना नं. 10 के शनि को "किस्मत जगाने वाला" कहा गया है। लेकिन बाद के संस्करणों में ऐसा लिखा गया कि ऐसा व्यक्ति किस्मत के मामले में खाली कागज लेकर पैदा होता है जिस पर अपनी किस्मत खुद लिखता है।

शनि खाना नं. 10 में हो, तो जातक का अपने पिता के साथ कम से कम 48 वर्ष की उम्र तक साथ रहेगा। इस खाने का शनि व्यक्ति को तीसरे, चौथे, पंद्रहवें, इक्कीसवें, तैंतीसवें, उन्तालीसवें, पैंतालीसवें और सत्तावनवें साल उम्र में इज्जत और धन दौलत देता है। इस घर का शनि हर तीसरे साल शुभ फल देता है बशर्ते शनि अकेला हो। खाना नं. 10 में शनि वाला व्यक्ति यदि धर्मात्मा या रहमदिल बने, तो शनि अशुभ फल देने लगता है। यहां तक कि व्यक्ति को बर्बाद कर सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शनि खाना नं. 10 के समय यदि बृहस्पति चौथे घर में और चंद्रमा खाना नं. 1 में हो, तो व्यक्ति के जीवन में हर तरह का आराम होगा। वर्षफल के अनुसार यदि शनि खाना नं. 7 में आवेगा तो व्यक्ति के पास धन आता है।

ऐसे में ससुराल की आर्थिक हालत बहुत अच्छी हो जाती है। शनि खाना नं. 10 के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो, तो शनि का फल उत्तम ही रहेगा।

शनि खाना नं. 10 के समय खाना नं. 4 में शनि के शत्रु ग्रह सूर्य–चंद्रमा बैठे हों और जातक यदि जानवरों की हत्या करे, तो 27 साल की उम्र तक धन–दौलत के लिए अशुभ रहेगा। शनि के इस बुरे असर को दूर करने के लिए पीतल के बर्तन में गंगाजल भरकर घर में रखना चाहिए।

उपाय

1. शनि मंदे के समय बृहस्पति का उपाय करना चाहिए।
2. दूसरे लोगों का मान–सत्कार करना चाहिए।
3. शराब, मांस, अंडे का प्रयोग न करें।
4. दाढ़ी या मूंछ रखनी चाहिए।
5. चने की दाल 43 दिन पानी में बहाएं।
6. खाना नं. 10 के शनि के साथ शत्रु ग्रह हों, तो दस अंधों को भोजन खिलाएं।
7. रात को दूध न पीएं।
8. सफेद टोपी या कपड़े से सिर ढक कर रखें।

शनि खाना नं. 11 में

खाना नं. 11 शनि का पक्का घर है, क्योंकि कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार इस खाने में शनि की मूल त्रिकोण राशि पड़ती है। खाना नं. 11 बृहस्पति से भी प्रभावित है, क्योंकि खाना नं. 11 आय स्थान और बृहस्पति धन का कारक है। इस घर में बैठा शनि इन्साफ करेगा। शनि का इन्साफ उसके दो चेलों राहु और केतु द्वारा होगा। शनि 11 वें घर के समय यदि केतु खाना नं. 5 में हो, तो जातक को एक पुत्र अवश्य होगा। बाप–दादा की जायदाद से लाभ होगा। 36 से 39 वर्ष की आयु के बीच मकान बनाने या शनि के मंदे काम करने से सेहत खराब होगी।

शनि खाना नं. 11 में हो, तो भाग्य का निर्णय 48 वर्ष की आयु में होता है। यदि खाना नं. 11 का शनि ठीक स्थिति में होगा, तो मिट्टी भी सोने के भाव बिके, वरना सोना मिट्टी हो जाए। जायदाद की कोई शर्त नहीं, पर इन्साफ अपने धर्म पर टिकने वाला होता है।

खाना नं. 11 के शनि को “लिखे विधाता” या “खुद विधाता” कहकर पुकारा गया है। शनि खाना नं. 11 वाला व्यक्ति आंख की होशियारी और फरेब से धन कमाता है। यदि शनि खाना नं. 11 के समय बुध खाना नं. 3 में हो, तो दोनों ग्रहों का फल शुभ रहेगा। अगर बृहस्पति भी खाना नं. 11 में हो, तो शनि का फल उत्तम हो जाएगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

शनि खाना नं. 11 के समय यदि सूर्य और मंगल खाना नं. 10 में और चंद्रमा खाना नं. 6 में या सूर्य खाना नं. 1 और चंद्रमा खाना नं. 2 में हो, तो राजदरबार और धन–दौलत पर असर उत्तम रहेगा।

शनि खाना नं. 11 के समय यदि शुक्र खाना नं. 7 में हो, तो ऐसे व्यक्ति को लोगों की भलाई के लिए काम करने चाहिए। इससे 11वें खाने का शनि जातक को जीवन का हर सुख देगा। अगर इस खाने का शनि मंदा हो, तो व्यक्ति की शिक्षा ऊंचे दर्जे की नहीं होती।

यदि खाना नं. 3 खाली होगा, तो शनि सोया हुआ होगा। वर्षफल के अनुसार शनि जब खाना नं. 1 में आएगा तो धन लाभ होगा। फरेब से कमाया धन खुद के लिए कफन के समान होगा। घर का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा की ओर हो, तो शनि का असर मंदा रहेगा।

यदि व्यक्ति शराब, मांस व अंडे का प्रयोग करेगा तो शनि का फल बुरा होगा। ऐसे में शनि व्यक्ति को क्रोधी और कभी–2 हत्यारा भी बना देता है। यदि मकान बनाना हो, तो 48 से 55 साल की उम्र के बीच बनाए, अगर उससे पहले बनाएगा, तो बीमारी भोग कर मरेगा और उसका परिवार बीच मझधार में डूब जाएगा। बीमारी के समय कम से कम एक वर्ष तक स्त्री संपर्क से परहेज करना चाहिए।

उपाय

1. जब भी कोई शुभ कार्य करना हो, तो पानी का कुंभ घर में स्थापित करें।
2. तेल या शराब प्रातः सूर्योदय के समय लगातार 43 दिन भूमि पर गिराएं।
3. बृहस्पति का उपाय करें।
4. शराब, मांस, अंडे व पराई स्त्री से दूर रहें।
5. किसी से धोखा या फरेब न करें।

जब से उपाय आरंभ हुआ हो उसी दिन से लंगोटे पर काबु रखें।

शनि खाना नं. 12 में

खाना नं. 12 बृहस्पति, शुक्र व राहु से प्रभावित होता है। शुक्र शनि की प्रेमिका, इसलिए इस खाने का शनि शुक्र को बचाता है। टेवे में राहु–केतु शुभ हों तो शनि और भी शुभ फल देगा। शनि खाना नं. 12 के समय यदि कुण्डली में बृहस्पति, मंगल और राहु शुभ हों, तो व्यक्ति मुखिया होता है। अगर व्यक्ति के सिर पर बाल न हों, तो व्यक्ति के पास दौलत खूब होगी। शनि खाना नं. 12 वाला व्यक्ति अगर मकान बनाए, तो एक बार में ही बना लेना चाहिए।

खाना नं. 12 में शनि का प्रभाव अच्छा ही होता है। ऐसे जातक को धन संपत्ति की परवाह नहीं होती। यह शनि माता के लिए कष्टकारी और पिता के धन के लिए अशुभ होता है। यदि खाना नं. 6 में सूर्य हो, तो स्त्रियां मरती जाएं, चाहे कितने क्यों न हों

शनि खाना नं. 12 वाले व्यक्ति का व्यापार बहुत अच्छा होता है। ऐसा व्यक्ति चाहे करोड़पति हो, उसे धोखा–फरेब करने की आदत होती है। यदि खाना नं. 2 में सूर्य और मंगल न हों, तो व्यक्ति को रात का पूर्ण सुख मिलता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शनि खाना नं. 12 के समय राहु खाना नं. 3 या 6 में और केतु खाना नं. 9 या 12 में हो, तो मकान के अंदर बनी अंधेरी कोठरी को तोड़े नहीं, तो तीनों ग्रह शुभ फल देंगे और भाग्य वृद्धि में योगदान करेंगे।

शनि खाना नं. 12 के समय यदि राहु भी साथ हो तो शनि को इच्छाधारी तारने वाला सांप कहा गया है। शनि खाना नं. 12 के समय व्यक्ति यदि झूठ बोलने वाला हो, चरित्रहीन तथा शराबी–कबाबी हो, तो शनि का फल बर्बाद हो जाएगा और इसका असर व्यक्ति की आंखों व सेहत पर पड़ेगा।

शनि खाना नं. 12 के समय यदि बुध कुण्डली में अशुभ हो तथा सूर्य का शनि से संबंध बने, तो व्यक्ति बहुत गुस्से वाला होता है। ऐसे व्यक्ति अपनी स्त्री का गुलाम होता है।

खाना नं. 12 में शनि के साथ राहु की युति के समय यदि व्यक्ति के हाथ पर शेषनाग का निशान हो, तो अति शुभ होता है। ऐसा व्यक्ति हर भेद को छिपाकर कार्य करता है और चालाक भी होता है।

खाना नं. 12 का शनि इस बात को दर्शाता है कि व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के कार्यों को संपूर्ण करने के लिए ही जन्मा है और ऐसे व्यक्ति की इच्छा होती है कि कोई बड़ा काम किया जाए।

उपाय

1. व्यक्ति को घर में अंधेरी कोठरी कायम करनी चाहिए।
2. घर की अंधेरी कोठरी में 12 बादाम टीन की डिब्बी में बंद करके रखने चाहिए।
3. शराब, मांस व अंडे आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।
4. झूठ और धोखाघड़ी से परहेज करना चाहिए।
5. चरित्र ठीक रखना चाहिए।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. शनि किन–2 घरों में शुभ फल देता है? विस्तारपूर्वक लिखें।
2. राहु–शनि की युति टेवे में क्या दर्शाती है? विस्तार से लिखें।
3. किस अवस्था में शनि और बृहस्पति अच्छे और उत्तम हो जाते हैं?
4. ''शनि शुक्र का आशिक है'' व्याख्या सहित लिखें।
5. शनि खाना नं. 10 में हो, तो मकान किस उम्र में बनाना चाहिए और किस उम्र में बनाया मकान अशुभ होता है?
6. शनि खाना नं. 9 के समय व्यक्ति को मकान बनाने के लिए किस चीज़ पर ध्यान खना चाहिए?
7. 'लिखे विधाता, खुद विधाता', किस घर के शनि पर लागू होता है?
8. शनि की कारक वस्तुओं को लिखें।
9. पांचवें घर के शनि को क्या कहकर पुकारा गया है?

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

10. आठवें घर में शनि हो, तो व्यक्ति को किस चीज से परहेज करना चाहिए?

Future Point

खण्ड 8 – राहु

राहु

जहरीला धुआं, जहरीली आग। बिजली की वह कड़क जो पल भर में सब कुछ राख कर दे। अच्छे–बुरे दोनों तरह के विचारों का कारक। नीला रंग, हाथी दांत, डर, बेबुनियाद के विचार, लम्बी बीमारी, प्लेग और दहशत आदि।

शत्रु ,जेल, अंगहीनता, खुफिया पुलिस, काना, काला, लंगड़ा, कोयल , ससुराल, सिक्का, जालिम, अछूत, बेऔलाद, जौ, सरसों, सूखी छत, टूटी सीढ़ी, मक्कार, चालबाज, दहलीज, दीवार के अंदर भट्ठी, नीला थोथा, गंदी नाली, लोहे को खाने वाला जंग यह सब राहु की चीज़ें हैं।

टेवे में राहु मंदा होने पर चंद्रमा का उपाय लाभकारी सिद्ध होगा। अगर कुंडली में मंगल उत्तम हो तो राहु हमेशा दबकर रहेगा।

बुध, शनि, केतु अदि राहु के मित्र ग्रह हैं। लाल किताब के मुताबिक राहु–केतु शनि के अनुसार चलते हैं। बुध के राग रंग, ढोलक आदि में राहु की गरज शामिल। सिर का ढ़ांचा (खोपड़ी) यानी बुध और अच्छे बुरे विचार राहु। राहु का नीला रंग बुध के हरे रंग को जन्म देता है, इन कारणों से बुध और राहु एक दूसरे के सहयोगी हैं।

सूर्य, मंगल और शुक्र राहु के शत्रु हैं। दिमागी विचारों में जनून उत्पन्न करने की शक्ति राहु में है। राहु एक ऐसी ताकत है जो अच्छे से अच्छा और बुरे से बुरा काम आदमी से करवा देती है।

विचारों का कारक होने के कारण राहु को सरस्वती भी कहा गया है। राहु हाथी और मंगल महावत। मंगल (महावत) ही राहु को काबू कर सकता है। चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखने से राहु शांत रहे।

राहु, शनि को अपना गुरु मानता है। अगर शनि की दृष्टि राहु पर पड़ जाए, तो राहु के मंदे प्रभाव को और भी बढ़ाएगी।

खून की खराबी के कारण बुखार आए, तो राहु से संबंध होगा, मंगल का उपाय करें, तो बुखार दूर हो जाएगा। कोयला पानी में बहाने से राज दरबार से लाभ मिले। राहु के जौ को चंद्रमा के दूध से धोकर पानी में बहाने से मन को शांति मिलती है। पक्षियों को जौ डालना भी लाभदायक होगा।

राहु का धुआं बृहस्पति की हवा को उल्टा पुल्टा करता है। इसलिए टेवे में राहु–बृहस्पति का संबंध दमे की बीमारी देता है।

राहु और शुक्र का संबंध बवासीर, सूजाक आदि रोग देता है। यह योग शादी में भी देरी करवाता है। शुक्र + राहु टेवे में इकट्ठे हों, तो आखों में कमज़ोरी पैदा करें।

राहु अच्छा किस हालत में होता है, पहले इसको जानना अति आवश्यक है। जब भी टेवे में शनि व राहु इकट्ठे बैठे हों, तो राहु शुभ फल देता है, क्योंकि राहु शनि का गुलाम है। यदि राहु चंद्रमा के साथ बैठ जाए तो चंद्रमा के फल को अशुभ करता है, लेकिन किसी हद तक चंद्रमा राहु को शीतल कर लेता है

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

और वह चंद्रमा के साथ अशुभ फल नहीं देता। राहु जब सूर्य के साथ हो या दृष्टि से संबंध बनाए, तो सूर्य को ग्रहण लगाता है, जिससे व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को नुकसान पहुंचाती है। यदि राहु बृहस्पति के साथ हो, तो बृहस्पति के फल को अशुभ करके दमे के रोग का कारण बनता है।

राहु का सूर्य के साथ होने से, राहु का बुरा असर न केवल उसी खाने पर पड़ता है जहां राहु बैठा हो, बल्कि उसके साथ वाला (अगला) भाव भी चोट खाता है। यदि राहु टेवे में मंदा हो, तो जातक के लिए दक्षिण द्वार वाला मकान आम तौर पर नुकसान देने वाला होता है।

राहु के अशुभ असर को दूर करने के लिए नीचे लिखे उपाय करें :

1. चांदी का चौकोर टुकड़ा पास रखें।
2. मसूर की लाल सुर्ख रंग की दाल किसी भंगी को सुबह–सवेरे देनी चाहिए।
3. भंगी को रेजगारी देनी चाहिए, नोट देना मना है।
4. बीमारी के वक्त मरीज के वजन के बराबर जौ पानी में बहाएं।
5. जौ सिरहाने रख कर (रात को) सुबह किसी जानवर को खिला दें।
6. राजदरबार या व्यापार आदि में नुकसान हो, तो वजन के बराबर कच्चा कोयला पानी में बहाएं।

राहु की मित्र राशियां – मिथुन (3) कन्या (6) मीन (12) मकर (10) हैं।
राहु की शत्रु राशियां – कर्क (4) सिंह (5) हैं।

राहु खाना नं. 1 में सूर्य को ग्रहण लगाए, खाना नं. 10 में शक्की बनाए, खाना नं. 11 में गुरु, पिता रोएं खाना नं. 3 में रक्षक, खाना नं. 4 में ठीक–ठाक, खाना नं. 5 में गर्भपात करवाए, खाना नं. 6 में ठीक, खाना नं. 7 में लक्ष्मी का धुआं निकाल दे, खाना नं. 8 में मौत का नगारा बजा दे, खाना नं. 9 में धर्महीन बना दे।

राहु खाना नं. 1 में

खाना नं. 1 सूर्य व मंगल से प्रभावित होता है। खाना नं. 1 सिंहासन और राहु हाथी। हाथी जब तख्त/सिंहासन पर बैठे, तो तख्त डोले/चरमाये। यदि मंगल + चंद्र टेवे में निर्बल हों, तो राहु का असर कम होगा।

राहु खाना नं. 1 के समय सूर्य कहीं भी बैठा हो, तो उसे ग्रहण लगे और इसका बुरा असर 42 वर्ष की उम्र तक रहेगा। विवाह के समय या उसके बाद ससुराल से बिजली का सामान, नीले व काले कपड़े लेना, सूर्य जिस घर में होगा, उस घर के फल को खराब आदि करेंगे। कुण्डली में बुध–केतु इकट्ठे हों, तो खाना नं. 1 का राहु और भी नीच फल देगा। जिस घर में जातक का जन्म होगा उस घर वाले सभी जातक के सामने उजड़ जाएंगे। इस स्थिति में स्त्री से न पटने दे। राहु खाना नं. 1 वाला व्यक्ति कोई काम पूरा नहीं करता, अक्सर काम बदलता रहता है।

राहु खाना नं. 1 में होने से व्यक्ति धनवान तो होगा, परंतु उसका खर्च बहुत होता है। राहु खाना नं. 1 के समय यदि मंगल खाना नं. 12 में हो, तो राहु शरारत नहीं कर पाता। राहु एक हाथी और मंगल महावत,

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इसलिए खाना नं. 12 का मंगल राहु को काबू में रखता है।

खाना नं. 1 का राहु यदि अशुभ हो, तो उसको देखने का तरीका यह है कि खाना नं. 1 से लेकर खाना नं. 6 तक जैसी बुध की हालत होगी वैसा ही असर राहु का होगा और खाना नं. 7 से लेकर 12 तक केतु जिस हालत में होगा, राहु का असर भी वैसा ही होगा। जिस व्यक्ति के टेवे में राहु खाना नं. 1 में हो उसके जन्म के समय भयानक आंधी तूफान आता है। यदि जन्म अस्पताल में हो, तो बिजली आदि चले जाने का भय होता है। राहु खाना नं. 1 वाले व्यक्ति के जद्दी मकान के सामने वाले घर का हाल बुरा होता है। ऐसे व्यक्ति की 40 साल की उम्र तक राहु की चीजें यानी बिजली आदि का सामान और राहु के कारक रिश्तेदार यानी साला, ससुराल आदि शुभ असर नहीं देते।

राहु खाना नं. 1 में अशुभ होने पर व्यक्ति बेईमान या धोखेबाज होता है। सूर्य 1 बुध अगर खाना नं. 3 के सिवाय सूर्य टेवे में कहीं भी हो, तो खाना नं. 1 का राहु उसे ग्रहण लगाता है। राहु खाना नं. 1 के समय व्यक्ति यदि विवाहोपरांत ससुराल से शनि या राहु की वस्तुएं लेगा, तो सूर्य जिस भाव में बैठा होगा उससे संबंधित वस्तुओं और रिश्तेदारों को नुकसान पहुंचाएगा। राहु खाना नं. 1 के समय यदि सूर्य खाना नं. 9 में हो, तो व्यक्ति के धर्म–ईमान में खराबियां अवश्य आएंगी। सूर्य जिस खाने में बैठा हो और वह खाना पहले से ही मंदा हो, तो व्यक्ति को व्यर्थ बोलते रहने की बीमारी होती है। ऐसी हालत में चांदी की डिब्बी में चावल डालकर रखने से लाभ होगा। राहु खाना नं. 1 के समय केतु खाना नं. 7 में होगा और सूर्य किसी भी खाने में होगा, तो ग्रसित माना जाएगा और अशुभ फल देगा। लेकिन जिस वर्ष केतु खाना नं. 1 में आएगा उस वर्ष सूर्य शुभ फल देने लगेगा।

उपाय

1. सौंफ सिरहाने रखना चाहिए।
2. गले में चांदी धारण करनी चाहिए।

विशेष

क. राहु खाना नं. 1 के समय शुक्र और बुध उच्च या श्रेष्ठ स्थिति में हों, तो राहु अशुभ फल नहीं देता।
ख. आजीविका का साधन बना रहेगा, यदि एक काम छूटेगा तो दूसरा मिल जाएगा।
ग. यदि शुक्र खाना नं. 7 में हो तो व्यक्ति धनी होगा, लेकिन स्त्री सदा रोगी रहेगी।
1. गेहूं, गुड़ को तांबे के बर्तन में भरकर रविवार को तेज बहते पानी में बहाना चाहिए।

राहु खाना 1 के समय सूर्य का बाकी घरों में प्रभाव

सूर्य खाना नं. 1 में – राजदरबार यानी सरकारी कामों में झगड़ा।
सूर्य खाना नं. 2 में – जातक धर्म विरुद्ध हो, ससुराल व धर्म स्थान का अपमान करे।
सूर्य खाना नं. 3 में – भाई–बंधुओं पर कष्ट आएगा।
सूर्य खाना नं. 4 में – ननिहाल को बाधाएं और अपनी कमाई में रुकावटें।
सूर्य खाना नं. 5 में – जातक के संतान अवश्य हो, परंतु नालायक होगी।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

सूर्य खाना नं. 6 में – पुत्र–पुत्रियों के संबंधियों की ओर से दोषारोपण।
सूर्य खाना नं. 7 में – न्याय संबंधी स्थिति, गृहस्थी सं संबंधित स्थिति खराब रहें।

सूर्य खाना नं. 8 में – बिना कारण व्यय।
सूर्य खाना नं. 9 में – जातक धर्म विरुद्ध और अपने पूर्वजों की पूजा की पुस्तकें व पूजा स्थान नष्ट करें।
सूर्य खाना नं. 10 में – अविश्वास का जीवन।
सूर्य खाना नं. 11 में – जातक अभिमानी और न्यायप्रिय लोगों का अपमान करने वाला हो।
सूर्य खाना नं. 12 में – रात को शयनागार में कोई न कोई झगड़ा रहे।

उपाय :

1. 400 ग्राम या 4 किलो सिक्का गहरे पानी में डालें।
2. धन की कमी हो, तो बिल्ली की जेर कपड़े में बांध कर घर में रखें।
3. नारियल पानी में बहाएं।
4. वजन के बराबर कच्चे कोयले पानी में बहाएं।

राहु खाना नं. 2 में

खाना नं. 2 बृहस्पति व शुक्र से प्रभावित और राहु दोनों का शत्रु है। शुक्र बैल जो शिवजी की सवारी है और बृहस्पति शिव बुढ़ा बाबा और चंद्रमा शिव की शक्ति। जिस व्यक्ति के टेवे में राहु खाना नं. 2 में होगा, व्यक्ति चाहे जितना समझदार हो, न चाहते हुए भी गलती करे।

खाना नं. 2 का राहु ससुराल का भी कारक है। सोना यानी बृहस्पति और शुक्र यानी स्त्री इन दोनों चीज़ों की हानि करता है। जर, जोरू और जमीन के झगड़ों में उलझाने का काम भी राहु ही करता है।

खाना नं. 2 का राहु जीवन को हिन्डोला बनाकर रखता है। जैसे दूध की रखवाली बिल्ली वैसे ही राहु यहां पर। यदि वर्षफल के अनुसार भी राहु खाना नं. 2 में आ रहा हो, तो परिवार में किसी की मौत का पैगाम होगा। खाना नं. 2 बंधन स्थान भी है, इसलिए वर्षफल का राहु इस खाने में या वैसे भी खाना नं. 2 का राहु कारागार की सैर करवा सकता है।

राहु खाना नं. 2 वाले व्यक्ति के यहां दिन के समय चोरी का भय बना रहता है। खाना नं. 2 मुंह यानी हमेशा दवाई खानी पड़े। घर में कोई बेऔलाद होगा और इस स्थिति में राहु संचित धन के नाश का कारण भी बनता है। लकवे आदि का रोग भी खाना नं. 2 के राहु से हो सकता है और मानसिक रोग भी।

राहु खाना नं. 2 वाले व्यक्ति की दायीं और बायीं आखों की नज़र में फर्क होता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हथियार से होने का भय रहता है। अंतड़ियों का रोग भी हो सकता है। इस घर में राहु होने पर व्यक्ति के पास धन की वर्षा उस दिन से होगी जिस दिन शनि खाना नं. 2 (वर्षफल के अनुसार) में आएगा और बृहस्पति शुभ हो।

राहु खाना नं. 2 वाला व्यक्ति हुक्मरान अवश्य होता है, चाहे वह जंगल में ही क्यों न रहे। यदि खाना नं. 2 का राहु शुभ हो, तो शुक्र का फल 25 वर्ष की आयु तक शुभ रहता है। यदि खाना नं. 2 का राहु

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

शत्रु ग्रहों से दृष्टिगत हो, या राशि के कारण खराब हो रहा हो जैसे खाना नं. 2 का राहु धनु या मीन राशिगत हो, तो 11 , 21 या 42 साल की उम्र तक राहु का असर शुभ न होगा। इस खाने में बैठे राहु वाला व्यक्ति दूसरों का माल तो बेशक सारी उम्र खाता रहता है, लेकिन खुद दान देने से भी कतराता है। राहु खाना नं. 2 के समय केतु खाना नं. 8 में हो, तो 25 वर्ष की आयु तक शुभ फल देगा, मगर 26वें साल की आयु से दोनों ग्रह अशुभ फल देने लगेंगे। मगर ऐसे व्यक्ति के पुत्र के जीवन में स्थिरता नहीं आती। राहु अगर मंदा हो, तो हाथों के नाखून झड़ने लग जाते हैं।

उपाय

1. चांदी की ठोस गोली पास रखें।
2. चांदी की ठोस गोली सोने में जड़वा कर (घुंघरू की तरह बने) गले में पहनें।
3. अगर सरकार से नुकसान हो, तो वजन के बराबर कोयले पानी में बहाएं।
4. अगर कुंडली में सूर्य खराब हो, तो तांबे का पैसा (सूर्य) कोयलों (राहु) पर गर्म करें।
5. घर में मंदिर न बनाएं और मंदिर न जाएं।
6. धर्म स्थान से पैसा चोरी करके लाना राहु के बुरे असर को कम करता है।
7. हाथी के पांव के नीचे की मिट्टी कुएं में गिराएं।
8. केसर चांदी की डिब्बी में बंद करके पास रखें।
9. विवाह के समय ससुराल से बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
10. अगर माता से संबंध ठीक रखे जाएं, तो सब हालात ठीक रहेंगे।

राहु खाना नं. 3 में

खाना नं. 3 मंगल व बुध से प्रभावित होता है। खाना नं. 3 पराक्रम से भी संबंध रखता है। मंगल पराक्रम का प्रतीक और बुध कन्या का प्रतीक है। खाना नं. 3 का राहु व्यक्ति को निडर बनाता है।

खाना नं. 3 का राहु एक बंदूक लिए पहरेदार की तरह होता है। ऐसे व्यक्ति के सामने शत्रु नहीं ठहर सकते। खुद के लिए यहां का राहु शुभ परंतु भाइयों के लिए मंदा होता है। खाना नं. 3 में राहु वाले व्यक्ति के स्वप्न सच्च होते हैं। कई बार ऐसा व्यक्ति भविष्य में घटने वाली बात को दो वर्ष पूर्व ही जान जाता है। ऐसे व्यक्ति की लेखनी में तलवार से ज्यादा ताकत होती है। ऐसा व्यक्ति मरने के पश्चात् जायदाद अवश्य छोड़ जाता है।

खाना नं. 3 में राहु के समय व्यक्ति के भाई है बंधु पैसा लेकर मुकर जाते हैं। उसकी धर्म–कर्म में श्रद्धा कम होती है। कभी–2 ऐसा व्यक्ति तुतला कर बोलता है।

राहू खाना नं. 3 के समय सूर्य का फल भी शुभ, बल्कि दो गुणा नेक होता है। ऐसा व्यक्ति कर्ज छोड़ कर नहीं मरता। राहु खाना नं. 3 के साथ यदि मंगल भी हो, तो ऐसे व्यक्ति को शाही सवारी का हाथी कहा गया है। राहु के साथ शुक्र, सूर्य और मंगल भी हो, तो खराब नहीं होते बल्कि ऐसे व्यक्ति को पत्नी और दौलत दोनों से सुख प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति की औलाद भी धनवान होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

राहु खाना नं. 3 के समय यदि कोई भी ग्रह खाना नं. 12 में होगा तो बुध व केतु मंदा प्रभाव देंगे। यदि राहु के साथ बुध भी बैठा हो, तो 22–23 या 34–35 की उम्र के बीच बहन विधवा हो सकती है या उसके गृहस्थ जीवन में उथल–पुथल हो सकती है।

उपाय

1. चांदी की डिब्बी में चावल डाल कर पास रखने चाहिए।
2. हाथी दांत को अपने पास रखना शुभ रहता है।
3. चांदी का हाथी या खिलौना रखना अशुभ रहेगा।

राहु खाना नं. 4 में

खाना नं. 4 हर प्रकार से चंद्रमा से प्रभावित होता है। राहु चंद्रमा का शत्रु है। अगर राहु खाना नं. 4 में हो, तो चंद्रमा की कारक वस्तुओं व रिश्तेदारों की हानि करेगा।

खाना नं. 4 का राहु व्यक्ति को धर्मात्मा तो बनाए मगर धन की कमी रखे। यदि राहु शुभ राशि का हो तो सवारी सुख, नहीं तो सब कुछ उलट–पुलट, माता को कष्ट। ऐसा व्यक्ति ख्याली पुलाव पकाने वाला होता है। व्यक्ति नानकों पर भारी। राहु खाना नं. 4 के समय यदि चंद्रमा श्रेष्ठ हो या खाना नं. 1 में हो, तो जातक धनी होता है। चंद्रमा जिस घर में होगा वहां की कारक वस्तुओं से धन इकट्ठा करके बुध वाले कारक रिश्तेदारों की मदद करता रहेगा। अगर सूर्य या मंगल खाना नं. 2 में हों, तो सहायता करेंगे। यदि टेवे में शुक्र शुभ हो, तो व्यक्ति की शादी के बाद से ससुराल में धन की वृद्धि होगी।

कई किताबों में राहु को खाना नं. 4 में धर्मी कहा गया है। खाना नं. 4 में राहु के साथ चंद्रमा हो, तो धर्मी टेवा कहलाएगा। राहु खाना नं. 4 के समय सूर्य, मंगल या बृहस्पति खाना नं. 10 में हो, तो सब ग्रह राहु के धुएं से बरबाद हो जाएंगे, लेकिन चौबीस वर्ष की आयु के बाद धन की वर्षा होगी और गरीबी पूर्ण रूप से खत्म हो जाएगी।

राहु खाना नं. 4 में आमतौर पर अच्छा फल देता है। लेकिन यदि वर्षफल के अनुसार राहु खाना नं. 4 में आए और व्यक्ति राहु की चीजें अपनाए या कायम करे, तो पूरी तरह से बरबाद हो जाए।–जैसे घर में कोयले की बोरियां रखे, घर के अंदर तंदूर या जमीन के नीचे भट्ठी बनाए या पानी वाली बाली जमीन के नीचे रखें।

राहु खाना नं. 4 के समय केतु या शनि राहु की हां में हां नहीं मिलाएगा, बल्कि सभी अपना–अपना फल देंगे। खाना नं. 4 में राहु के साथ चंद्रमा हो, तो घर में ही गंगा स्नान का फल प्राप्त हो।

राहु खाना नं. 4 वाले व्यक्ति को मकान की पुरानी छत ही नहीं बदलनी चाहिए बल्कि उसकी दीवारें भी बदले, वर्ना धन की हानि होगी। यदि केवल छत ही बदलनी पड़े, तो पुरानी छत का मलबा नई छत बनाने के समान में मिला लेना चाहिए।

उपाय

Future Point

1. जौ 4 किलो या 400 ग्राम पानी में बहाएं।
2. नारियल पानी में बहाएं।
3. चांदी पहन कर रखें।
4. धनियां 400 ग्राम पानी में बहाएं।
5. बादाम 400 ग्राम पानी में बहाएं।

राहु खाना नं. 5 में

खाना नं. 5 सूर्य + बृहस्पति + केतु और पुत्र सुख से संबंधित है। राहु खाना नं. 5 में पुत्र सुख को नष्ट करता है। गर्भपात का कारण भी बनता है। अगर कुंडली में मंगल अच्छा हो और राहु खाना नं. 5 में हो, तो व्यक्ति के यहां लड़के ही पैदा होंगे। खाना नं. 5 विद्या का भी स्थान है और इस घर का राहु विद्या में रूकावट डालता है।

जब टेवे में राहु खाना नं. 5 में बैठा हो, तो प्रथम स्त्री से संतान न हो। अगर होगी तो संतान के जन्म से 12 वर्ष तक स्त्री की सेहत खराब रहे। 21वें या 42वें वर्ष में पिता की जान को खतरा होता है। व्यक्ति स्थिर बुद्धि नहीं होता। यदि खाना नं. 5 का राहु शुभ राशि का होगा तो 4 पुत्र होंगे परंतु मूर्ख होंगे।

खाना नं. 5 का राहु कई बार पुत्रों को छोड़कर पौत्रों पर बुरा प्रभाव डालता है। राहु खाना नं. 5 में हो और वर्षफल में भी खाना नं. 5 में आ जाए, तो ससुर की जान को खतरा होता है। राहु खाना नं. 5 के समय यदि सूर्य, चंद्रमा मंगल खाना नं. 4, 6, 12 में हों या शनि + मंगल खाना नं. 9 में हों, तो व्यक्ति के भाई अधिक होंगे।

खाना नं. 5 के राहु को शरारती भी कहा गया है। राहु खाना नं. 5 के समय यदि चंद्रमा भी साथ ही बैठा हो और सूर्य खाना नं. 1, 5 या 11 में हो, तो व्यक्ति सूफी व आध्यात्मिक विचारों वाला होगा। राहु खाना नं. 5 के समय औलाद की पैदाइश पर व्यक्ति यदि जश्न मनाए, तो औलाद पर अशुभ असर पड़ सकता है।

उपाय

1. अगर औलाद से संबंधित परेशानी हो, तो 43 दिन धर्म स्थान में बादाम चढ़ाने चाहिए।
2. राहु खाना नं. 5 वाले व्यक्ति को नीलम नहीं पहनना चाहिए।
3. राहु खाना नं. 5 के समय यदि वर्षफल में भी राहु खाना नं. 5 में आ रहा हो, तो पहले ही पानी में बादाम डालें।
4. चांदी का हाथी घर में रखें।
5. शराब, मांस व परस्त्री से दूर रहें।
6. स्त्री के सिरहाने 5 मूलियां (पत्तों समेत) रखकर प्रातः मंदिर में देवें।
7. यदि औलाद की उत्पत्ति संबंधी परेशानी हो, तो अपनी स्त्री से विधिपूर्वक दुबारा शादी करें।
8. जद्दी मकान की दहलीज में चांदी दबाएं।
9. चांदी की गाय घर में रखें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

राहु खाना नं. 6 में

खाना नं. 6 बुध व केतु से प्रभावित होता है। छठा घर पाताल। खाना नं. 6 में बुध के ढ़ांचे में राहु के ख्यालात। इस खाने में राहु शुभ फल देता है। काला कुत्ता पालना और बड़े भाई का साथ लाभदायक। होता है राहु खाना नं. 6 वाले जातक को 13 वर्ष तक की उम्र में नजर जल्दी लगती है –नजर लगने का कारण जो व्यक्ति हो उसके पांव की मिट्टी आग में डालनी चाहिए।

अगर लड़की की कुंडली में राहु खाना नं. 6 में हो और केतु के साथ शुक्र खाना नं. 12 में हो, तो उस लड़की की सास ससुर से नहीं बनती। खाना नं. 6 के राहु का विदेश से भी संबंध है। जिस व्यक्ति के टेवे में खाना नं. 6 का राहु बली होगा, उसकी नाभि के पास तिल होगा। राहु खाना नं. 6 के समय यदि टेवे में मंगल अशुभ हो, तो व्यक्ति को खून से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं और सिक्के की गोली लाल रंग करके पास रखने से यह जहर दूर होता है।

खाना नं. 6 का राहु फांसी से बचाने वाला सहायक होता है। व्यक्ति बुद्धिमान और शूरवीर होता है। यदि बुध खाना नं. 12 में हो, या मंगल हो तो राहु का प्रभाव नीच होगा। ऐसे जातक के साथ बीमारी लगी रहती है और धन का नाश होता है। खाना नं. 6 वाला व्यक्ति धनवान, भाग्यवान शत्रु नाशक होता है। और में किसी की मृत्यु जल्दी। इस खाने के राहु वाले व्यक्ति के संपर्क में बदमाश लोग शीघ्रता से आते हैं।

खाना नं. 6 राहु का पक्का खाना है, इसलिए इस में राहु वाले व्यक्ति को हर प्रकार के ऐशो आराम की चीज़ें आसानी से मिल जाती हैं। कोई भी मुसीबत आए, वह थोड़े समय के लिए होती है। व्यक्ति गंदी आदतों से दूर रहने वाला होता है और हमेशा उन्नति करता है, चाहे कारोबार में तब्दीलियां होती रहें।

खाना नं. 6 का राहु अगर शत्रु ग्रहों की दृष्टि से अशुभ हो रहा हो या धनु और मीन राशि का हो, तो सब कुछ होते हुए भी व्यक्ति को चोरी की आदत होगी। ऐसे व्यक्ति के काम पर जाने से पहले कोई छींक मार दे, तो काम नहीं बनता। यदि कुंडली में बुध और केतु अशुभ होंगे, तो दौलत घटती जाएगी और घर में बीमारी बनी रहेगी।

उपाय

1. पूरा काले रंग का कुत्ता पालें।
2. सिक्के की ठोस गोली पास रखें।
3. काला गोलाकार शीशा पास रखें।
4. सरस्वती की मूर्ति के आगे 6 दिन लगातार नीले फूल चढ़ाएं।

राहु खाना नं. 7 में

खाना नं. 7 शुक्र का पक्का खाना है। राहु शुक्र का शत्रु है, इसलिए यानी खाना नं. 7 में राहु हो तो शुक्र का नाश यानी शुक्र से संबंधित वस्तुओं की हानि यानी गृहस्थ अशांत होती है। व्यक्ति का स्त्री तथा गृहस्थी से लगाव कम होगा। पत्नी बीमार रहे, धन दौलत नष्ट हो। इस खाने का राहु तलाक तक की

संभावना बना देता है।

खाना नं. 7 बुध से भी प्रभावित है और राहु बुध से भी शत्रुता रखता है। बुध व्यवसाय और बुद्धि का कारक है, इसलिए खाना नं. 7 का राहु इन चीजों पर बुरा प्रभाव डालेगा।

आदमी के टेवे में राहु खाना नं. 7 में हो, तो उसकी शादी अपने से बड़ी उम्र की लड़की से होने का योग बनता है।

सातवें घर के राहु को चाण्डाल व लक्ष्मी (धन या स्त्री) का धुआं निकालने वाला कहकर पुकारा गया है। विवाह यदि 21वें वर्ष में या उससे पहले हो, तो असर बुरा होगा। पद और धन अच्छे मिलें, लेकिन ऐसे व्यक्ति की दौलत यार–मित्र ही खा जाएं। बुध और शुक्र खाना नं. 2 या 11 में हों तो श्रेष्ठ फल देते हैं।

व्यक्ति अगर बिजली के सामान का कारोबार करे तो नुकसान उठाएगा। राहु खाना नं. 7 के समय शुक्र खाना नं. 1 में हो, तो स्त्री को कष्ट व धन का नाश हो। राहु खाना नं. 7 में हो, तो स्त्री का गर्भपात हो, सिर दर्द रहे। ऐसा व्यक्ति सट्टे का शैकीन होता है। खुफिया पुलिस की नौकरी भी कर सकता है।

राहु खाना नं. 7 के समय कुत्ता पालना बहुत अशुभ फल देता है। यदि बुध, केतु व शनि खाना नं. 11 में हो और उनसे संबंधित कारोबार किया जाए, तो नुकसान होगा। राहु खाना नं. 7 के समय यदि मंगल + शनि खाना नं. 5 में हों, तो व्यक्ति के नर औलाद 42 वर्ष की आयु में होगी लेकिन लड़की पहले भी पैदा हो सकती है।

उपाय

1. अगर शादी 21वें वर्ष में या उससे पहले हो जाए, तो चांदी के गोल बर्तन में गंगाजल भरकर, उसमें चांदी का टुकड़ा डालकर धर्म स्थान में दें और अपने पास भी रखें।
   आवश्यक : यदि राहु वर्षफल में खाना नं. 7 में आए तो उपरोक्त उपाय करने के लिए बर्तन साल भर घर में रखें, पर धर्म स्थान में न दें।
2. विवाह के समय ईंट चांदी की ईंट, ससुराल वालों से लेकर अपने पास रखें।
3. स्त्री की सेहत खराब हो, तो चांदी की ईंट खुद बनवाकर स्त्री को दें।
4. कभी–2 नारियल आदि पानी में बहाने चाहिए।
5. व्यापार व मानसिक तनाव के समय जौ दूध में धोकर पानी में बहाएं।
6. जिस स्त्री से शादी हुई हो, उसी से दो बार विधी पूर्वक ब्याह करें।
7. कुत्ता भूलकर भी न पालें।

राहु खाना नं. 8 में

खाना नं. 8 शनि व मंगल से प्रभावित होता है। राहु, मंगल का परम शत्रु परंतु शनि का सेवक है। क्योंकि शनि खाना नं. 8 में मंदा प्रभाव रखता है, इसलिए इस घर का राहु भी अशुभ प्रभाव देगा। इस घर का राहु बनते कामों में रुकावट डाले, झगड़े–फसाद, बीमारी, फजूलखर्ची, धन हानि यानी हर प्रकार की उलझनों का कारक।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

राहु की इष्ट सरस्वती है, इसलिए राहु का सभी शक्तियों पर प्रभाव है। राहु खाना नं. 8 में हो, तो जातक के पांव के पास चोट का या जन्म का कोई पक्का निशान होता है। घर में कोई बेऔलाद हो। यदि टेवे में चंद्रमा दूषित हो रहा हो, तो घर में किसी को सांस की तकलीफ या पुश्तैनी बीमारी होती है।

खाना नं. 8 के राहु वाला जातक पेट के रोगों और बवासीर का शिकार भी बन सकता है। यदि मंगल खाना नं. 12 में हो, तो राहु बुरा प्रभाव नहीं देता। यदि 28 वें साल में वर्षफल के अनुसार मंगल खाना नं. 1 या 8 में और शनि खाना नं. 6 में आ जाए, तो भाग्य जागे और धन बढ़े। खाना नं. 8 का राहु अचानक दुर्घटना और धोखा करवा सकता है।

टेवे में राहु खाना नं. 8 में हो और वर्षफल में भी खाना नं. 8 में आ जाए, तो बहुत नुकसान करवाएगा। इस जहरीले असर को दूर करने के लिए जब जन्म से आठवां महीना शुरू हो जाए, व्यक्ति उस दिन से हर रोज 8 बादाम मंदिर/धर्म स्थान लेकर जाए और वहां रख कर 4 वापिस लाए। यह उपाय अगले जन्म दिन तक करता रहे, उसके बाद घर लाए बादाम पानी में बहा दे।

राहु खाना नं. 8 के समय यदि शनि खाना नं. 2 या 3 में हो, तो चाचा की आर्थिक स्थिति व औलाद की जड़ कट जाती है और यह अशुभ असर उस समय होगा, जब व्यक्ति शनि की चीज़ें जूते, मकान, मशीन आदि खरीदेगा।

खाना नं. 8 का राहु मंदा होने पर बेईमानी से कमाए धन का 8 गुणा नुकसान करवाए और जातक अच्छे खानदान का होते हुए भी काफिरों जैसा काम करे।

केवल मकान की छत बदलने से चंद्रमा राहु के विरुद्ध हो जाएगा और राहु शनि के विरुद्ध। ऐसे हालात में टेवे में राहु कितना भी शुभ क्यों न हो, नीच प्रभाव देगा। मकान के अंदर का फर्श घंसने लगे तब भी राहु मंदा फल देने लगेगा।

राहु खाना नं. 8 के समय यदि शनि खाना नं. 6 में हो, तो मौत सर पर मंडराने लगे।

उपाय

1. चांदी का चौकोर टुकड़ा पास रखें।
2. भट्ठी में तांबे के पैसे डालने चाहिए।
3. मंदिर/धर्मस्थान में बादाम चढ़ाएं।
4. खोटे सिक्के लगातार 43 दिन पानी में फेंके।
5. कारोबार के लिए 800 ग्राम / 8 कि. सिक्के के 8 टुकड़े करके तेज गहरे पानी में फेंक दें।

विशेष : राहु खाना नं. 8 के समय यदि सूर्य खाना नं. 4 में हो, तो सिक्के पानी में मत डालें वर्ना यह दिल पर चोट करेंगे, यानी दिल की बीमारी होगी जिसका कोई ईलाज नहीं।

राहु खाना नं. 9 में

खाना नं. 9 हर प्रकार से बृहस्पति का पक्का घर है। बृहस्पति धर्म का कारक है। राहु इस खाने में हो,

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

तो व्यक्ति को धर्महीन बनाए। इस घर का राहु मान प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाता है। अगर बृहस्पति खाना नं. 5 में हो, तो राहु बुरा फल न देगा। सगे भाई बहनों से बनाकर रखना और बुजुर्गों का आशीर्वाद लाभकारी होगा, वर्ना नुकसान करेगा। यदि व्यक्ति धर्महीन होगा, तो संतान निकम्मी होगी। शनि के कारोबार कभी मंदा असर नहीं करते।

राहु खाना नं. 9 के समय वर्षफल में खाना नं. 4 का ग्रह जब खाना नं. 1 में आयेगा, तो राहु को खराब करेगा जिससे अदालती झगड़े हों व संतान कष्ट में पड़े। यदि शनि खाना नं. 5 में होगा, तो राहु शनि की आज्ञानुसार फल देगा, अर्थात संतान उत्पन्न नहीं होगी।

राहु खाना नं. 9 के समय बृहस्पति खाना नं. 5 या 11 में हो, तो बृहस्पति का असर ठीक नहीं रहता। खाना नं. 9 में राहु वाला व्यक्ति साधुओं या फकीरों पर फजूल खर्च करता रहता है। इस घर का राहु चंद्रमा के फल को मध्यम करता है अगर टेवे में चंद्रमा अशुभ हो, तो संतान का नाश गर्भ में ही हो सकता है।

राहु खाना नं. 9 के समय व्यक्ति यदि घर में जमीन के अंदर भट्ठी या तंदूर बनाए, या जमीन के नीचे पानी की टंकी स्थापित करे या घर की दहलीज के नीचे गंदा पानी गुजरने की जगह रखे तो राहु मंदा फल देने लगेगा। ऐसी हालत में कुत्ता पालना मददगार साबित होगा। कई बार कुत्ता ग्यारह बार तक मर सकता है। अगर एक मर जाए तो तुरंत दूसरा ले आना चाहिए। ऐसी हालत में कुत्ते मरते जाएंगे, किंतु औलाद की उम्र बढ़ती जाएगी।

राहु खाना नं. 9 के समय ससुराल के लोगों तथा घर के बुजुर्गों से संबंध अच्छे रखने चाहिए।

उपाय

1. पिता–दादा या उनके समान व्यक्ति का आशीर्वाद लेना चाहिए।
2. ईमानदारी की कमाई में बरकत होगी।
3. कुत्ता पालना संतान के लिए शुभ रहे।
4. नीले और काले कपड़े न पहनें।
5. ससुराल से या किसी मित्र से बिजली का सामान मुफ्त न लें।
6. सर पर चोटी रखना, केसर का तिलक लगाना, सोना धारण करना शुभ फल देंगे।

राहु खाना नं. 10 में

खाना नं. 10 शनि से प्रभावित व उसका पक्का घर है। खाना नं. 10 में बैठा राहु टेवे में शनि की स्थिति के अनुसार फल देगा। राहु खाना नं. 10 के समय व्यक्ति यदि नंगे सर रहे, तो राहु नीच प्रभाव देता है। यदि शनि भी साथ हो तो श्रेष्ठ फल देता है, परंतु यदि टेवे में मंगल बद हो रहा हो, तो राहु अधिक नीच हो जाता है। खाना नं. 10 का राहु पिता के लिए शुभ फल देने वाला होता है, खुद व्यक्ति के लिए भी मान–सम्मान का कारण होता है।

खाना नं. 10 शनि का है। यदि शनि कुंडली में उच्च का हो, तो व्यक्ति बहादुर, धनी और बड़ा व्यापारी

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

होता है, लेकिन यदि टेवे में शनि मंदा हो, तो यही राहु खानदानी सोने में जंग लगा दे, जद्दी जायदाद बिकवा दे। पिता की सेहत ठीक लेकिन माता की खराब रहे। व्यक्ति यदि कंजूस होगा, तो दूसरों से शत्रुता बने। राहु खाना नं. 10 के समय अकेला चंद्रमा खाना नं. 4 में हो तो व्यक्ति की आखें खराब होगी का भय रहे। सरदर्द की बीमारी लगी रहे।

खाना नं. 10 के राहु को "सांप की मणि" भी कहा गया है। यदि टेवे में मंगल श्रेष्ठ हो, तो राहु भी शुभ रहता है।

उपाय

1. सिर पर सफेद टोपी का इस्तेमाल करें।
2. रात को दूध मत पीएं।
3. सिर पर चोटी रखें।
4. अंधों को अपने हाथों भोजन करवाएं।
5. शनि के मंदे कामों से बचें।
6. मसूर की दाल पानी में बहाएं।
7. 4 किलो देशी खांड पानी में बहाएं या मंदिर में दें।

राहु खाना नं. 11 में

खाना नं. 11 बृहस्पति (धन) + शनि से प्रभावित होता है। खाना नं. 11 का राहु पिता या बाबा को हानि पहुंचाता है। बाबा या पिता का मुंह न देखे। व्यक्ति के जन्म के बाद पिता की आय आधी रह जाएगी। व्यक्ति अपने कामों में चौकन्ना और धूर्त होता है मित्रों का साथ बना रहता है। नीच ढंग से और नीच लोगों से धन प्राप्त करता है।

राहु खाना नं. 11 के समय यदि खाना नं. 3 या 5 में शनि हो, तो व्यक्ति योगी होता है। वर्षफल के अनुसार जब राहु खाना नं. 1 में आए, तो जातक 4 वर्ष की आयु तक पिता व दादा के लिए मृत्यु तुल्य होता है। यदि टेवे में मंगल बद हों, तो व्यक्ति के जन्म से पहले घर में सब कुछ होता है, लेकिन जन्म के तुरंत बाद सब कुछ नष्ट हो जाता है।

खाना नं. 11 में राहु के समय व्यक्ति की ग्यारह मास, या ग्यारह वर्ष या 21 वर्ष की आयु में बृहस्पति की कारक वस्तुओं यानी पिता और सोना आदि का नुकसान होता है। फिजूलखर्ची, चोरी या बदनामी का भय रहता है। व्यक्ति की जद्दी जायदाद व ससुराल का धन कम होना शुरू हो जाता है।

राहु 11 के समय व्यक्ति, उसका बेटा व बाप कभी इकट्ठे नहीं चल सकते, यानी तीनों इकट्ठे जीवित नहीं रहते। पिता की उम्र के लिए फल शक्की होता है। राहु के अशुभ असर को दूर करने के लिए तन पर सोना धारण करना चाहिए और कभी–2 भंगी को दान में पैसे देना शुभ असर देगा। यदि खाना नं. 3 में बृहस्पति हो, तो सोने की बजाय तन पर लोहा धारण करना चाहिए। चांदी की टूटी में सिगरेट पीना राहु के जहर को दूर करता है। राहु खाना नं. 11 के समय यदि मंगल खाना नं. 3 में हो, तो व्यक्ति के भाई

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

को गर्दन की कोई बीमारी हो सकती है या उसका ताया लंगड़ा होगा या बेऔलाद होगा।

उपाय

1. हर जन्म दिन पर 4 किलो सिक्के एक पीस और 4 सूखे नारियल तेज गहरे पानी में बहाएं।
2. हाथी दांत या हाथी का खिलौना घर में रखना वर्जित है।
3. लोहे का बिना जोड़ का छल्ला बुध की उंगली में धारण करें।
4. पिता की मृत्यु के बाद पीला भोजन करें व पीला वस्त्र धारण करें।
5. सोना पहनें व केसर का तिलक लगाएं।
6. चांदी के गिलास में पानी पीएं।
7. वीरवार को चने की दाल व हल्दी पीले कपड़े में बांध कर दान करें और उस दिन लहसुन, मसूर व प्याज न खाएं।
8. नीले काले कपड़े व बिना मूल्य की डयूटी की वर्दी पहनना वर्जित है।
9. भंगी को सिक्के दान करें।

राहु खाना नं. 12 में

खाना न. 12 बृहस्पति का पक्का घर है। खाना नं. 12 आकाश है। यह शैया सुख का नींद का, आराम का घर है। खाना नं. 12 का राहु नींद खराब करे। यदि ऐसे में व्यक्ति झूठ बोले और बेईमानी करे तो और भी मंदा फल मिले।

खाना नं. 12 खुला आकाश और राहु वहां गीली लकड़ियों का काम करे यानी धुआं बनकर आखों को जलाए। यह व्यक्ति को शेख चिल्ली बनाता है।

राहु खाना नं. 12 में हो और वर्षफल में भी खाना नं. 12 में आ जाए, तो नया काम नहीं करना चाहिए। राहु मुकदमा व जेल का कारण है। अगर कुंडली में मंगल प्रबल हो, तो राहु का मंदा प्रभाव समाप्त हो जाएगा।

राहु खाना नं. 12 में हो तो पसलियों और अंतरियों के रोगों मानसिक, बवासीर आदि होने का भय बना रहता है। इस घर का राहु रात की नींद हराम करे। पुत्री या बहन पर बिना मतलब का खर्चा करना, कभी–कभी उनका ऋण भी उतारना पड़ता है। यदि व्यक्ति बहुत परिश्रम करके कमाई करे परंतु रात को नींद न आए, तो राहु को नीच समझना चाहिए।

राहु खाना नं. 12 के समय टेवे में यदि शनि नीच हो और व्यक्ति योगाभ्यास से संन्यासी बनना चाहे तो अपंग हो जायेगा। यदि आंखों द्वारा सिद्धि प्राप्त करना चाहे तो अंधा होने का भय रहता है। सिर के बल साधना करे, तो पागल हो जाए और यदि एक टांग के बल खड़ा होकर साधना करेगा, तो लंगड़ा हो जाएगा।

राहु खाना नं. 12 के समय यदि शुक्र खाना नं. 10 या 11 में होगा, तो व्यक्ति के यहां लड़कियां और धन दोनों काफी मात्रा में होते हैं, वरना लड़कियों की हालत कुंडली में बुध के अनुसार और धन की हालत

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

टेवे में बृहस्पति के अनुसार होगी।

उपाय

1. जहां खाना बने वहीं खाएं।
2. सौंफ+शक्कर सिरहाने के नीचे रखकर सोएं।
3. पानी में 12 किलो कच्चे कोयले बहाएं
4. यदि किसी काम पर जाने से पहले कोई छींक दे, तो कुछ देर ठहर कर जाएं।
5. मूंगा सिरहाने के नीचे रख कर सोएं।
6. अपनी आय का कुछ भाग बेटी या बहन को देते रहना चाहिए।
7. एक छोटी सी बोरी के समान लाल थैली में सौंफ भरकर अपने सोने वाले कमरे में रखनी चाहिए।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. राहु खाना नं. 1 के समय सूर्य का 12 भावों पर क्या प्रभाव होगा?
2. राहु के किन घरों में होने से पागलखाना या जेलखाना कहा जाता है?
3. दूसरे घर में राहु हो, तो मन्दिर जाना वर्जित क्यों है?
4. खाना नं. 3 के राहु का प्रभाव विस्तार से लिखें।
5. राहु का 12 खानों में संक्षिप्त प्रभाव लिखें।
6. खाना नं. 9 के राहु को देखने के लिए किस ग्रह को देखना पड़ेगा?
7. खाना नं. 11 का राहु किन तीन वस्तुओं पर अशुभ प्रभाव डालता है?
8. राहु की कारक वस्तुएं एवं कारक रिश्तेदार लिखें।
9. किस घर के राहु के कारण जिन्दगी एक हिन्डोले की तरह होती है।
10. राहु के 12 खानों में 2–2 उपाय तर्क सहित लिखें।

Future Point

खण्ड 9 – केतू

केतु

रंग चितकबरा (काला–सफेद), पुत्र सुख, सफर और शानो–शौकत के बारे बताने वाला। राहु बदी का साथी तो केतु नेकी का साथ देने वाला।

लड़का, भांजा, दोहता, कुत्ता, सुअर, छिपकली, गधा, कुली, निर्दोष चूहा, ब्याज, कान, टांग, रीढ़ की हड्डी, जोड़, मसाना, लाजवर्त, लहसुनियां, तिल, खटास, केला, काला सफेद कंबल, इमली, चारपाई दहेज़ वाली, प्याज़, लहसुन आदि सब वस्तुएं केतु से संबंधित हैं।

टेवे का एक सिरा यानी खाना नं. 6 केतु का है जबकि टेवे का बारहवां घर धुरे का दूसरा सिरा है जिस पर सब ग्रह कुण्डली के घरों में घूमते हैं। कुण्डली के घरों को एक से बारह तक एण्टी क्लाक वाईज़ गिना जाता है जबकि राहु और केतु घर बदलते हैं।

बृहस्पति केतु की निर्बलता को दूर करता है और केतु के प्रभाव को शुभ करता है। चंद्र और मंगल केतु के शत्रु हैं।

चंद्र दूध है और केतु नींबू, यानी जब दोनों मिलें, तो दूध फट जाए। इसलिए पुराने जमाने में दूध को फाड़ना पाप समझा जाता था। केतु चंद्रमा को ग्रहण लगाता है और मन की शांति भंग करता है, इसलिए दूध को केतु के नींबू से फाड़ने का मतलब है मन की शांति को ठोकर मारना।

मंगल शेर है और केतु, कुत्ता इसलिए शेर के आगे कुत्ते की क्या औकात। शेर को देखते ही कुत्ते की आधी जान निकल जाए। इसलिए मंगल और केतु का मिलन दोषपूर्ण है।

बुध बकरी और केतु कुत्ता, यानी बुध केतु का शत्रु। बुध ने केतु को कमजोर बनाया तो केतु ने बुध को दोषपूर्ण कर दिया। व्यापार में ब्याज की परवाह न की और ब्याज का लालच बढ़ा तो व्यापार में कमी आएगी। बिना ब्याज सौदा बेचा, तो ग्राहक पक्के होंगे और व्यापार में तरक्की होगी इसलिए केतु (ब्याज) और बुध (ब्यापार) दोनों एक दूसरे के शत्रु। केतु (कुत्ता) और बुध (पूंछ) इसी कारण कुत्ते की (केतु) पूंछ (बुध) कटवा दें, तो उसके हकलाने का खतरा नहीं रहता।

केतु उच्च के मनसूई ग्रह शुक्र + शनि हैं और केतु नीच के मनसूई ग्रह चंद्रमा + शनि हैं। केतु का दिन रविवार है। इसका समय प्रातःकाल सूर्योदय के कुछ मिनट पहले है।

केतु खाना नं. 1 में

खाना नं. 1 सूर्य व मंगल से प्रभावित होता है। सूर्य, मंगल दोनों केतु के शत्रु हैं, इसलिए खाना नं. 1 का केतु कमजोर होता है जैसे बंधा हुआ कुत्ता उस समय के इंतजार में कि कब बंधन खुले। जिस व्यक्ति के टेवे में केतु खाना नं. 1 में होगा वह जिरह करने वाला होगा, चाहे वह जिरह फजूल ही क्यों न हो, परंतु शर्त यह कि केतु मित्र ग्रहों की मदद से उत्तम हो रहा हो।

केतु खाना नं. 1 के समय यदि व्यक्ति के यहां पुत्र न हो, तो संभोग पर संयम रखना चाहिए जो पुत्र प्राप्ति के लिए लाभकारी साबित होगा। यानी व्यक्ति को लंगोट का पक्का होना जरूरी है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

केतु खाना नं. 1 में चाहे बंधा हुआ कुत्ता ही क्यों न हो, परंतु सूर्य को बल प्रदान करता है। इसलिए केतु वर्षफल में जब पहले खाने में आए, तो व्यक्ति के यहां लड़का, दोहता या भांजा पैदा होने की संभावना होती है।

खाना नं. 1 का केतु बृहस्पति के फल को काफी हद तक शुभ कर देता है। पहले खाने का केतु सफर से गहरा संबंध रखता है, यह यात्रा के लिए टिकट तो कटवाता है लेकिन आखिरी वक्त पर यात्रा रुक जाती है यदि नौकरी में तबादला हो रहा हो और केतु खाना नं. 1 में आ जाए, तो तबादला रुक जाएगा।

केतु खाना नं. 1 के समय यदि सूर्य खाना नं. 6 या 7 में हो, तो सूर्य का फल नीच नहीं होगा बल्कि अच्छा फल ही देगा। परंतु शादी के बाद खाना नं. 1 का केतु अशुभ फल देने लगेगा। ऐसे में शनि का उपाय करना चाहिए, वर्ना व्यक्ति का बेटा ही उसके लिए नुकसानदेह साबित होगा।

केतु खाना नं. 1 के समय व्यक्ति का जन्म अपने जद्दी मकान यानी बाप के घर में नहीं होता। लेकिन जिस घर में जन्म होगा उस परिवार पर अपना मंदा प्रभाव जरूर डालेगा। यदि खाना नं. 2 या 7 खाली हो तो शुक्र और बुध दोनों की कारक वस्तुओं पर अशुभ असर डालेगा।

केतु खाना नं. 1 के समय खून की बीमारीयां आदि होती हैं। यदि सूर्य खाना नं. 7 में हो, तो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक।

उपाय

1. शाम के वक्त लड़के को और सुबह के वक्त लड़की को मिठाई वगैरह अपने हाथ से न दें।
2. मंदिर/धर्म स्थान में नारियल चढ़ाएं।
3. लोहे की ठोस गोली लाल रंग करके अपने पास रखें।
4. लंगोट पर काबू रखना अति आवश्यक है।

केतु खाना नं. 2 में

खाना नं. 2 शुक्र, बृहस्पति व चंद्रमा से प्रभावित होता है। बृहस्पति भोले बाबा शिवजी, शुक्र उनकी सवारी बैल और चंद्रमा उनके माथे की शोभ जब केतु खाना नं. 2 में हो, तो चंद्रमा ग्रसित होता है, इसलिए बृहस्पति और शुक्र का नुकसान होता है। व्यक्ति बैल की तरह हर समय घूमने फिरने वाला काम करके खुश रहता है। कभी भी एक जगह जमकर बैठने की सुविधा न मिले।

खाना नं. 2 का केतु अच्छा हुक्मरान कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति को यात्राएं बहुत करनी पड़ती हैं, लेकिन यात्राएं अधिकतर जमीन की होती हैं। खाना नं. 2 का केतु जीवन में बहुत उतार चढ़ाव लाता है, लेकिन बृहस्पति की मदद के कारण भाग्यवर्धक होता है।

कालपुरुष की कुण्डली के अनुसार खाना नं. 2 शुक्र का घर है, इसलिए इस घर का केतु पत्नी के लिए ठीक फल ही देगा। ऐसे व्यक्ति के पास पैसा लाखों में आए, पर जमा नहीं रहता। धन व स्त्री की हालत देखने के लिए क्रमशः बृहस्पति व शुक्र की हालत देखना जरूरी है।

केतु खाना नं. 2 के समय यदि सूर्य खाना नं. 12 में हो, तो व्यक्ति 24 वर्ष की आयु में खुद कमाई करने लगेगा और जीवन सुखमय होगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

केतु खाना नं. 2 के समय यदि खाना नं. 8 में चंद्रमा या मंगल हो, तो इनसे संबंधित चीजों का 16 और 22 साल की उम्र में असर अशुभ रहेगा। यह व्यक्ति की खुद की आयु के लिए भी अशुभ है।

उपाय

1. माथे पर केसर लगाना चाहिए, गले में सोना धारण करना चाहिए।
2. धर्म स्थान में केसर और तिल चढ़ाने चाहिए और मस्तक झुकाना चाहिए।
3. केतु खाना नं. 2 के समय नाक छेद करवाना एक उत्तम उपाय है।

केतु खाना नं. 3 में

खाना नं. 3 केतु के शत्रु मंगल के साथ बुध से भी प्रभावित होता है खाना नं. 3 में तीन ग्रह, जो आपस में शत्रुता रखें। तीसरा खाना साली के द्वारा ससुराल का प्रतिनिधित्व करे। इसके अलावा बुध बहन और बुआ का कारक है।

खाना नं. 3 में केतु के समय व्यक्ति भाई–बंधुओं से झुककर रहने वाला हो या उनसे अलग परदेश में रहे। केतु इस घर में मंगल जैसा (शेर) या मंगल केतु जैसा (कुत्ता) इसलिए दोनों बेकार होते हैं।

खाना नं. 3 को खाना नं. 8 का दरवाजा माना जाता है। खाना नं. 8 मौत का घर और दक्षिण दिशा इसलिए केतु खाना नं. 3 के समय यदि व्यक्ति दक्षिण दरवाजे के मकान में रहे, तो पुत्रों में विघ्न हो या उनकी ओर से जातक दुखी रहे। रीढ़ की हड्डी और फोड़े–फुंसी आदि का कारक होता है।

खाना नं. 3 के केतु को टुन–टुन करते रहने वाला कुत्ता भी कहा गया है। इस घर का केतु दरवेश जैसा होता है। दरवेश होने के कारण दैवी सहायता प्राप्त होती है, परंतु जीवन में उलझनें भी आती हैं। केतु तीन के समय अगर मंगल खाना नं. 12 में हो और 24 वर्ष की उम्र में व्यक्ति के यहां बेटा पैदा हो, तो केतु शुभ फल देगा, खासकर उस समय जब घर में कोई बुजुर्ग हो, जिसके बाल सफेद हो चुके हों।

केतु खाना नं. 3 के समय व्यक्ति का पड़ोस बुरी हालत में होता है। व्यक्ति यदि भाइयों से बदले की भावना रखे तो फल बुरा हो। केतु खाना नं. 3 के समय मंगल चौथे घर में और चंद्रमा तीसरे घर में हो, तो व्यक्ति को गरीब बनाते हैं। यदि चंद्रमा और मंगल खाना नं. 8 में हों और मकान का दरवाजा दक्षिण की ओर हो, तो हर तीसरे साल व्यक्ति की औलाद पर अशुभ असर पड़े। कई बार तो मृत्यु तक की संभावना बन जाती है।

उपाय

1. गुड़, चावल, दूध, गेहूं आदि पानी में बहाएं।
2. चने की दाल या केसर पानी में बहाएं।
3. कानों में सोना धारण करना अति उत्तम उपाय है।
4. हरे रंग का इस्तेमाल न करें।
5. साली को साथ न रखें।

केतु खाना नं. 4 में

खाना नं. 4 केतु के शत्रु चंद्रमा का घर है। इस घर में केतु निर्बल हो जाता है यानी हर समय बीमार

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

रहने वला बेटा। इस घर का केतु माता पक्ष के लिए हानिकारक होता है यानी चंद्रमा रूपी दूध का केतु रूपी निंबू से फटना। केतु चंद्रमा को ग्रहण लगाता है, इसलिए आर्थिक तंगी का कारण बनता है। अगर खाना नं. 4 में केतु के साथ मंगल हो, तो व्यक्ति को मधुमेह और खून में शुक्राणु कम होने का डर रहता है।

खाना नं. 4 के केतु को बच्चों को डराने वाला कुत्ता या समुद्र में आया तूफान भी कहा गया है। केतु खाना नं. 4 के समय यदि बृहस्पति उत्तम हो, तो पिता के लिए शुभ हो, परंतु व्यक्ति औलाद (बेटे) को तरसे। यदि वर्षफल के अनुसार बृहस्पति अति उत्तम हो जाए, तो खानदानी गुरु के आशीर्वाद से संतान (पुत्र) की प्राप्ति हो। चौथे घर का केतु मामा के सुख में बहुत कमी करता है।

उपाय

1. धर्म स्थान में सोना दान करना चाहिए।
2. कुल पुरोहित को पीले वस्त्र का दान करके आशीर्वाद लेना चाहिए।
3. सोना गर्म करके उसे दूध में बुझा कर दूध पीना चाहिए।
4. पीले रंग के नींबू पानी में बहाने चाहिएं।

केतु खाना नं. 5 में

खाना नं. 5 सूर्य का पक्का घर होता है। संतान या पुत्र सुख के लिए पांचवा घर देखा जाता है। लाल किताब के अनुसार केतु पुत्र का कारक है वैसे संतान का कारक बृहस्पति है, इसलिए खाना नं. 5 बृहस्पति का पक्का खाना माना जाता है। राहु सूर्य को पूर्ण ग्रहण और केतु अर्ध ग्रहण लगाता है, इसलिए केतु खाना नं. 5 के समय बृहस्पति, जो संतान का कारक और सूर्य का मित्र है, की वस्तुएं रखने करने से लाभ होगा।

यदि बृहस्पति की जड़ में यानी दूसरे, पांचवें, नौवें तथा बारहवें घर में बृहस्पति के शत्रु ग्रह, बुध, शुक्र, राहु या बृहस्पति खुद खाना नं. 7, 8, 10 या 6 में निर्बल हो रहा हो, तो पितृऋण का उपाय करने से बृहस्पति की मदद मिल सकेगी।

खाना नं. 5 के केतु को "अपनी रोटी के टुकड़े के लिए गुरु का निगरान" कहा गया है। इसका मतलब यह है कि खाना नं. 5 बृहस्पति का पक्का खाना है और बृहस्पति केतु का गुरु है।

केतु खाना नं. 5 के समय व्यक्ति जवानी के दिनों अपना चाल चलन ठीक रखे, तो केतु का फल शुभ रहेगा। यदि केतु खाना नं. 5 के समय सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति खाना नं. 4, 6 या 12 में हों, तो व्यक्ति के लड़के ज्यादा होंगे तथा आर्थिक हालत भी अच्छी ही होगी।

केतु खाना नं. 5 में शुभ बैठा हो और शनि खाना नं. 9 में तथा शुक्र खाना नं. 4 में हो तो औलाद पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता और व्यक्ति के पत्नी से संबंध भी ठीक रहते हैं इच्छानुसार लड़के और लड़की संतान प्राप्त होगी।

केतु खाना नं. 5 के समय यदि बृहस्पति अति अशुभ हो जाए, तो इसका असर व्यक्ति की औलाद पर पड़ेगा, उसे दमा या सांस आदि की बीमारियां हो सकती हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

केतु खाना नं. 5 के समय चंद्रमा या मंगल खाना नं. 3 या 4 में होने से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर होती है। उसके सोचने, विचारने की शक्ति को भी चोट पहुंचती है।

उपाय

1. चंद्रमा व मंगल की वस्तुएं दान करें।
2. किसी ब्राह्मण या कुल पुरोहित को पीले वस्त्र दान में दें।
3. पितरों का श्राद्ध विधिपूर्वक से करें।
4. सौफ, देशी खांड, चावल व दूध आदि पानी में बहाएं।
5. केसर का तिलक लगाएं।

केतु खाना नं. 6 में

खाना नं. 6 बुध व केतु से प्रभावित होता है। क्योंकि बुध केतु से शत्रुता रखता है, इसलिए खाना नं. 6 का केतु मंदा माना जाता है। केतु खाना नं. 6 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 2 में हो, तो केतु को नुकसान पहुंचता है। खाना नं. 6 का केतु नाभि के नीचे की बीमारियों का कारक भी माना जाता है। ऐसे में बीमारी की शिनाख्त नहीं हो पाती।

खाना नं. 6 के केतु को "शेर कद वाला खूंखार कुत्ता" कहा गया है और साथ ही दोरंगी दुनिया भी कहा गया है। खाना नं. 6 में केतु अकेला हो तो व्यक्ति अपने पिता का सहायक बनता है तथा खुद के लिए भी फल अच्छा होता है। लेकिन दूसरे संबंधियों के लिए इस घर का केतु शुभ फल नहीं देता।

केतु खाना नं. 6 के समय यदि बृहस्पति टेवे में शुभ पड़ा हो, तो औलाद के लिए अच्छा फल देता है। यदि बृहस्पति खाना नं. 2 से केतु के साथ दृष्टि संबंध बना रहा हो, तो व्यक्ति की आयु के लिए शुभ है। यदि टेवे में शुक्र अपनी राशि का हो या उच्च का हो, तो व्यक्ति की स्त्री की सेहत के लिए फल शुभ रहता है। यदि शुक्र भी खाना नं. 6 में केतु के साथ हो, तो दोनों का फल खराब हो जाता है। ऐसा व्यक्ति बुजदिल एवं डरपोक होता है।

खाना नं. 6 में केतु के साथ बुध के सिवाय कोई और ग्रह होगा, तो केतु उस ग्रह की कारक वस्तुएं नष्ट कर देगा। केतु खाना नं. 6 के समय यदि बृहस्पति या शुक्र कोई भी ग्रह अशुभ हो रहा हो, तो व्यक्ति के पांव में खराबियां आए, या पांव में चक्कर आए और पत्नी की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़े।

उपाय

1. बाएं हाथ में शुद्ध सोने का छल्ला धारण करें।
2. दूध में केसर मिलाकर पीएं।
3. धर्म स्थान में काला सफेद कंबल दान करें।
4. कुत्ता पालें।
5. तीन केले (केला–बृहस्पति, तीन–बुध) 43 दिन लगातार मंदिर में दें।
6. गर्म सोना दूध में बुझाकर पीना औलाद और मन की शांति के लिए शुभ।

केतु खाना नं. 7 में

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

खाना नं. 7 बुध व शुक्र से प्रभावित होता है। केतु खाना नं. 7 के समय व्यक्ति यदि कड़वा बोले, तो केतु अशुभ फल देगा। वैसे खाना नं. 7 का केतु शुभ माना जाता है।

केतु खाना नं. 7 के समय व्यक्ति यदि झूठे वायदे करके मुकरने की आदत डाले, तो केतु मंदा फल देने लगता है।

खाना नं. 7 के केतु को "गड़ेरिये का पालतू कुत्ता" या "शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता" कहकर पुकारा गया है। सातवां घर शुक्र का पक्का खाना है और केतु शुक्र का मित्र ग्रह है इसलिए इस घर में आमतौर पर अच्छा फल देता है।

खाना नं. 7 के केतु के संबंध किसी भी प्रकार के मंगल से खराब न हो रहे हों, तो व्यक्ति की पत्नी के जितने बहन भाई होंगे उतने ही उस व्यक्ति के बच्चे होंगे। खाना नं. 7 में शुभ केतु होने पर व्यक्ति के पास 24 साल की उम्र में ही इतना धन आ जाएगा कि 40 साल तक के लिए काफी रहे।

लाल किताब में एक असूल दिया गया है कि सातवें केतु के समय व्यक्ति की जिस उम्र में लड़का पैदा हो, उस उम्र को 8 से गुणा करके 48 से भाग देने पर जो शेष बचे, व्यक्ति का धन लड़के की पैदाइश के बाद उतने गुणा बढ़ जाएगा। मान लें कि 24 वर्ष की आयु में जातक के यहां लड़का पैदा हुआ। अब 24 को 8 से गुणा करके जब 48 से बांटा जाएगा तो शेष बचेगा 4। अतः व्यक्ति का धन चार गुणा बढ़ जाएगा। जब दूसरा बेटा पैदा होगा, तो धन में और भी वृद्धि होगी। खाना नं. 7 में केतु के समय व्यक्ति को दुश्मनों की ओर से परेशानी नहीं होती, ऐसे व्यक्ति के शत्रु खुद–ब–खुद तबाह हो जाएंगे।

खाना नं. 7 के केतु पर मंगल की दृष्टि हो या केतु से आठवें घर यानी टेवे के 2 स्थान पर बुध हो तो केतु का फल मंदा होता है, लेकिन इसका असर व्यक्ति के सामने के घर में जो लड़का होगा उस पर बुरा असर पड़ेगा। खाना नं. 7 में यदि केतु अशुभ हो रहा हो और व्यक्ति अभिमानी हो, तो यही अभिमान उसकी बर्बादी का कारण बनेगा।

खाना नं. 7 में केतु के साथ बुध हो और व्यक्ति बुध से संबंधित कारोबार यानी लिखने–पढ़ने या कंप्यूटर, स्टेशनरी या टेलीविजन, रेडियो आदि से संबंधित कारोबार करे, तो 34 साल की उम्र के बाद केतु शुभ फल देना शुरू कर देगा। व्यक्ति की 34 साल की उम्र तक उसके दुश्मन जरूर पैदा होंगे जो खुद ही बर्बाद हो जाएंगे।

उपाय

1. कड़वा मत बोलें।
2. झूठे वायदे करके मुकरने की आदत त्यागें।
3. शनि की वस्तुएं धर्म स्थान में दान करें।

केतु खाना नं. 8 में

खाना नं. 8 मंगल का और मंगल केतु से शत्रुता रखता है। आठवां घर शमशान होने के कारण किसी भी ग्रह के लिए शुभ नहीं होता। केतु खाना नं. 8 में हो, तो पत्नी की सेहत खराब और बच्चे का गर्भ में नाश होने का भय रहता है। खाना नं. 8 में केतु का फल आमतौर पर अशुभ रहता है लेकिन टेवे में यदि

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

बुध और शुक्र उच्च राशियों में हों या शुभ होकर बैठे हों, तो केतु के अशुभ फल में कुछ हद तक कमी आ जाती है।

कई पुरानी किताबों में खाना नं. 8 के केतु को "छलावा या धोखेबाज" कहा गया है। बाद की किताबों में इसे "बच्चों की मोहब्बत में रोने वाला कुत्ता" कहा गया है। यह भी माना जाता है कि बैठा इस घर में केतु यम यानी मौत के फरिश्ते को देख लेने की शक्ति रखता है, यानी इस खाने में केतु वाले व्यक्ति को अपनी मौत का ज्ञान पहले से हो जाता है।

केतु खाना नं. 8 के समय व्यक्ति की 34 साल की उम्र के बाद पैदा हुई औलाद जिंदा रहे, लेकिन 34 साल से पहले पैदा और 34 साल के बाद पैदा औलाद इकट्ठी जीवित नहीं रहती। यदि बुध खाना नं. 6 में हो तो लड़का आमतौर पर 34 साल की आयु में पैदा होता है और उसकी उम्र भी लंबी होती है।

केतु खाना नं. 8 के समय यदि मंगल टेवे में शुभ हो यानी टेवे में सूर्य+बुध इकट्ठे हों और बृहस्पति खाना नं. 1 या 2 में या चंद्रमा खाना नं. 2 में हो, तो केतु शुभ ही गिना जाएगा और इस केतु के उपाय की भी जरूरत नहीं होती।

खाना नं. 8 के अशुभ होने की सबसे बड़ी निशानी यह है कि घर की छत पर बैठ कर कुत्ता रोना शुरू कर देता है और इसका फल औलाद के लिए अशुभ होगा। साथ ही अशुभ केतु के समय व्यक्ति को खुद को पेशाब संबंधी, बीमारियां हो जाया करती हैं।

केतु खाना नं. 8 के समय यदि खाना नं. 2 खाली हो, राहु और कोन न गिनें तो औलाद पर अशुभ प्रभाव पड़े। अशुभ केतु के समय केतु संबंधी दूसरी बीमारियां जैसे जोड़ों का दर्द, फोड़े आदि, जख्म व पेट खराब होने की संभावना रहती है।

खाना नं. 8 के केतु के साथ कोई ग्रह बैठा हो तो केतु का फल अशुभ होगा। यदि टेवे में बृहस्पति नीच या अशुभ हो, तो न सिर्फ केतु का, बल्कि मंगल का फल भी खराब हो जाएगा और इसका असर व्यक्ति के भाई पर बुरा होगा। ऐसे में व्यक्ति के यहां लड़का भी काफी देर के बाद पैदा होता है। यदि मंगल खाना नं. 4 में और बृहस्पति खाना नं. 6 या 12 में हो, तो औलाद और दौलत दोनों के लिए अशुभ रहे।

केतु खाना नं. 8 के समय यदि शनि या मंगल खाना नं. 7 में हो, तो व्यक्ति की गृहस्थी व रिहायशी मकान के लिए अशुभ हो। केतु आठवें खाने के समय मंगल यदि खाना नं. 12 में और शनि खाना नं. 1 में हो तो व्यक्ति के जन्म से लगभग 12 महीने पहले किसी भाई की मौत की संभावना रहती है।

उपाय

1. काला सफेद कंबल, पीले फूल, केसर आदि धर्म स्थान में देने से लाभ।
2. व्यक्ति को चाल चलन अच्छा रखना चाहिए।
3. कुत्ता पालें, 3 से 8 तक कुत्ते मर सकते हैं। जब भी कुत्ता मरे नया ले आएं।
4. सोना कान में धारण करें (90 घंटे के लिए) औलाद प्राप्त होगी।
5. केतु के साथ जो ग्रह हो उसकी वस्तु काले–सफेद रूमाल में बांध कर शमशान में दबाएं– जिस औजार से गड्ढा खोदें उसे वहीं फेंक दें। जैसे केतु के साथ मंगल हो तो लाल मसूर की दाल या

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

देसी खांड, बृहस्पति हो तो चने की पीली दाल, बुध हो तो मूंग की साबुत दाल।

6. गणेश पूजन करना चाहिए।
7 कुत्ते को भोजन डालें।

केतु खाना नं. 9 में

खाना नं. 9 बृहस्पति का घर है और बृहस्पति केतु को बलवान करता है। इसलिए खाना नं. 9 का केतु शुभ फलदायक होता है। ऐसा व्यकित बाप–दादा की सलाह मानने वाला होता है।

खाना नं. 9 के केतु को यदि मंगल खाना नं. 3 से देखे, तो केतु मंदा प्रभाव देगा। जातक जोड़ों का दर्द, कान में तकलीफ व पेशाब की बिमारियां आदि हो सकती है। यदि व्यक्ति के घर में कुतिया हो और जब वह बच्चे देगी, तो व्यक्ति के लिए प्रभाव शुभ होगा।

इस खाने के केतु को इन्सान की आवाज़ समझने वाला कुत्ता और बाप का फरमाबरदार बेटा कहकर पुकारा गया है। ऐसे व्यक्ति की औलाद वफादार और बहादुर होती है। इस घर में केतु को शुभ करने के लिए दोहता, भांजा और साला आदि को कुछ न कुछ देते रहना चाहिए। इस खाने में केतु के समय शुक्र, शनि और बृहस्पति का फल भी शुभ हो जाता है।

केतु खाना नं. 9 के समय यदि खाना नं. 7 में कोई ग्रह हो, तो उस ग्रह की आयु के बाद केतु का शुभ फल आरंभ होता है– जैसे खाना नं. 7 में सूर्य हो तो 22 साल और बृहस्पति हो तो 16 साल के बाद केतु शुभ फल देने लगेगा। जिन लोगों के औलाद न होती हो उन्हें केतु खाना नं. 9 वाले व्यक्ति से आशीर्वाद लेना चाहिए।

केतु खाना नं. 9 के समय घर में रखे सोने के बराबर सोना बढ़ता जाएगा, इसलिए घर में सोना रखना चाहिए। केतु खाना नं. 9 वाला व्यक्ति यदि अपने बेटे की सलाह लेकर काम करे, तो खूब तरक्की करे, क्योंकि आमतौर पर बेटा आने वाले वक्त के बारे में पहले ही जान जाएगा।

केतु खाना नं. 9 वाले व्यक्ति का जीवन अधिकतर परदेश में बीतता है। ऐसे व्यक्ति के जन्म के समय से ही पिता को लाभ होना शुरू हो जाता है और विशेषकर 12, 24 और 48 साल की उम्र तक व्यक्ति के पिता की आर्थिक स्थिति उत्तम हो जाती है।

केतु खाना नं. 9 के समय यदि टेवे में चंद्रमा शुभ हो, तो व्यक्ति माता खानदान को तार देगा। यदि बृहस्पति शुभ हो या खाना नं. 2 में शुभ ग्रह हों तो पिता खानदान के लिए अति शुभ हों। ऐसा व्यक्ति खुद भी बड़ा अफसर हो सकता है।

केतु खाना नं. 9 के समय यदि इसके शत्रु ग्रह चंद्रमा और मंगल खाना नं. 3 में हों, तो व्यक्ति की उम्र को खतरा हो। यदि शनि टेवे में अशुभ हो, तो व्यक्ति चाहे जितनी भी बेईमानी या हेरा फेरी करे, उसकी आर्थिक हालत खराब रहेगी।

उपाय

1. कान में सोना डालें, बाप–बेटे दोनों को लाभ हो।
2. ब्राह्मण या कुलपुरोहित को खुश रखें।
3. सोने की ईंट घर में रखें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

केतु खाना नं. 10 में

खाना नं. 10 शनि का घर है। राहु और केतु दोनों शनि के गुलाम। शनि के हुक्म के मुताबिक ही दोनों ग्रह फल देते हैं। इसलिए खाना नं. 10 का केतु टेवे में शनि की स्थिति के अनुसार चलेगा। यदि कुंडली में शनि अच्छा हो और केतु खाना नं. 10 में हो, तो मिट्टी भी सोने के भाव बिके। जातक एक चालाक कुत्ते की तरह अच्छे बुरे की पहचान करने वाला होता है। पुत्र सुख उत्तम रहेगा।

केतु खाना नं. 10 के समय व्यक्ति यदि भाई के साथ बुराई न करे, तो कभी तंगहाल न हो। अगर भाई गलती भी करे, तो उसे क्षमा करता रहे। केतु खाना नं. 10 के समय यदि व्यक्ति का चाल चलन खराब हो और वह पराई स्त्रियों से संबंध बनाए, तो बर्बाद हो जाए।

केतु खाना नं. 10 के समय यदि टेवे में शनि खाना नं. 6 में हो, तो व्यक्ति एक प्रसिद्ध खिलाड़ी हो सकता है। खाना नं. 10 का केतु अशुभ होता है यदि टेवे में शनि अशुभ हो। ऐसी हालत में 48 साल तक की उम्र असर खराब ही रहेगा।

दसवें खाने के केतु के साथ यदि मंगल भी हो, तो दोनों ग्रहों का फल अशुभ होता है। ऐसे समय में व्यक्ति का चरित्र भी ठीक नहीं रहता जिससे गृहस्थ सुख और कारोबार में बाधाएं उत्पन्न होती है। यदि शनि खाना नं. 4 में हो, तो लड़के की आयु के लिए अशुभ रहे। कई बार तो ऐसे व्यक्ति के तीन लड़के तक नष्ट हो जाते हैं।

उपाय

1. भाई के साथ बुराई न करें।
2. पराई स्त्री से दूर रहें।
3. घड़े के आकार के चांदी के बर्तन में शहद भरकर घर में रखें।
4. कई बार चांदी के बर्तन में शहद भरकर वीरान जगह में दबाना पड़ता है।
5. अपनी 48 वर्ष की उम्र के बाद कुत्ता पालना आवश्यक है।
6. मकान की नींव के नीचे दूध या शहद दबाएं।
7. अपनी 48 वर्ष की आयु से पहले मकान बनाना (पूर्व की ओर) धन में कमी लाएगा।

केतु खाना नं. 11 में

खाना नं. 11 शनि व बृहस्पति से प्रभावित होता है। लाभ स्थान है। केतु बृहस्पति का शत्रु और बृहस्पति अपने शत्रु ग्रहों का, जो खाना नं. 11 में हों, नाश करे। केतु खाना नं. 11 के समय जब भी व्यक्ति के यहां पुत्र, पोता या दोहता पैदा होगा, व्यक्ति की माता की आखों और छाती पर बुरा प्रभाव डालेगा।

कभी–2 ग्यारहवें घर में बैठा ग्रह अपने शत्रु ग्रह को नष्ट कर देता है। इसलिए खाना नं. 11 का केतु चंद्रमा को नष्ट करेगा। दादी या नानी कम से कम 45 दिन तक पोते या दोहते को न देखे। खाना नं. 3 से शनि अगर केतु को देखे तो नुकसान नहीं करे, परंतु इसी खाने से यदि बुध केतु को देखे तो केतु का प्रभाव खत्म करें।

कई किताबों में खाना नं. 11 के केतु को "गीदड़" कहा गया है। खाना नं. 11 में केतु वाला व्यक्ति बेशक

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खानदानी जायदाद न पाए किंतु खुद अपनी जायदाद बना लेगा।

केतु खाना नं. 11 के समय कई बार व्यक्ति की पत्नी मुर्दा संतान को जन्म देती है। इस जहर को दूर करने के लिए रात को स्त्री के सिरहाने मूली रखकर सुबह मंदिर या किसी धर्म स्थान में देना चाहिए। इस उपाय से व्यक्ति की पहली औलाद पर केतु का बुरा असर नहीं रहता।

उपाय

1. बृहस्पति की वस्तुएं सोना और पीले वस्त्र धारण करें
2. सोना गर्म करके दूध में बुझा कर पीना शुभ रहे।
3. केसर दूध में डाल कर पीएं।
4. काले रंग का कुत्ता पालें।

केतु खाना नं. 12 में

खाना नं. 12 बृहस्पति से प्रभावित होता है। खाना नं. 12 में केतु हो, तो बृहस्पति उसकी मदद करे और केतु उत्तम फल दे। यदि केतु खाना नं. 12 के समय खाना नं. 6 में शत्रु ग्रह हों (राहु को न गिनें) तो पुत्र उत्पति में बाधा होगी। इस खाने का केतु मोक्ष कारक और यात्रा का भी कारक माना जाता है और विदेश यात्राएं करवाता है।

खाना नं. 12 में केतु वाले व्यक्ति के जीवन में तब्दीलियां कम आती हैं, परंतु व्यक्ति तरक्की करता है। कभी–2 खाना नं. 12 का केतु व्यक्ति के अपने लिए शुभ न भी हो, परंतु ससुराल के लिए शुभ फल देता है। ऐसे में शुक्र, शनि व बृहस्पति तीनों ग्रहों का फल शुभ हो जाता है।

केतु खाना नं. 12 के समय लड़का व्यक्ति के जीवन का आधार साबित होगा। ऐसे व्यक्ति के लिए मकान बनाना शुभ फल देगा। केतु 12 के समय यदि खाना नं. 6 खाली हो, तो व्यक्ति दौलतमंद होगा। ऐसे व्यक्ति को विरासत में जायदाद मिलती है। गृहस्थ–जीवन भी सुखमय होता है।

केतु खाना नं. 12 के समय खाना नं. 6 में राहु के साथ मंगल हो, तो 21 वर्ष तक औलाद नहीं होती, यदि चंद्रमा हो, तो 32 साल तक, यदि सूर्य हों, तो 42 साल तक और यदि शुक्र हो, तो 25 साल तक यही प्रभाव रहता है। केतु खाना नं. 12 में हो और व्यक्ति ऐयाश तबीयत का हो, तो इसका असर अशुभ नहीं होता।

केतु खाना नं. 12 के समय यदि चंद्रमा खाना नं. 2 में हो, तो दोनों ग्रहों में से एक का फल ठीक रहेगा यानी माता या बेटे में से एक ठीक रहे। यदि व्यक्ति कुत्तों को मरवाए या केतु की दूसरी चीज़ें नष्ट करे, तो औलाद पर प्रभाव बुरा पड़े। यदि औलाद ठीक हो, तो आर्थिक स्थिति खराब हो सकती है।

उपाय

1. कुत्ता पालना लाभकारी रहे। व्यक्ति यदि कुत्ता पाले, तो जो कष्ट औलाद पर आएंगे उन्हें कुत्ता अपने ऊपर ले लेगा। ऐसी हालत में 11 कुत्ते मर सकते हैं। अगर कुत्ता मर जाए, तो 43 दिन के अंदर–2 दूसरा कुत्ता लावें।
2. दूध में अंगूठा डुबो कर चूसना शुभ फल देता है।

Future Point

Future Point

पंचायत या पांच से ज्यादा ग्रह एक खाने में

लाल किताब के नियम के अनुसार अगर टेवे के किसी भी खाने में पांच या पांच से ज्यादा ग्रह बैठे हों, तो उसे पंचायत कहा जाता है।

सबसे उत्तम पंचायत वह होती है, जिसमें बुध शामिल न हो लेकिन शुभ ग्रहों के साथ राहु या केतु और शनि का होना आवश्यक है। जिस प्रकार वैदिक ज्योतिष में त्रिक भावों के स्वामी विपरीत राज्यों को जन्म देते हैं उसी प्रकार लाल किताब में नर ग्रह + स्त्री ग्रह के साथ बुध के सिवाय पापी ग्रहों का एक खाने में बैठना उत्तम माना गया है। ऐसा व्यक्ति चाहे कितना भी कम अक्ल क्यों न हो उसको गृहस्थ–सुख व धन सुख अवश्य प्राप्त होगा। ऐसे व्यक्ति की आयु भी लंबी होती है।

यदि यह पंचायत पहले 6 घरों में (1 से 6 तक) हो तो शुभ मानी जाती है। यदि यह खाना नं. 7 से 12 तक किसी भी घर में हो तो और अधिक शुभ हो जाती है।

किन्हीं भी पांच या इससे ज्यादा ग्रहों के इकट्ठे होने पर व्यक्ति को शुभ फल ही मिलेगा, चाहे उसमें दुनिया भर के अवगुण भरे हों। अगर पंचायत में कोई पापी ग्रह (राहु, केतु, शनि) शामिल न हो और व्यक्ति खुद भी पाप करने वाला न हो, तो पंचायत बे असर हो जाती है। यदि पंचायत में पापी ग्रह शामिल न हो और व्यक्ति खुद भी धार्मिक प्रवृति का हो तो उसे पापी ग्रहों की चीज़ें दान करनी चाहिए।

राहु की चीजें – जौ, नारियल, सिक्का आदि।
केतु की चीज़ें – कंबल, प्याज, खटाई आदि।
शनि की चीज़ें –बादाम, शराब, सिगरेट आदि।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें

1. केतु अगर चंद्रमा के साथ हो, तो 12 खानों में क्या प्रभाव देगा?
2. केतु खाना नं. 3 के समय किन रिश्तेदारों पर प्रभाव पड़ता है?
3. केतु और मंगल का साथ क्या फल देता है?
4. खाना नं. 1,2,7,9 व 12 में केतु का प्रभाव कैसा रहेगा?
5. ''लाल किताब के अनुसार केतु हवाई सफर का कारक है। ऐसा किन घरों में केतु हो, तो होता है?
6. मौत की आहट पहचानने वाला दरवेश किस घर के केतु को कहते हैं?
7. केतु के अलग–2 घरों में किन नामें से पुकारा गया है?
8. बीमारियों से संबंधित केतु किस प्रकार के रोग देता है?
9. पंचायत का अर्थ क्या है? किन–2 ग्रहों के मिलने से पंचायत बनती है?

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जन्म तिथि : 19.11.1976, जन्म समय – 21:30 रात्रि, जन्म स्थान – पूना
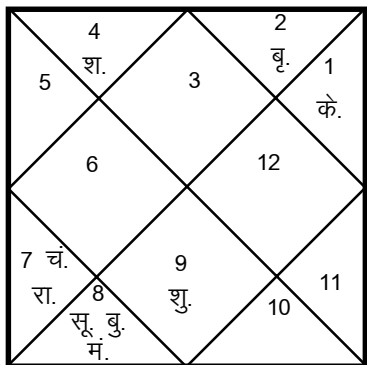
जन्म कुंडली वैदिक
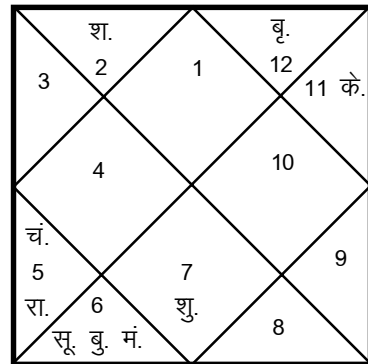
जन्म कुंडली लाल किताब अनुसार

1. पहला, तीसरा, चौथा, नवां तथा दसवां सभी घर खाली और न ही किसी ग्रह की दृष्टि में। इस लिए सोए हुए गिने जाएंगे।
2. शुक्र अपने पक्के खाने में होने के बावजूद सोया हुआ, क्योंकि किसी ग्रह की दृष्टि में नहीं।
3. दूसरे खाने में शनि, यानी गुरुशरण में। इसके अलावा अपने मित्र शुक्र की ज़मीन पर है इसलिए शुभ है।
4. चंद्रमा चौथे घर में राहु से युक्त इसका अशुभ प्रभाव माता पर पड़ेगा।
5. छठे घर में सूर्य बुध और मंगल हैं। बुध अपने मित्र शुक्र का साथ छोड़ देगा और इसका अशुभ प्रभाव शुक्र पर पड़ेगा यानि स्त्री बीमार।
6. छठे घर में सूर्य, मंगल और बुध इकट्ठे। बुध अपने पक्के घर में, लेकिन सूर्य और मंगल का साथ होने से खराब, अर्थात बुध खराब और इसका अशुभ प्रभाव जातक की बहन, बुआ या बेटी पर किसी भी रूप में पड़ सकता है।
7. केतु खाना नं. 11 में होने के कारण शनि से प्रभावित तथा राहु की दृष्टि में है, अतः सन्तान उत्पत्ति में देरी या परेशानी।
8. बृहस्पति अपने पक्के खाने में, लेकिन उसके दूसरे पक्के खानों, यानी दूसरे में शनि तथा पांचवें में राहु, इसलिए बृहस्पति अशुभ है। इसके अलावा पितृ ऋण से भी दूषित है।
9. नौवां घर खाली है और किसी ग्रह की दृष्टि भी नहीं, इसलिए सोया हुआ जातक बुजुर्गों की ओर से परेशान।
10. दसवां घर खाली, अतः सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह शनि अच्छी स्थिति में। शनि के अच्छे परिणाम लेने के लिए इस घर को जगाना चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

11. केतु की परस्थिति : इस घर में बैठा केतु अपने शत्रु ग्रह की कारक वस्तुओं या रिश्तेदारों को हानि पहुंचाता है। केतु का परम शत्रु चंद्रमा, अतः माता या मामी की सेहत के लिए अति अशुभ।

12. बृहस्पति का पक्का घर, और बृहस्पति का यहां होना इस घर को ताकत देता है। व्यक्ति की समाज में इज्जत होती है। इस घर में बृहस्पति के समय बुध की चीजों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। जैसे जातक यदि गले में मनकों की माला धारण करेगा, तो बृहस्पति अशुभ प्रभाव देने लगेगा।

जन्म तिथि : 27.3.1949, जन्म समय – 14:20, जन्म स्थान – खन्ना (पंजाब)
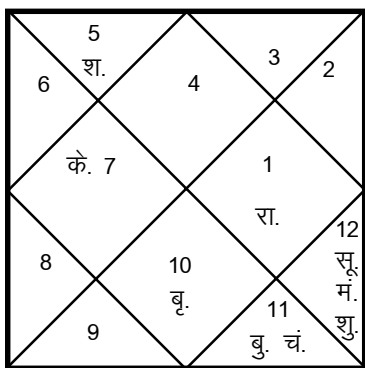
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
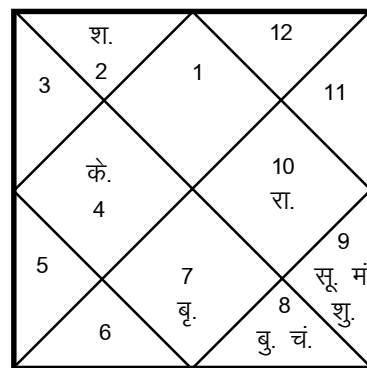
जन्म कुण्डली लाल किताब

1. **पहला घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ माना जाएगा, क्योंकि घर खाली है और इस पर किसी ग्रह की दृष्टि भी नहीं है। जगाने के लिए मंगल का उपाय करें।

2. **दूसरा घर** : शनि खाना नं. 2 में अपने मित्र शुक्र की जमीन पर। दूसरा घर धर्म स्थान, इसलिए बृहस्पति के प्रभाव में। शनि इस घर में शुभ फल देता है।

3. **तीसरा घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ माना जाएगा। पक्का घर मंगल का। क्योंकि टेवे में मंगल कि स्थिति अच्छी है, इसलिए मंगल से संबंधित वस्तुएं प्रयोग करें तथा कारक रिश्तेदारों यानी भाइयों से बनाए रखें।

4. **चौथा घर** : चौथे घर में केतु शुभ नहीं होता, लेकिन फिर भी चंद्रमा की स्थिति देखना आवश्यक है। चंद्रमा कुंडली के आठवें भाव में है, जहां नीच होता है तथा अपने परम शत्रु बुध के साथ है, अतः माता के लिए कष्टकारी तथा मन की शान्ति के लिए नुकसानदेह।

5. **पांचवा घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ गिना जाएगा। पांचवे घर का पक्का ग्रह बृहस्पति अपने शत्रु शुक्र के घर में है और केतु अपने शत्रु मंगल से 1/8 की टकूट के कारण खराब है, अतः संतान पक्ष से परेशानी।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

6. **छठा घर** : बुध का पक्का घर। बुध आठवें घर में अपने घर शत्रु चंद्रमा के साथ। इस घर का बुध अशुभ माना जाता है। बुध के कारक रिश्तेदार परेशानी में रहेंगे।

7. **सातवां घर** : सांतवें घर में बृहस्पति। क्योंकि पहला घर खाली, इसलिए बृहस्पति सोया हुआ। यदि बृहस्पति पक्के घर में और शुक्र बृहस्पति के पक्के घर में हो, तो दोनों एक दूसरे के साथी ग्रह बनकर मदद करेंगे। परंतु दोनों ग्रह इन घरों में अशुभ प्रभाव देते हैं।

8. **आठवां घर** : टेवे का आठवां घर खाली होना चाहिए। परंतु यहां बुध तथा चंद्रमा उपस्थित हैं; इसलिए दोनों ही खराब। आठवें घर का बुध अति अशुभ होता है। बुध के कारक रिश्तेदारों को हानि और व्यापार में नुकसान देता है। चंद्रमा इस घर में नीच का होता है, अतः माता की सेहत तथा मन की शांति के लिए अशुभ।

9. **नौवां घर** : नौवां घर पक्का घर बृहस्पति का। सूर्य, मंगल बृहस्पति के मित्र इस घर में परंतु शुक्र शत्रु। सूर्य+शुक्र मिल कर बृहस्पति बनाते हैं। बृहस्पति खराब होने के कारण बाप दादा के लिए अशुभ। शुक्र की उपस्थिति खाना नं. 9 में विवाहित जीवन के लिए अशुभ।

10. **दसवां घर** : दसवें घर में राहु। राहु यहां शनि की स्थिति के अनुसार असर देता है। जातक यदि नंगे सिर रहेगा, तो शनि अच्छी स्थिति में भी अशुभ प्रभाव देगा। इस घर का राहु पिता के लिए अशुभ होता है।

11. **ग्यारहवां घर** : ग्यारहवां घर खाली, अतः सोया हुआ इसलिए इस घर, संबंधित वस्तुओं की हानि होगी।

12. **बारहवां घर** : यह घर खाली है और इस पर किसी ग्रह की दृष्टि भी नहीं है, अतः पूरी तरह से सोया हुआ है। इसके अतिरिक्त इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति भी शत्रु के घर में है।

विशेष : बृहस्पति के पक्के घर में शनि, 9वें शुक्र और खुद बृहस्पति शत्रु के घर में और आठवें घर में बुध की स्थिति, इसलिए घर में धर्म स्थान की स्थापना वर्जित है।

जन्म तिथि : 08.5.1954, जन्म समय – 23:15, जन्म स्थान – जालंधर (पंजाब)
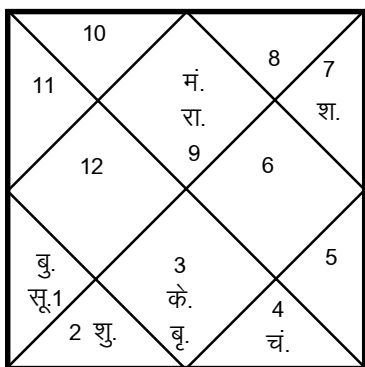
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
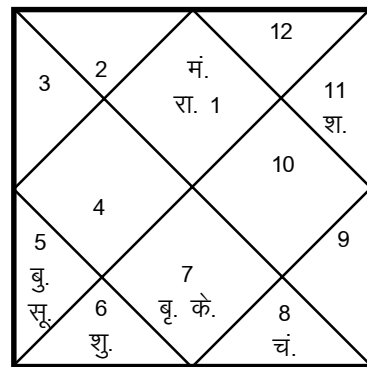
जन्म कुण्डली लाल किताब

1. **पहला खाना** : राहु और मंगल दोनों से युक्त। पहले घर में राहु अशुभ माना जाता है। लेकिन लाल किताब में राहु को हाथी कहा गया है और मंगल को महावत। अतः मंगल के साथ होने से राहु शरारत नहीं करेगा। इस घर का मंगल ग्रहफल का होता है और इसका कोई उपाय नहीं होता है।
2. **दूसरा घर** : दूसरा खाना खाली और आठवें घर में चंद्रमा है, अतः दूसरे घर से संबंधित वस्तुओं और कारक रिश्तेदारों पर अशुभ प्रभाव।
3. **तीसरा घर** : तीसरा घर खाली, इसलिए सोया हुआ। मंगल पहले घर में होता हुआ भी शुभ प्रभाव नहीं दे पाएगा। बृहस्पति तथा चंद्रमा की मदद लें।
4. **चौथा घर** : खाली अतः सोया हुआ और इस घर का पक्का ग्रह चन्द्रमा आठवें घर यानी शमशान में। माता तथा मन की शांति के लिए अशुभ चंद्रमा की वस्तुएं घर में स्थापित करें।
5. **पांचवां घर** : सूर्य अपनी ज़मीन पर और साथ में बुध, यानी सूर्य को शक्ति प्रदान करेगा। लेकिन बुध, शुक्र का मित्र होते हुए भी सूर्य का साथ देगा, अतः शुक्र की यानी पत्नी की सेहत खराब।
6. **छठा घर** : शुक्र यहां शुभ फल देता हैं। व्यक्ति उलट–पुलट काम भी कर दे तो सही बैठते हैं। लेकिन इस घर का पक्का ग्रह बुध सूर्य के साथ मिल कर शुक्र को चोट पहुंचाएगा।
7. **सातवां घर** : बृहस्पति इस घर में केतु के साथ तथा पूर्णरूप से जगा हुआ है। बृहस्पति यहां शुक्र के प्रभाव में अतः गृहस्थी में फंसे हुए साधक के समान। केतु सातवें घर में अच्छा प्रभाव देता है क्योंकि शुक्र के मनसूई सूर्य ग्रहों में से एक है। सांतवा घर बुध से भी प्रभावित है, इसलिए केतु ज़ुबान गंदी करता है।
8. **आठवां घर** : आमतौर पर आठवां घर खाली होना चाहिए। इस घर में चंद्रमा शमशान में माना जाता है, यानी माता की सेहत खराब और मन की शांति भंग।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

9. **नौवा घर** : नौवां घर खाली, अतः सोया हुआ। इस घर का ग्रह बृहस्पति भी शत्रु स्थान में, इसलिए दादाओं की ओर से परेशानी।

10. **दसवां घर** : शनि का पक्का घर, लेकिन खाली। शनि अपने दूसरे पक्के घर में। अतः इस घर को ठीक करने के लिए मंगल की वस्तुएं घर में स्थापित करें।

11. **ग्यारहवां घर** : यह घर शनि का दूसरा पक्का घर है। इसलिए इस घर का शनि शुभ फल देता है। यदि मित्र ग्रहों की मदद प्राप्त हो, तो शनि अति उत्तम होता है।

12. **बाहरवां घर** : पक्का घर बृहस्पति का। खाली होने के कारण अशुभ। यहां पर शुक्र उच्च का होता है। छठे घर से शुक्र इस घर को देख रहा है, इसलिए किसी हद तक अशुभ प्रभाव कम। व्यक्ति को चाहिए कि बुध की वस्तुएं शरीर पर धारण न करें।

जन्म तिथि : 27.8.1965, जन्म समय – 15:30 , जन्म स्थान – संगरूर (पंजाब)
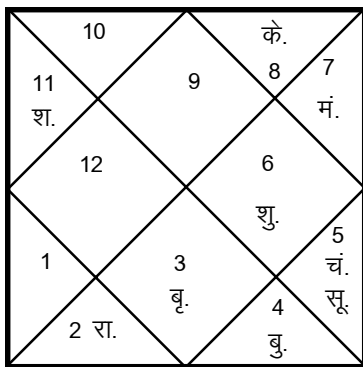
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
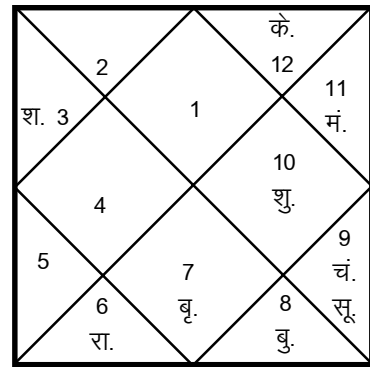
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

1. **खाना नं 1** : खाली होने के कारण सोया हुआ। सोए हुए घर का पक्का ग्रह शुभ फल देने में असमर्थ होता है। इस घर का पक्का ग्रह सूर्य है। सरकार की ओर से परेशानी तथा खुद की सेहत खराब।

2. **खाना नं 2** : खाली होने के कारण सोया और इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति भी अपने परम शत्रु के घर में। राहु का प्रभाव और बुध की उल्टी दृष्टि के कारण घर और भी खराब। व्यक्ति को सांस से संबंधित बीमारी हो सकती है तथा गृहस्थ जीवन भी खराब।

3. **खाना नं 3** : खाना नं. 3 में शनि। शनि के मनसूई ग्रह मंगल और बुध हैं, अतः शनि यहां पर मंगल की तरह व्यवहार करेगा। दूसरे टेवे में मंगल खाना नं. 11 में शनि के पक्के घर में। दोनों ग्रह एक–दूसरे के घर बदल कर बैठे हैं। इसलिए एक दूसरे की मदद करेंगे।

4. **खाना नं 4** : खाली तथा सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह चंद्रमा बृहस्पति के घर में हैं, खुद खराब है। इसलिए चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं और कारक रिश्तेदारों के लिए अशुभ।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

5. **खाना नं 5** : खाली लेकिन पांच/नौ के प्रभाव के कारण जागता हुआ। नौवें घर से मित्र ग्रह सूर्य चंद्रमा की मदद प्राप्त। लेकिन दोनों घरों के पक्के ग्रह बृहस्पति का खुद खराब, इसलिए केतु की कारक वस्तुओं यानी संतान या व्यक्ति की खुद की एड़ियों, छाती, रीढ़ की हड्डी में कष्ट।

6. **खाना नं 6** : राहु इस घर में अच्छा प्रभाव देता है। राहु की शुभ स्थिति के लिए खाना नं. 12 में मंगल या बुध नहीं होना चाहिए। खाना नं. 6 का राहु नीच का प्रभाव देता है। इस कुण्डली में बुध खाना नं. 8 में है। इस घर का बुध भी अशुभ होता है, इसलिए राहु के शुभ प्रभाव किसी हद तक कम हो जाएंगे।

7. **खाना नं 7** : खाना नं. 7 में बृहस्पति शुभ फल नहीं दे पाता, क्योंकि यहां बृहस्पति, बुध व शुक्र से प्रभावित हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी जिम्मेवारियों से भागता है और अपना अधिक समय साधु संतों के चक्करों में बेकार गंवाता है।

8. **खाना नं 8** : खाना नं. 8 में बुध है, जो शुभ स्थिति में नहीं माना जाता। इस खाने में बुध कारक रिश्तेदारों पर जहर का प्रभाव देता है। इस घर में बुध होने से धन हानि, नाड़ियों संबंधी रोग देता है।

9. **खाना नं 9** : खाना नं. 9 बृहस्पति का पक्का घर। इस घर में चंद्रमा व सूर्य दोनों मित्र ग्रह के घर में, लेकिन इनके शुभ असर को देखने के लिए पहले बृहस्पति की स्थिति देखनी चाहिए। इसके अलावा सूर्य के मनसूई ग्रहों शुक्र और बुध की स्थिति देखनी चाहिए। बुध टेबे में खराब और बृहस्पति भी बुरी स्थिति में। इसलिए सूर्य यहां अशुभ प्रभाव देगा जो व्यक्ति की सेहत तथा राजदरबार के लिए बुरे होंगे। चंद्रमा के मनसूई ग्रह बृहस्पति और सूर्य हैं। दोनों ही खराब होने के कारण चन्द्रमा भी शुभ फल दे पाएगा।

10. **खाना नं 10** : शनि के पक्के घर में शनि का मित्र शुक्र है, लेकिन सोया हुआ, क्योंकि खाना नं. 4 खाली है। ऐसे में इस घर का शुक्र शनि का असर देगा। इस कुण्डली में शनि अच्छा है, अतः शुक्र भी अच्छा फल देगा।

11. **खाना नं 11** : मंगल इस घर में शनि के साथ घर बदल कर बैठा है, इसलिए ठीक असर देगा।

12. **खाना नं 12** : इस खाने में केतु, बृहस्पति की स्थिति के अनुसार फल देगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

जन्म तिथि : 14.9.1979, जन्म समय – 02:38 सुबह , जन्म स्थान – चंडीगढ़
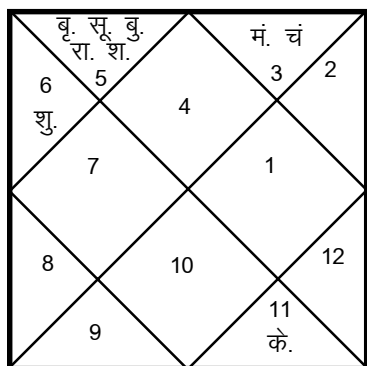
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
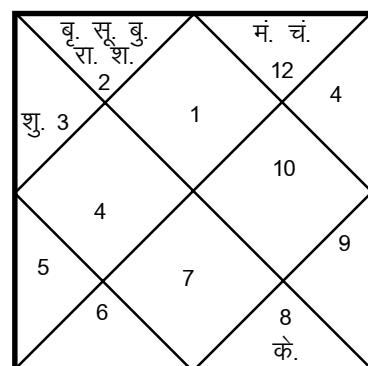
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

यदि कुण्डली के चारों केन्द्र खाली हों, या उनमें सिर्फ पापी ग्रह हों या किसी एक खाने में अकेला बुध हो, तो ऐसा टेवा नाबालिग टेवा कहलाता है। ऐसे जातक की आयु 12 वर्ष तक शक्की होती है, अतः कोई फलादेश नहीं करना चाहिए।

1. **खाना नं 1** : खाली, सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह सूर्य अच्छे स्थान पर, परंतु राहु से ग्रसित। जन्म के शुक्र के साथ प्रभावहीन, अतः राज दरबार खराब।

2. **खाना नं 2** : खाना नं. 2 में पांच ग्रह हैं। पांच ग्रहों का मेल पंचायत कहलाती है जो शुभ होती है लेकिन पंचायात में बुध शामिल नहीं होना चाहिए और यदि हो, तो शुभता किसी हद तक कम हो जाती है।

3. **खाना नं 3** : खाना नं. 3 पक्का खाना मंगल का और बुध से भी प्रभावित। इस घर का शुक्र अशुभ प्रभाव नहीं देता। शुक्र इस घर में मंगल और बुध से प्रभावित होने के कारण जातक पराई स्त्रियों के संपर्क में शीघ्र आ जाता है। इसका कोई बुरा प्रभाव जातक पर नहीं पड़ता।

4. **खाना नं 4** : खाली होने कारण सोया हुआ। चन्द्रमा अपने मित्र बृहस्पति के घर में और बृहस्पति राहु के प्रभाव में, अतः माता की सेहत खराब होने का भय।

5. **खाना नं 5** : खाली अतः सोया। इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति अपने पक्के घर में होते हुए राहु से पीड़ित। पुत्र का कारक केतु आठवें घर में, अतः जातक सन्तान की ओर से दुःखी।

6. **खाना नं 6** : खाली तथा सोया। इस घर का ग्रह खाना नं. 2 में। यह ग्रह, बुध, केतु से खराब, क्योंकि केतु उल्टी दृष्टि से बुध तथा अन्य ग्रहों को देख रहा है। बुध के कारक संबंधियों की हानि तथा जातक की खुद की सेहत खराब।

7. **खाना नं 7** : खाली होने के कारण सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह शुक्र खाना नं. 3 में और दूसरा पक्का ग्रह बुध खाना नं. 2 में पीड़ित। गृहस्थ जीवन खराब।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

8. खाना नं 8 : खाना नं. 8 में केतु। इस घर में कोई ग्रह शुभ नहीं होता। मंगल से प्रभावित होने के कारण पेशाब संबंधी रोग देता है, तथा संतान पक्ष से कष्ट मिलता है।

9. खाना नं 9 : खाली, लेकिन सोया नहीं, क्योंकि शुक्र की दृष्टि में है। इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति अपने दूसरे पक्के घर में लेकिन बुध व राहु से प्रभावित, इसलिए बुजुर्ग कष्ट में रहेंगे।

10. खाना नं 10 : खाली और सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह खाना नं. 2 में बृहस्पति के साथ शुभ लेकिन अपने परम शत्रु सूर्य के साथ होने के कारण शनि की कारक वस्तुओं व रिश्तेदारों पर अशुभ प्रभाव रहेगा।

11. खाना नं 11 : खाली लेकिन सोया नहीं क्योंकि शुक्र की दृष्टि में है। इस घर का पक्का ग्रह शनि खाना नं. 2 में, अतः शुभ, लेकिन सूर्य के साथ होने के कारण क्षमता में कमी।

12. खाना नं 12 : खाना नं. 12 में मंगल तथा चंद्रमा दोनों मित्र ग्रह तथा मित्र के घर में। लेकिन शनि और सूर्य की युति के कारण मंगल बद हो रहा है तथा राहु और बुध की युति के कारण इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति खराब।

विशेष : शनि और बृहस्पति की युति धर्मी टेवे को जन्म देती है और यह युति इस टेवे के दूसरे घर में है, लेकिन सूर्य और शनि की शत्रुता के कारण तथा बृहस्पति और बुध की शत्रुता के कारण यह टेवा पूर्ण रूप से धर्मी टेवा नहीं बन सकता।

जन्म तिथि : 14.11.1968, जन्म समय – 20:13, जन्म स्थान – अम्बाला (हरियाणा)
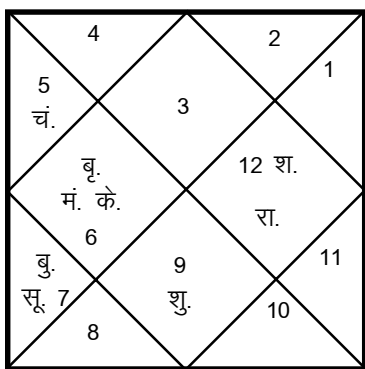
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
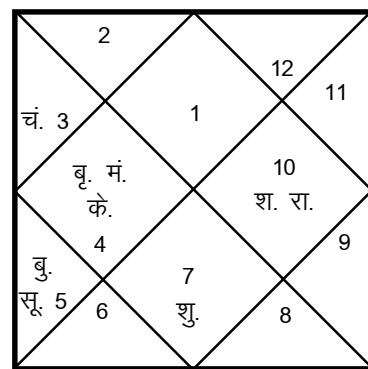
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

1. पहला घर : खाली होने के कारण सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह सूर्य पांचवें घर में अपनी जमीन पर और अपने मित्र बृहस्पति के पक्के घर में। सूर्य से शुभ प्रभाव लेने के लिए पहले घर को जगाएं।

2. **दूसरा घर** : खाली होने से सोया हुआ। इस घर का मालिक शुक्र अपने पक्के घर में और इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति अपने उच्च स्थान पर है। दोनों ग्रहों का शुभ फल लेने के लिए दूसरे घर को जगाएं।

3. **तीसरा घर** : चौथे घर का पक्का ग्रह चन्द्रमा अपने मित्र मंगल के पक्के घर में और मंगल चन्द्रमा के पक्के घर में है, यानी दोनों ग्रह घर अदल–बदल कर बैठे हैं, अतः इन घरों की कारक चीज़ों के लिए अच्छा प्रभाव रहेगा।

4. **चौथा घर** : चौथे घर में बृहस्पति उच्च का होकर बैठा है। साथ में मित्र ग्रह मंगल तथा बृहस्पति का चेला केतु भी है। ग्रह अच्छी स्थिति में है, लेकिन मंगल और केतु में शत्रुता है। मधुमेह तथा पेशाब से संबंधित बीमारी हो सकती है। केतु का उपाय करें।

5. **पांचवां घर** : सूर्य इस घर में शक्तिशाली है। बुध साथ में सूर्य को ताकत देता है। लेकिन सूर्य की गर्मी के कारण व्यक्ति की जबान में कड़वाहट लाता है, क्योंकि बुध जुबान का कारक है। दूसरे, बुध इस घर में शुक्र का साथ छोड़ देगा।

6. **छठा घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ। बुध का पक्का घर होने के कारण बुध की कारक चीज़े की हानि। बुध का उपाय करें।

7. **सांतवा घर** : शुक्र अपने पक्के घर में, लेकिन पहले घर से मदद न मिलने के कारण शुक्र सोया हुआ, फिर भी शुक्र यहां अपना असर जारी रखेगा। यह शुक्र ग्रह का फल है इसलिए कोई उपाय नहीं किया जा सकता।

8. **आठवां घर** : खाना नं. 8 खाली शुभ माना जाता है।

9. **नौवां घर** : खाना नं. 9 खाली लेकिन चन्द्रमा की दृष्टि में। खाना नं. 9 का पक्का ग्रह उच्च का होकर बैठा है अतः बृहस्पति की कारक संबंधी चीज़ों का फल शुभ रहेगा। चन्द्रमा के उपाय से मदद लेनी चाहिए।

10. **दसवां घर** : शनि अपने पक्के खाने में और साथ में राहु है, जो शनि के कहे अनुसार चले। शनि और राहु मिल कर इच्छाधारी सांप की तरह व्यवहार करें।

11. **ग्यारहवां घर** : खाली लेकिन चन्द्रमा की दृष्टि में। इसके साथ ही इस घर के पक्के ग्रह शनि व बृहस्पति दोनों अच्छी स्थिति में है। फिर भी घर को उत्तम करने के लिए चन्द्रमा का उपाय शुभ रहेगा।

12. **बारहवां घर** : खाली तथा सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति उच्च का होकर बैठा है इसलिए शुभ है। उपाय के लिए चन्द्रमा की वस्तुएं छत पर रखें किंतु बुध की वस्तुओं का प्रयोग हानिकरक होगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

जन्म तिथि : 15.08.1969, जन्म समय – 16:25, जन्म स्थान – अमलोह (पंजाब)
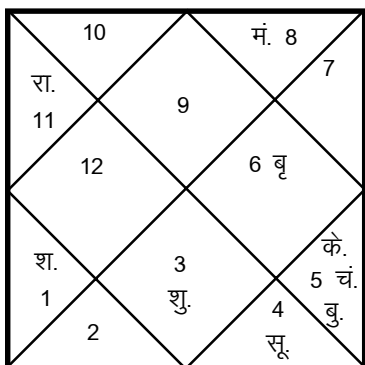
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
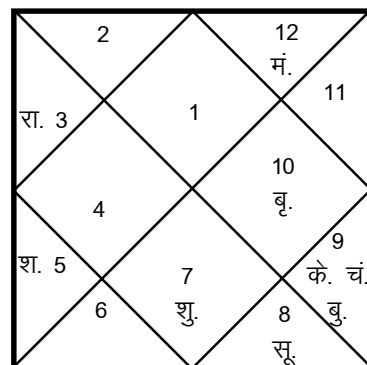
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

1. **पहला घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ। इसके अलावा इस घर का पक्का ग्रह सूर्य 8वें घर में यानी शमशान में है। पहले घर को जगाने के लिए मंगल का उपाय करना चाहिए।
2. **दूसरा घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ। लेकिन 8वें घर से सूर्य की वक्र दृष्टि में। इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति दसवें घर में जहां वह नीच का माना जाएगा। चन्द्रमा या बृहस्पति की मदद लेनी चाहिए।
3. **तीसरा घर** : राहु इस घर में शुभ फल देता है। जातक की आयु लंबी करता है। राहु इस घर में मंगल के अधीन भी है, क्योंकि यह मंगल का पक्का घर है।
4. **चौथा घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह चन्द्रमा अपने मित्र बृहस्पति के घर में, लेकिन शत्रु ग्रह बुध व केतु से पीड़ित है। बृहस्पति के उपाय से मदद लेनी चाहिए।
5. **पांचवां घर** : इस घर में शनि और बृहस्पति खाना नं. 10 में है, यानी दोनों ग्रह एक दूसरे के पक्के घर बदल कर बैठे हैं, अतः शुभ, लेकिन शनि पांचवें घर में सन्तान पक्ष के लिए अशुभ है। शनि की वस्तुएं धर्म स्थान में दें।
6. **छठा घर** : खाली, अतः सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह बुध अपने शत्रु बृहस्पति के घर में है इसके अलावा बुध, केतु तथा चन्द्रमा से युक्त है, इसलिए बुध के कारक रिश्तेदारों पर अशुभ प्रभाव पड़ेगा। बुध का उपाय करें। इसके अलावा चन्द्रमा की वस्तुएं धर्म स्थान पर देनी चाहिए।
7. **सातवां घर** : इस घर का पक्का ग्रह शुक्र इसी घर में, लेकिन यह शुक्र सोया हुआ है, क्योंकि किसी ग्रह की दृष्टि में नहीं। लेकिन शुक्र इस घर का पक्का ग्रह है, इसलिए इस घर के लिए शुक्र का शुभ असर जारी रहेगा। शुक्र यहां ग्रह फल का होगा, इसलिए इसका कोई उपाय नहीं होता।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

8. आठवां घर : यह घर शमशान कहलाता है और शनि से प्रभावित होता है। इस में सूर्य अशुभ फल देगा। उपाय के लिए सूर्य की वस्तुएं पानी में बहाएं या फिर तांबे के पैसे जलती चिता में फेंकें।

9. नौवां घर : बृहस्पति का पक्का घर। इस घर में केतु तथा चंद्रमा बृहस्पति के मित्र लेकिन बुध बृहस्पति का शत्रु। बुध का उपाय करें।

10. दसवां घर : शनि का पक्का घर, जहां मकर राशि पड़ती है। इस घर में बृहस्पति अपनी नीच राशि में है, अतः अशुभ फल देगा। बृहस्पति की वस्तुएं धर्म स्थान में देनी चाहिए।

11. ग्याहरवां घर : खाली, लेकिन इस घर के पक्के ग्रह शनि की दृष्टि में होने के कारण जागता हुआ।

12. बारहवां घर : बृहस्पति का पक्का घर, लेकिन इस घर में मंगल बृहस्पति का मित्र होते हुए भी शुभ फल नहीं दे पाएगा, क्योंकि कुण्डली में बृहस्पति नीच का है। चन्द्रमा के उपाय से मदद लेनी चाहिए।

विशेष : (क) बृहस्पति अपनी नीच राशि में और बृहस्पति के पक्के घरों 5 व 9 में शत्रु ग्रह अतः कुण्डली पितृ ऋण से पीड़ित।

(ख) शुक्र अपने पक्के खाने में होने के बावजूद अपने शत्रु राहु से 5/9 की स्थिति में। इसके अलावा बुध, जो इस घर का दूसरा पक्का ग्रह है, अपना बचाव करता हुआ शुक्र की कुर्वानी दिलवाएगा। अतः जातक का गृहस्थ जीवन खराब।

जन्म तिथि : 31.10.1971, जन्म समय – 09:45 सुबह , जन्म स्थान – लुधियाना (पंजाब)
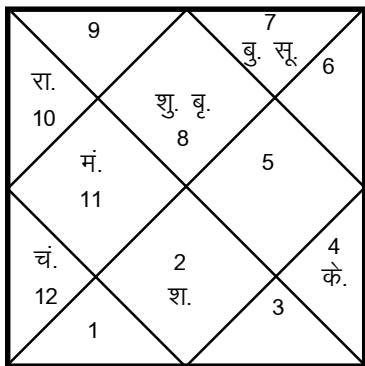
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
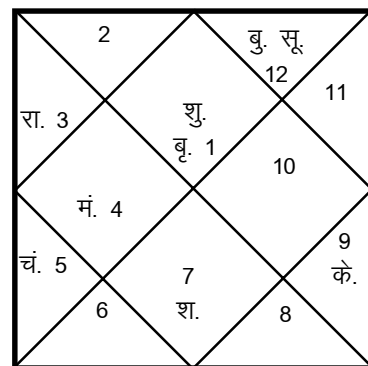
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

1. पहला घर : शुक्र और बृहस्पति पहले घर में। बृहस्पति अपने मित्र मंगल के घर में अतः उत्तम। शुक्र इस घर में यानी शत्रु के घर में। शुक्र और बृहस्पति मिलकर (मनसूई ग्रह) शनि बनाते हैं।

2. दूसरा घर : दूसरा घर खाली और इसके साथ ही 8 वां घर भी खाली अतः दूसरा घर ठीक है। जातक को बृहस्पति का उपाय करना चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

3. **तीसरा घर** : राहु इस घर में अति बलवान तथा शुभ फल देता है। व्यक्ति बहादुर होता है। जातक को राहु से संबंधित वस्तुएं पास रखनी चाहिए।

4. **चौथा घर** : इस घर में मंगल नीच का माना जाता है। इसके अलावा यह मंगल सोया हुआ है, क्योंकि दसवां घर खाली है। इसलिए यह मंगल नाभि के नीचे पेट की बीमारी देगा। चन्द्रमा का उपाय करें तथा दसवें घर में मंगल से संबंधित वस्तुएं स्थापित करें।

5. **पांचवां घर** : अपने मित्र बृहस्पति के घर में। इसके अलावा यह चन्द्रमा, सूर्य और केतु से भी प्रभावित है। व्यक्ति रहमदिल व इन्साफपसंद होता है। सूर्य से प्रभावित होने के कारण व्यक्ति को हठधर्मी बनाता है। व्यक्ति यदि हठधर्मी न बने, तो खूब तरक्की करे।

6. **छठा घर** : छठा घर खाली है, लेकिन बुध 12वें घर से इस घर को, जो बुध का पक्का घर है, 25 प्रतिशत दृष्टि से देखता है। यह दृष्टि सिर्फ बुध के लिए ही सीमित है। बुध की कारक वस्तुएं घर में स्थापित करें।

7. **सातवां घर** : सांतवें घर में शनि यानी अपनी प्रेमिका शुक्र के घर में। इस घर में शनि उच्च के प्रभाव देता है। इसके अलावा शनि एक से अधिक शादियों का कारक भी होता है।

8. **आठवां घर** : खाली ही उत्तम होता है। इस घर में किसी भी ग्रह का न होना उत्तम होता है।

9. **नौवां घर** : केतु इस घर में यानी अपने मित्र बृहस्पति के घर में और केतु की जड़ में बृहस्पति, इसलिए सन्तान पक्ष तथा बाप–दादा की स्थिति अच्छी होती है।

10. **दसवां घर** : खाली लेकिन जागा हुआ, क्योंकि इस घर पर मंगल की पूर्ण दृष्टि है। मंगल नीच का होने के कारण इस घर में मंगल की वस्तुएं स्थापित करें।

11. **ग्यारहवां घर** : खाली, लेकिन जागा हुआ, क्योंकि चन्द्रमा की दृष्टि में है। इस घर का पक्का ग्रह शनि उच्च का होकर सातवें घर में है। इस घर के उत्तम फल पाने के लिए शनि के बादाम और मंगल के छुहारे घर में रखें।

12. **बारहवां घर** : बृहस्पति का पक्का घर। इस घर में बृहस्पति का मित्र सूर्य है, जो बृहस्पति से घर अदल बदल कर बैठा है, अतः शुभ है। लेकिन सूर्य के साथ बुध सूर्य को शक्ति प्रदान करता हैं और बृहस्पति को हानि पहुंचाता है। बुध की वस्तुएं धारण नहीं करनी चाहिए। इसके अलावा स्टील का बिना जोड़ का छल्ला विधिपूर्वक धारण करना बुध के ज़हर को दूर करेगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जन्म तिथि : 12.09.1943, जन्म समय – 08:10 सुबह , जन्म स्थान – अम्बाला (पंजाब)
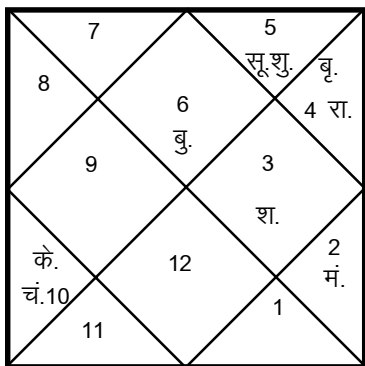
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
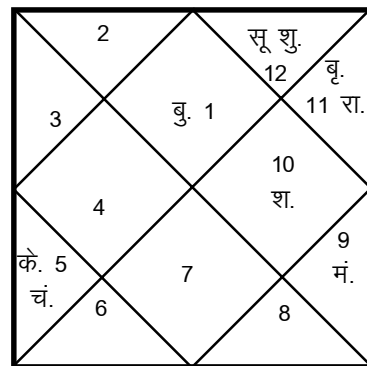
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

1. **पहला घर** : बुध पहले घर में सूर्य के पक्के खाने में, इसलिए बुध यहां सूर्य जैसा प्रभाव देगा यानी जातक का राजदरबार उत्तम। लेकिन सातवां खाना खाली होने के कारण बुध सोया हुआ है। इस घर के बुध से शुभ फल लेने के लिए खाना नं. सात में बुध के मित्र ग्रह की वस्तुएं स्थापित करें।
2. **दूसरा घर** : खाली लेकिन इस घर की स्थिति देखने के लिए इस घर के पक्के ग्रह बृहस्पति को देखना चाहिए जो अपने शत्रु ग्रह राहु के साथ खाना नं. 11 में खराब हो रहा है, अतः जातक के बाप दादाओं के लिए अशुभ।
3. **तीसरा घर** : खाली अतः सोया हुआ, लेकिन इस घर का पक्का ग्रह मंगल अपने मित्र बृहस्पति के घर में। इस मंगल के शुभ फल लेने के लिए तीसरे घर के जगाएं।
4. **चौथा घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह पांचवें घर में अपने शत्रु ग्रह केतु के साथ है अतः मानसिक शांति तथा मां के स्वास्थ्य के लिए अशुभ। चौथे घर में चन्द्रमा से संबंधित वस्तुएं स्थापित करें।
5. **पांचवां घर** : इस घर में चन्द्रमा केतु के साथ है जो चन्द्रमा को खराब करता है। इसके अलावा सूर्य की ज़मीन पर होने के कारण जातक अहंकारी तथा हठधर्मी हो जाता है जो उसके लिए नुकसान का कारण बने।
6. **छठा घर** : खाली, अतः सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह बुध पहले घर में है, जहां पर पांच/नौ की अवस्था के कारण बुध अपने शत्रु ग्रह मंगल, चन्द्रमा और केतु से खराब हो रहा है, अतः बुध के कारक रिश्तेदारों पर अशुभ प्रभाव पड़ेगा।
7. **सातवां घर** : खाली, लेकिन अपने घर के पक्के ग्रह बुध की दृष्टि में। इस घर का दूसरा पक्का ग्रह शुक्र खाना नं. 12 में सूर्य के साथ, जहां वह सूर्य के कारण खराब हो रहा है। अतः इसका अशुभ असर जातक की पत्नी/पति पर पड़ेगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

8. आठवां घर : खाली। आठवां घर खाली ही होना चाहिए, लेकिन दूसरे घर में ग्रह होने चाहिए। दूसरा घर खाली होने के कारण बृहस्पति की वस्तुएं स्थापित करें।

9. नौवां घर : बृहस्पति का पक्का घर और यहां बृहस्पति का मित्र ग्रह मंगल स्थित है। इस घर का मंगल शुभ फल देता है।

10. दसवां घर : शनि इस घर का पक्का ग्रह है जो अपने पक्के घर में है। शनि दसवें के समय जातक को 38 वर्ष से पहले अपने नाम से मकान नहीं बनाना चाहिए। इसके अलावा शनि की इस स्थिति के कारण जातक निर्दयी होता है।

11. ग्यारहवां घर : शनि का पक्का घर, लेकिन इसके साथ बृहस्पति से भी प्रभावित है। यहां बृहस्पति शनि के अनुसार फल देता है। लेकिन इस घर का राहु अति अशुभ माना जाता है। राहु ग्यारहवें के समय बाप, दादा और जातक खुद इकट्ठे एक छत के नीचे नहीं रह सकते। राहु का उपाय करें।

12. बारहवां घर : सूर्य यहां मित्र के घर में और शुक्र इस घर में उच्च का माना जाता है। सूर्य और शुक्र मिल कर बृहस्पति बनाते हैं। बृहस्पति राहु के कारण खराब हो रहा है। सभी ग्रहों का अलग–अलग उपाय करें।

जन्म तिथि : 22.05.1978, जन्म समय – 03:40 सुबह, जन्म स्थान – जालंधर (पंजाब)
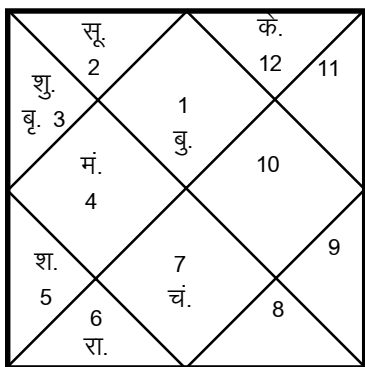
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
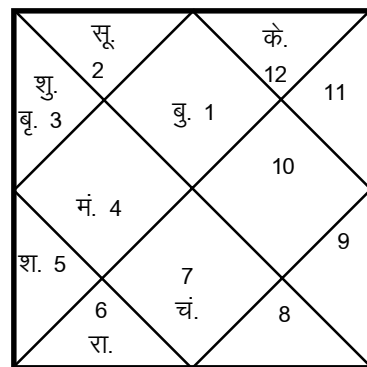
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

विशेष : वैदिक ज्योतिष अनुसार भी कुण्डली मेष लग्न की है। जैसा कि विदित है, लाल किताब मेष राशि को ही पहले घर में मानती है।

1. खाना नं. 1 : बुध पहले घर में मंगल और सूर्य से प्रभावित। अकेला बुध पहले घर में सूर्य के प्रभाव के कारण शुभ माना जाता है। लेकिन बुध के मनसूई ग्रह बृहस्पति और राहु है, अतः राहु अपने प्रभाव से पहले घर के सूर्य को खराब करेगा। इसलिए राहु का उपाय करें।

2. खाना नं. 2 : बृहस्पति का पक्का घर तथा शुक्र की ज़मीन। सूर्य यहां शुक्र के साथ मिलकर बृहस्पति

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

बनाता है, अतः बृहस्पति की स्थिति कुण्डली में देखनी चाहिए। यदि बृहस्पति शुभ स्थिति में होगा तो सूर्य और बृहस्पति दोनों उत्तम फल देंगे।

3. **खाना नं. 3** : मंगल का पक्का घर। इस घर में शुक्र और बृहस्पति स्थित हैं। दोनों ग्रह अपना–अपना अलग–अलग फल देंगे। शुक्र इस घर में शुभ माना जाता है। इसके अलावा बृहस्पति को इस घर में गरजता हुआ शेर कहा गया है। अतः बृहस्पति भी शुभ फल देगा। यह घर बुध की ज़मीन होने के कारण इस घर में बृहस्पति पर बुध का प्रभाव भी रहेगा जो अशुभ है। इस अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए बुध का उपाय करें।

4. **खाना नं. 4** : खाना नं. 4 में मंगल अपनी नीच राशि में लेकिन अपने मित्र चंद्रमा के घर में मंगल अपनी नीच राशि में लेकिन अपने मित्र चंद्रमा के घर में। नीच अवस्था के अलावा या मंगल सोया हुआ भी है। इस मंगल को शुभ करने के लिए दसवें घर में मंगल की वस्तुएं स्थापित करें।

5. **खाना नं. 5** : यह घर सूर्य की ज़मीन है लेकिन पक्का घर बृहस्पति का है। इसके अलावा लाल किताब केतु को सन्तान का कारक मानती है। अतः इस घर पर केतु का भी प्रभाव माना जाएगा। शनि बृहस्पति के घर में किसी हद तक ठीक माना जाता है, परंतु सन्तान पक्ष के लिए इस घर के शनि को अशुभ माना जाता है। अतः शनि की कारक वस्तुएं किसी विधिपूर्वक धर्मस्थान में दें।

6. **खाना नं. 6** : छठा घर बुध का पक्का घर है लेकिन इस घर का राहु अति प्रभावशाली होता है। इस घर के राहु का कोई उपाय नहीं होता।

7. **खाना नं. 7** : चौथे घर का मालिक चन्द्रमा 7वें घर में है, जहां चन्द्रमा बुध व शुक्र से प्रभावित है। चन्द्रमा स्त्री (माता) ग्रह और शुक्र भी स्त्री (पत्नी) ग्रह है, अतः दो स्त्री ग्रह है, जिनकी तासीर अलग–अलग है। इस घर का चन्द्रमा सास और बहु में मतभेद पैदा करता है।

8. **खाना नं. 8** : खाली होने के कारण शुभ माना जाता है। यह घर खाली होने के कारण दूसरे घर में बैठे ग्रह तथा दूसरे घर के पक्के ग्रह हमेशा शुभ फल देते हैं।

9. **खाना नं. 9** : नौवां घर खाली, लेकिन जगा हुआ है, क्योंकि इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति इस घर को देख रहा है। इसके अलावा तीसरे घर से शुक्र की दृष्टि भी नौवें घर पर है और यह दृष्टि अशुभ नहीं होती। बृहस्पति की कारक व अकारक वस्तुओं की सहायता लें।

10. **खाना नं. 10** : खाली, लेकिन चौथे घर से मंगल अपनी उच्च राशि को देख रहा है। अतः घर जगा हुआ है। इस घर का पक्का ग्रह शनि भी शुभ घर में है। अतः मंगल की वस्तुओं की मदद लें।

11. **खाना नं. 11** : पूरी तरह से जगा हुआ है। इस घर के पक्के ग्रह बृहस्पति (धन) और शनि (कुंभ राशि) हैं और दोनों इस घर को देख रहे हैं। शुक्र की दृष्टि इस घर पर अशुभ मानी जाती है। इसलिए शुक्र का उपाय करें।

12. **खाना नं. 12** : इस घर में केतु शुभ होता है, लेकिन बृहस्पति की स्थिति देखनी जरूरी है। बृहस्पति अपने मित्र मंगल के घर में है, इसलिए इस घर का केतु अशुभ फल नहीं देगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

जन्म तिथि : 21.04.1977, जन्म समय – 18:55, जन्म स्थान – चण्डीगढ़
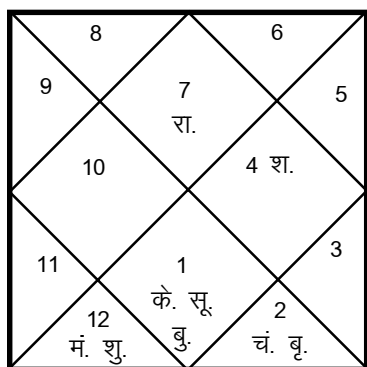
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
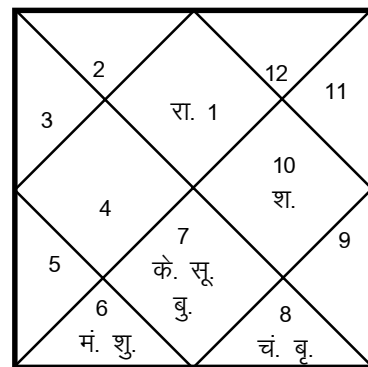
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

1. **पहला घर** : लाल किताब के अनुसार पहले घर में हाने से कुण्डली में सूर्य खराब हो जाएगा। राहु यानी हाथी तख्त पर, तख्त यानी राजदरबार खराब। इसके अलावा पहले घर का राहु सेहत के लिए भी अशुभ है। राहु का उपाय करें।

2. **दूसरा घर** : खाली, परंतु इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति इसे देख रहा है। इसके अलावा इस घर का मालिक ग्रह शुक्र भी शुभ दृष्टि से इसे देख रहा है तथा चन्द्रमा जो इस घर में उच्च का माना जाता है, भी इस घर को देख रहा है। बृहस्पति और चन्द्रमा आठवें घर में हाने से दोनों ग्रहों की कारक वस्तुएं पानी में बहाएं या धर्मस्थान में दें।

3. **तीसरा घर** : खाली और सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह मंगल अपने शत्रु बुध के घर में। भाई–बहनों से झगड़ा। सूर्य, बृहस्पति व चन्द्रमा की मदद लें।

4. **चौथा घर** : खाली और सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह चन्द्रमा शमशान यानी आठवें घर में। इसके अलावा राहु से 1/8 के टकराव की स्थिति में। मन की शांति तथा माता की सेहत के लिए अशुभ है। चन्द्रमा का उपाय करें।

5. **पांचवा घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति शमशान में। पुत्र का कारक केतु अपने शत्रु बुध के साथ और इस घर की राशि का स्वामी सूर्य भी खराब। अतः सन्तान पक्ष कमजोर होगा।

6. **छठा घर** : शुक्र इस घर में हर प्रकार से शुभ फल देता है, लेकिन शुक्र के पक्के घर में सूर्य के साथ बुध भी है। बुध इस हालात में शुक्र का साथ छोड़ कर शुक्र की कुर्बानी दिलवाएगा जिसका असर पत्नी की सेहत पर पड़ेगा। मंगल इस घर में बुध के कारक रिश्तेदारों के लिए अशुभ प्रभाव देता है। मंगल का उपाय करें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

Future Point

7. सातवां घर : केतु, सूर्य और बुध से युक्त है। सूर्य यहां पर खराब होता है क्योंकि राहु पहले घर में है, इसलिए व्यक्ति का राजदरबार खराब होगा तथा अदालती झगड़े होंगे। केतु बुध की कारक वस्तुओं यानी बहन, बुआ आदि पर अशुभ प्रभाव देगा।

8. आठवां घर : पक्का घर शनि का और शमशान। धर्म का कारक बृहस्पति शमशान में। धर्म का कारक बृहस्पति शमशान में सच्चे धर्म से भटका हुआ साधु। इसके अलावा चन्द्रमा इस घर में अशुभ फल देता है। दोनों ग्रहों के अलग–अलग उपाय करें।

9. नौवां घर : खाली, इसलिए हर प्रकार से सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति शमशान में तथा राहू के साथ टक्कर की स्थिति में, इसलिए बुजुर्गों की सेहत के लिए अशुभ।

10. दसवां घर : इस घर का पक्का ग्रह शनि अपने ही घर में है। व्यक्ति को 38 साल से पहले मकान नहीं बनवाना चाहिए, वरना धन की हानि होगी। इस घर के शनि वाले व्यक्ति को नर्म दिल नहीं होना चाहिए।

11. ग्यारहवां घर : खाली और सोया हुआ। परंतु इस घर का पक्का ग्रह शनि अपने दूसरे पक्के घर में है, अतः इस घर की सहायता के लिए शनि की वस्तुएं घर में स्थापित करें।

12. बारहवां घर : खाली, अतः सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति शमशान में तथा राहु के कारण खराब। धर्म स्थान खराब। घर में मंदिर स्थापित करना वर्जित।

विशेष : कुण्डली के केंद्र खाली हों, या उनमें पापी ग्रह हों, या किसी एक केंद्र में बुध हो, तो नवालिग टेवा कहलाता है। ऐसे व्यक्ति की 12 वर्ष तक की आयु शक्की होती है, अतः 12 वर्ष तक फलादेश नहीं करना चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जन्म तिथि : 30.03.1982, जन्म समय – 23:31, जन्म स्थान – चण्डीगढ़
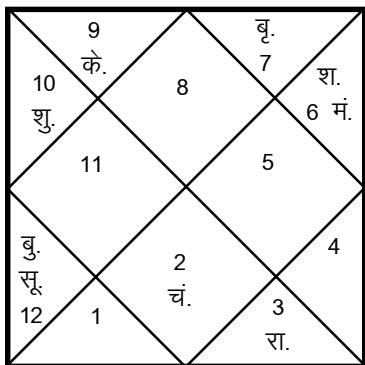
जन्म कुण्डली वैदिक ज्योतिष
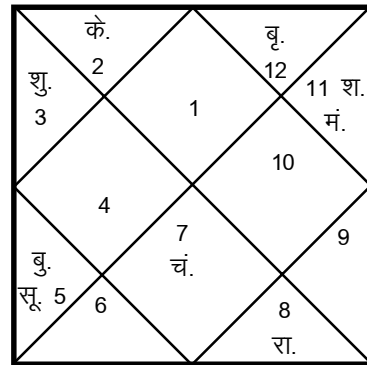
जन्म कुण्डली लाल किताब अनुसार

1. **पहला घर** : खाली होने के कारण सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह सूर्य अपनी ज़मीन पर। मंगल का उपाय करें।

2. **दूसरा घर** : केतु इस खाने में बुरा फल नहीं देता, क्योंकि बृहस्पति का चेला और शुक्र का मित्र है। शुक्र खाना नं. 3 में बुरा फल नहीं देता और बृहस्पति अपने पक्के घर में। अतः केतु शुभ फल देगा।

3. **तीसरा घर** : मंगल का, पक्का घर लेकिन शुक्र इस घर में हर प्रकार से शुभ फल देता है। इसके अलावा इस खाने के शुक्र वाले व्यक्ति के स्त्रियां बहुत करीब आती हैं।

4. **चौथा घर** : खाली, अतः सोया हुआ। इस घर पक्का ग्रह चंद्रमा अपने शत्रु शुक्र के पक्के घर में, अतः माता के लिए अशुभ है। शादी के समय ससुराल से चांदी के बर्तन में गंगाजल लाकर घर में स्थापित करना चाहिए।

5. **पांचवां घर** : सूर्य अपनी ज़मीन पर अतः शुभ है। इसके अलावा पूरी तरह जगा हुआ है। बुध सूर्य के साथ शुभ होता है, लेकिन जातक कड़वा बोलने वाला होगा। अतः फिटकरी से दांत साफ करने चाहिए।

6. **छठा घर** : खाली और सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह बुध पांचवें घर में है। पांचवां घर सूर्य और बृहस्पति से प्रभावित है। इसके अलावा केतु भी इस घर पर प्रभाव डाल रहा है। केतु के प्रभाव के कारण बुध के कारक रिश्तेदारों पर अशुभ प्रभाव पड़ेगा।

7. **सातवां घर** : शुक्र का पक्का घर । चन्द्रमा इस घर में अपने शत्रु शुक्र से प्रभावित है, अतः शुक्र (पत्नी) और चन्द्रमा (माता) यानी सास और बहु में झगड़ा। चन्द्रमा का उपाय करें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

8. आठवां घर : शनि का पक्का घर। राहु इस घर में अशुभ फल देता है। राहु मन्दा होने की पहचान होगी कि जातक के पांव के पास जन्म से या फिर चोट का पक्का निशान होगा। राहु का उपाय करें।

9. नौवां घर : खाली, लेकिन शुक्र की दृष्टि में और इस घर का पक्का ग्रह बृहस्पति अपने दूसरे पक्के घर में है। जातक को चाहिए कि पिता या पिता समान व्यक्ति के पांव छूकर आशीर्वाद लें।

10. दसवां घर : खाली तथा सोया हुआ। इस घर का पक्का ग्रह शनि अपने दूसरे पक्के घर में। अतः शुभ है।

11. ग्यारहवां घर : शनि और मंगल दोनों इस घर में है। शनि अपने घर में है। लेकिन मंगल कभी–कभी पेट से संबंधित रोग देता है। मंगल की कारक वस्तुएं ज़मीन में दबाएं।

12. बाहरवां घर : बृहस्पति इस घर का पक्का ग्रह अपने घर में है। व्यक्ति को बुध की चीज़ों से परहे़ज तथा बृहस्पति की वस्तुओं का इस्तेमाल करना चाहिए।

Future Point

भाग—5

लाल किताब के आधार पर विशेष नियम

Future Point

- टेवे में जो ग्रह उच्च का या अपने घर का हो, उस ग्रह की वस्तुएं कभी दान नहीं करनी चाहिए।
- चंद्रमा यदि खाता नं. 2 या 4 में हो, तो चंद्रमा की वस्तुएं दूध, चावल या मोती का दान कभी नहीं करना चाहिए।
- मंगल टेवे में श्रेष्ठ हो या उच्च हो, तो व्यक्ति को मिठाई का दान कभी नहीं करना चाहिए।
- सूर्य यदि टेवे में उत्तम हो, तो गुड़ या गेहुं का दान करना टेवे वाले के लिए वर्जित है।
- बुध यदि टेवे में श्रेष्ठ हो, तो साबुत मूंग, हरा कपड़ा, कलम, खुंब, घड़ा आदि दान नहीं करना चाहिए।
- बृहस्पति शुभ व उच्च हो, तो सोना, पीली वस्तुएं, केसर आदि का दान नहीं करना चाहिए।
- शुक्र यदि टेवे में उच्च का हो या शुभ हो राहा हो तो सिले हुए कपड़े कभी दान नहीं करने चाहिए।
- शनि यदि टेवे में उच्च हो, तो शराब, मांस, अंडा तेल या लोहे आदि का दान नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार पर लिखे ग्रह यदि टेवे में नीच हों या अशुभ हों, तो उपरोक्त वस्तुएं ग्रहानुसार दान में या मुफ्त नहीं लेनी चाहिए।

मंदिर या धर्म स्थान से संबंधित नियम

जब किसी जातक के टेवे में खाना नं. 2 खाली हो और खाना नं. 8 में पापी ग्रह हों, खासकर शनि, तो इस टेवे वाले जातक को धर्म स्थान या मंदिर नहीं जाना चाहिए। मंदिर के बाहर से अपने इष्टदेव को नमस्कार करना चाहिए। टेवे के खाना नं. 6,8,12 में शत्रु ग्रह हों और खाना नं. 2 खाली हो तब भी मंदिर जाना वर्जित है।

धर्मार्थ कार्य करने से संबंधित नियम

1. यदि चंद्रमा खाना नं. 6 में हो और व्यक्ति धर्मार्थ पानी का पम्प लगवाए, कुआ खुदवाए या उनकी मरम्मत करवाए तो दिन प्रतिदिन परिवार घटे।
2. यदि शनि खाना नं. 8 में हो और व्यक्ति सराय, धर्मशाला या बेसहारों के लिए निवास स्थान बनाए, तो खुद बेघर हो जाएगा।
3. यदि टेवे में शनि खाना नं. 1 में और बृहस्पति खाना नं. 5 में हो और टेवे वाला तांबे के पैसे या बर्तन दान करे, तो संतान नष्ट होगी।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

4. यदि टेवे में बृहस्पति खाना नं. 10 में और चंद्रमा 4 में हो और व्यक्ति पूजा स्थान का निर्माण करावे, तो झूठे आरोपों में जेल यात्रा करेगा।
5. यदि टेवे में शुक्र खाना नं. 9 में हो और टेवे वाला अनाथ बच्चा गोद ले, तो खुद की मिट्टी खराब हो।
6. यदि चंद्रमा खाना नं. 12 वाला जातक साधु को प्रतिदिन रोटी खिलाए, धर्मार्थ पाठशाला खोले, तो अंतिम समय में कोई पानी देने वाला न होगा।
7. यदि बृहस्पति खाना नं. 7 वाला व्यक्ति किसी को नये वस्त्र दान लेकर देगा, तो खुद निर्वस्त्र हो जाएगा।
8. यदि सूर्य खाना नं. 7 या 8 में हो, तो सुबह के समय और शाम के समय दिया दान जहर के समान होगा।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भाग–6

ग्रह और उनसे संबंधित बीमारियां

ग्रह	संबंधित बीमारियां
बृहस्पति	सांस, फेफड़े आदि की बीमारियां।
सूर्य	दिलकी धड़कन में गड़बड़ी चंद्रमा कमजोर हो, तो मुंह से झाग आए। अंगों की ताकत खत्म हो।
चंद्रमा	दिल की बीमारी, दिल की धड़कन, आंख की बीमारियां।
शुक्र	त्वचा की बीमारियां। बुध के उपाय , नाक छेदन से मदद हो।
मंगल	नासूर, पेट की बीमारियां, पित्त की गड़बड़ी,, हैजा आदि।
मंगल बद	भगंदर, फोड़ा, नासूर आदि।
बुध	चेचक, दिमागी असंतुलन, खुशबू या बदबू का पता न चलना, नाड़ियों की गड़बड़ीं, जीभ और दांतों की बीमारी।
शनि	आंखों की बीमारी, खांसी पुरानी। पानी में नारियल बहाना शुभ रहे।
राहु	बुखार, दिमागी बीमारियां, प्लेग, दुर्घटना, अचानक चोट लगना।
केतु	रीढ़ की बीमारी दर्द, जोड़ों में गड़बड़ी, फोड़े–फुन्सी, रसौली, सूजाक, मधुमेह, स्वप्न दोष, पेशाब की बीमारी, कान की बीमारी आदि।

दो ग्रह	बीमारी
बृहस्पति + राहु	दमा, सांस की तकलीफ हो सकती है।
बृहस्पति + बुध	दमा, सांस का कष्ट।
राहु, केतु इकट्ठे	नहीं हो सकता – लेकिन वर्षफल में टेवे के राहु पर केतु हो सकता है, बवासीर हो सकती है।
चंद्रमा + राहु	पागलपन, निमोनिया आदि।
सूर्य + शुक्र	दमा, तपेदिक हो सकती है।
बुध + बृहस्पति	दमा, तपेदिक हो सकती है।
मंगल + शनि	जिस्म का फटना, खून की बीमारी होना।
शुक्र + राहु	नामर्द होना। स्वप्न दोष होना।
बृहस्पति + मंगल (बद)	यरकान होगा।
चंद्र, बुध या मंगल का टकराव।	ग्रंथियों का रोग होने का भय।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

जब कभी बीमारी हो, तो तंग और कोई ग्रह किसी दूसरे करने वाले ग्रह का उपाय करें। जब दो या अधिक ग्रहों के इकट्ठे होने से बीमारी हो, तो जिस ग्रह से एक ग्रह को बर्बाद कर रहा हो, तो बर्बाद करने वाले ग्रह का उपाय करें। जैसे बृहस्पति और राहु इकट्ठे हों, तो मंदे राहु का उपाय करें। अगर घर से बीमारी दूर न हो, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहिए :–

1. घर के सभी सदस्यों और मेहमानों की कुल गिनती से अधिक मीठी रोटियां, तंदूर में लगवाकर, जिन्हें लोहा न लगे, हर महीने 30 दिन के बाद बाहर जाकर एक बार में गाय, कुत्तों व कौवों को खिलाएं।
2. हलवा कद्दू, जो पूरा पका पीले रंग का और अंदर से खोखला हो, धर्म स्थान में रखें– हो सके, तो महीने में एक बार या 3 महीने या 6 महीने बाद। यदि ऐसा न हो सके, तो साल में एक बार अवश्य करें।
3. अगर ऊपर दिए गए उपायों से मरीज़ ठीक न हो, तो मरीज़ के सिरहाने तांबे के दो पैसे रखकर सुबह किसी भंगी को दें। यह उपाय लगातार 43 दिन तक करें। इसे पिछले जन्म के लेन–देन का टैक्स कहते हैं।
4. शमशान या कब्रिस्तान में कभी–2 पैसे गिराने चाहिए। इस उपाय को अति छुपी सहायता कहते हैं।

विभिन्न खानों में स्थित ग्रहों का प्रभाव :

1. बृहस्पति खाना नं. 1 के समय यदि राहु खाना नं. 8 या 11 में हो, तो लकवा या मानसिक बीमारियों का भय हो सकता है।
2. बृहस्पति खाना नं. 9 में हो और खाना नं. 1 खाली हो, तो दिल की बीमारी होने का भय होता है।
3. सूर्य खाना नं. 6 और राहु व शनि खाना नं. 8 में होने से सेहत किसी न किसी कष्ट से खराब रहती है।
4. सूर्य खाना नं. 7 में, मंगल खाना नं. 2 में, शनि खाना नं. 12 में और चंद्रमा खाना नं. 1 में हो, तो फुलबहरी हो सकती है।
5. चंद्रमा खाना नं. 10 में हो और खाना नं. 2 खाली हो, तो फेफड़े व छाती से संबंधित रोग होने का भय।
6. शुक्र खाना नं. 1 में और राहु खाना नं. 7 में हो तो पत्नी को मानसिक बीमारी हो सकती है।
7. शुक्र खाना नं. 3 और बृहस्पति खाना नं. 9 के समय किसी भी बीमारी का भय बना रहता है।
8. शुक्र खाना नं. 9 के समय खाना नं. 1 खाली हो या शुक्र व बृहस्पति का संबंध हो, तो खून की कमी होती है।
9. अशुभ शुक्र खाना नं. 10 में हो, तो पेशाब व चमड़ी के रोग होने का भय बना रहे।
10. बद मंगल खाना नं. 12 में और शनि खाना नं. 2 में, व्यक्ति के भाइयों से संबंधित कष्ट बना रहेगा – मंदिर में बताशे देने चाहिए।
11. राहु खाना नं. 9 में और खाना नं. 1 खाली होने पर स्वास्थ्य प्रायः मंदा रहेगा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

12. राहु खाना नं. 11 और केतु खाना नं. 5 में हो, तो खुद की या बेटे की टांग में तकलीफ हो, चोट लगे या रीढ़ की हड्डी में दर्द हो।
13. अशुभ केतु खाना नं. 1 में हो, तो नाभि के नीचे पेट की बीमारियां और स्त्रियों में प्रजनन संबंधी रोग हो सकते हैं।
14. केतु खाना नं. 3 में और मंगल खाना नं. 12 में हो, तो पांव, घुटने या रीढ़ की हड्डी की बीमारियों का भय।

Future Point

Future Point

भाग–7

पितृ ऋण का ग्रह

अपने पूर्वजों के किए पापों का फल जब उसकी वंशावली में किसी एक जातक को भोगना पड़े, तो वह पितृ ऋण कहलाता है।

पहचान : खाना नं. 9 का पक्का ग्रह बृहस्पति किसी शत्रु भाव में स्थित हो और उस पर कोई शत्रु ग्रह दृष्टि से बुरा प्रभाव डाल रहा हो, तो बृहस्पति पितृ ऋण का ग्रह कहलाएगा। इसी प्रकार दूसरे ग्रहों की स्थिति को आंका जा सकता है। आसान शब्दों में कहा जा सकता है। कि जब किसी ग्रह के पक्के खाने में उसका शत्रु ग्रह बैठ जाये और उस शत्रु ग्रह का अपना प्रभाव भी नष्ट हो रहा हो, तो टेवा पितृ ऋण का टेवा कहलाएगा।

उपाय : जो ग्रह पितृ ऋण का हो चुका हो, उस ग्रह को शुभ करने के लिए उस की आयु अवधि से पूर्व उसका उपाय करना चाहिए, वर्ना वह अपनी अवधि में चोट यानी हानि पहुंचाएगा। मान लें कि जातक पिता ने कुत्ते मरवाए हों, तो जातक पर संतान के कारक ग्रहों यानि बृहस्पति और केतु का पितृ ऋण होगा, इसलिए उपाय 16 से 24 वर्ष की आयु में और 40 से 43 हफ्ते लगातार करना चाहिए।

बृहस्पति के लिए 16 वर्ष से सूर्य के लिए 22 वर्ष, चंद्रमा के लिए 25, मंगल के लिए 28, शुक्र के लिए 25, बुध के लिए 34 और शनि के लिए 36 वर्ष से पहले उपाय अवश्य करना चाहिए।

पितृ ऋण कुण्डली पर अपने पूर्वजों के पाप का प्रभाव है और इसे केवल जन्म कुण्डली में देखा जाता है, न कि वर्षफल में। उदाहरण के तौर पर बृहस्पति टेवे में शत्रु भाव में हो और केतु उसे खराब कर रहा हो, तो केतु और बृहस्पति का उपाय व्यक्ति को अपनी 16 साल की उम्र से पहले कर देना चाहिए।

1. बृहस्पति खाना नं. 9 के समय, बृहस्पति के अन्य घरों 2,5,12 पर हों तो टेवे में पितृ ऋण होगा।
2. चंद्र के समय मातृ ऋण आदि और ग्रह भी ऋण देने वाले होंगे। टेवे में और ग्रह चाहे शक्तिशाली हों परंतु उपाय दोनों के ही करने पड़ेंगे।

बृहस्पति – पितृऋण – शुक्र , बुध, राहु खाना नं. 2,5,9 या 12 में

कारण – बड़ों का पाप या कुलपुरोहित का बदला जाना।

लक्षण – धर्म मंदिर या बृहस्पति की चीज़ों का बर्बाद होना।

उपाय – खून के रिश्तेदारों से बराबर की मात्रा में पैसे लेकर एक ही दिन मंदिर में दें।

सूर्य – अपना ऋण – पापी शुक्र खाना नं. 5 में।

कारण – अन्त खराब, नास्तिकता अथवा पुराने रीति रिवाजों का अपमान।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

लक्षण – घर में जमीन के नीचे अग्नि कुण्ड, छत में रोशनी के लिए जगह, हृदय रोग।

उपाय – कुल खानदान यानी खूनी रिश्तेदारों से (प्रत्येक सदस्य) बराबर की मात्रा में धन लेकर यज्ञ करवाएं।

चंद्र – मातृऋण – केतु खाना नं. 4 में।

कारण– अपनी ही संतान माता का निरादर, या घर से बाहर करे।

लक्षण – पड़ोस में नाला या कुंआ हो व पूजा की जगह पर गंदगी जाए, बीमारी, जुआरी होना व हिम्मत का जवाब देना।

उपाय – कुल खून के रिश्तेदारों से बराबर वजन चांदी लेकर पानी में बहाएं।

शुक्र – स्त्री ऋण–सूर्य, राहु अथवा केतु खाना नं. 2 या 7 में हों।

कारण – परिवार में मारपीट, स्त्री को गर्भावस्था के समय किसी लालचवश जान से मार देना।

लक्षण – गाय मारना, खानदानी ऋण का असूल, खुशी के समय गम के समाचार मिलना।

उपाय – 100 गायों को जो अंगहीन न हों, कुल खानदान के रिश्तेदारों से बराबर के पैसे लेकर भोजन कराएं।

मंगल – रिश्तेदारी का ऋण – सूर्य और केतु 1 और 8 में।

कारण – मित्र को जहर देना, पके खेत में आग लगवाना , किसी भैंस को मरवाना।

लक्षण – रिश्तेदारों के मिलाप पर घृणा होना, किसी की खुशी के मौके पर शामिल न होना, एकदम तरक्की के बाद सब बरबाद होना।

उपाय – अपने शहर या गांव से दूर किसी डाक्टर या हकीम के लिए कुल खानदान के लोग अपना पैसा लगाकर दवाखाना खुलवाएं।

बुध – लड़की या बहन का ऋण– चंद्रमा खाना नं. 3 या 6 में।

कारण – किसी बहन या लड़की को धोखा देना।

लक्षण – कम उम्र के बच्चों को बेचना या बदल देना, बहुत खर्चा होना।

उपाय – खानदान के सारे सदस्य बराबर की कौड़ियां लेकर जलाएं और राख को समुद्र में बहाएं या बराबर के पैसे डाल कर देसी घी का हलुआ बनाएं, 101 कन्याओं के चरण धोकर पूरी के साथ बराबर की दक्षिणा दें।

शनि – जालिमाना ऋण–सूर्य और चंद्रमा खाना नं. 10–11 में।

कारण – जीव हत्या, मकान धोखे से लेना, सांप को मरवाना या खुद मारना।

लक्षण – मकान का मुख्य द्वार दक्षिण में होने से नुकसान होना, मकान के रास्ते में अनाथाश्रम, कुआं आदि, किसी भी बात का पक्की होकर टूट जाना।

उपाय – अलग–2 स्थान पर एक ही दिन 100 मछलियों या 100 मजदूरों को खून के सभी रिश्तेदार मिलकर खाना खिलाएं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

राहु – पैदा न हुए का ऋण– सूर्य, शुक्र और मंगल खाना नं. 12 में।

कारण – ससुराल को धोखा , आपसी ताल्लुकेदारों में धोखा करना।

लक्षण – दक्षिण दीवार की ओर उजाड़, वीरान, कब्रिस्तान, भड़भूजे की भट्ठी आदि का होना। दरवाजे की दहलीज के नीचे गंदा पानी जाना। धन हानि और बेवजह जेल जाना।

उपाय – खानदान के हर सदस्य से नारियल लेकर एक ही दिन इकट्ठे एक ही दरिया में बहाना।

केतु – कुदरती ऋण– चंद्रमा और मंगल खाना नं. 6 में।

कारण – कुत्ता, फकीर, बदचलनी, बदनीयत।

लक्षण– दूसरे की नर औलाद को नष्ट करवाना, कुत्तों को गोली मरवाना, केतु की दूसरी चीज़ें लालचवश नष्ट करवाना, पेशाब की बीमारी , बच्चों की अचानक मृत्यु, अचानक बहरापन।

उपाय–100 अलग–2 कुत्तों को एक ही दिन इकट्ठे खर्च से खाना खिलाना।

Future Point

Future Point

भाग–8

कुछ अदभुत योग

1. बृहस्पति खाना ंन. 7 में हो, तो पिता से कम पटती है। मूंगा धारण करना चाहिए।
2. मंगल खाना नं. 6 में हो, तो जातक के चाचा दो और भाई दो।
3. शुक्र खाना नं. 2 में व्यक्ति ससुराल के लिए निकम्मा।
4. केतु खाना नं. 9 में मामा व नानकों के लिए भारी।
5. शनि + बृहस्पति इकट्ठे हों, तो मकान बने, परंतु स्त्री नाराज हो।
6. राहु खाना नं. 5 में संतान के लिए खराब (वर्षफल में 8वें घर में केतु हो तो पुत्र अगर बुध हो तो पुत्री के लिए नुकसानदेह)
7. सूर्य खाना 6 के समय जब वर्षफल में बुध खाना ंन. 12 में आए, तो हाई ब्लडप्रेशर हो।
8. सूर्य खाना नं. 6 के समय जब शुक्र खाना नं. 12 में हो (वर्षफल में) तो पत्नी की मृत्यु का भय।
9. शुक्र खाना नं. 3 के समय जातक को खुद के नाम मकान नहीं बनाना चाहिए।
10. शुक्र खाना नं. 2 वाला जातक विधवा औरत से प्यार करे, तो बर्बाद हो।
11. वर्षफल में बृहस्पति + शुक्र क्रमशः 1 और 7 में आयें, तो विवाह का योग बनता है । विवाह के बाद बृहस्पति जब भी खाना नं. 1 में आए, तो जातक को धन का लाभ हो।
12. कर्क लग्न वाले जातक के खाना नं. 2 में राहु, 9 में सूर्य, और 8 में बुध हो, तो वह बिना गुरु के प्रसिद्ध ज्योतिषी होगा।
13. मिथुन लग्न के जातक का बुध, और सूर्य खाना नं. 11 में हों और लग्न को बृहस्पति देखे, तो जातक से सभी कार्य खुद बखुद बनते जाएं।
14. खाना नं. 9 में नीच का शनि, खाना नं. 12 में मंगल और खाना नं. 10 में राहु हो तो जातक का पिता निर्धन होगा।
15. यदि खाना नं. 3 का स्वामी 1,2,3,4 और 5 में हो तो प्रथम संतान की हानि का डर रहे।
16. शनि खाना नं. 3 के समय जातक की रोजी अच्छी लेकिन नकद धन की कमी बनी रहे।

संतान से संबंधित लाल किताब के कुछ नियम

संतान का सुख या पैदाइश जातक की जन्म कुंडली निर्धारित करती है। चंद्र कुंडली से संतान के संबंध में फलादेश नहीं हो सकता। वर्षफल में यदि चंद्रमा पापी ग्रहों द्वारा नष्ट हो रहा हो, तो उस वर्ष संतान भी नष्ट होगी। केतु या बुध में से जो ग्रह वर्षफल में उच्च होगा, वह संतान के नर या नारी होने का फैसला करेगा।

जब मंगल या शुक्र अथवा केतु या बुध में से वर्षफल के अनुसार कोई ग्रह खाना नं. 1 में आए और शनि साथ दे, तो नर संतान उत्पन्न होगी।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

चंद्र नर ग्रहों के साथ खाना नं. 1 या 5 में अथवा अकेला केतु खाना नं. 11 में आए, तब भी नर संतान पैदा होगी। उत्तम केतु लड़का व उत्तम बुध लड़की की पैदाइश का कारण बनेंगे।

औलाद संबंधी सावधानियां व उपाय

1. यदि बच्चे मरते हों या गर्भपात होते हों, तो स्त्री के गर्भवती होते ही उसके बाजू पर लाल धागा बांध दें (स्त्री के कद से 1" ज्यादा) यही धागा संतान होने के पश्चात बच्चे को बांधें और माता को नया धागा बांध दें। जौ 11 महीने तक बांध कर रखें।
2. गणेश जी की आराधना करें।
3. गाय को चारा खिलाना मदद करेगा।
4. बच्चे के जन्म से पहले एक बर्तन में दूध और दूसरे में खांड डालकर स्त्री का हाथ लगवा कर कायम करें तथा बच्चे के जन्म के बाद दोनों वस्तुएं धर्म स्थान में पहुंचा दें । जिस बर्तन में दोनों चीज़ें रखें उनहें वापिस मत लाएं।
5. यदि वर्षफल में राहु मंदा हो, तो जौ का पानी बोतल में भरकर औरत के सिरहाने रखें, बच्चे की पैदाइश आराम से होगी।
6. यदि 100 दिन से अधिक समय के लिए घर से बाहर जाना हो, तो नदी पार करते समय तांबे के सिक्के पानी में फेंके।
7. दिन के समय तंदूरी मीठी रोटियां, जिन्हें लोहा न लगे, कुत्ते, दरवेश को खिलाएं।
8. यदि बच्चे पैदा होते ही मरते हों, तो मीठी रोटियों की जगह नमकीन रोटियां खिलाएं।
9. धर्मस्थान में जन्मे बालक की आयु लंबी होगी।
10. कुतिया का नर बच्चा, जो अकेला पैदा हुआ हो, रखने से (पालने से) परिवार में बरकत होगी।

विशेष

1. मंगल + शनि एक साथ हों, तो खुद की संतान ठीक समय पर मगर पोते देर से होंगे।
2. चंद्र टेवे में दो नर ग्रहों दो के साथ हो, तो संतान दीर्घायु हो।
3. खाना नं. 5 में पापी ग्रह हों, तो संतान के गर्भ में नष्ट होने का भय बने।
4. शुक्र + बुध + मंगल खाना नं. 3 में हों और खाना नं. 9,11 खाली हों, तो शादी और संतान में बाधाएं हों।
5. सूर्य खाना नं. 6में, मंगल 10 या 11में और चंद्र टेवे में खराब हो, तो संतान के नष्ट होने का भय।
6. यदि टेवे में मंगल और बुध इकट्ठे हों, तो शनि राहु स्वभाव का होगा, इसलिए संतान का नाश।
7. बृहस्पति+शुक्र खाना नं. 7 में हों और चंद्रमा व मंगल खराब हो, तो संतान नष्ट होने का भय।
8. जिस स्त्री के टेवे में शुक्र अकेला खाना नं. 2 या 6 में हो, तो वह बांझ होगी।
9. खाना नं. 1 या 4 में बृहस्पति व 9 या 12 में बुध आए, तो नर संतान हो (वर्षफल में)
10. खाना नं. 1 या 4 में मंगल, 5 या 8 में बुध और 9 या 12 में बृहस्पति हो, तो पुत्री हो। (वर्षफल में)
11. खाना नं. 1 या 4 में बृहस्पति, 5 या 8 में मंगल और 9 या 12 में बुध हो, तो नर संतान हों (वर्षफल में)
12. खाना नं. 1 या 4 में बृहस्पति, 5 या 8 में बुध और 9 या 12 में मंगल हो तो पुत्री होगी। (वर्षफल में)
13. खाना नं. 1 या 4 में मंगल, 9 या 12 में बुध और बृहस्पति हो, तो पुत्र संतान हो परंतु पिता का हाल मंदा।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

यात्रा संबंधी नियम

हवाई यात्रा बृहस्पति से, समुद्री यात्रा चंद्रमा से तथा खुश्की की यात्रा शुक्र से देखी जाती है। सामान्य तब्दीली केतु से देखी जाती है। इन सबके लिए लाल किताब के कुछ नियम नीचे दिये गये हैं।

1. यदि वर्षफल में केतु खाना नं. 1 में आए, तो यात्रा का आदेश और तैयारी तो हो जाएगी, लेकिन अंत में स्थगित हो जाएगी। यदि जातक यात्रा पर जाए, तो वापिस आना पड़े। सौ (100) दिन की यात्रा को यात्रा नहीं मानते।
2. उन्नति पाकर यात्रा का साधन बने तो यात्रा अवश्य होगी, परंतु खाना नं. 8 मंदा होना चाहिए।
3. यदि खाना नं. 10 ठीक हो, तो यात्रा नहीं होगी, यदि होगी तो वहां तक जहां मां रहती हो। स्थान परिवर्तन और यात्रा शुभ होगी।
4. यदि बृहस्पति टेवे में केतु के नजदीक हो, तो विभाग के अंदर या उसी शहर में किसी दूसरे कमरे में बैठना पड़े, परंतु शुभ रहे।
5. यात्रा का आदेश होकर रद्द हो जाएगा, जिस समय खाना नं. 12 में कोई ग्रह बैठा हो।
6. यदि खाना नं. 11 में केतु के शत्रु चंद्रमा व मंगल न हों, तो केतु की हवा केतु की चीज़ों यानी पुत्र, कान, रीढ़ की हड्डी आदि पर पड़े, यानी यात्रा किसी बीमारी की वजह से करनी पड़े।

   उपाय : मंदिर में या कुत्तों को लगातार 15 दिन दूध देना चाहिए।
7. जब खाना नं. 3 का मंदा प्रभाव हो रहा हो, तो जद्दी घर बार की यात्रा करनी पड़ेगी और यात्रा अपनी इच्छा से होगी व शुभ रहेगी।
8. यात्रा का आदेश बड़े अधिकारी से चलकर नीचे नहीं पहुंचेगा। सिर्फ दिखावट की हलचल होगी।

शादी से संबंधित लाल किताब के नियम

लाल किताब के नियमानुसार शुक्र खाना नं. 9 में शादी के सुख के लिए अच्छा नहीं माना जाता, बल्कि हलचल भरी शादी का कारण बनता है। यह स्थिति और भी खराब हो जाती है जब शुक्र खाना नं. 9 वाले जातक के घर में आने का द्वार दक्षिण की ओर होता है। उदाहरण के लिए भगवान राम के टेवे में शुक्र खाना नं. 9 में उच्च का होकर पड़ा है। जिस कुटिया से सीता का अपहरण हुआ उसका द्वार दक्षिण दिशा की ओर था।

1. अगर टेवे में सूर्य व शुक्र इकट्ठे हों और व्यक्ति की शादी सूर्य की आयु (22 साल) या फिर शुक्र की आयु (25वें साल) में हो, तो तलाक या अलग होने का योग बनता है।
2. अगर टेवे में चंद्रमा खाना नं. 1 में हो, तो चंद्रमा की आयु (25वें वर्ष) में शादी नहीं करनी चाहिए, क्यों चंद्रमा खाना नं. 7 को देखता है, जहां शुक्र है और शुक्र व चंद्रमा में शत्रुता है।
3. अगर राहु टेवे के खाना नं. 7 में हो, तो 21वें साल में की गई शादी दुर्भाग्यपूर्ण साबित होगी।
4. शनि टेवे के खाना नं. 6 में तथा शुक्र खाना नं. 2 या 12 में हो तो पत्नी/पति की आयु को खतरा बना रहे।
5. शुक्र टेवे में जिस खाने में हो, उससे अगले (दूसरे) या पिछले (बारहवें) खाने में अशुभ ग्रह हों, तो

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

तलाक की संभावना रहती है। बुध को लाल किताब में अशुभ ग्रह माना गया हैं

6. जिस व्यक्ति के टेवे में बुध खाना न 6 में हो, उसे अपनी कन्या उत्तर दिशा में रहने वाले व्यक्ति को नहीं ब्याहनी चाहिए, वर्ना लड़की शादी के बाद दुःखी रहेगी।
7. जिस व्यक्ति के टेवे में चंद्रमा खाना नं. 11 में हो, उसे अपनी लड़की का कन्यादान सूर्योदय के समय नहीं करना चाहिए, वर्ना बाप—बेटी दोनों दुःखी रहेंगे, क्योंकि यह समय केतु से प्रभावित होता है।
8. सूर्य, राहु व बुध की युति टेवे में हो तो जातक की एक से अधिक शादियां होंगी और सभी दुःखपूर्ण रहेंगी।
9. अगर सूर्य खाना नं. 6 में और शनि खाना नं. 12 में हो तब भी एक से अधिक शादियों की संभावना रहती है।

उपाय : ग्रहों की शांति व खुशहाल शादी के लिए ग्रहों के अनुसार उपाय नीचे दिये जा रहे हैं। उपाय कन्या द्वारा किये जाने चाहिए।

1. यदि टेवे में बृहस्पति खराब हो, तो शादी के वक्त कन्या को अपने माता पिता से सोने के दो चौकोर टुकड़े लेने चाहिए। एक अपने पास रखे और दूसरा पानी में बहाएं। वजन कितना भी हो सकता है। किसी कारण पास रखा टुकड़ा यदि खो जाए, तो एक और टुकड़ा अपने मां—बाप से लेना चहिए, परंतु दूसरी बार पानी में बहाने की आवश्यकता नहीं।
2. यदि टेवे में सूर्य खराब हो, तो सूर्य की धातु यानी तांबे के दो टुकड़े उपरोक्त विधि से इस्तेमाल करने चाहिए।
3. यदि टेवे में चंद्रमा खराब हो तो उपरोक्त विधि द्वारा 2 सुच्चे मोतियों का इस्तेमाल करना चाहिए। किसी कारणवश मोती न मिल सकें, तो ससुराल से लड़की के वजन के बरबर चावल या फिर चांदी के बर्तन में गंगाजल लेकर ससुराल में रखना चाहिए।
4. शुक्र के टेवे में खराब होने की अवस्था में सफेद रंग के दो मोतियों का उपरोक्त विधि से इस्तेमाल करें।
5. खराब मंगल के लिए लाल रंग के पत्थर के दो टुकड़ों का इस्तेमाल करना चाहिए, लेकिन उन टुकड़ों में चमक नहीं होनी चाहिए।
6. यदि टेवे में बुध खराब हो, तो दो सीपियों का उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।
7. खराब शनि के लिए स्टेनलैस स्टील के दो चौकोर टुकड़ों का या फिर सुरमे की डलियों का उपयोग करें।
8. यदि टेवे में राहु खराब हो, तो चंद्रमा की मदद लें या फिर चांदी के दो टुकड़ों वाला उपाय करें। दूल्हे को अपने ससुराल वालों में नीलम किसी भी शक्ल में लेना मना है।
9. केतु के खराब होने पर बृहस्पति की वस्तु यानी सोने के टुकड़ों का उपाय किया जाए।

इसके अलावा निम्नलिखित उपाय भी करें :

1. जिस पुरुष की कुंडली में शुक्र खाना नं. 6 में हो उसके ससुराल वालों को चाहिए कि सोने की क्लिप अपनी लड़की को देवें।

Future Point

Future Point

2. यदि शुक्र खाना नं. 4 में हो या सूर्य, राहु चंद्र खाना नं. 2 में या फिर राहु खाना नं. 1,5 या 7 में हो (पुरुष के टेवे में) तो जातक को चांदी का चौकोर टुकड़ा ससुराल वालों से लेकर हमेशा अपने पास रखना चाहिए।
3. यदि टेवे में केतु खाना नं. 8 में हो, तो शादी के तुरंत बाद व्यक्ति को काला–सफेद कंबल धर्म स्थान में रखना चाहिए।
4. यदि चंद्रमा खाना नं. 6 में हो, तो कुंडली में पितृदोष बनता है। ऐसे में व्यक्ति को दिन के समय 100 कुत्तों को मीठी रोटी, शादी के तुरंत बाद डालनी चाहिए।
5. यदि बुध टेवे के खाना नं. 12 में हो, तो स्टेनलेस स्टील के बिना जोड़ के दो छल्ले बनवाने चाहिए, जिनमें से एक शादी के समय धारण करना चाहिए और दूसरा पानी में बहाना चाहिए (ढंग सहित)

लाल किताब के धन संबंधित कुछ नियम

लाल किताब के अनुसार चंद्रमा उस धन को दर्शाता है जो कारोबार में लगा हैं शनि ग्रह को रोकड़िया की उपाधि प्राप्त है और बृहस्पति समृद्धि व धन की मात्रा का प्रतीक है। शुक्र ग्रह जमापूंजी, कीमती जेवरात आदि का कारक है। इसके अलाव भचक्र की 11 वीं राशि यानी कुंभ तक इसके स्वामी शनि की स्थिति भी ध्यान में रखनी चाहिए। टेवे के खाना नं. 1,4,7 व 10 को बंद मुट्ठी कहा गया है और यदि बृहस्पति, चंद्रमा, शनि व शुक्र ग्रह इन घरों में हों तो व्यक्ति के पूर्व जन्म के कार्यों से धन संपत्ति में वृद्धि होती है। टेवे का खाना नं. 2 ससुराल से होने वाले लाभ को दर्शाता है, खाना नं. 3 भाई–बहनों केबारे में तथा खाना नं. 5 से संतान से प्राप्त होने वाले धन का पता चलता है। खाना नं. 8 अकस्मात धन प्राप्त होने का सूचक है तथा खाना नं. 9 से माता–पिता से मिलने वाले धन का पता चलता है। इन सभी चीजों को जानने के लिए अलग–2 खानों उनके कारक ग्रहों तथा टेवों और उनकी स्थिति देखना आवश्यक है।

ग्रहों का संबंध और धन

सूर्य + बृहस्पति : सूर्य + बृहस्पति का संबंध राजस्व संबंध है। इन ग्रहों का संबंध व्यक्ति को अति धनी व दानशील बनाता है।

चंद्रमा + बृहस्पति : चंद्रमा + बृहस्पति का संबंध टेवे में दर्शाता है कि जातक को अकस्मात व गड़े धन की प्राप्ति का योग है। इस संबंध से जो दौलत व्यक्ति के पास आती है वह एक बट वृक्ष की भांति होती है और जो भी लोग ऐसे लोगों के संपर्क में आते हैं, जिनकी कुंडली में यह योग होता है, वे सभी मानो वट वृक्ष की छाया में बैठे हों।

शनि + चंद्रमा : शनि व चंद्रमा की युति खाना नं. 2, 5, 9 व 12 में धन के लिए अति शुभ है। अन्य खानों में धन का आना वा जाना बंदर की छलांग की तरह होता है।

शुक्र + मंगल, या शनि + बृहस्पति : इन दोनों युतियों में से यदि एक भी युति टेवे में हो, तो धन की मात्रा जातक की शादी के बाद बढ़ती है।

बृहस्पति + मंगल : संपत्ति और धन की वृद्धि परिवार के अन्य सदस्यों की मदद से होगी।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्रमा + मंगल : चंद्रमा व मंगल की युति से धन की प्राप्ति आसान तरीके से होती है। यदि इस युति में शनि भी शामिल हो जाए, तो व्यक्ति लालची होता है।

सूर्य + मंगल : सूर्य व मंगल की युति वाले व्यक्ति को धन लाभ जमीन की खरीद–फरोख्त से होता है।

मंगल + शनि : मंगल व शनि की युति धन, दौलत व समृद्धि की सूचक है।

बृहस्पति + शुक्र : बृहस्पति + शुक्र की युति वाला व्यक्ति ऐसे दिखावा करता है कि जैसे उसके पास अत्याधिक दौलत हो, परंतु असल में ऐसा नहीं होता।

कुछ विशेष योग

1. सूर्य+शनि के साथ शुक्र होने से स्त्री, केतु होने से पुत्र तथा चंद्रमा होने से माता के बीमार होने का योग बने।
2. सूर्य + मंगल के साथ शुक्र हो, तो स्त्री, केतु हो तो पुत्र तथा चंद्रमा हो, तो माता के बीमार होने का योग व्यक्ति की खुद की 22 से 24 वर्ष की आयु में होता है।
3. शुक्र खाना नं. 3 तथा सूर्य + चंद्रमा + केतु खाना नं. 9 में हों, तो व्यक्ति किसी औरत की वजह से विदेश जाए।
4. चंद्रमा + केतु दोनों ग्रह टेवे में साथ बैठे हों तो माता तथा पुत्र दोनों की सेहत खराब।
5. केतु खाना नं. 4 और राहु खाना नं. 10 के समय संतान यदि 34–42 वर्ष की आयु से पहले हो, तो व्यक्ति का अपना बीज नहीं होता।
6. बृहस्पति खाना नं. 6 में हो, तो पिता को सांस की बीमारी और सोना खोने का डर।
7. बुध खाना नं. 10 के समय घर में सूत, तिवार के गोले पड़े हों, तो उन्हें खोल दें, क्योंकि भाग्य उनमें लिपटा होता है।
8. चंद्रमा खाना नं. 6 में हो, तो माता की सेहत खराब हो। संतान न हो, तो खरगोश पालें, एक मरे तो दूसरा ले आवें।
9. शुक्र + केतु इकट्ठे हों तथा खाना नं. 5 मंदा हो, तो संतान उत्पत्ति के लिए बाधा बनने का योग।
10. शुक्र + केतु टेवे में इकट्ठे हों और व्यक्ति विवाह न करवावे तो अंधा हो जाए। वर्षफल के अनुसार मंगल, खाना 8 का ग्रह, जब खाना नं. 2 में आता है, तो भाग्योदय होता है।
11. अकेला शुक्र जब खाना नं. 2,4, या 7 में हो, तो व्यक्ति की कई पत्नियां होंगी और जीवित रहेंगी।
12. मंगल जब खाना नं. 6 में होता है, तो जातक के चाचा दो और भाई दो होते हैं।
13. शनि और चंद्रमा का टेवे में टकराव हो तो आखों के आप्रेशन का योग बनता है।
14. शुक्र खाना नं. 3 के समय व्यक्ति अपना मकान न बनाए, वर्ना बरबाद हो जाएगा।
15. शुक्र खाना नं. 2 के समय व्यक्ति यदि विधवा स्त्री से इश्क करे, तो उजड़ जाए।
16. जब भी बृहस्पति और शुक्र खाना नं. 1 या 7 में आते हैं, तो विवाह का योग बनता है। विवाह के बाद जब इन घरों में आएं तो शुभ रहें।
17. यदि कर्क लग्न उदय हो और राहु खाना नं. 2 में, बुध खाना नं. 8 में और सूर्य खाना नं. 9 में हो,

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

तो व्यक्ति प्रतिष्ठित ज्योतिषी होता है।

18. तुला लग्न की कुंडली के समय लग्नेश और पंचमेश की युति व्यक्ति को ज्योतिषी बनाती है।
19. टेवे में धनु राशि में चंद्रमा और कर्क में बृहस्पति होने से व्यक्ति प्रसिद्ध साहित्यकार होता है।
20. लग्न में कुंभ राशि पड़े और मंगल+शुक्र लग्न में हों, तो व्यक्ति कामुक होता है। कई बार तो व्यभिचार के कारण जेल भी जाए।
21. वृश्चिक लग्न के समय सूर्य लग्न में और मंगल खाना नं. 2 में हो और साथ में बुध हो, तो व्यक्ति युवावस्था में पागल हो जाता है।
22. मीन लग्न की कुंडली के समय मंगल लग्न में हो, तो कुंडली मिलान करके शादी करें, वर्ना 6 माह के अंदर तलाक हो जाए।

कुछ विशेष उपाय

1. खाना नं. 6 व खाना नं. 10 के कुप्रभाव को दूर करने के लिए टेवे का खाना नं. 5 देखें और वहां बैठे ग्रह के शत्रु ग्रह की चीज़ें ज़मीन के नीचे दबाएं।
2. बृहस्पति खाना नं. 10 में, शुक्र खाना नं. 11 में, केतु खाना नं. 8 में और शनि खाना नं. 5 में हो, बेटे के वजन के बराबर आटे की रोटियां 25 से 48 दिन तक कुत्तों को खिलाएं।
3. खाना नं. 2 और खाना नं. 12 में लाभदायक ग्रह हों, तो षष्ठस्थ ग्रह को जगाएं। इसके लिए अपने मामा या अपनी बेटियों की सहायता और सेवा करें।
4. वर्षफल में जो ग्रह षष्ठ में आए, वह जातक के स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है, उस ग्रह से संबंधित वस्तुएं दान में देनी चाहिए।
5. जन्म कुंडली के खाना नं. 11 में अगर ग्रह हो और वह वर्षफल में खाना नं. 11 या 8 में आए, तो उस ग्रह की कारक वस्तुएं नहीं खरीदें।
6. यदि खाना नं. 3 और 5 खाली हों, तो खाना नं. 2 के माध्यम से खाना नं. 9 को जगाना चाहिए।
7. यदि खाना नं. 10 खाली हो तो खाना नं. 4 के ग्रह चाहे अच्छे भी जो फल नहीं देते, इसके लिए 10 अंधों को भोजन खिलाएं पर भोजन के लिए पैसे न दें।
8. खाना नं. 11 में स्थित सूर्य तब तक शुभ फल देता है जब तक व्यक्ति शाकाहारी रहे। यदि मांस, मदिरा का सेवन करे, तो संतान के लिए अशुभ हो।
9. यदि टेवे में बृहस्पति और केतु शुभ हों, तो खाना नं. 11 का चंद्रमा अति शुभ फल देता है–कम से कम उस उम्र तक जब तक व्यक्ति की माता जीवित हैं।
10. • यदि टेवे में बृहस्पति अशुभ फल दे रहा हो, तो बेटी की शादी के समय सोने के 2 टुकड़े बराबर वजन के बनवा कर एक पानी में बहा दें और एक दुलहन को दे। दुलहन उसे बेचे नहीं, सदा के लिए अपने पास रखे।
    • यदि सूर्य अशुभ फल दे, तो तांबे के टुकड़ों का उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।
    • यदि चंद्रमा अशुभ फल दे, तो मोती उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।
    • यदि मंगल अशुभ फल दे, तो चमकीला लाल पत्थर इस्तेमाल करें।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

- यदि शनि अशुभ फल दे, तो हीरे के टुकड़ों का उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।
- यदि राहु अशुभ फल दे, तो लोहा या स्टील उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।
- यदि केतु अशुभ फल दे, तो 2 रंगों के पत्थर लेकर उपरोक्त ढंग से इस्तेमाल करें।

11. खाना नं. 6 का शनि खुद चाहे अच्छे फल दे, किंतु बृहस्पति के फल को खराब करता है, इसलिए नारियल, अखरोट आदि पानी में बहाने चाहिए।
12. बृहस्पति खाना नं. 1 में हो और शनि खाना नं. 11 में हो तो गायों की सेवा करने से शुभ फल मिलता है।
13. बृहस्पति खाना नं. 3 में हो, तो दुर्गापाठ शुभ फल देता है।
14. बृहस्पति खाना नं. 4 के समय खाना नं. 10 खाली हो, तो गुरु सुप्त होता है। ऐसे में व्यक्ति को दूसरों के सामने नंगे बदन नहीं घूमना चाहिए।
15. बृहस्पति खाना नं. 8 के समय दुर्भाग्यपूर्ण समय आए, तो गुरु व शुक्र संबंधित वस्तुएं पूजालय में दान दें।
16. बृहस्पति खाना नं. 10 और मंगल खाना नं. 4 में होने पर व्यक्ति मंगल से संबंधित रिश्तेदारों की सेवा व सहायता करे।
17. खाना नं. 2 का सूर्य घर की स्त्रियों के लिए अशुभ होता है। ऐसे में शनि की वस्तुएं नारियल, नारियल का तेल या अखरोट धर्म स्थान में दें।
18. सूर्य खाना नं. 4 में और उसके मित्र ग्रह खाना नं. 10 में हों, तो खाना नं. 5 में स्थित ग्रह अशुभ फल देंगे। ऐसे में मंगल की वस्तुएं दान करें।
19. खाना नं. 6 का सूर्य यदि बच्चे या मामा आदि को हानि करे, तो बंदर को गुड़, दीमक को गेहूं बाजरा डालें। खुद सूर्य के कुप्रभाव को दूर करने के लिए घर में नदी का जल रखें।
20. सूर्य खाना नं. 6 के समय यदि खाना नं. 3 खाली हो, तो नौकरी या व्यापार में बाधाएं आती है ऐसे में कुत्तों को खाना खिलाना चाहिए।
21. सूर्य खाना नं. 6 के समय यदि मंगल खाना नं. 10 में हो तो बच्चों की सेहत के लिए अशुभ होता है । ऐसे में चंद्र संबंधित वस्तुएं रात को तकिए के नीचे रखें और सुबह गरीबों में बांट दें।
22. सूर्य टेवे के खाना नं. 7 में हो, तो इन बातों का ध्यान रखें।
    किसी के प्रति दुर्व्यवहार न करें, गोचर का शनि लग्न में हो तो चंद्रमा निस्सहाय हो जाता है, ऐसे में रात के खाने केबाद चूल्हे की आग दूध से बुझाएं और फिर उस चूल्हे का इस्तेमाल अगले दिन सूर्योदय के बाद करें। अगर बच्चों पर या आर्थिक स्थिति पर दुष्प्रभाव पड़ रहा हो तो ताम्बे के चौरस टुकड़े जमीन में दबाएं या गुड़ खाकर बाद में पानी पीकर काम पर जाएं। भोजन करने से पहले भोजन का कुछ अंश आग में डालें। यह उपाय करते रहना चाहिए।
23. सूर्य पर शनि की दृष्टि के कारण अशुभ फल महसूस हो, तो व्यक्ति अपने घर की दक्षिणी दीवार की ओर जाए, पूर्व की ओर मुंह करके सीधा खड़ा होकर पानी से भरा घड़ा अपनी दाहिनी ओर गाड़ दें। घड़े का पानी 43 दिन तक सूखने न पाए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

24. बड़ों के पांव छूकर आशीर्वाद लेना हमेशा शुभ होता है। चंद्रमा की वस्तुएं दूध, दही आदि बेचना परिवार के लिए हानिकारक है। चांदी, चावल और चश्मे का पानी घर में रखना शुभ रहे।
25. यदि टेवे में खाना नं. 7 खाली हो, तो 24 वर्ष की आयु से पहले घर में गाय या नौकरानी रखना चाहिए खाना नं. 7 को जगाना चाहिए, वर्ना 25वें साल में चंद्रमा बुरा प्रभाव देगा।
26. यदि खाना नं. 4 का चंद्रमा बुरा प्रभाव देने लगे तथा टेवे में बुध खाना नं. 3 और बृहस्पति खाना नं. 9 में हो तो 43 दिन तक कन्याओं को हरे वस्त्र देने चाहिए।
27. यदि खाना नं. 4 में चंद्रमा हो और खाना नं. 9 खाली हो, तो चंद्रमा सुप्त माना जाएगा। ऐसे व्यक्ति को उत्तम भोजन खाकर यात्रा पर चले जाना चाहिए। कुछ खाना साथ ले जाना चाहिए।
28. खाना नं. 6 को चंद्रमा के बुरे फल से बचाने के लिए मंगल, बृहस्पति व सूर्य की वस्तुएं दान करें। कभी–2 मंदिर जाए। सूर्यास्त के बाद दूध मत पीएं।
29. खाना नं. 8 का चंद्रमा कष्ट देने लगे, तो शमशान के पंप/कुंए का पानी घर में स्थापित करें। दूध का दान करें। बड़ों के पांव छुकर आशीर्वाद लें।
30 चंद्रमा खाना नं. 11 के समय यदि व्यक्ति की पत्नी बच्चे को जन्म देने वाली हो, तो व्यक्ति की मां को कहीं बाहर चले जाना चहिए और 43 दिन पोते/पोती को ने देखे।
31. खाना नं. 11 का चंद्रमा यदि मां का अनिष्ट कर रहा हो, तो 121 पेड़े बच्चों में बांटने चाहिए। बच्चे न मिल सकें, तो पानी में बहा दें।
32. शुक्र खाना नं. 4 में हो तो दो विवाह होने की संभावना होती है, इसलिए व्यक्ति को अपनी पत्नी के साथ रस्मो रिवाज से दूसरी शादी कर लेनी चहिए।
33. खाना नं. 4 का शुक्र व्यक्ति के परस्त्रियों से कामुक संबंध बनवाता है, जो परिवार के लिए कष्टकारी है। बृहस्पति की वस्तुएं पानी में बहाएं।
34. जिस व्यक्ति के टेवे में शुक्र खाना नं. 6 में हो, उसे मां–बाप की इकलौती संतान से शादी करनी चाहिए।
35. शुक्र खाना नं. 6 के समय यदि बृहस्पति और मंगल के सिवा कोई और ग्रह शुक्र के साथ हो, और खाना नं. 2 खाली हो, तो अनिष्टकारी होता है। घर में चांदी रखें, व्यक्ति की पत्नी फर्श पर नंगे पांव न चले, गुप्तांगों को दही से धोना चाहिए।
36. शुक्र खाना नं. 7 के समय यदि राहु खाना नं. 8 में हो, तो अशुभ हेता है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी काले नीले रंग के कपड़े न पहनें।
37. शुक्र खाना नं. 9 में हो, तो धार्मिक स्थानों की यात्रा शुभ फल देती है। नीम के तने में छेद करके उसमें चांदी के चौकोर टुकड़े दबाएं।
38. शुक्र खाना नं. 10 के समय संतानोत्पत्ति के लिए अशुभ है। व्यक्ति की पत्नी ज्यादा कामुक होती है पत्नी गुप्तांग दही से धोए। यदि जातक खुद बीमार हो, तो गोदान करें, यदि रोग साध्य होगा तो ठीक हो जाएगा, वर्ना मृत्यु शान्तिपूर्ण होगी।
39. शुक्र खाना नं. 12 में पत्नी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। ऐसे में स्त्री को संध्या के समय वीरान जगह नीले फूल दबाने चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

40. यदि टेवे में मंगल बद हो, तो हाथी दांत या हाथी के दांत से बनी चीज़ें घर में रखना शुभ फल देता है।
41. यदि खाना नं. 1 में मंगल और खाना नं. 3 में बुध हो तथा व खाना नं. 7, 9, 11 खाली हों, तो बृहस्पति की वस्तुएं घर में स्थापित करें। शुक्र की वस्तुओं का व्यवसाय करने से खाना नं. 7 जाग्रत होना। 39 वर्ष की आयु तक साधूओं की संगति न करें।
42. खाना नं. 4 का मंगल अशुभ फल देने लगे, तो चंद्रमा की वस्तुएं अपनाएं। यदि बच्चे न होते हों, तो शहद से भरा घड़ा शमशान में दबाएं। लंबी बीमारी से बचने के लिए मृगछाला प्रयोग करें। घर के दक्षिणी द्वार पर एक लोहे की कील गाड़ दें जो दिखाई न दे।
43. खाना नं. 5 का मंगल अशुभ फल दे जैसे बुरे सपने या नींद में विघ्न तो रात को सिरहाने पानी रखेंऔर सुबह किसी पेड़ की जड़ में डाल दें (43 दिन लगातार)।
44. खाना नं. 6 का मंगल अशुभ फल दे, तो या तो बच्चे का जन्म दिन मनाएं नहीं या फिर नमकीन भोजन खिलाएं जिनमें मीठाई शामिल न हो।
45. खाना नं. 7 का मंगल बुरे प्रभाव दे, तो बचने के लिए कच्चे गारे से दीवार बनाएं और शाम को गिरादें (शनि का उपचार)। जब बहन या बेटी घर आए तो मिठाई खिलाए बिना न जाने दें।
46. खाना नं. 12 का मंगल अशुभ फल दे तो खाली कपड़े या टोपी का इस्तेमाल करें। सुबह के समय चीनी घुला हुआ पानी सूर्य को अर्पित करें, और मंगल, बुध व शनि की वस्तुएं मंदिर में दान करें।
47. बुध के बुरे प्रभाव को रोकने के लिए बिना जोड़ का स्टील का छल्ला धारण करें। बुध + केतु का संबंध हो, तो फिटकरी से दांत साफ करें। बकरी दान उत्तम उपाय है।
48. शनि खाना नं. 5 में अशुभ फल दे, तो पैतृक धन में सूर्य की वस्तुएं (गुड़, पालतू बंदर, चंद्रमा की वस्तुएं (चांदी, चावल) व मंगल की वस्तु (शहद, मूंग) स्थापित करें।
49. खाना नं. 6 का शनि अशुभ फल दें तो पानी में नारियल, अखरोट बहाएं। बच्चों की समृद्धि के लिए सांप को दूध पिलाएं। हर प्रकार के कष्ट के निवारण के लिए मिट्टी के बर्तन में सरसों का तेल भरकर पानी के नीचे दबाएं।
50. खाना नं. 7 में शनि के दुष्प्रभावों से बचने के लिए अगर शनि सोया न हो तो काली बांसुरी में चीनी/शक्कर भर कर वीरान जगह दबाएं। अगर शनि सोया हो, तो मिट्टी के घड़े में शहद भरकर जमीन में दबाएं।
51. राहु का कुप्रभाव को रोकने के लिए :

- मानसिक शक्ति के लिए चंद्रमा का उपाय यानी चांदी धारण करें।
- सुबह सवेरे मसूर की लाल दाल किसी सफाई करने वाले को दान करें।
- बीमार आदमी के वजन के बराबर जौ बहते पानी में बहाएं।
- रात को सोते समय जौ किसी बर्तन में डालकर सिरहाने रखें और सुबह गरीबों में बांट दें।

Future Point

भाग—9

लाल किताब का वर्षफल

लाल किताब का वर्षफल बनाने का ढंग वैदिक ज्योतिष से बिल्कुल अलग है। जन्मकालीन टेवे के साथ वर्षफल बनाना अति आवश्यक है और उपाय भी दोनों टेवों (जन्मकालीन तथा वर्षफल) के ग्रहों के अनुसार ही कराने चाहिए। उदाहरण के तौर पर खाना नं. 4 में कोई ग्रह अशुभ नहीं माना जाता। अतः जन्मकालीन खाना नं. 4 में यदि पापी ग्रह भी हो, तो उपाय का अधिक महत्व नहीं रह जाता, लेकिन वर्षफल के अनुसार जन्मकालीन खाना नं. 4 का पापी ग्रह यदि वर्षफल में भी खाना नं. 4 में आ जाए, तो उपाय आवश्यक है। जैसे किसी के जन्मकालीन टेवे के चौथे घर में राहु हो और वर्षफल में भी राहु खाना नं. 4 में आए, तो राहु संबंधित उपाय आवश्यक है।

वर्षफल बनाने की विस्तृत विधि इस प्रकार है : दिशा में टेवे के 12 खाने दिए गए हैं। खाना नं. 1 टेवे का पहला घर है और वहां से 12 तक गिनते हुए काल पुरुष की कुण्डली के अनुसार 12 खाने होते हैं।

नीचे की दिशा में उम्र के साल दिए गए हैं। इसमें देखा जाता है कि पहला साल पूर्ण होने पर ग्रह किस खाने में जाएंगे—2,3,4,5 या इसके आगे के साल पूर्ण होने पर ग्रहों की सिथति क्या होगी।

उदाहरण के तौर पर किसी की कुंडली/टेवे में पहले घर में बुध बैठा हो और उसके 27वें साल का वर्षफल बनाना होतो पहले खाने में और उसके नीचे 27 वें साल में देखें, तो पाएंगे कि वहां 9 नम्बर है। इसका मतलब है कि पहले खाने का बुध 27वें साल में खाना नं. 9 में चला जाएगा। इसी प्रकार खाना नं. 2 का ग्रह खाना नं. 4 में, खाना नं. 3 का ग्रह खाना नं. 1 में , खाना नं. 4 का ग्रह खाना नं. 5 में, खाना नं. 5 का ग्रह खाना नं. 10 में और खाना नं. 6 का ग्रह खाना नं. 11 में। इसी प्रकार हर वर्ष का वर्षफल बनाकर ग्रहों के उपाय बताने चाहिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

वर्षफल के अनुसार वर्षकुण्डली बनाने की विधि

जन्म तिथि : 12.10.1953
समय – 7:00 बजे रात्रि
स्थान – अम्बाला

2
12
3
बृ.
1
11
4
केतु
10
चं. श.
7
5
मंगल
श. बु.
सू.
9
6
श.
8
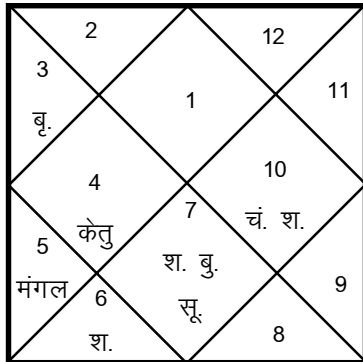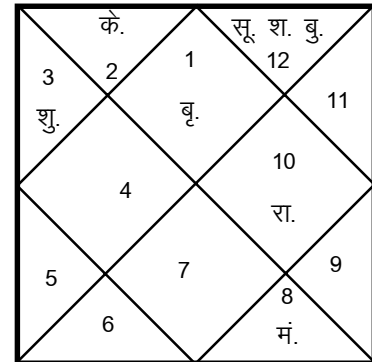
51वें साल की वर्षफल कुण्डली

वर्षफल के अनुसार कुण्डली – उदाहरण 2

जन्म तिथि : 18.06.1975
समय – 10:10 प्रातः
स्थान – फगवाड़ा (पंजाब)

6
4
चं.
शु.
3
7
5
श. सू.
8
2
रा.
बु. के.
9
11
1
12
10
बृ. मं.
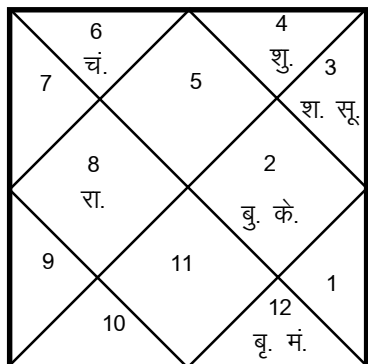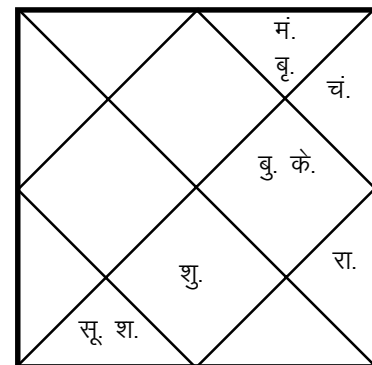
30 वें साल की वर्षफल कुण्डली

वर्षफल के अनुसार कुण्डली – उदाहरण 3

जन्म तिथि : 30.08.1979
समय – 11:43 रात्रि
स्थान – चण्डीगढ़
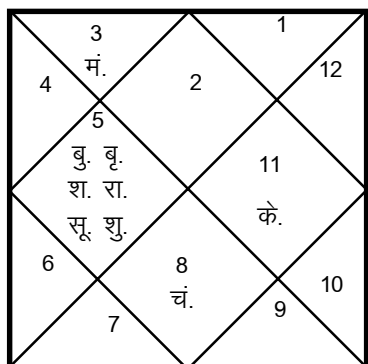
26 वें साल की वर्षफल कुण्डली

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
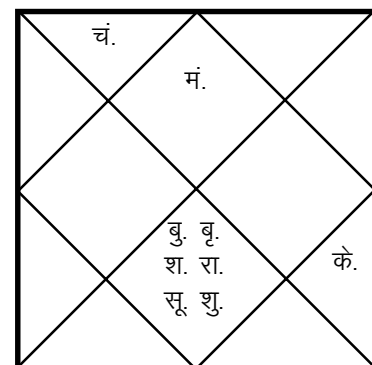
उम्र \ खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	1	9	10	3	5	2	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3
16	3	9	4	1	12	8	6	5	6	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

खाना / उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8
33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4
37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7
40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6
44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	12

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खाना / उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	2	12
56	2	3	5	11	9	4	10	1	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	3	1	9	6
59	8	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	6	12	11	7	3	10	5
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	11	1	9

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

उम्र \ खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

खाना / उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
97	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
98	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
99	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
100	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
101	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
102	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
103	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
104	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
105	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
106	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
107	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
108	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
109	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
110	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
111	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10
112	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
113	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
114	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
115	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
116	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
117	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
118	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
119	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
120	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com